विषय सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
१. जाहरपीरः लोकवार्ता गीत	
सम्पादक डॉ० सत्येन्द्र	१
२. मैनासत—साधनकृत	
सम्पादक–श्री अगरचन्द नाहटा	१०७
३. नलदमन—सूर कृत	
सम्पादक—डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल	१२७
४. सिद्धान्त माधुरी—श्री रूपरसिक जी	१४१
५. विरह शत—(१६ वी शती का एक अप्रकाशित ग्रन्थ)	
सम्पादक—अगरचन्द नाहटा	१४५
६. सिंगार शतक भाषा (स १७२२)	१५५
७. (अ) सवाई पचीसी —किसोर पोष्करणो कृत दिल्ली में	
(ब) सवाई बतीसी — ,,	१६१
मुनि कान्तिसागर जी के सौजन्य से	
८. व्रजभाषा व्याकरण—श्री लल्लूजी लाल	१७१
९. प्रकाश नाममाला—श्री नूरमुहम्मद	२६५

नोकवार्ता गीत

जाहरपीर

[गायक लोहवन के मट्टानाथ]

मट्टू नाथ

जाहरपीर की कथा का विश्लेषण

जाहरपीर पर अब तक जो विचार हुआ है, उससे स्पष्ट है कि यह विविध संप्रदायों और मतों के ऐक्य से संगठित पापड है। उसकी कथा पर अभी तक जितना प्रकाश डाला गया है, उससे यह प्रकट होता है कि वह वीर पूजा का अधिकारी व्यक्तित्व रखता है, और उसकी गाथा जैसे वीर गाथा हो। किन्तु यहाँ आवश्यक यह है कि इस कथा का विश्लेषण और किया जाय।

प्रथम दृष्टि से ही यह विदित होता है कि इस कथा में निम्न तन्तु स्पष्ट हैं—

१. जाहरपीर की जन्म-कथा।
२. जाहरपीर की विवाह-कथा।
३. जाहरपीर की युद्ध-कथा।
४. जाहरपीर की निर्वाण-कथा।
५ सिरिअल की निर्वाण-कथा।

पहली कथा में निम्न अभिप्राय है.

१. राजा रानी संतानाभाव से पीड़ित—

लोक कथाकार ने इसमें कई अभिप्रायों को जोड कर इस संतानाभाव की स्थिति को अत्यंत असह्य दिखाया है :

उसने १. संतान की आवश्यकता दिखाई है।
२. ज्योतिषियों पंडितों से विधियाँ पूछी हैं।

इन तत्वों से यह स्पष्ट हो जाता है कि राजा ही भाग्यहीन है।
३. बाग लगवाया है।
४. बाग के फल फूल राजा के देखने से कुम्हिलाते हैं। रानी उन्हें बासी बताकर समाधान करती है।
५ बाग में राजा जाता है तो बाग सूख जाता है।
६. उसका साडू उसे अपने महल में नहीं आन देता।

७. राजा राजपाट छोड कर चल देता है, बाछल साथ जाती है।
८. अन्तत राजा लौटता है।

२. संतान-प्राप्ति के लिए जोगी-सेवा—

१. गोरखनाथ के आने से बाग हरा हो जाता है।
२. बाछल गोरख की सेवा करती है।
३. पहली सेवा का फल न मिलने पर फिर सेवा करती है।

३. जोगी से फल प्राप्ति—

१. बाछल की पहली सेवा का फल धोखा देकर उसकी बहिन काछल ले जाती है।

२. वाछल को बाछल समझ गुरु उसे दो फल देते हैं।
३. बाछल को दूसरी सेवा पर एक जौ या गूगुल मिलता है।

४. फल का उपयोग—

१. बाछल दोनों फलों को अकेली खाती है।
२. बाछल गूगुल या जौ को पांच व्यक्तियों में बांट देती है। वे पाँच हैं
   १. वह स्वयं।
   २. घोड़ी।
   ३. चमारिन।
   ४. महतरानी।
   ५. ब्राह्मणी।

५. बाछल पर लांछन—

१. बाछल गर्भवती।
२. ननद से बिगाड़।
३. ननद द्वारा बाछल के चरित्र पर लाछन।

६. बाछल का निष्कासन—

१. जेवर बाछल को मारने का प्रयत्न करता है पर तलवार नहीं चलती।
२. निष्कासन।

७. मार्ग में बाधा—

१. बाछल के बैल को सर्प काटता है।
   यह सर्प स्वयं गर्भ स्थित जाहरपीर की चेष्टा से आया है।
२. पिता और ससुर लेने आये
   जाहर ने दोनों को करामात दिखायी, जिससे दोनों बाछल को लेने आये।

८. गृह प्रतिवर्तन—

बाछल सासुरे आई।

९. संतान प्राप्ति—

बाछल के जाहरपीर हुआ अन्य
चारों के भी सतानें हुई ये पंच पीर कहलाये।

इस कथांश में ७वें अभिप्राय को छोड़ कर शेष सभी सामान्य लोक-कथाओं के तत्व हैं जो अन्य प्रसिद्ध कथाओं में भी मिल जाते हैं। सन्तानाभाव का अभिप्राय राम के पिता-माता से भी सम्बन्धित है। वहाँ योगी नहीं ऋषि आया है। ऋषि यज्ञ कराता है उसमें यज्ञ पुरुष ने निकल कर खीर दी है। जिस प्रकार खीर तीन रानियों में बाँटी गयी है, उसी प्रकार यहाँ गूगल पाँच में बाँटा गया है। ननद की शिकायत का तत्व लोक प्रचलित सीता बनवास

की कथा में भी है। यह लाछन की बात और लाछित को मारने या निकालने की बात सीता बनवास में भी है और राजा नल की माता मंभा से तो एक दम बहुत मिलती है। निष्कासन के उपरांत का तत्व जाहरपीर में अनोखा है। पीर का गर्भ में से जाकर वासुकि को विवश करना, अपने नाना और बाबा को विवश करना। ये इस कथा के अनोखे तत्व हैं।

दूसरे कथांश के अभिप्राय ये हैं—

१. स्वप्न में सिरिअल के दर्शन और आधी भावरें।
२. सिरियल की खोज में अकेले प्रस्थान।
३. गुरु गोरखनाथ से सिरिअल का पता।
४. घोड़े पर चढ कर समुद्र तट पर वैमाता को जूडी बांधते देखना।
५. घोड़े ने सिरिअल के देश में पहुँचाया।
६. सिरिअल के बाग में सिरिअल की शैया पर शयन।
७. सिरिअल का आना, मिलन, सार-पाँसे।
८. सिरिअल के पिता ने विवाह का प्रस्ताव ठुकराया।
९. जाहर का बन में जाकर बंशी बजाना, नागो तक को मुग्ध करना।
१०. बासुकि ने तातिग नाग को सहायता के लिए भेजा।
११. तातिग ने सिरिअल को स्नानोपरान्त डसा।
१२. तातिग सपेरा बन राजा से बचन लेकर कि सिरिअल का विवाह जाहर से होगा, सिरिअल को ठीक कर देता है।
१३. एक अन्य दूलह का भी आगमन और जाहर का भी।
१४. दोनो बरातों का युद्ध।
१५. दैवी हस्तक्षेप।
१६. सिरिअल से विवाह।

इस समस्त कथांश में कुछ भी असामान्य तत्व नही, सभी अभिप्राय अत्यंत प्रचलित लोक-प्रेम-कथाओं में मिल जाते हैं।

तीसरे कथांश में ये अभिप्राय हैं—

१. बाछल की बहिन के लड़कों ने राज्य में से हिस्सा मांगा।
२. बाछल हिस्सा देने को तैयार।
३. जाहरपीर ने अस्वीकार कर दिया।
४. क्रुद्ध भाई मुसलमानी शासक को चढा लाये।
५. सिरिअल का हठ पूर्वक झूलने जाना और अपमानित होना।
६. सिरिअल ने ही जाहर से साक्षात्कार की विधि बतलायी।
७. सेना ने गायें घेर ली।
८. जाहर ने गायें छुडाने के लिए युद्ध किया और दोनो भाइयों के सिर काट लिये।

गायों के लिए युद्ध ऐसा तत्व है जो अत्यंत लौकिक हो गया है, विशेषतः राजस्थान

में। पाबूजी ने भी गायों के लिए युद्ध किया है। मुसलमानी शासकों को चढ़ा लाने का भी अभिप्राय इतिहास तथा लोकतत्व दोनों से सबद्ध है।

चौथे कथांश के अभिप्राय हैं—

१. जाहर मा को सूचना देता है कि उसने दोनों भाइयों को मार डाला।
२. मा का क्रुद्ध हो आदेश देना कि वह भ्रातृ-हन्ता उसे मुंह न दिखाये।
३. जाहर का पृथ्वी में समा जाने की इच्छा।
४. मुसलमानियत स्वीकार की।
५. तब पृथ्वी में वह घोड़े सहित समा गया।

चौथा अभिप्राय जाहरपीर के किसी किसी सस्करण में ही है। यह कथांश सपूर्ण ही अनोखा है। साधारणत लोक में प्रचलित नहीं।

पाँचवें कथांश में—

१. सिरिअल के वियोग में जाहर प्रेत रूप में ही प्रकट होता है।
२. प्रति रात्रि जब मा सो जाती है तो सिरिअल के पास आता है।
३. सिरिअल से वचन कि मा से नहीं कहेगी?
४. सिरिअल गर्भवती होती है अथवा उसकी सासु उसे सौभाग्य चिह्न धारण किये देखकर सदेह करती है।
५. सिरिअल मा से भेद खोल देती है और मा को दिखा देने का वचन देती है।
६. जाहर को पता चल जाता है। नहीं आता।
७. मा का उलाहना।
८. सिरिअल काग से सदेश भेजती है। देवों से चौपर खेलता मिलता है जाहर।
९. जाहर सिरिअल का निमत्रण मान लेता है।
१०. सिरिअल से मिलता है चलने लगता है तभी सिरिअल मा को जाते हुए जाहर को दिखाती है।
११. मा आवाज देती है तभी जाहर सिरिअल के साथ अंतिम रूप से भूमि में समा जाता है।

यह अन्तिम कथांश पुनरुज्जीवन अथवा प्रेत-प्राप्ति का है।

इस विश्लेषण से स्पष्ट विदित होता है कि समस्त कथा में वास्तविक ढाँचा प्रेम-गाथा का है।

पहला कथांश प्राय सभी लोकप्रिय प्रेमगाथाओं में मिलता है। नल-दमयन्ती सबधी लोक-कथा में भी नल के पिता विरषम निपुत्री हैं। उन्हें पुत्र की बहुत कामना है। अन्य अनेक लोक-कथाओं में ऐसा ही उल्लेख है। प्रेम-कथा का नायक असाधारण प्रकार से ही उत्पन्न होता है। जन्म से ही उसे सिद्ध या देवी देवता का पोषण मिलता है।

दूसरा कथांश शुद्ध प्रेम-कथा है। स्वप्न में सिरिअल को देखना उसे पाने के लिए चल पड़ना। बाधाएँ, उनका शमन। योगी होना या योगी गोरख की कृपा पाना। देवी

देवताओं की कृपा होना और प्रेमिका की प्राप्ति। इसी को जाहर की इस कथा में विशेष रूप में रख दिया गया है।

तीसरा कथांश प्रेमकथा या प्रेमगाथा के मिलनोपरान्त की बाधाओं से संबंध रखता है। पद्मावत में जिस स्थान पर अलाउद्दीन से युद्ध आता है प्रायः उसी स्थान पर गोगा का शाही सेना से युद्ध आता है। पद्मावत में भी अलाउद्दीन को चढा लाने वाला घर का भेदी है, जाहरपीर में भी ऐसा ही है, जाहर के मौसेरे भाई।

चौथा कथांश प्रेमगाथा के नायक की मृत्यु का एक रूपान्तर ही है। साधारण प्रेमगाथा में नायक मारा जाता है। यहां जाहर ने शत्रु को पछाड़ा है, फिर स्वयं पृथ्वी में समाये हैं। यह ऐसे ही है जैसे जायसी ने अलाउद्दीन के हाथ से बचा कर एक अन्य राजा से लड़ते लड़ते रत्नसेन का मरना दिखाया हो।

पांचवां कथांश प्रेमिका के चितारोहण के समान है परन्तु पीर की प्रेत-लीला दिखाकर इन प्रेमी प्रेमिका को इस कथाकार ने साथ साथ पृथ्वी में समाते दिखाया है।

अतः मूलतः जाहरपीर की कथा प्रेम कथा है जैसे राम कथा मूलतः प्रेम कथा है। पर, उसको एक विशेष धार्मिक ढाल में ढाल दिया है। प्रेम कथाएं प्रेम की पीर पैदा करने के लिये लिखी जाती थीं। अथवा किसी प्रकार की शिक्षा देने या मनोरंजन के लिए। जाहरपीर की कथा इनमें से किसी अभिप्राय से नहीं लिखी गयी। एक और अभिप्राय भी कथाओं का हुआ करता था, वह था उनका माहात्म्य। शब्द-वृक्ष-मन्त्र और फल के अनिवार्य संबंधों के कारण अथवा तान्त्रिक प्रभाव के कारण अथवा तान्त्रिकता के दूषित प्रभाव को रोकने के लिए कथाओं के साथ माहात्म्य की बात जुड़ी। इन कथाओं को पढने या सुनने से ही विशेष फल मिलने की बात पर विश्वास किया गया। पुत्रों के कल्याण के लिए अहोई आठें की कथा, पति के कल्याण के लिए करवा चौथ की कहानी, भाई के कल्याण के लिये भैया दूज की कहानी, सर्प से रक्षा के लिए नाग पंचमी की कहानी। कलंक से मुक्ति स्यमन्तक मणि की कथा दिलाती है। समस्त विघ्नों का नाश गणेश कथा से होता है। सब प्रकार की समृद्धि आती है सत्य नारायण की कथा सुनने से। इसी प्रकार यह विश्वास प्रचलित है कि रामकथा के सुन्दरकाण्ड का पाठ करने से रोग दोष नष्ट होते हैं। यही कारण है कि अकेले सुन्दरकाण्ड की हस्तलिखित प्रतियां बहुत मिलती हैं। तिजारी रोकने के लिए उषा कथा का महत्व है। जाहरपीर की कथा ऐसी ही माहात्म्य कथा है।

जाहरपीर

गुरू गैला[1] गुर वावरा[1] करैं गुरून की सेवा है
गुरू ते चेला अति बडा[2] तौउ करैं गुरू की सेवा है
महरी[3] पैं बादर ओलर्‌यौ वरसैं कौढार है
रानी कौ भीजें काचुओ[4], जाहर मिरगुल[5] पाग है

---

१. ये दोनों नाथ गुरुओं के नाम प्रतीत होते हैं : गैलानाथ तथा बाबरानाथ।

२. गुरु से चेला बड़ा माना गया है। इसमें एक सिद्धान्त तो यह विदित होता है कि चेला गुरु का ज्ञान तो प्राप्त कर ही लेता है, अपनी सिद्धि से उसे और आगे बढाता है, गुरु गोरखनाथ और मत्स्येंद्रनाथ की शक्तियों और सिद्धियों पर जब ध्यान जाता है तो विदित होता है कि गुरु गोरखनाथ अपने गुरु मत्स्येंद्रनाथ से बढे-चढे थे। उन्होंने गुरु का 'त्रिया-देश' में से उद्धार भी किया था। यह कथन साम्प्रदायिक भावना से भी कहा गया होगा। नाथ-सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक गोरखनाथ हुए। गोरख-सम्प्रदाय के अनुयायी अपने गोरखनाथ को सबसे बडा मानेंगे ही। अत अपने गुरु को सब से बडा मानकर अपनी भक्ति की सार्थकता प्रकट की और उनका गुरु सब से बडा होते हुए भी अपने गुरु की सेवा करता है, इस कथन से गुरु का शील भी प्रकट किया।

३. 'महरी' को जगदीशसिंह गहलौत ने गोगाजी का गाँव माना है। पर गोगा जी का गाँव 'ददेरा' है। महरी तो वह स्थान है जो गोगा मेरी या गोगा मेंढी के नाम से प्रसिद्ध है। गोगा का गाँव नोहर तहसील में बीकानेर में है। वही गोगा मेड़ी या मेंढी है। इस मेरी या मेंढी का शुद्ध रूप 'महरी' हो सकता है। 'महल सुखाइ देउ काचुओ महरी' मरद की पाग, में महरी का अर्थ गायक ने हा मदिर बताया था जो ठीक प्रतीत होता है। मदिर अर्थात् पूजा का स्थान। यह सस्कृत 'मह' शब्द से बना है। (H. H. Wilson) विलसन महोदय ने अपने कोष में लिखा है : मह–r. 1st and 10th cls. (महति महयति) To revere, to worship, to adore (ह) मह m (–हः) 1. A festival, 2. Light, Lustre, 3. A buffalo 4. Sacrifice oblation. f. (हा) 1. A Cow. 2. A plant 'मह' धातु के जितने भी अर्थ ऊपर बताये गये हैं प्राय. 'गोगा महरी' स्थान पर सभी का समावेश मिलता है। यह पूजा का स्थान है। मेला लगता है, बलि से सबध है, गोगा और गोगानो का 'गाय' से संबध है, पशुओं का मेला लगता है, जिनमें गाय का बाहुल्य होता है। गोरखनाथ की समाधि भी गोरख मेढी, गोरख मेंडी, गोरख मढी कही जाती है जो 'महरी' का ही रूपान्तर है।

४. चोर

५. पाग

कहा सुकाइदें काचुग्रो, कहाँ मरद तेरी पाग
महल सुखाइ देउ काचुग्रो महरी[1] मरद की पाग
जाहर के बाजार में सौनों गढ़ै सुनार
घोड़ें कू गढला चाबुका, रानी सिरियल कौ सिंगार
जाहर की गैल में स्यापु लहरिया लेइ[1]
पापी चेला डसि लए दाता ऐ दर्सन देइ।
राना है
सोवैं नाग जगैं नगिनिया, तू बालक कित आयौ
नागिनि नाग जगाइ दै अपनो मैं बाइ जांचन आयौ
मारयौ टोल गेंद गई दह में, गेंद के संग ई धायौ।
मारी फुसकार स्याप भयौ कारौ, गोरे ते है गयौ कारौ।
ठाडी जसोदा अर्ज करै मेरौ नागु छोडिदै कारौ।[2]
'मानसी गंगा राजा मान' नें खुदाई
जाके बीच में गिरवर धार्यौ

---

६. मन्दिर

१ जाहरपीर और गुरु गुग्गा को एक माना जाता है, टैम्पल महोदय नें 'दी लीजैण्डस ग्राव पंजाब' में सख्या (६) के आरम्भ में लिखा है, *गुग्गा की समस्त* कहानी महान् अन्धकार में पडी हुई है, आजकल वह प्रधान मुसलमान फकीरो में है अथवा सब प्रकार की नीच जातिया का पूजा पात्र है और जाहरपीर के नाम से भी विख्यात है। श्री जगदीशसिंह गहलौत ने लिखा है गोगा जी.. यह जिला हरियाना के गाँव महरी के चौहान राजपूत थे। स० १३५३ में दिल्ली के बादशाह द्वितीय के सेनापति अबुबक्र से युद्ध कर ये वीर गति को प्राप्त हुए। हिन्दू इन्हें देवता तुल्य मानकर भादो वदी ६ को इनकी जयंती मनाते हैं। मुसलमान इन्हें जाहरपीर के उपनाम से पूजते हैं।

२ बंगाल में पट-गीतों में से एक गीत का अश यह है

कालीदहेर कूले छिल केलि कदम्बेर गाछ
ताते, चड़े कृष्णचन्द्र दिये छिलेन झाँप।
कालोनाग आज आहार बले सकले घेरिल
नागवती दुइटी कन्या उपस्थित हइल।
नागेर माथाय पग दिये, देखूना, ठाकुर नाचित लागिल।

"बाङ्लार लोक साहित्य पृ० १५४"

इस से यह अनुमान किया जा सकता है कि जाहर के गीत में कृष्ण का यह वर्णन पटवा के पुराने अभ्यास के कारण आ गया है। पहले ये कृष्णचन्द्र के पट दिखाते होंगे, बाद में जाहर का दिखाने लगे। और पुराने कृष्ण गीत का अश स्तुति के रूप में रह गया।

सिगमरमर को बन्यो मुगरा[3] हरदम द्वारा न्यारा
―ली दह में गाय चरावै कवर ओढ़े-मारा,
ा और ग्राह लड़े जल भीतर लड़त लड़त गज हारे
त की टेर द्वारिका लागी नगे ई पैरन धाए।
ा भरि सूंड रही जल ऊपर जब हरि नाम पुकारे
ाविन्दो हरि आप बनायौ.
कसे एक लगैं बिसकरमा रोजु एक नाइ आयौ
लनी के बेर सुदामा के तन्दुल, रुचि रुचि भोग ल
ग नायु रेती में डार्यौ नगर तमासे आयौ
वीर[4] पचो में भाई, धुर मक्के में जात लगाई
ारथरी[1] का भरथरी
अलील का बन्दे
ोगी खेलें नौऊ खड
ागू भिच्छा तारु गाम
नलख पुर्स का सुमिरू नाम
ः ताका भी भला न दे ताका भी भला
क्वी महरी वनी पीर तेरी गचकीली और कलई सेत
वारी खूट की आवैं मेदिनी कादिम[3] लैंत पीर तेरी भेंट
पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिन धामत ऐं तोय चारो देस
नायन की मरवाई मान्ता[4] राखी लाज भेस की टेक।
मानसरोवर राजा मान की जा घर कुमरि लियो औतार
एक बरस की है गई दूजी लागनहार
दै ई बरस की रानी बाछिला जाकौ निकरयौ बाछल नाँउ
तीन बरस की रानी बाछिला चौथी में पगु धार्‌यौ ऐ
पाच बरस की रानी है गई छँई बरसु में पगु धारयौ है
सात बरस की रानी है गई, आठेंई में पगु धार्‌यौ है
नौ बरस की रानी है गई, दसई में पगु धारयौ है
ग्यारह बरस की रानी है गई, बारही में पगु धार्‌यौ है[5]

चबूतरा।
जाहर।
: धरथरी—धारानगरी।
ः. कपर।
ः. मुसलमान सेवक—(खादिम से व्युत्पन्न)
४ इस पंक्ति से विदित होता है कि जाहरपीर के कारण नाथों को मानता हुई।
५ लोक गीतों की यह शैली दृष्टव्य है। समय के व्यतीत होने का ज्ञान कराने की यह विधि मनोविज्ञान के अनुकूल है।

घर को बोल्यौ नाई बामना है।
वर ढूढ़न हम जांय हैं
पाच सुपाड़ी इक नारियल ले बिरमा झोली डारे हैं
चले चले ग्वा गए, पहुँचे बागर देस है
बैठ्यौ ई पायौ राजा उम्मद तखत पै
कहा ते आये कहाँ जाउ मुख के बचन सुनाओ है
ग्वा घर बेटी जनमी राजा मान कें
ग्वा के भेजे आए हैं
तो घर देवराय लालु है, करन सगाई आए हैं
सहर दलेला भारी राव कौ, ग्वा घर देवराय लालु है
बैठ्यौ ई पायौ राजा बगला उमरू ग्वाकौ नाम है
बुरी करी तौ हैं, नाऊ बामना, बैरीन घर करि आए काज
इकदसिया कौ माड्यौ, द्वादस निरमल कन्या कौ ब्याहु है
राजा नें लगुन लई लिखवाइ
नेगी लए बुलाइकें जानें नेगोन् दई गहाइ
तुम तौ मेरे महाराज औ तुम ते कछू न बस्याइ
नाऊ हा तौ तौ ब्वाइ देतौ मरवाइ
लै नेगी न्यातें चले पहुँचे सैर[१] दलेले जाइ
बैठ्यौ पायौ राजा उमरू तखत पै बौहौत भये खुसहाल
तौमर ने हमारी लई तौमर करत विचार
इतनी बात कही उम्मर ने जाते छमामन्त भए विरोत महाराज
इतनी बात न्यौं मति कहियो राजा तोइ जिग्र ते डारू मारि
पर्यौ कुमर कौ तेलु रहमि हरदो चढ़वाई
रोरो मधप्रटि धुरे बैठि कें कजर लगायौ
चुन्नौ नाऊ फिरै नगर में देत बुलाए
भूप चलौ ज्यौंनार पाति कू सबुई बुलाए
भूप चले ज्यौंनारि जोरि पगनि बैठारी
या के दौना पत्तरि फिरैं हाथ गगरी और पानी
लुचई, पूरी, मगद, कचौरी
बूरो, दही पाति दई गहरी।
सो ऐसी पानि दई ग्वा राजा नें सो दादा मेरे
नगर में होंति बड़ाई सो भूको न्यातें ना फिरैं।
गुरमुनी भाट बुलाइ तुरोन की जाति निकारी
ओज की याछ और दल्न किसोरा। ऊचें परवत माझी
नाजी तुरकी मजि गए बड़ा। मुरख बनात नारि में गड़ा।

---

१ शहर।

ऊट परवती सजे तुरकी ऐराकी
रथबहली सजि गई धरी हाथिन अम्बारी
कैंसोड़े के चारि नगर परिकम्मा दीनो
लसकर फिरै नकीब देर काए कूं कीनो
सो उडि उडि धूरि लगी अम्मर में दादा मेरे
सो भानु गर्द में श्रटि गयौ।
म्वाते उमरू चल्यौ सुरति जानें बिरज की लगाई
नाऊ नेगी नाहिं गैल हमें कौन बताई
म्वाते राजा चलि दीयौ श्रौर मानसरोवरि आय
मानसरोवरि आइकें राजा भान कै घटाए मान
बामन राजा ते पिरोत तै मेरी कछू न बस्याइ
सो हात जोरि तेरे करूं निहोरे दादा मेरे
मेरी कछु न बस्याइ, सो सादी श्रुमरि की है गई।
नेगी लीनो बोलि भूप प्याऊ करवाई
तुम राजा के पास जाउ, नेग करवाश्रो
नेगु कछू मति लइयो, नेगु चहियतु नाँय,
बेटी की भामरि डारि कें तुम कुमरि ऐं लै जाउ
चमरा लीनो बोलि घास दानो मगवायौ
मेख दई गडवाइ।
अरे राजा ऐसी बात चौ करतु ऐं सो मेरे आए नौ लाख हजार
करी तैयारी बरैनुआ मगवाश्रो
जौ ठाकरो[1] लावें बरौनिया तौ हमारी ब्याई रुपैगी रारि
उम्मरु गयौ दहलाय पुरोत अपनौ बुलवायौ
तुम लै जाश्रो बरैनुआ महाराज।
मान राजा के मान, मति घटाश्रो, सो हम लेइ कुमरि ऐं ब्याहि।
लै बरैनुआ पिरोत गयौ राजा भयौ खुस्याल
सो जल्दी करौ भामरि तुम डारौ सो दादा मेरे
सो मैं भोर होंत बिदा म्याते करि दऊ।
दै बरैनुआँ म्वाते आयें, उम्मर नें जब बचन उचारे
कहौ महाराज राजा नें क्या बचन उचारे
पाँति फाँति की कहा चली राजा लीजौ भामरि डारि
ऐसी जगि करी तैने म्वाँई, ऐसी ज्या मिलिवे की नाहि
नाऊ दीजौ भेजि भामरिन कौ सामान मँगाश्रो
मति करौ अवार जल्दी भामरि गिरवाऊँ
सो पाँति के भरोसें तुम मति रहियौ दादा मेरे

१. ठाकुर।

नग्गर ते दिये निवारि, करम लिखी होगी सो हम भुगतिगे।
लीनो कुमरू चौक बैठार्यौ, बेदी पंडित नें रचवाई।
सखिया गाइ रहीं मंगलचार
सो मुहरी वायते जा कुमरि कें सो बैरीन घर है गौ काज।
रोसमन्त है गयौ मान नें बादर फारे
सखिया देति विरहैन
मोसों राजा कैसें जीवैंगौ बैरीन घर कर दौ काजु।
भामरि दीनी गेरि खुसी भयौ उम्मरु राजा।
बेटी चहियत नाइ।
बेटी ऐ तुम अपने घर राखौ अपने लाला कौ करि लूगो दूसरौ ब्याहु
हाथ जोरि मान भयौ ठाडौ
तुम बेटी लैं जाउ दमाद हमारौ दिवला ई लागै
तीज सनूने की तौ कहा चलौ मेरें नित आऔ नित जाउ
बेटी तौ मेरी बहुत ऐ प्यारी, दमाद के लुगौ आदर भाव
पौफाटी पिअरा भयौ, भयौ ऐ सकारौ हा।
रानी वाछलि तपत रसोई है हा
जा मेरी बादी जा मेरी बादी राजै बोलिला
अरे सिरकार क मेरी हा
बिरम लकुट लई हात में राजा ऐ बोलन जाइ
सार खिनते सारिया राजा तोइ कैसी सार सुहाइ
महल बुलाए डोला पदमिनी राजा जी चलौ राउ जी हमारे साथ।
सार कड़ाई लई, तैं करी, फासे धरतु सम्हारि
गल माला रुदराछ जी राजा मुख ते राम जपाइ
आमतें देखे बालमा, रानी पलिका देति नवाइ
राजा कू तौ पलिका नवायौ
ढिंग बैठि गई मूढ़ा डारि
मोरछलीन कौ बीजना, रानी राजा कौ डारति ब्यारि
ठंडे पानी गरमु धरावै जल सियरे लैंति समोइ
चदन चौकी डारि कैं रानी राजा ऐ उमटि न्हवावैं।
पीताम्बर करी धोवती राजा सूरज ध्यान लगावैं
हुलसे[1] पै चदनु घिस्यौ राजा नरसींगी खौरि चढ़ावैं
सवा पहर सुमिरिन करयौ राजा जौनू डेढ़ पहर दिन आवैं
न्हायौ धोयौ सापरेराजा शुचि चौका में आये
काए के थार में भोजन परोसे रानी काए कटोरा में दूध
सोने के थार में भोजन परोसे राजा चाँदी कटोरा दूध
पहलौ गिरास धरतीं धर्‌यौ राजा दूजौ गाइ गिरासु

---

१. चकरिया।

सीजौनौर मुख में दीयौ राजा जाके गिरी नैन ते धार ऐं
जौरें ठाड़ी गोरें गगा भमानी पूछै राजा से बात ऐ
कै बलमा मेरे भोजन बिगरे सालो परी ऐ सिवार ऐं
कै वाऊ वैरी नें बोल बोले राजा, कै वाऊ ने श्राय दावी सीम ।
कै तेरौ घोडा हट्यौ कै रन लोटी तरवारि
ना चातुर तेरे भोजन बिगरे ना सालो परी ए सिवार
ना काऊ नें बोल बोले रानी ना काऊ नें दावी सीमऐं
ना चातुरि मेरौ घोड़ा हट्यौ ना लौंटी तरवारि
अन्न बिछना जग बग सूना, वस्तर सूनी माया ।
[हे रानी यह लाख खानू है
तोपन पै तोरा, यह के गीत, मगल चार कौन कै गवि रहे ऐं
'आपकी वस्ती में एक साहूकार ऐ श्रीमहाराज उसके नाती पैदा भयौ ऐ, हुब्ब के गीत उसके गवि रहे हैं, रानी धन्नि हमारी परालबदि ता दिना ब्याहि कै लाये ऐसी मौज कबऊँ न भयो] ।
नीम दैकै जनमु जाहरपीर कौ होइ
पन सारदा सुनै बोलो वागर के बीर की मदद ।
काऊ कै पुन्न परताप ते सभा जुरी श्राय
श्रापु नई उठि जाइयै गाय बजाय रिझाय
खरिया श्रोढि बुलाए राजा नें गोला कौ दह्यो लगाय
साडीमान बुलाए राजा नें कासी कू दऐ खदाइ
कासी सहर ते बिरमा बुलाइ लए कथा दई बैठाय
देस देस के पडित श्राये कथा रहे वे बाचि
बिरमा बाचै बेद कू राजा ऐ गाय सुनावे
एकु बिरामनु ज्यौं उठि बोल्यौ सुनि राजा मेरी बात ऐ
बेटा कौ तौ कहा चली राजा करमन में तौ बेटी नाऐं
इतनी बात सुनी राजा ने मारयौ गादी तैं हातु ऐं
जमदर काढि म्यान ते लीयौ हियरा कू लायौ राजा हात ं
काए कू जननी मैं तैं जन्यौ विसु दै डारयौ न मारि
ए बिरामनु ज्यौं उठि बोल्यौ सुनि राजा मेरी बातऐ

वार्ता—

काऊ के परताप तैं सभा जुरी श्राय
श्रापु ईं उठि जाइये गाय बजाय रिझाय
खरिया श्रोढि बुलाए राजा नें गोला कौ दह्यौ लगायौ
खोदत खोदत गए पाताले जाकौ श्रमिरत पानी पायौ ।
बेलदार राजा नें बुलवाए बागन की रौस डराई
घुर काबुल ते पौधि मगाई, धरवायौ लखेरा बागु ।
बाग बीच एक बारहद्वारी, फूला माली कीयौ रखवारौ ।

गरमी की मेवा फालसे लगाये राजा जाडे की मेंवा दाख ऐं
श्रामरे श्रामनि जामिन जम्हीरो फरोसौ कलन्दरी गहर सू गमीरी
सँतूत ताला किन्नौदे न बरनी आसले फालसे बहुत जामें खिरनी
नए नारियल दाख वारी चिरौंजी कजा जु रीठा कैतोर पान हो लगत बहुत मीठा
लगति बैरि मीठो नौज गोजा
सेंजनो कचनार सीसो नवोजा
रही वास महकाय चन्दन चमेली
सुतगुरू गुलीन गुलीन मुलगा
नौरग चमेली खूब रगा
कमल लैन रट्टी दौना जु मरुश्रो मिर्च लाल खडी
खैरा जू धौपरी गुलकज तोरा
सूरजमुखी फिरति नारि मोरा
लौंग रे इलायची की सदै क्यारी
झुके मद चरैं जाय वारी
कीरडि करीला छए वास गूबर
रैंमजा छौकरा धौन धौरी
हीसिया पीलुश्रा फेरि मोरी
हीसिया हसँडा वारि के बीस गगा
परी पापरी सँगर सिहोरे हवासिनि इतेक रूख जोरे
श्रलू श्ररलू पसेदू कदम कुड विराजैं
माधुरी लतान ज्या सवन मैं विराजैं
ज्या साल तेंदू
नपट नाग दोंनी
कामिन्न घनमिन्न मौदी
रौसन ववूरा सदारम सर्दै
हुसायन बकायन बडी वेलि पाई
घरि बेलि गुलम घरि जोरि महुश्रा रायन लभेडो गोंदी न गहश्रा
जावुमर श्राड वाडू करोदा न करेरे
खट्टा जु मिट्ठा निवुश्रा चनेरे
देखे वादाम देखे जो श्रगूरा
कीरारि वडोला छए वास वारी
केतकी न वेला केवडो नवीला
कैतन के पेड लगे जा वासो न छौरा
खन्नारि के पेड देखे वहुत ई मलूक जामें वामनी के पेड बहुत ई वीला
रामन जमामन कर के पौधा
रमासिनि भाई या नीलनाई पाई
वडे बडे पेड ज्या पीपर के भाई

नीव की निबोरी लगी, अम्मारतीन पे फूल झरे
वनकाट की लकडी रौस पै ठाडी ऐ
फेरि आए फुलवारी की बहाल तौ देखि रहे
मरूए की छबि न्यारी है
मरूए की छबि न्यारी गोल वे नीचें ढारो ए ।
मोरछली के पेड राजानें फुलवारी के बीच धरे
गुमटी दुरटा की भारी ऐ ।
एकु पेड पसेंदू को आयौ छबि जाकी न्यारी
ढरवारि भाइ जाइ, बेला कौ तमासौ एक फुलवारी न्यारी ऐ
फूलन के हजार देसे फुलवारी एक
हजारा गेंदा कौ भारी ऐ ।
खसबोई तौ आमति न्यारी न्यारी
झूटी साखि बमूर ने डारी ऐ
भौतु तौ सुहामनो फूल एकु देख्यौ
गोरखमुडी एक खेतन में न्यारी ऐ
अरे जारे माली के एक गोरख मुडी न लाए
सेंति मैंति की एक किसानू फुलवारी ऐ

वार्ता—

वास की डाली केरा के पत्ता फूल लए फल चारि
लै डाली म्हातें चल्यौ राजा की कचहरी आया
डाली धरी उतारि मालीने नवि नवि क मुजरा कीया
मैं तोइ पूछूं हीरामनि माली मेवा कहाते लाया
जो राजा तुमनें बाग लगायो मेवा राम बाग तें लाया
खुसी भयौ रे देसापति राजा माली कू दैतु इनामु ऐं
चढनौ तौ जानें घोडा दीयौ, उडनो बाजु ऐ

वार्ता—

जादिन बागु ब्याहिबे कू आमें तेरी राजी करि आमें
फूला माली बिदा करि दीयौ फुलवारी डाली पै आई राजा की आखें
फिरि राजा नें माली बुलवायौ बेटा वासी मेवा लायौ
अरे राजा परि सिगमरमर की बनी कचहरी पानो से बगला छाया
परि लागी भभैंक मेवा कुम्हलानी मैं फूल कालि के लाया
धनि धनि रे माली के बेटा तैंनें राख्यौ सभा में मानु ऐं
लै डाली म्हा तें चल्यौ आया बाग के बीच ऐ

वार्ता—

लै डाली मालिनि चली रानी के रावर आई
परि डाली धरो उतारि मालिनी मुरि मुरि पैरों लागी

मैं तोइ पूछू घर की मालिनि जा डाली में कहा लाई
तुमनें रानी बाग् लगायौ मेवा राम बाग ते लाई।
खुसी भई देसापति रानी मालिनि कू देति इनामु ऐ
परि दखिन का चीर, मुल्तान कौ आगों मालिनि कू देति गहाइ ऐ।
परि मुहर रूपयो से भरी छबरिया, मालिनी विदा हो आई
परि जा दिन बाग ब्याहिबे आमैं तेरी राजो करि आमैं
परि साझ भई दिन गयौ मुंदन कू राजा रावलि आयौ
लै मेवा आगें धरी जा खाइ लेउ राज कुमार ऐ
परि खाइ लेउ पीलेउ बिलसि लेउ राजा करि लेउ जिग्र को सार ऐ
करद निकारी फौलाद की फल पै धरतु जमाइ ऐ
राजा नें तो करद जमाई रानी नें पकर्यौ हातु ऐ
परि क्वारे बाग की मेवा न खागें ब्याहु करें जब खामें
होते में खायौ नाइ राजा पहर्यौ नाइ जुल्हालु ऐ
मरघट दिगें बोलना सूम उतार्यौ आइ ऐ
माया दीनी सूम कू ना बिलसै ना खाइ ऐ।
अरे राजा सरग हमारौ झौंपड़ा ज्या तौ आधा पार ऐ
जैसें बढ़ा दाइ कौ दियौ मुछौका जाइ ऐ
कलि करै सो अब्ब करि राजा कालि करै सो हाल
अरे तू कलि तौ ऐसी आवै दौऊन कौ है जाइ कालु ऐ
बोलौ बागर के पीर की मदद।
राति जगावै जोरै चिरागी
जनम सुनै व्वाकौ धरि कै कान
रिद्धि सिद्धि देता बहुतेरी कभी न आवै बिसकैं हानि
गोर्धन के माली नें धायौ वुसका बचन हुआ परमान
हीरालाल बनिया ने धायौ वुसने राजा निज कर राम
अपनो ई घोड़ा है अरे सजवाइ लै
मारू देस के हीरा हो उम्मर की हाथी सजवाइ
रानी को डोला सजवाइ, जाते बाइस्स लागें रे कहार
पाछें ते जाको बादी ऊ जाइ
दगरे दगरे जाकी फौज हरिगों, जाको लसकर झूमतु जाय
अरे बागन में राजा पहुच्यौ जाइ
बागन में जै जै ई जै जै होय
र न नें तबू दिये तौ डरकाय
जाको गडि गई पक्की मेख
राजा की खिचि गई रेसम डोरि
अरे जाते जरदी लागीं लाल कनात

राजा नें भट्टी दई खुदवाइ
जानें खाड दई गरवाइ
जानें नेगी लिए बुलवाइ
हरी हरी गिलम बिछो दरियाई, मुरबन जू ठसकत पाय
सोमा पातुरि राजा ने बुलवाई, ठनवायौ बागन में नाचु
छोटे छोटे छोरा नाचें ब्रजबासीन के चुटकीन में उडाइ रहे तान ऐ
डोला में ते रानी बोलौ करि लीजौ बाग को ब्याहु ऐ
काए काए में राजा मेरौ सींग रे मढावै
काए में खुरी मढवावै
सोने में राजा मेरौ सींग रे मढावै
रूपे में खुरी रे मढावै
अगिनि कुंड राजा नें खुदवायौ हुतिवे कू नागर पान ऐ
हुती ऐ लोग समद चंदन की और नागर पान ऐ
सुर गायन के धौल मगाये राजा ब्याँई देंतु ऐ ढरवाइ ऐ
एक झर तौ पाताल जायगी बासुकि देवता मगन है जाय
धनि धनि रे देवराय से राजा तेरे होइ बेटन औतार ऐ
एक झर तौ आगासैं जाइगी इंदुर देवता मगन है जाइ ऐ
बेटीन की तौ कहा चली राजा लाल तौ रोजु ई हुगे
अरे राजा काए काए को तौ भामरि लेगौ
काए की परिकम्मा देगौ
गोला ते भामरि लेगौ तुलसी की परिकम्मा देगौ
परि बागु ब्याहु ठाडौ भयौ राजा बिरपन कू देंतु इनामु ऐं
परि बिरपन कू तौ गैया दीनी, भाटन कडे पहिराये
डोमन कू तौ चीरा दीनें मीरासीन गाम इनाम ऐं
इक तखता में बिरामन जेमें दूजे में भैया बन्द ऐं
इक तखता में अभ्यागत जेमें चौथे में और भिकरौंडि ऐ
परि सबकू पाति जुगत ते परसौ मति करौ पाति में दुभाति ऐ
एकु एकु रुपया एकु एकु लडुआ बिरफन कू देंतु गहाइ ऐ
हुक्मु करें तौ गौरें गगा भमानी करि जाऊ बाग की सैर ऐ
एकु बिरामनु ब्यो उठि बोल्यौ मति जइयौ बाग की सैल ऐ
चारि घरी तौपै मूल की निछुत्तर मति जइयौ बाग की सैल ऐ
तुम तौ राजा नित नित आओ कब जावें राजकुमारि ऐ
अस्त्री पुरुख कौ सगु मिल्यौ ऐ जुरि मिलि कें करि लेंइ सैल ऐ
कौन के हाथ रे गडुअरा सोहै कौन के कुस की डार ऐ
रानी के हाथ गडुअरा सोहे राजा के कुस की डार ऐ
परि दिवराइ राजा हेम्ब हाकैगो झोरी बाघति राजकुमारि ऐ
परि मुहरन कौ तौ कूड लगावें मोतीन के जइया चारि ऐ

परि विरपन को कहनों नाइ मान्यो भुकि आयौ बाग के बीच ए
आगें आगें देखें तमासौ पाछें तें पतझर होइ ऐ
बोलो बागर के पीर को मदद,
नाम की खातरि रानी व्याही साहिब नें राखी बाँझि ऐ
परि नाम की खातरि बागु लगायौ मेरौ सूख्यौ लाखा बागु ऐ
परि तेगा काढि म्यान से लीयौ हियरा कू लायौ हातु ऐ
जोर ठाडी गोरैं गगा भमानी राजा को पकरति हातु ऐ
काए कू जननी तें में जन्यौ विसु दै डार्यौ न मारि
नाम की खातरि मैंने रानी ब्याही करता नें राखि दई बाँभि ऐ
नाम की खातरि मैंने बागु लगायौ, मेरौ सोऊ सूख्यौ बागु ऐ
पहलें बलमा मोइ माडारौ, फिरि करियो अपघातु ऐ
तोइ ना मारें, हम ना मरिगे, तजि जागे तेरा देस ऐ
परि दैदै पीडि जेट में रोबै दै मारैं रौंसन ते मूड ऐ।
मेरौ सूख्यौ ऐ नौलखा बागु राम तैनें कछू न करी
अरे दौना सूख्यौ मरुग्रौ सूख्यौ रायबेल चमेली
सबरे पेड नारियल सूखे सूखि गई ऐ बनराय, सूखी तौ चपे की डरी ॥ मेरौ०
अरे परि तिरिया नें मति हरी राजा रे साढू के बगला आयौ
परि आमतु देख्यौ देसापति राजा फाटिकु दयौ लगाय ऐ
परि मेरी कचहरी मति आवै राजा सौनें के खम्म दहलाइ
खम्मु गिरैं छज्जो गिरैं रुदि मरैं कचैरी को लोगु ऐ
पहलौ दोसु तोइ बो लग्यौ पतिभरता रहि गई बाझ ऐ
अरे साढू मति बोली मारैं, लाला बोली मति मारै
बिन दिन कू भूलि गयौ ऐ, रौतिक ते भाज्यौ आयौ।
अरे पामन में पन्हई नाई, तेरे सिर पै पगडी नाई।
अरे चढिवे कू घोडा नाग्रो, चढिवे कू घोडा दीयौ।
अरे तोइ ग्राधौ राजु दीयौ, अरे रहन कू महल दीनें।
अरे बरब्बरि को भैया कीयौ, अरे साढू मति बोली मारैं।
अरे बखतर कू फोरि गई ऐ, अरे पिंजर कू तोरि गई ऐ।
अरे गोनी को घाव भला ऐ।
अरे बोनी ते ससक्तु रहता, अरे गोली ते डोर रहता ॥ रे गो०
साढू मति बोली मारे
साढू मारे बोलना भए करेजा सालु ऐ
परि उलटो घोडी फेरि के राजा ग्राया महल के बीच।
घोडी पै ते ज्यों गिरैं राजा गिरहृ कबूतर न्याय
घोडी पै ते ज्यौ गिर्यौ रानी नें पकर्यौ हातु ऐ
रानी नें ता राजा पकर्यौ लै गयौ महल के बीच ऐ
अरी हम तो चले बनवास कू रानी तू जाने तेरो काम

बोलो बागर के वीर की मदद ।
बाछलि को पूत बाजर कू भूत, परचै की खातरि धाया ई ऐ
अजी हिन्दू मुसलमान दोना दीन थामें, बादशाह नहीं आया ई ऐ
गुसा भया बागर वोई राना, जब घोडा सजवाया ई ऐ
घोडा मारि गयो डिल्ली कू बास्याह जाइ जगाया ई ऐ
अजी लाल पलंग पै सोवै बास्याह पलके ते औंघा मारा ई ऐ
अजो दौरो आई बास्याई तेरी अम्मा कौं मरद सताया ई ऐ
पाच मोर और एक नारियल पीरजी को पजो उठाया ई ऐ
जब मेरो मालिकु महरि करै, सबु कुनबा जारति आया ई ऐ
महलन में राजा दवराय निरपु दुख्याइ
भली सी रानी किसिमिति में ई फलु नाइ
जोगी जती सेऐ मैंने इन पै मैंने डार्यो सुवाल
रानी और सब नथा गाथ, रानी किसिमित में तो फनु नांइ
अरे भली सी रानी०
रानी माल परगनो बहुत ऐ बैठो भूजो राजु
राजा माइ बिना कैसो माइकौ, पिय बिन कैसो सिंगार
घन बिनु नाइ घनेसुरो राजा ऋतु बिन नाइ मल्हार
महलन में रानी क्या रही ए समझाय ।
अरे सग सहली बोलि कै करि आमें गाइ बजाइ
गिया पनारे पौरि जू धनि ठाडी पकरि किवार ऐं ।
अरे बाह छडाऐं जातु ऐ निबल जानि के मोय ऐं
परि हिरदे में ते जाइगौ राजा मरद बदूगी तोय ऐं
जो तेरी मनसा जोग पै बाए कू कीयौ ब्याहु ऐ
परि नौ सै घोडी ले चड्यो बाबुल जी की पौरि ऐ
बनजारे की आगि ज्या गयो सिलगतो छोडि
अरे मेरे राजा जो तेरी मनसा जोग पै तपौ हमारे द्वार ऐं
मढी छवाइ दऊ काच की मढवाइ दऊ हीरा लाल ऐ
परि गगा मगाऊ हरद्वार की नित उठि करो असनान ऐ
भूखे तो भोजन करू हारे दाबू पाइ ऐ
ज्यो जोगु बनैं रानी क्यो बनिबे को नाइ ऐ
परि ऐसे जोग ना बनैं रहे भोग का भोग ऐ
अरे राजा साधू जन थमते भले जो मति के पूरे होइ
अरे राजा बदा पानी निरमला जो जल गहरा होइ
साधू जन थमते भले मति के पूरे हाइ
अरी रानी बदा पानो गादला बहता निरमल होइ
साधू जन रमते भले जाते दागु न लागै कोइ
अरे राजा मलखासा जामा बोरि कै किया भगम्मर भेस ऐ

अरे जाना किया भगम्मर वाना अरे रानी नादन में गेरू पुरवा
अरे अपनी चादरि मगवाई, जानें चिट्टी चादरि बोरो।
रानी माला हात गही ऐ
तुलसी की माला हात विराजै गोरख कू रही मनाइ ऐ
अजी जौजू वलमा दीसते धन ठाडी पकरि किवार ऐ
जब वलमा दीसे नई जे उलटी खाति पछारि ऐ
अरे चौपडिया के नीबरा तोइ डारू कटवाइ ऐ
परि तो तर वलमा पौढते में मिलती सौ सौ बार ऐ
राजा की लीली झुलमें थान पै पिंजरा में गगाराम ऐ
राजा नें अगला बगला वैठक छोडी और गेंदा फुलवारि ऐ
समझावें नगर के लोग मात मेरी काए कू रोवें
थोरे से जीतव के काजें चो नेनन कू खोवे
अरे टाप वे धरती ते मारें
दै दै मुह में सू डि पौरि प हाथी चिघारें
अरी मात तोइ जबर चोट लागी
तेरो राजा जोगी भयो करी जानें वनोवास त्यारी
आगें आगें दिवराय राजा पीछें राजकुमारि ऐ
एक वन नाख्यो, दोसरो, तीजे वन है गई साझ ऐ
फिरि पाछे कू देखतु ऐ राजा जि आमति राजकुमारि ऐ
गाम गैल दीखति नाइ राजा कहा करें गुजरान ऐ
गाम गैल दीसत नाइ रानी यही करे गुजरान ऐ
पात विछाओ वनफल खाओ रानी पातन में गुजरान ऐ
कहा॰रहे सौरि निहालिया कहा रहे राते पलग
कहा रहे राजा मूढा वैठना, कहा रहा राजकुमारि ऐ
घर रहे सौरि निहालिया रानी घर रहे राते पलग ऐ
घर रहे मूढा वैठने रानो घर रही राजकुमारि ऐ
ह्रा लकडो कडी जोरि कें राजा मेरे वैठी आच बराइ ऐ
अरी सोइ जा राजकुमारि अरे तेरो पहरो दूगो
अजी मैं ना सोऊ महाराज परयारो तिहारो नाइ
जब सोऊगो महाराज दुपट्टा के छोर तो गहाइ दै
हाथ की उगरिया मेरे मुट्ठे में लगाइ दे
धोंटू ऐ सिरहानें लगाइदे
सोइ गई राजकुमारि विपति की मारी
जि काए कू गैल चली ऐ
जाके पाँच चारि काटे लागे
मेरे राजाजी को हमु उडयो ऐ

रे यहर दलेले में ग्रायौ
ग्रासे के घोडा जाके फाके में बधे ऐं
नर्बुना हाथी जाकौ ब्योई घूमतु ऐ
नगर की प्रजा जाकी रोवै, ऐसौ राजा फेरि न मिलैगौ
ग्रजी कौन के हाथी कौन के घोडा ग्रपनी जानि मरदौ फाके में परी ऐ
ग्ररे भोर भयौ ऐ परभात, रानी बाछिल जागै
बोलो बागर के पीर की मदद ।
देवी सोइ गई भमन में नौरग पलग नवाई
ग्ररी नौरग पलग नवाइ
ग्राइत पाइत गेंदुवा ठाडौ बालम ढोरें ब्यारि ऐ
धूर उडी ब्रजराज की ग्रजी जिन गलियन की धूरि ऐ
ग्रजी जिन गलियन की धूरि ग्रग लागी लिपिटि नही
जम भाजे जात ऐं दूर ऐं ।

वार्ता—

ग्ररे चलि मेरे बेटा डिगरि चलौ हतिनापुर मनुग्रा ढारया
कैतौ रे गुरू गगाजी न्हवाइ दे नातौ छोडयौ जोगु ऐ
तो मैं तें गुरू जाउ न्हाइ लेंउ गोरख सी गगा
ग्ररे मैं मिलू कुटम में जाइ बाजरी बैं लु गी वगा
तम्मू मेख उखारि मेसे चेला कसना लियौ बनाइ ऐ
मजल्यौ मजल्यौ जोगी चाल्यौ मजल्यौ ऐं ग्रासन माड्यौ
ग्रासन माडि भगम्मर तान्यो बाबा बैठ्यौ जल थल पूरि ऐं
ग्रजमति के गुर तम्मू तनाऐ ग्रनहद के बाजे नाद ऐ
बिन खूटी बिन डोरि मेरे बाबा ग्रधर भगम्मर तान्या
परि सोमत जागे पाचौ पडा छठी कमता माइ ऐ
ग्ररी ए कैरी टिडोरी[1] कै बजारौ कै कौरो दल ग्राये
कै सिपाई कै रगीलो कै जरजोधन ग्रायौ
ग्ररे बेटा ना सिपाई ना रगीलो ना जरजोधन ग्रायौ
परि न टिडोरी ना बनजारो ना कौरो दल ग्राये
परि कजरी बन का गोरख जोगी[2] परमी न्हाइवे ग्रायौ
ग्ररी माता जा जोगी से बादु करूगौ मेरी सुधि नाद बजायौ
भाई जोगी जती से बादु न करना रहना दोऊ कर जोरैं
परि घुटी दवाई मुडिया जोगी जे तो ग्रपरपार ऐं
जोगी जती से वाद न करना रहना दोउ कर जोरैं
सेर चून दे पाइ पूजना जे जोगिन का बादु ऐ

---

१. टिडोरी से ग्रभिप्राय टिड्डी दल से प्रतीत होता है ।
२. गोरख नाथ को कजली बन का जोगी बताया गया है ।

७ कमर मुलक्का गल में सेली, अग भभूति लगी अलबेली
नागर पान चबाइ रह्यौ बीरा, सुघड नाथ रतनारे नैना
जाकें छोटी छोटी बावरी, जाके कथा झोरी फावरी
पाइ पदम झलकें आला, जाके गुदी परी वैजती माला
पादू पदम्म झलकें भारी, सदा नाथ को आज्ञाकारी
जापे मखमल की गूदरी, अरे सौनेउ की मूदरी
सो हीरा लाल लगे नग साचे गवा गुदरी में
सो कामरि ओढी स्याम कारी जि परभी बूझनु जातु ऐ
अरे लै पत्तुर औघरिया[1] चल्यौ
गामु नगर पूछत फिरयौ .
गगा दगरी कितमें गयौ
अरे राजन की ड्यौढ़ी पै गयौ
राजन कें परदन की रीति
तुम मति घुसौ महल के बीच
जब जाइ सुरति जोग की आई
हमकू परदा कैसौ रे भाई
सन्तनाम लै अलख जागायौ
भिच्छावारौ जाइ कहू न पायौ
तुही तुही करि बोल्यौ बानी
चोकि परी कौंता पटरानी
मोती मूगा मुक्ता लाल
भरि लाई सौने के थार
भरि लाई सौने की थारी, जे आइ भई ड्यौढीन पै ठाडी
नेंम धरम कू कौंता डरो, दे परिक्म्मा पाइन् परी
सो भूखे औ तौ भोजन जें लेउ, प्यासे औ तौ पानी पी लेउ
ए बाबा जी, रहि जाइगी नामना[2] तिहारी
सो दै जा जोगेसुर मोइ आसिरा[3]
अरी माता काकर पाथर क्या दिखलावै

---

१. औघरिया = औघड नाथ

२. नामना = यश ।

३. आसिरा—(आसिखा (पा) = आशीष, आशीर्वाद ।

मोड परभी को वखतु वतावें
एसा बात माइ ना सूझें परभी जाइ पडवनु बूझें
अरी कहा खेलें तेरे पाचौ वीर अरजुन, भीमा सहदेव भीम
सौ गचकीली कौ वन्यौ ऐ चौतरा ए वावाजी
सो गचकीली को बन्यौ ऐ चौंतरा ए वावाजी
देखि सीतल पेडु रो मल्हारी
म्या खेलें पाचौ पडवा
मालु कमता भेदु वतायौ, जब औघड पडन ढिंग आयौ
भीमसैंन भीयौ कीनौ, अब सहदेव ने दाबु दीयौ
गाडि कचैंरी पाड नादु फूकि दीयौ
अरे राजा बैठे न्याबु चुकावें, इदरु बैठे जलु बरसावै
बैठे जगल चरतो हिरनी।
हम जोगी कू बैठें ना वनें, नवैं कठ पदमिनी फिरतो, सिध गोरख जागैं
अरे बेटा उडता तीतुर उडता बाज, उडतौ जग हिबाई
हम जोगी से उडता ना बनें पाचौ जनो से टक्कर खाई, सिध गोरख जाग
अरे हम भी मरसी[४] तुम भी मरसी, मरसी कोट अठासी
बेद पढते बिरमा मरिगए, जे परी काल की फासी, सिध गोरख जागै
अरे काकौ गुरू तू काकौ चेला, कहा तो तिहारो नामु ऐ
अरे चेला गोरखनाथ को औघडिया मेरी नामु ऐ
अरे बेटा कजरी बन मेरौ स्थान, गुरू हमारे विद्यामान
हम आए तेरी परभी न्हान
तेरी कबे परेगी परभी पडा वेद की बताइ
अरे परभी पूजें सेठ साहूकार दुनिया और राजा
भैंनि भानजो न्योति जिमावें, जोरा औरू तीहरि पहरावें
जे करें गऊन के दान सौने में सींग मढ़ावें
सो सिर पैं टोपी, गाडि लगोटी, बूझन आए ए वावाजी
तुम दान गौ करोगे परमाधारी
सौ कहा गगा में तुम जी बवो
गरब की बोली जी मति मारो पडवा, वचन करोगे यादि ऐ
जा बोली को न्यानो दु गो बेटा, असलि गुरू को चेला
परि छिमा खाइ औघरिया चाल्यौ आयौ गुरून के पास ऐ
जे लें वावा झोरी पत्तुर नाइ सधै तेरौ जोगु ऐ
परि जोग नाइ जोहर भयो वावा विन खाडे सगरामु ऐ
बेटा के पडन्नें मार्यौ, छेड्यौ के पडनु दई गारी

---

४. 'मरसी' शब्द का रूप राजस्थानी मारवाडी प्रतीत होता है।

अरे बाबा ना पंडनु ने मार्यो छेड्यो ना पडनु दई गारी
अरे सवद की मार दई पडन्नें लीया करेजा काढि ऐ
बोलो बागर के पीर की मदद

८. मैं लई स्याम सरनि जमुना की तेरे चरन सिर लाग्या ध्यान
अब जोगी जती सती सन्यासी मगन होत धरि तेरा ध्यान
चार्यो पहर भजनों में रहते प्रात होत गंगा अस्नान
तीनि लोक तें वारी न्यारी मथुरा बेंदन गाई ऐ
चौबीस घाट की कहा कहूँ महिमा विच विसरांति बनाई ऐ
उज्जलि कुल चौबे गुजराती अपनो देह पुजाई ऐ
भूतेसुर कुतवाल सहर में केसवदेव ठकुराई ऐ
अलख निरंजन तेरो जस गामैं
मथुरा जी की पदम लटन में वह चली जमुना माई ऐ
अरे बेटा कैं पडन कै अगिनि लगाइ दऊ कैं कोढी करि डारौं
अगिन न देना, कोढी न करना बडा लगैं अपराधु ऐ
बडी जामैं गंगा माई की हरिलैं गंगा माइ ऐ
अरे सबरे चेला अरजौ करौ लैं चीपी झोली में धरी
बुन पडवन के मारो मान, गंगाजी हरी,
अरे बेटा सब तीरथ हरि लाऔ, मान पडन के मारौ जी
लैं पत्तुर औघरिया चल्यौ, गाम नगर पूछतु फिर्यौ
गंगा दगरौ कितमें गयो अजी गाय पछारि ढूंढा पीपरो
बाबाजी ग्वा गंगा को मारगु बन्यौ
जाकी नजरि परी धाराजी करवे पै ठाडो भयो
अरे हाथ जोरि गंगा खडी
जाअत्ते दीनदयाल महरि नाय नें करी
असलि गुरू के चेला हरिलैं मोइ पत्तुर बीच
अरी हटि हटि गंगा बावरी, हाथ मेरे फावरी
जिया जन्तु घन तोमें न्याइ, कोढी न्हाइ कलकी न्हाइ
हत्यारो न्हाइ मत्यारो न्हाइ, अब नाउय न्हाइ नैनिया न्हाइ
अरे मेरे हुक्मु गुरून की नाइ, गंगाजी तामें बोल न पाइ
अरी कि माता तेरो जल पारायन नाइ, हम तेरे जल में वचऊन न्हाइ
जोगी मिर्त लोक से छूटी धार, सिवसंकर नैं ओठ्यो भार
श्रीकृष्न के चरन रही, मैं महादेव के सीस रही
मोइ करि सेवा भागीरथु लायो
अरे वे बाबा चौरे में लाइ डारो, मज लोक आइ डारी
दुनियाँ न्हाति मोम पाप की भरी

अरे ज्या पत्तुर में क्वऊ न आऊ बाबा घर घर मांगी भीक ऐ
झोरी हमारी कामधेनु, ससार हमारी वारी
अरे जल कौ छोड़या करै जुवाव, सुनि री गंगा मेरी बात।
क्या लगायौ जोगी ते बादु, तुम ऐसी लहरि वहौ पटरानी
जोगी और जोगी को तौमरा, काऊ लोक कू वहि जाइ
बैठि मगर खार के बीच, जाइ काकरी सौ खाइ
अरी माता आइजा पत्तुर, है जा पवित्तुर, गुरू करैं निस्तारा
बाबा नें पहला पत्तुर बोरा दरयाइ में पहला समद समाना
दूजा पत्तुर बोरा दरयाइ में दूजा समद समाना
तीजा पत्तुर बोरा दरयाइ में तीजा समद समाना
चौथा पत्तुर बोरा दरयाय में चौथा समद समाना
पाचा पत्तुर बोरा दरयाय में पाचा समद समाना
•छठवा पत्तुर बोरा दरयाय में छठवा समद समाना
सतवा पत्तुर बोरा दरयाय में सतवा समद समाना
सातौ समद आठई गंगा नौसै नदी नवाडा
ताल पोखरा सबुई समाइ गए पत्तुर भरि ऐ नाइ ऐ हा हा।
मूगानाय गामैं, गुरू गोरख उस्ताद कू मनावैं
सुन्दरनाथ अर्थामैं छवि महरी की न्यारी ऐ
चोआ चदन और अरगजा यामे महक भारी ऐ
भीतर परसि कें आए पीर, भीतर ऊने आए
छवि डूगरऊ की न्यारी ऐं
डूगर की छवि न्यारी, डोरी नाथ ने उतारी
डोरी तौ उतारी जाकी सोभा बरनी न्यारी ऐ
ऐरापति हाती सजवाए लख चौरासी घट लगाए
नकुल कुमर हौदा बैठारे।
गतु, प्राकृत. मं. न्द्र्मति. लिखी. गैतो.
चलौ रे बेटा परभी सौमोती परौ
गैयन के से छूटे झुड रीते पाए रायाकुड
ददवल कुड, सकल बल तीरय गंगा में जलु नाएँ
हम परभी काए में न्हामैं।
बारू रेत के जमि रहे खासे
सैनै बेद सहदेव वाँचैं
माइ कमता पूछौ एक पोथी वा पै धरी
माता बाचि रही अमलोक, कैं गंगाजी भई अलोप
कैं सिवसकर सग गई
मोइ क्वाई की भरमु समानौ, गंगाजी मेरी क्वाई नें हरी
अरी माता सबरी पौहमि पै ढूढि ढूढ़ि मारू मेरी गंगा कहा लैं जायगी

अरे गगा में जलु नाएँ मेरे बेटा समद करौ असनान ऐं
गगा ते चलें समद पै आए समदुर में जलु हुतु नाएँ
समदर में जल नाएँ मेरे बेटा कूआ करौ असनान ऐं
समद चले गोला पै आए, गोला में जलु न पायौ
अरी गोला में जलु नाएँ मेरी माता कहा करें असनान ऐं
गोला में जलु नाएँ मेरे बेटा महल करौ असनान ऐं
गोला चले महल में आए, महलनु में जलु नाएँ
नेंक टिकौ मेरे अर्जुन बेटा, ठाकुर पूजा जाऊ
चली चली मदिर में आई, जल की घडिया पाई।
परि मन चगा कठौटी में गगा, परभी लई ऐं साधि ऐं,
राजाबाबू उगरी कू बोरें वहुतेरे म्वन लोटें।
अरे बेटा के बारी के बैंगन तोरे कै पनवारी के पान ऐं
कै तौ प्यासी गाय हटाई कै नौने बामन ललकारे
कै कोई जोगी कै कोई जगम कै कोई सिद्ध सतायौ
अरी माता ना बारी कै बैंगन तोरे ना पनवारी के पान ऐं
ना तौ प्यासी गाय हटाई ना बामन ललकारे
ना कोई जोगी न कोई जगम ना कोई सिद्ध सतायौ
परि मूरगा सौ एक जोगना परभी बूझन आयौ
परि परभी नाई बताई मेरी माता त्योई दियौ वहकाय ऐं
परि जानि गई पहिचानि गई वे आइ गए गोरखनाथ ऐ
व्याकौ रे औघरिया चेला हरि लै गयौ गगा माइ ऐ
गगा ढूढन निकरे हा, कौंती के पाचो हा।
मटक्त विकट उजार है हा।
अजी कघा गजा भीम ने धरी, माइ कमता सग लई
जे गगा ढूढन चले, कै पडा परवत पै चढे
अजी आमत देखें पाचौ पडा, पारवती म्वा घोटें मग
जै पडन देखि हसे, कि बाबा गुफा में घसे,

भीम— अरे जोगी अब कहा जातु ऐ बदन दुराई
तू दै जा मेरी गगा माई
परबत की करि डारू छार
मेरी गगा जी हरि लाए, क्व कौ हौ दामनगीर

कुती— सरण दुमवाइ सोर में धरी, हाथ जौरि पाभन तर परी।

शिव— अरे बेटा *एक गगाजी भागीरथ लै गयौ राजा सगर कौ नाती*
राजा सगर कौ नाती बेटा दिलीप कौ, राजा
लै गगा जी न्यान चल्यौ दाने[1] नें लई ए घुटाइ ऐ

---

१. पुराण के जन्हु 'दाने' हो गये हैं।

जब दाने की जाँघ चीरी गंगा ने लीयौ परभाइ[२] ऐ

वार्ता—

गोरख— मेरे पास भभूत कौ गोला जल में दुंगो डारि ऐ
जल में दुंगो डारि पंडवा सूखौ लेउ निकारि ऐ
सूखौ लेउ निकारि मेरे बेटा घिसि घिसि ग्रग लगाऊं
सकल बरन ते कपडा उतारे कूदि परे जल बीच ऐं
परि पहलो डूबक मारी पंडवा सोने के जौ लाए
परि दूसरी डूबक मारी पंडवा चाँदी के जौ लाए
परि तीसरी डूबक मारें पडवा तांबे के जौ लाए
चौथी डूबक मारें पंडवा लोहे के जौ लाए
परि पाचई डूबक मारें पंडवा पाँडौ माटी लाए

कुंती—ग्ररे बाबा सैर दलेले की रानी बाझ, रोबति ऐ सबेरे साझ
बुन की कोखि हरी करैं बाबा तेरी जब जानू करामाति

बाछ०—ग्ररी मैना तेरे ऐ तीरथ कौ धाम, जोगी जती करें ग्रसनान
कोई पूरौ सिद्ध ग्रावै बेलौ बागर भेजि री

गो०—ग्ररी हतिनापुर की रानी, तैनें बात कहीए स्यानी
मेरे हिरदै बोच समानी
तोड़ गगा दीनी कौल की, तोड़ परी का ग्रौर की
तुम सबी कूच करौ, क बेलौ बागर कू चलौ
बोलोई बागर कौ पीर मदद ।

१०. चलि मेरे बेटा चलि मेरे बेटा
डिगरि चलौ ग्रौघरिया चेला हा
चलि मेरे बेटा डिगरि चलौ नगरी कौ लोगु दुख्याना
तम्बू मेख उखारि मेरे चेला कसना लीयौ बनाय
देसु भलो रे पच्छिम की धरती ग्रौर मिठ बोला लोगु ऐ
पानी मागे दूधु रे पिलामें देसु भलौ हरिग्राना ।
घर घर गोरी हासिलो मिरगा नैनी नारि
पानी मागें दूध रे पिग्रामें देसु भलौ हरिग्राना
देसु भलौ हरिग्राना बेटा दही दूध कौ खाना
मजी काम जाम हाकि दीए, लये ऊ कूच कीए
जाते बोलें गोरखनाथ बेटा देस कौन रे

गो०—बाबाजी चलतू भगारी, बागर छोड़ि दई पिछारी
सैर कामरू घना
भामनु करौ बनाइ, तम्बू नायको तना
हाती पीलमा साए, तम्बू टाडे करवाए

२. प्रवाह का रूप 'परभाइ' हुग्रा है

रूपि गई तम्बून की कनात, जुरि गई जोगीन की जमाति ।
जिननें ग्रासनु करयो बनाइ, कि तम्बू मौंरे पै तनो ।
धायो भूभरिया चेला, दीयो धोबिन के डेरा
धोबिन ग्रादर भाव कीयो, जानें मूढा डारि दीयो ।
जानें पढ़ि पढि सरसो मारी, नाथ की ग्रकलि गुम्म करि डारो
जानें कबरा गधा बनायौ, हाकि घूरें पै दीयौ
धायौ कानो का चेला, दीयौ घोमरि कें डेरा
घोमरि ग्रादर भाव कीयौ, जानें मूढा डारि दीयो ।
जानें पढि पढि सरसो मारी, नाथ की ग्रकलि गुम्म करि डारो
जानें बकरा करि बिरमायो, बाधि खूटा ते दीयौ ।
बेटा बस्ती बडी लम्यौ परकोटा, सबु बस्ती को एकु लपेटा
तुम छोड़ो फुड़ी पटको सोटा
तुम भाव मुमति लै ग्राग्रो चेला बेगि जाउ रे
कामरू की नारी, ग्रजी विद्यामान भारी
छोडि बरिसाल छोडो कालिका भमानो,
मेंढा ग्रौर बकरा कीए जोगीन के बालका
ग्रौघडनाथ गए तेली कें मुडा बैलु बनायौ हाकि पाटि में दीया
ग्रजी दम्मक दम्मा घानी पेलै, तेलिनि हातु सबेरौ फेरै
चुनी चोकले बेनई खाइ, ग्रजी पीना में मु ह मारें, प्याहु तैलिनिया करै
हाथु झोरी में डार्यौ, चेला सोकनाथु काढ़यौ
कर जोरि भयौ ठाडौ
मैं हुकमु नाथ पाऊ, गढ कामरू चेताऊ
गुरू ने पजौ धरि दीयौ, नीरू सोखि सबु लीयौ
दुनिया प्यास तौ मरी
जब जेहरि धरि लई सीस नारि पानी कू चली
नैनी मृगनैनी ग्रोढें प्रेम पीताम्बर मारी
ग्रागो गात न सम्हारी
चालि मधुर सी चली
जेहरि धरी उतारि नजरि नाथ की परी
गोरखनाथ धारो, विद्यामानं एं जे भारी
इननें विद्या परकासी, विद्या बाधि मनु लई
जब गधई करि कें नारि हाकि झोल में दई
कामरू देस की सबरी महरिया सबु गधई करि डारी
परि महलो रहनों पान चबानी बूढ़ू धूसि करि डारो
एक जाट नें करी लुगाई रोटीन को पेंडो देखें
बोलो बागर के पीर की मदद . .

वार्ता--

११. चलि मेरे बेटा डिगरि चलो हरिग्राने कू करो कूंचु ऐं
उखरी तम्मू ग्रौर कनात, चलि दई जोगीन की जमात
जाते बोले गोरखनाथ
बेटा हरिग्राने कू चलौ
मजल्यौ मजल्यौ जोगी चाल्यौ मजल्यौ पै ग्रासन माड्यौ
ग्रासनु मांडि भगम्मरू तान्यौ बैठ्यौ जलु थलु पूरि ऐ
हरिग्राने की सीम में बाबा नें बजाइ दयौ नाउ ऐं
हरिग्राने की रानी बोली, जे ग्राइ गए भौलानाथ ऐं
ग्ररे जा मेरे बेटा डिगरि चलौ दूध के भोजन लाइदें
ग्रन्न के भोजन ना मैं जेऊ बेटा दूध के भोजन लाइदें
ग्रजी लै पत्तुर ग्रौघरिया चल्यौ
ग्रोघड करी नाद में घोर, जब चौंकें जगल के मोर
हाजुर ऐ सौ भेजि माता
बाबा दूधाहारी ऐ
ग्रन्न के भोजन नाइ लेइ माता बाबा दूधाधारी
कै तो माता दूध री पिलाइ दै ना तौ ग्रोटि सरापु ऐ
नाद में नाएँ, गोद में नाएँ दूध कहा ते लाऊं
पार के नाएँ परौसी कै नाएँ दूध कहाँ ते लाऊ
गाम में नाँएँ परगने में नाए मै दूध कहा ते लाऊं
ग्ररी कै तौ माता दूध री पिलाइदै ना तौ ग्रोटि सरापु ऐ
ग्ररे न्हाइ धोइ कुमरि चौकी भई ठाडी, सुरति करताते लगाइ लई
बाबाजी मेरे ख्याल परया ऐ
बेटा जसरत के उदई के नाती, मेरी तुमई ते डोरि लगी ऐ
जाकी छूटी कुचा ते धार धार पत्तुर में ग्राइ गई
जानें पत्तुर भरयौ ऐ भकोरि दुग्रा मेरे गुरू की ग्राइ गई
ग्ररे क्या तुम देऊ भोलानाथ कहा मेरें हतु नाएँ
ग्रजी जे तुमनें माग्यौ नाथ दूध मेरें हतु नाएँ
ग्ररी माता नौ कोठी मारवाड में
छप्पन कोट हरिग्रानो
बारह पालि मेवाति ऐ
ग्रन्न घाल परि जाय
पानी के जवाल परि जाइ
परि दूध घनेरा होइगा
बोलो बागर ई पीर की मदद ।

१२. किए कूच पै कूच सग सरू चेला लै लीये
राजा उम्मर के बाग माय ने डेरा दै दीये

सूखे बाग में मति रहै बाबा काऊ हरियल में चलि रहना
सूखौ से तौ हर्‌यौ है जाइगौ ग्राज बाग गुजरान ऐ
नगरी ते कूरौ बटोरिला बेटा जामें दै दै ग्रागि ऐ
धूनी दई धूम्रा घुमडानौ मौर रही बनराय ऐ
परि हरी डारि पै हरियल बोल्यौ मुनिया लाल झिगारे
परि लालामी धौपरिया मार्‌यौ गिर्‌यौ छोडिगौ बेला
ग्ररे बाबा गलगलौ बोलि गलगला बोल्यौ
स्यापु झिगार्‌यौ कलजुग की बिलैया बोली
मू सौ ढूकतु ग्रायौ
परि सुपरभात करन कौ ऐ पहरौ नगर तमासे ग्रायौ
परि धनि धनि रे कलि गोरख जोगी हर्‌यौ कियौ तैनें बागु ऐ
ग्ररे बेटा मूक प्यास की काई नाइ बूझै दडौतन के ढेर ऐं
ग्ररे प्यास लग्यौ ग्रोघडिया चेला घूटक पानी प्याइ दै
परि बाबा जौरें बाग में गोला हो तौ बागु सूखि चौं जातौ
ग्ररे बेटा जा राजा नें बागु लगायौ पहलें खुदायौ होगौ कूग्रा।
पीर की मदद

१४. ग्ररे लै लई लामा डोरि
नाथु गोला पै ग्रायौ
कूग्रा पै जी पाए चौकीदार ग्ररे तौ जलु जहर बतायौ
जल मत पीवै नाथ ग्ररे पीयत मरि जाइगौ
राजा नें रखबारी बैठारे
मारें दहसति के मारे
मैंने जी ढूढ़े तीना लोक जहर मोइ कहू नाइ पायौ
मैं ग्राइ गयौ बागर देस जहर कूग्रा में पाइगयौ
चेला के जी मन में पाप नाथ की टोपी लु गौ
लगोटी लु गौ
बाबाजी कौ चकमक बटुग्रा लु गो
पाइ खडाऊ हातीदात की बैजतो माला लु गौ
बाबा की लोहुरी सुमिरिनी हात की ऐ लै लुगौ
मुगेरी मोटा लै लुगौ
जावौ कोतल घोडा लुगौ
सबरौ लउ ग्रसबाब नाथ कू टोवि लकडिया दुगौ
इतनौ पापु बिचारि नाथ नें तौमा फास्यौ
तौमा दोया फांसि नाथ ऐ जलु नाइ पायौ
देखे बावरी लाल नाथ गहभरि कैं रोयौ
राजा कौ मोह दोमु दाम ग्रपने करमन कौ
जो दुग लिगौ ऐ लिलार नाथ सोई भुक्‌त्यौ चहियें

मन में बड़ौ घबड़ानौं
अरे आयौ गुरू जी कौ नाम् गोला तौ मुंहड़े जूं उमग्यौ
पानी पाछे भमारियौ, मरूए ते लाग्यौ
अरे ड़ोड़ा चलि बाज्यौ फुलवारी में लाग्यौ
अरे तौमां भर्यौ ऐ भकोरि नाथ के आसन आइ गयौ
अजी तौमा धर्यौ ऐ अगार सरकि पीछें भयौ ठाड़ौ
बरकिगे भोलानाथ चेला तौ मेरौ कहां गयौ ऐ
बाबाजी मैं पाछें ठाड़ौ ·
अरे बेटा नेंक आगें आइजा, कुल्ला करवाइजा
अरे नेंक थोरौ सौ पीलै पानी
पानी के बदा जौरें न जाइगौ
बाबा सुनि आयौ मैं पानी कौ बतायौ
जहर ऐ पानी, पीऐ ते है जाउगे नाथ गुरमानी
अरे बाबाजी पीवैं तौ पीलैं नाथ अरे नेंई लुढकाइदै
अरे नंई उल्ले तें पल्ले ऐं प्याइ दै
अजी आकनाथ ढाकनाथ पत्थरनाथ
नंई सबु चेलनें प्याइदें
पानी के जौरें न जागौ

वार्ता—

रंगी चंगी बौ भौनारी, खोटी भौंह मुलम्मे डारी ।
घिसि घिसि एडी धौवें नारि, उनके गोरख द्वार न जाइ
बाती खेंचि चूल्हि में देई. हौलें हौलें मेरी चन्दो मगरे लेइ
झंगा बिछावें सोवे नारि, पार परोसिन जौरें न जाइ
हीसतई ब्याइ छोड़ौ कठ, सोमत ई ब्याके देखौ दंत
रोमीत पीसे, सिनकित पवे, सदां दिलद्दर उनकें रहै
तिल भौरी मांमे मसौ
भौर कनफुटी लीक, भाजनों होइ तौ भाजि कंता नइ बेगि मगावै भीक ।
अरे बनि ठन औघडनाथ बस्ती में आइगयौ
मागत जी मागत नाथ पल्ली होर कूं निकरि गयौ
नाऊन के माउ
जाते कोई माई मुसना बोलें, औघड़ गलियन में डोलें
कुपटा पै पचैया, गलियन में गैरा
एक सती ज्यों बैठे राज कौ ऐं बेटा
जाके गुरू नें रंदायौ जे तौ मागि न जानें भीख
जाके घर में नारि करकसा
जाकें मारी बोली, जाई ते भैना है गयौ जोगी

गुवर पायती नारि अरे ललनाएं खिलावै
अरे पलना में झुलावै
अरे तुम कहा गये भोलानाथ अरे मोइ न बतावै
मैया री मेरी मैं मागन आयौ भीख मेरे गुरू नें खदायौ
जिम्र देखि राजकुमार क मेरो तौमा रीतो
जा नगर कौ पापी राजा रैयति लंगयौ डाँडि ऐ
राजा नें सब परजा डाडी काऊ में आसति नाएँ
अरी मोइ भीख न डारै
भलौ रे नगर, धरमातमा राजा, बाबाजी तुम अभागे डो
ऊची पौरी बक दुवारी एक दता झूमै द्वार
रानी बाछिल नगर दुहाई जब रैयति घर पावै
बुनकेंते लै आवै रे बाबा जब रैयति घर पावै
गोई ग्वेई महल बताइदै ठकुरानी नाय निवाजै तोइ
नाथ निवाजें सबु दुख भाजें
जो तुम करौ सोई तुमें छाजै
रानी बाछिल की पौरि पै औघड कौ बाज्यौ नादु ऐ
पीर की मदद ।

१४. चीर उतारि धरयौ री रानी नें सिर ते लोटा ढारयौ
एक हात ते लोटा ढारै दूजें तै मोडै पीठि ऐं
सुनिलै री रुकमा दै बादी बाबा कें डारि जा भीक ऐ
भीक लै तो भीक दैआ नही बातन में विरमाइलै
थार भरे री गजमानिक मोती थार बाधी भरी भिच्छा लाइ
लैंतु ऐ तौ तू लै वजमारे मारू ढकेला चारि ऐ
परि बादी ते बादी कही तब मन में है गई आगि ऐ
पकरि पाम चौखटि ते मारू डाढ दात जाइ टूटि ऐं ।
डाढ दाति जाइ टूटि बजमारे करि करि हलुआ खाइ ऐ
परि बादी गारी दै गई सतगुर की जीतव नाएँ
परि आगें आ मैया आगें आ तेरे लऊ हाथ की भीक ऐ
परि आगें लई बुलाइ बावनें स्वाफी दई बिछाइ ऐ
पहलौ सोटा ऐसो मारयौ गयौ हाथ ते थारू ऐं
दूजो सोटा ऐसौ मारयौ भयौ चुरीनु कौ ढेरु ऐ
तीजो सोटा ऐसौ मारयौ डारयौ कनफटी फोरि ऐ
डारि फोरिया निबिरि गया जब बग करि बस करि होइ ऐ
परि आपनु रानी न्हवन सजोवै जोगीन पै पिटवावै
बे बाबा ते घर घर डोलें वे काऊ ना मारें
तुम बाबा ते कुबचन बोली बाबा नें सजा लगाई
परि खाल कढाऊ तेरी, भुस भरिवाइ दऊ बाबाजी ऐ लाइ दै बोलि ऐ

भरे रानी जहा भेजें म्वा जाऊं मेरी रानी बाबा मांऊ थेब न जाऊंगी
परि भकर भकर वाकी आखि वरें सोटन की मार लगावें
भरी महल चढ़ी तोइ बोलें कमंता सुनि बाबाजी बात ऐ
पीर की मदद ।

१५. पतिभरता के द्वार नाथ नें नादु बजाइ दयौ
थार भरे गजमानिक मोती रानी भिच्छा लावें
लीजौ रे परदेसी बाबा जोगी आस्या लागी तेरी
तेरे हात की भिच्छा न लगौ माता बालातन की बांझ ऐ
बांदी आई मेरी मारि कें बिडारी मोइ का ऐबु लगावें
नांती हमारे पलना में झूलें बाबा बेटा गए रे सिकार ऐ
पांच चारि तौ घर आगन खेलें द्वै भेंसिन पै ग्वार ऐ
जो मैंया तेरें लालु घनेरे एक फलु माग्यौ देना
तीरथ बरत करावे बहुतेरे तेरा हूँ तोइ मिलायें
सुनियों री मेरी पार री परौसिन जा बाबा के बोल ऐं
में आई बाबा पै मागन बाबा बेटा मागौ
तुम रे गुरू मेंने सेए घनेरे पूरी मेरी काऊनें न पारी
हा जो सेओ जो निगुरो सेओ सतगुरू भेंट्यो नाइ ऐ
जाइ नाइ सेवें माता मेरे गुरू ऐ हरयौ री कीयौ तेरौ बागु ऐ
नामु सुन्यौ रे जाने हरे रे बाग कौ सीतल भयौ रे सरीरू ऐ
कौन गुरू रे तुम का के चेला कहा तिहारौ नामु ऐ
चेला गोरखनाथ की ओघडिया मेरो नामु ऐ
नामु सुन्यों गोरख जोगी कौ जाकौ सीतल भयौ सरीरू ऐ
हा बाबाजो बैठि जा गुरू कह देउ मन की बात ऐ
चारि घरी रे बातन बिरमायौ तौजू भोजन है गए त्यार ऐ
आ बाला जी बैठिजा गुरू बैठि कें देउ जिमाइ ऐ
लै पत्तुर आगें धरयो जाइ भरि दे राजकुमारि ऐ
दावि भरूं तेरौ पत्तुर फुटें वहि में भोजन छीजें
छोटौ पत्तुर मुकति घनेरी कहौ नाथ क्या कीजें
सैंज ई लैंन सहन ई देना सहज करो ठकुरानी
सहज ई सहज करौ ठकुरानी पत्तुर सब कौ करें सम्याई
भरे बाबा बारह भेंगी पकमान समाइ गए दस बूरे के माट ऐ
परि सोलह कलस जामें घी के समाइगए पत्तुर भरिऐ नाइ
उभकि उभकि पति भरता देखें भरें न रीतौ होइ ऐ
पत्तुर पूजि घतरू पूजि कालकंट भाजें दूरि
जा भंडार तें आवें सदा भरपूर

धतरदास करने की बानी
क्या करने कू क्या करें

रीते मंदिर फेरि भी भरें
जो बाबा महरि करें ।
आगें आगें औघड चेला जाके पीछें राजकुमारि ऐ
जबई बाग किनारे आई सतगुर की खुलि गई तारी
में बावरिया नगर खदायौ बेटा घरबारौ बनि आयौ
कैरे ठगी तैंनें गाई माई कैरेठग्यौ घरबारौ
नाइ ठगी गाई माई नाइ ठग्यौ घर बारौ
सवा लाख बागर को रानी सेवा करन तेरी आई
सेवा करन तेरी आई लटघारी बाबा भाजन मौतिक लाई
जा मैया पै सेवा न होइगी बेटा जा धरू राजु रिस्याइ ऐ
जोगी नाव परी मझधार पार मोइ करजा रे जोगी
नामना बाबा रहि जाइगो तेरी
मो घर कोई न रिझाइ पिया परदेस गयौ मेरौ
आसरौ बाबा आइकें लियौ ऐ तेरौ
परि जें कंचन सी देह खाक में लगाइ लऊ तन में
सेवा की बाबा लागि रही मन में ।
अरी माता तिहारौ तौ रहनो महरौ मन्दिर न्या जगल कौ बासा
अरे बाबा तुम तौ रहियो महरो मन्दिर में न्याई करू गुजरान ऐ
अरी माता तिहारौ तौ खानो पानु मिठाई, हमारौ आक धतूरौ
अरे बाबा तुम तौ खइया पानु मिठाई आक धतूरौ खाऊ
परि दाब[1] काटि करि लीयौ बिछौना आसन लेंति बनाइ ऐ
परि चौदहसौ धूनी रोजु लगावैं चौदह सैंनु डारि डारि आवैं
परि मूंड छबरिया हात बुहरिया बेसन के पग झारें
परि एक हात ते सूआ पढावैं दाए ते ढौरति ब्यारि ऐ
परि सूआ पढामति गनिका तरि गई बाछलि तिरि गई गोरख ते
चारि महीना पडे जडकारे जाडेन के जमि गए पारे
चारि महीना परी घौपरी रमि गयौ बोलन हारौ
परि बोलन हारौ रमि गयौ माटी रही निघान ऐ
पच्छिम दिसा की आंधी आई बाछिल की बध्यौ मटूला
चारि महीना घोरि घोरि बरस्यौ ऊपर घागु हरियानी
कानो में पछी अडा धरि गए मिकुला है उडि जाना
परि बाछलि बमई है गई मरप रहे लिपटाइ
बारह वर्ष में तीनि दिन बाकी जागे गोरखनाथ ऐ
परि मुनितें रे औघडिया चेला वो माई कहां गई ऐ
परि कुड जराइ दई आगि खबरि मोइ नाइ रही ऐ

---

[1] दाब—दाभ, दूर्वा ।

परि जोगी उठियो लहराइ हात लई पावरी
सीसु बचायौ नाथ पिंजरा झारि डारयौ
परि सिर पै धरि दीयौ हातु भमानी करि डारी ऐं
तू अपने घर जाउ तपस्या पूरन भई
मैं सोइ गई भोलानाथ तपस्या नाइ भई
अरी ऐसे भोजन लाउ व्वा दिन लाई री
हुक्म देउ तौ जाउ वे हुकमे ना जाइबे की।
अज्ञा मागि भोरी माइ महल पग धारै
पीर की मदद।

१६　सब पीरो में पीर औलिया जाहरपीर दिमाना है
दोनो जोरुआ मारि गिराए कीया राज अमाना ऐं
डिल्ली के आलमसाह बादसाइ विदरशाह बनाई ऐं
हेम सहाय ने कलस चढाए, दुनिया झारत[1] आई ऐं
मकुवा हाती जरद अम्बारी जिही तुमारे काम का
नवल नाथ साचा करि गायें बासी बिन्दावन धाम का जी
ठगन बिरानी आस ठगिनी आमति ऐं
मैंना मिलि लै कंठ मिलाइ मौतु दिन निछुडी जी
अरी जोगी का दोसु सरीरू तुजाइ ली री
गुर गारी मति देइ कठिन है जाइगी
गुरुन के पूजा पाइ गुरु नौति जिमाइ लै री
गुरु मेरे भोलानाथ भैनि मति कोसै री
कासी सहर ते पंडित आए री पुस्तक लै आए री
पुस्तक लाए मेरी भैनि मौतु समझाई री
घजी आजु नगर में तीज मैना कपडा मोइ दे री
जे कपडा ना दैउ और लै जइयौ री
अरी गुन में दे द आगि पुराने भैना मोइ दे री
अरी दुहरे तिहरे थान रेसमी जोरा री
कम्मर के लै जाओ जामें बड बडे इब्बा री
नैनू की चादरि लैजा जामें जरद किनारी री
मिसरू की चादरि लैजा जामें गोटा लगि रहयौ जी
अरी ऐसे मति वालै थाल करूगी हत्यारी
वगुदा लै लीओ हात बुरज पै चढि गई री
सुनो वस्ती के लोग याइ हत्या दै दैउ री
तेरे पिछवारै नदी आई मैं बहि जाऊगी री
तेरे अगना में कुइया भडकि मरि जाऊगी री

१ ज्यारत।

अरी छै पसेरी बिसु खाउ टका भरि तोइ देंऊ री
पौनी ते फारू पेट् सरवा में डूबू री
अरी ना कपडा देइ नाइ मुख ते बोलूं री
कलिकी असलि भमानी जानें बगदि बुलाइ लई री
कपडा दिए उतारि जबई मन फूलो री
फूली अगना समाइ कुठीला रानी है गई री
अरे सेरक चामर रांधि नाय पै आवें री
भोजन धरे ऐं अगार सरकि पीछेंई ठाडी री
अरे भोजन भोग लगाइ महरि करि मापै री
बावाजी भोजन भोग लगाइ महरि करि मोपैरे
अजी बरक्गि भोलानाथ बेटा बे माई नाएं रे
अजी औघड भरि गयौ साखि औरु ना आवें रे
बौ माई पिअरी पिअरी ब्वाइ बोलें बोलु न आवें रे
बेटा बो माई हति नाइ हलमुष्टी कहति आई री
बेटा बो माई हति नाइ बेटा जीभ घनेरी लाई री
अरे बेटा वुही ऐ गाई गुई है माई ला वटुआ दरिआई
अजी बटुआ में डारयौ हालु जाल द्वै जो पाए री
अरी सत के तौ लं जाइ फलें औरु फूलें री
अरी वें सत के लैंजाइ होत भरि जाइगी री
अजी डाढी में दै दऊ आगि नाय मति कोसें रे
पीर की मदद ।

१७. अरी मैना जोगी डिगरें जाइ राड तनें सेए री
अरे भरि वहगीनु में मालु बाग पगु धारें री
ठाडो रहौ जोगी तनक तुम ठाडे बाबाजी
गाइ दुहाई मैंने खीरि रधाइ लई जोगी जी
गाइ दुहाई मैंने खीरि रधाई सौ मन कीनी लपसी
ए तेरे काजें मैंने गूदरी सिमाइ लई तेरे चेलन कू टोपी
मैंने तौ जानौ सतगुरु मिल्यौ अरे बाबा निकरयौ ऐ असलि करोलु
बाबाजी बिरफल है गई ग्यास जी
ए पति पै खेली नौऊ न्यौरता
अरे बाबा सपति पै उजई ग्यास जी
अरी ऐसी फावरो मारि बेटा ठगिनी आवै री
ऐसी फावरी मारि बेटा इतमें न आवें री
सुन्यौ फावरी को नाउ मैया गहभरि रोवें री
ठाडौ रहि बीरा रे बाट बटाहिया मेरे मा के जाए होजी
अरे तैनें कहू देखे गोरखनाथ जी
अरी पूनी न मेंतें भौंरा बन्यौ अरी माता क्या पूछति ऐ मोइ

अरे जिन धूनी में भारो जरि मरीछु अरी में फूल पहुँचाऊ वाके गंगाजी
बाबाजी पेड जी वए बमूर के मैं ग्राम कहा ते खाउ ऐं
मैंया परि तेरो सूरति तेरी मूरति तेरे नगर कोई ग्रौर ऐं
बाबाजी मेरी सूरति मेरी मूरति मा की जाई बहना
मेरी सूरति मेरे कपडा माकी जाई बहना ।
परि महलन में तौ माइ ठगि लाइ भाग प्याइ गई तोइ ऐ
मैंया क्या ठगिनी ऐं ठगि लैं जानदे माता ख्वाइ ठगें भगमानु ऐं
परि सेवा मारी गई मैंया ग्रौर करैं फलु पावैं
बाबाजी अब सेवा कैसें करू जागी डिगविग डोलैं नारि ऐ
परि अब सेवा कैसें करू माता धौरे परि गए बार ऐ
बाबाजी अब सेवा कैसें करू बाबा हालन लागे दात ऐ
बाबा परि मौति बुढापा आपता सबु काऊ कू होइ ऐ
पीर की मदद ।

१८ अरे दाब काटिकरि लीयौ बिछौना ग्रासन लेति बनाइ ऐ
अरे खलका छोडिकें गोरख चाले ठाकुर पैं कीनी फिरादि ऐं
ठाकुर ज्ञानी क्या उठि बोल्यौ चौ ग्रायौ मारे लोका में
रानी बाछलि करी तपस्या फलु दीजौ पति भरता कू
परि नाद में नाऐं, वेद म नाऐं फलु नाऐं चारौ जुग में
गोरख चाले ठाकुर चाले जब ग्राए सिवसंकर पैं
महादेव जोगी क्या उठि बोल्यौ चौ ग्रायौ म्हारे लोकों में
अजी बाबा पति भरता ने करो तपस्या फलु दीजौ पति भरता कू
ठाडी गवरिया गुदरी हलावैं फलु न पायौ गुदरी में
अरे जोगी नाद में वेद में नांइ फलु ना पायौ गुदरी में
परि गुदरी में फलु नाइ चारा जुग में
परि तीना मिलिकें ख्वातें चालें तब ग्राए क्या जोटो में
अरी बरती जोति में गोरख समाने भभूति लाए मास भरि
अगु मैलया मथि मल्या गूगर को डरी बनाई
परि निरकाल की करी खोखला अन्तर के भीतर लाया
परि जा गूगुर कू लेजा माता होइगा गूगा पीरू ऐ
बाबाजी हाल की माई तोते व्दै फलु लै गई
माहू गूगा गैरा दीयौ
अरी गूगा नाए बावरा नाऐं सच्चा जाहर पीरू ऐं
अरी जोरन की ना पैदि करैं बागर की मजे राजू ऐ
अरी जारन की नापैदि
पीर की मदद ।

१६ अरे लई ऐ दराती हात रानी वाटै जो बनावै री
अरी खाइ लै मेरी भैनि तेरैं नरसिंह होइगौ री
होइगो पूत सपूत बडौ मरदानौं री
अरी खाइलै छजुआ की नारि तेरैं भजुआ होइगौ री
अरी होइगौ पूत सपूत बडो मरदानो री
लीली बँधी ऐ घुड़सार जानैं सबदु सुनायौ री
दूध कुडिला मगवाइ गूगुर घुरवायौ री
अरी खाइलै मेरी बीर तेरैं लीला होइगौ री
होइगो पूत सपूत बडो मरदानो री
अरी गोरखनाथु मनाइ रानी गूगुर खायौ री
अरी गोरखनाथ मनाइ रानी घट में डारै री
अरी द्यौरानी जिठानी भैना जुरि आओ री
अरी द्यौरानी जिठानी जुरि आओ आगन भरि आयौ री
द्योरानी जिठानी बैठि मगल तुम गाओ री
अरी सब सब के लैरी तुम पैरो लागो, अरी तुमारी होइ ललना औतार
बडी बडी रानी ब्वाई बैठी तखत पै, खस खस के बगला हो जी
कुघरी गई ऐ जाकी सुघरी ए आई, घर कर की कामिनि हो जी
नादौ भी बाड़ो चिरजी जी जीओजी, मेरो बाछलि भैना हो जी
अरी कि तेरैं होइ बैंटन औतार
अरी कि तेरे धरिगे सातिए द्वार जी
सब सब के तौ रानी पैरो लागी, सीलमतिन रानी है जी
आजु अपनी नदुलि कँ लागो हति नाइ
मेरे मेरे पैरो री तू तो नाइ लगो मेरी भावज प्यारी हो जी।
अरी तोइ आजु नगर ते देऊगी निकारि द्दा हा जो
मेरे मेरे पैरो री तोइ तौ नगर ते मैं तौ ऐसी निकारि दू जी
मेरी भावज प्यारी हो जी
जैसें दूध मलारी हो जो।
तेरैं तेरैं पैंगे मैं तौ बवऊ न लागू मेरो नदुलि प्यारी हो जी।
मेरे हुक्मु गुरू को नाइ
अरी तू तौ री नदुलि ऐसें बनाई जैसें भगनी की हाई हो जी।
अरी ब्वानैं सीया ऊ दई ऐ निकारि*
तेरैं करेतें भैना बधूना होइगो मेरो नदुलि प्यारी जी

* लोक-कवि ने लोक-कथा को ही प्रामाणिक माना है। अति प्रचलित लोक-कथा में 'ननद' ने सीता को बनवास दिलाया था। ननद ने पहले तो सीता से रावण का चित्र बनवाया। फिर स्वयं ही राम को चित्र दिखाकर सीता को घर से निकलवा दिया।

मो पै किरपा करिंगे गोरखनाथ जी
मान हरायौ जे तो, म्वा तै आई ननदुलि छबीलदे अपने बाबुल ते चुगली खाई हो जी
लाज वी घनेरी जी, परदा घनेरे मेरे, गरूए से बाबुल होजी
आजु बहूजी नें परदा डार्यौ ऐ फारि होजी
सोने की नादी रेसम की झोरी अरे कि जानें जोगिन कूं दई ऐ गहाइ ऐ
बडे बड़े लट्ठा जाने धूनी में जराए मेरे गरूऐ से बाबुल हो जी
अरी सबरी दौलति दई लुटाइ जी हा।
हां दौलति लुटाई जानें भली रे करी ऐ मेरे गरूऐ से बाबुल हो जी
बारह बारह बर्ष जे तो बागन रहि आई माधारी राजा हो जी
अजी जै तौ जोगीन कौ गरभु लैकें आई आ होजी
राजा रे बाबू कोई सुनि जौ रे पावै मेरे मेरे गरूऐ से बाबुल जो
मेरे सगाई व्याह बंद है जागे जी हा।
अपने बीरन को मैं तौ ब्याह करवाऊं मेरे गरूऐ से बाबुल जी
अजी अपनी ननदुलि कौ डोला लैकें जाऊं हो जो हा
बेटा री होतो में तो ब्याइ समझामतो मेरी बेटी छबील दे हो
अजी कि मेरी बहू जी ते कछू न बस्याइ जी हा
सुघरो गई ऐ जाकी कुघरी जो आई मेरी बेटी छबीलदे हो
अरी क मैंनें बेटा ते प्यारी राखी जो
सेवानु करिकें जाकौ बेटा जो आयौ अरे कि जानें बाबुल ते मुजरा कियौ आयजो
तेरौ तेरौ मुजरा मैं तो कवऊं न लुंगी मेरे देवराय लाला हे
अजी कि बहू जी नें परदा डार्यौ फारि हा।
दूजौ २ मुजरा जानें उम्मर माऊ कीयौ मारू देस के राजा हा
जानें नीचे कू नवाइ लई नारि हो।
तीजो २ मुजरा जानें बाबुल माऊँ कीयौ देवराय लालाजी
अरे कि जे तो मुजरा पै दें तु जुवाबु जी
तेरौ तेरौ मुजरा मैं तो जबई रे लुंगी मेरे देवराय लालाजी
आजु तुम बहूजी ऐ जो मारोगे डारि
म्वति चल्यौ मारू देस कौ राजा पहुच्यौ ऐ महलन जाइ
जुरि आई घर घर की कामिनि जी
जे तो गामें बधाई हा जी
अजी कि जाको लौट आयो राजा जी
ऐब असबाब जाके सबु ढकि जागें
अरोक जाके धरिगी सातिए द्वार हा
रानी तो जी ठंडे तो पानी गरम धरावै बेटी सजा की जी
अजी अपने बलमे उबटि न्हवाइ रही जी।
बलम न्हवायो जाद दिलु न सुहायो घर घर की कामिनि हो जी

ग्रजी के मोपै दुगे बाबा सहाइ जी ऐ हा ।
तेरी बँछलि के मैं तौ पैरो न लागो मेरे घर के बलमा हो जी
ग्रजो क तिहारो मैंना नें चुगलई बाबुल ते खाइ लई जी
सोनें की थारो रे भोजन लाई तुम जें लेऊ राजा हो जी
ग्रजो क तुम तो भोजन जें लेउ चित्त लगाइ जी हा
जेंमत हो सो हम जें तौ चुके है मेरी घर भामिनि है
मोइ राम जिमावें जब जेंऊ हा जी
ऐसी तो रानी माइ फिरि न मिलेगी मेरे करतमकरता हो जी
ऐसी सोनें में मिल्यौ ऐ सुहागु जी हा ।
ऐसो पति भरता मोइ फिर न मिलेगा मेरे गरूए से बाबुल हो जी
ग्रजी पति भरता ऐ लगाइ रह्यो दासु जी हा
बाबुल को तें मैं तो कहनौ न मानू मेरे सिरी ठाकुर हो
ग्रजो कि ग्रबई सतजुग पहरो चलि रह्यो जा हा ।
एक दिन ऐसो ग्रावें सतजुग जावें कलजुग ग्रावेंगो मैं गए से बालम हो जी
ग्रजो क जाकू बेटा दियें बाबुल ऐ फिटकारि हा जो
मैं तो तेरी तेरी कहनौ रे मानि तौ रह्यौ ऊ गरूए से बाबुल जी
ग्राजु पतिभरता ऐ डाल्यौ मारि जी ए हा ।
तोपै तो बेटी बाबेल मारी न जाइगी जानें कौन से गोत की बेटी हो जी
जा भगनी के पीछें मारू जी हा ।
साझ भई ऐ भाई भयौ तौ ग्रधारयौ मेरे गरूए से बाबुल हो जी
म्वति चलैगो मारू देश को राजा देवराय लाला हो जी
ग्रजी क जितो पहुच्यौ ऐ महल मझार हा जी
चदन किवारी मारी खोलि खालि दीजौ मेरी घर की री कामिनि हो जी
ग्रजो क जानें कुदो तौ दीनी ऐ खालि जी हा ।
रानी भी सोई जाको राजाऊ सोयौ मेरे करतम करता हो जी
ग्रजी क जा राजाए नींद न ग्रावेजा हा
ग्राधी रे निकरि गई जाकी ग्रधर रैनि ग्राई हो जी
ग्रजी क जानें खाडो तौ लीयौ निकारि ए हा
पहलौ पहलो खाडो जानें रानी माऊ ग्रोज्यौ हो जी
ग्रजी क जापै हैगयें गोरखनाथ सहाइ
दूजौ दूजौ खाडो जानें ग्रोज्यौ रे देस को राजा ने जी
ग्रजी क जापै दुरगें भई ए सहाइ जो एहा ।
तीजौ तीजौ खाडो र जानें मारू माऊ ग्रोज्यो देस के राजा हो
सीमु बचैगो जातो ताटो कटि जाइगो मरे करतम करता हो

टैम्पल महोदय ने जा स्वांग दिया है उसमें इनका नाम साविर देई है.
टैम्पल महोदय के स्वांग में यह नाम 'जैंवार' है जा देवराय का ग्रपभ्रंश हो सकता है।

अजी क राजा रोवै जार बेजार हा जी
बारह बारह वर्स तू तो उचटि न्हवायो खाड़े दुधारा हो जी
अजी क गाडू तू न भयो सहाइ जो
अरे क तैनें रानी डारी गाड़ मारि हा ।
गोरख तुही ।

× × × ×

राजा उम्मर नें तो जल्लाद बुलाए
रानी बाछल ऐ जंगल में आश्रो मैया डारि
न्याते चले ऐं जाके घर के कमेरे
उम्मर को कहनो डार्यो हतुनांए ।
न्याते चले ऐं रे
महं जन आए
फाँटिक सूल्यो पायो नाहिं ।
अवाज दई ऐ तूतो
सुनि तो री लोजो सजा की बेटी
आज तेरे सुमर नें बादर डारे फारि ।
बोल सुन्यो ऐ जानें हुकम सुनायो
मन की तो कह दें बारा बात
तेरे सुसर नें री दीयोरी निकारो
बाछल बहना हो
मेरी तो सुनि लै बहना बात
मान सरोवर रे मान की बेटी
तो सुनिसेरी भैना बात
इननें लखायो री सासुगो
दोउ़रुन भोद दई संनें साज
न्याति चले एं चार्यो
जल्लाद आए
उम्मर ते करत जुवाब
हंनें कहीं हो रे !
मरी तो जे पावें, जिन्दी तो पाई बंटी आज ।
"मैया कहाँ तो रे गाड़ा, कहाँ रामू गड़वारो
हराई में बैठि घर आई
'कितनों रे गाड़ो रे, कितनो गड़ायो,
कितनी इनाई गम भोर
तेरे बाबुल नें तो हूं गाड़ो दीनो ।
मेरो बाबुल भैया

बुही गड़वारी तेरे साथ ।
सोने को लोटा तोकूं नहीं तौ री दीनी
बुही रेसम डोरि वाके हात ।"
"भैया चंदन रूख कटाइ
रानी रथु बनवायौ ।
लादयौ ग्रम्होईनु मालु रानी
पीहर चालैं री
बे सुरई के बैल रायगड वारे री ।
सात परिकम्मा रानीनें खैरी की दीनी
'सूबस बसियौ रे मेरे सहर दरेरे म्हारे सुमर के खेरे
तेरी जर जैयौ पाताल
रे हांकि गाडी मेरे, रामू गडवारे
लाखा बुरज पहुँचाइ ।
रुदन मचायौ जानें गामु जगायौ,
जुरिग्रायौ कुटमु परिवारु ।
रामू गडवारो जाको तडकि में बोलयौ
'ग्ररी सुनि लीजौ भैना बात।
मेरौ री खैरो होतो मंजाजी को
ग्राजु उम्मरं डारि तौ दैतौ मारि ।'
बैल जो जोरे रानी रथ बैठारी
मान की बेटी जानें रथ लीनी बैठारी
म्वां ते रे गाडा जानें ऐसौ रे हांक्यौ
दीनो वनी में जानें हांकि
ग्ररे एक वनी गुजरान
दूजे वन ग्रावै ।
दूजी तीजौ ग्राइ हर्‌यो वनुपायौ ।
पायौ वरो कौ पेड़
रानी रथु बिरमायौ री ।
रथु दीनो बिरमाइ
जानें पलंगु बिछायौ री
ग्ररी जैमति राजकुमारी
जिमायौ गडवारो जो
पीयौ जोहड कौ पानी
जाइ निद्रा ग्राइ गई री
बैल बांधे एँ वरो की डार,
जगायौ गडवारो री ।
प्यास लगी ऐ बीरा मोइ

नेंक पानी प्याइ दै रे
कूआ नाएँ बावरी नाएँ
जल कहाँ ते लाऊ री ।
अरे सोइ गई राज कुमारि
सोयौ गडबारो री ।
गू गा गरभ को राउ
गरभ में सोचैगा ।
अरे जौ नानी कें लै जाइ
निगुआ मेरो नामु परै
भाई दिगी बोल हरामी लाई री
नाना मामा वहें टूकन तें पार्यौ ऐ ।
गूगा गरब का राउ गरभ में सोचैगौ ।
तोरि दूब को पेड़ इकु सरप बनावैगो ।
सरपु बनाइ थगाइ बाँबी में डारैगो ।
उठि रे वासुकि राइ, तेरौ बैरी आयौ ऐ ।
वासुकि पूछै बात क कैसो बैरी ऐ ।
अरे जब लैगो अवतार पीरु विसु हरि लेगो ।
रहेगी जाकी छूछि लीला घोडा ऐ हाँकैगो ।
धरती के वासुकि राउ इकु बीरा डार्यौ ऐ ।
सबुई गये सिर नाइ बीरा काउ नैं न खायौ ए ।
कारे वो असवार पौनियाँ धायौ ऐ ।
चल्यौ ऐ कारौ नागु बाग्विल ढिग आयौ ऐ ।
पलिका की लगि रही आनि
चढ़ैगो बैरी नित है कें ।
जाहर सोचै बात जाइ परची दिदै रे ।
एक कला ते बाहिर आयौ—
जानें चोटी खोली ऐ ।
लगे गिल मिले बारु बहियन ते जाइ लिपिट्यौ ऐ ।
छाती पै बैठ्यौ जाइ
द्वै जीभ निकारैगो ।
कहाँ डसूँ मोरी माइ तुरत मरि जाइगी री ।
जो अम्मा ऐ डसि जाइ जनमु कहाँ लु गो रे ।
मारी गरभ में ते थाप,
गाँडे सरपु खिस्याइ गयौ ।
गयौ ऐ खिस्याइ खिस्याइ
डसे दोऊ नागोदी ।
भोर भयो परभात रानी बाग्विन जागैगी ।

उठि रे वीरा गाडीवान गाडी जोरौगे ।
औंगी लै लई हान वैल पै आवैगो ।
अरी क्या जोरू मोरो भैनि
वधिया तौ दोऊ हनक भई ।
'पीहरिया मरि जाऊँ
राँड मैं च्यौं आई
भूलि गई माया माँसु
भटक्त मेरौ जनमु गयौ ।
गूँगा गरव कौ राउ
गरम में बोलैगा ।
कै तू भूत पलीत देव कै दानौ रे ।
ना मैं भूत पलीत देव ना दानौ री ।
सेयौ गोरखनाथु दुआ को बालकु री ।
मिटि जइयौ गोरखनाथ मोइ क्हा खवाइ गयौ ।
चमड दै गयौ मोइ गरभ में बोल्यौ ।
तेरे मरे जिवाइ दऊ वैल वगदि घर चालै री ।
लोटा लै लीयौ हात नीर कूँ आवै री
गोला की गहि लई गैल हरीसिंगु पाइ गया ।
बोलै राजा बात मेरी सुनै मेरे भाई रे ।
जे लोटा तौ वाछलि कूँ दीयौ
जाइ तू क्हाँ ते लायौ रे ।
तेरो वहनि कूँ दीयौ ऐ निकासौ
गरभु लै आई रे ।
कितनी भीर सहाबौ लाई रे ।
अरे वुही चदन कौ ए गाडु
वुही रामू गडवारौ रे ।
वुही मुरही मे वैल, वुही ऐ गडवारौ रे ।
ज्यौंई डटि जैयौ मेरे वीर
पिता ते मिलि आऊँ रे ।
ज्वाँति कुमर चल्यौ जाइ
मानसरोवरि आयौ ऐ ।
मानु जु वूझै बात कैसैं चित्त उदासौ ऐ ।
अरे यादर डारे फारि
गरभु लै आई ऐ ।
गूगा गरव कौ राउ
गरम में तडक्यौ ऐ ।
अरे पलका ते औंधौ मारि

कहीं फेरि भड़कयौ ऐ।
खूनन् रकतु बहाइ
परचौ जानें दीयौ ऐ।
गूंगा गरब कौ राउ
बागर में आयौ ऐ
उम्मरु राजा बैठ्यौ तखत पै
तखत तें औंधौ दीयौ मारि।
(दोनों ओर के दल आए) बाछल बोली—बापनें हाथ पकड़।
'तूतौ हटि जा मेरे धरम के बाबुल
गोता गयौ ऐ खाइ
तू बो हटिजा मेरे बाबुल प्यारे
तू अपने घर जाउ
'अपनौ सहाबौ तू तौ लैकें रे जैयौ
मेरे गरब गुमानें बाबुल,
मेरौ सहावौ तौ रे मेरौ गोरखनाथ
सीक समाइ तहां जांउ।
(बाछल ते जाहर नें कही—सवासौ गज का निसान, गैलमा डंका तो पै से लै लुगौ)
भादो आधी राति औलियाँ जनमु लियौ
मथुरा में जनमें कान्ह बागर गूगा भयौ
हम्बें हम्बें कोयल बोली पपियरा झिगार्‌या
भाई के मैदान में चौहान खेलन आया।
जिन धाया, इन पाया, बागर में सच्चा पीर रे कहाया।

जाहर का विवाह—
सूवसु बसौ ढकपुरा गामु तरें हाथुर सी भाई
हेमनाथ नें कथी जोरि चेता नें गाई
ऊँचा अटा पीर को भारी
बिधि रह्यौ पलगु लगी फुलवारी
सोइ पीर नें कीयौ चैनु
खुलि गये पलकु लैन नापैंनु
भोर भये माता पै आयौ
आइ माता कूं सीसु नवायौ।
सुनि री माता मेरी बात।
कहा कहूं सपनें की बात।
सांची कहूं समाइ न गात।
सुघड नारि सपनेन में देखी।
तिरिया देखी अति परबीन
भामरि लै गई साढे तीन।

सो माघो व्याह भयो वगला में माता मेरी
प्राधे के कौल तौ करार रो
सपनो देख्यो रैनि कौ।

२. वेटा सपने में सोयो कगालु
धन दौलति ब्याइ पायो मालु
भोर भयो नलु वैठ्यो भयो।
न जानूँ धनु किन में गयो।
सुनियौ रे मेरे जाहर वेटा
वात जु कहूँ अनूठी
करम लिखी सो होइगी वेटा
सपने की सव झूठी
प्राई लगुन न वेंटे वतासे
सो जाहर वेटा नाइ तेरी भई रे सगाई
सब सुपने को झूँठी बात ऐ।

३. मति रात्रै मेरी वाछलि माइ
श्रावै वहू लगै तेरे पाइ
चौका दे और तपै रसाई
नैन नजर भरि देखि महल में नाएँ कोई।
सिरियल गोरी अधिक सलोना।
देह वनी व्याकी निरमल सोना।
जौभ कमल कौ फूलु मनो साचे में ढारी
व्याकी नैन ग्राम की सी फांक, नाव व्याकी सुप्रा सारी।
पायनेव वाँदी पहरावै
पाँव धरै जैस नौहवति बाजै
नैनू की चद्दरि बुकक खरा प्रजमति की फुलरी
गुलीवन्द पचमनियाँ चारौ
सा माघो व्याह भयो वगला में
मायें ने कौल तौ करार ऐं
मा गंगा जी भाडोई गई

४. सात पुष्टि का वैह ऐरे तेरे वाबुल का
ताइ कोई ढारं मारि के बारहै दुनी में।
गादो वे जाइगो डूवि कें रे राजा देवराइ की।
मरी मायं री स्वायं री सहाय ऐ वावा गोरखनाथ
से तारी वनाइ दंरी, मरी माइ पोंडिला
मरी गुद माई मेरा ज्वानु
मेरा री दिल उमडा सुमरारि कूँ
री तु दिल नगरी कूँ

मेरा री दिल हरि जौ लै गई
बेटी राजा की।
बिनु ब्याहें है मानू नही ऐ वाछिल दे माइ
अच्छा बेटा जो सात सगाई उठी जा देस में
करि देउ बेटा तेरे सातौ व्याह
क्यौंको सगाई हम ना करें जी।
डारू री पजारूँ तेरे ब्याहु ने
बुन सातौ नें।
मेरा दिल री हरि जौ लै गई
बेटी राजा की।
द्वै ब्याहि दऊँगी गगा पार की
झरपेटा नारि
द्वै व्याहि दऊगी सकल दीप की
चदवदनी नारि
द्वै ब्याहि दऊगी जा देस की
लडि हारी नारि।
इक व्याहि दऊगी जा विरज की
लडिहारी नारि।
करि दु गी रे तेरौ सातौ व्याह
म्वा की सगाई हमना करे बाबरिया पीर।
चल्यौ रे पीर भौरे में आयौ
आद भौरे में ठोकर मारी
लीला हस्यौ यानते भारी
छै महीना ते तिनु ना दयौ
भव लीलड़ लोकूँ कोतल भयौ।
छै महीना ते जल नाइ प्यायौ
कहा कामु लीला ढिग आयौ।
पकरि बकसुआ लै चलि भाई
चाँदनी चौक जाइ ठाडौ कीयौ।
पहले न्हवायौ कच्चे दूध
जा पीछें गगा जल नीर।
पटने से रगरेजनि आई।
नादन में महदी घुरवाई।
तुम हरियल महदी लाओ मुपड बागर की चोखी।
मस्तक गोरख लिखू लिखू लीले कें चोटी।
गलें लिखू लीले कें ग डा

लिखि दऊं सूरजभानु लिखू माथे पै चदा ।
पहलें लिखू सुरसती माई
जा पीछें गगा महारानी
चरन भरत जोडी लिखि दीनी
कलि गोरख नें जूरी दीनी
कलि गोरख को करूँ बडाई
भीर परँ जह होइ सहाई ।
ग्रम्मच दम्मस पेच वन्द तग जोरि खिचाए
ऊपर गट्ठे खोलि पीर भव्वे लट काए
साल दुसाला डारि पीर ग्रासन वनवाए ।
सोने को जीनु जडाऊ काठी
खूब सज्यो रे मदतक ताजी ।
घोडा सज्यो पीर को भारी
जाको वर्ज खून खुना सोभा न्यारी ।
सजि लीला तैयार भयो व्वा जाहर को
दादा मेरे
इद्र ग्रखाडे घोडा जाई, मति इद्र पुरी कू जातु ऐ ।

५. ठडे पानी गरमु चार कट्ठो से ताए ।
चदन चौकी डारि कें मलि जाहर न्हाए ।
दैह्न दास खवास चार चुनि चुनि पहराए ।
मोची को लाया मोच वद जूता गुलजारी ।
ग्रग ग्रग पहरी ग्रगरखी क फूली फुलवारी
जामा पहर्यो घेर दार सजा पनिहारी
पगडी वाधी ढोरिडारि सोने की तारी ।
नेजा हाथ पचास का कडिगलगी सुपारी ।
कर में कक्न वाधि नैन में सुरमा सार्यो
पहरि लई पोसाक पीर ग्रम्मा को प्यारी ।
छोडि कुआ ते ग्रार सिला को ग्रार उडाई
जे जाहर हटने नहीं जिन मेरा पीया खीर
दगा देइ मानूस कू घोडे
हो जाऊँगी दामन गीर ।
ठाडी लीला वे कहि रही ।

६. जब लीना नें कही मात यो सगुनु विगारं
पगु भागें पगु नीमरें पगु छोडें पनि जाइ
जो तेरो जाहर जूझि जाइ तो मानि मैं दऊगी मूरे मिलाइ
ठाडो ग्रम्मा ते कहि रह्यो ।
तुम दूध कटोरा मरि धरो रन चाई फटि जाइ ।

जो तेरो जाहरू जूझिजाइ तौ वागुर में खबरि पहुँचै माइ।
सो आधो ब्याहु भयौ बगला में माता मेरी
आधे के कौल रे करारो
सो जाहर ब्याहिबे जातु ऐ ।

७. चमचौ मारो लीला के गात
लीला उड़्यौ पमन के साथ
हुआ हुस्यार लगी नाइ चोट
फादि गयौ खाई अरु कोट
च्या जाहर नें दहसति खाई
मति रोवै जाहर गुरु भाई।
धरम सुम्म लीला दयौ टेकि ।
जाहर हँसे समद कू देखि।
समुदर देखि छूटि गई आस ।
जूरी देत मिलो बहमाता।
कौन कामु ज्याँ उतनु तिहारो ।
जाई को भेदु बताइदै प्यारो।
मासु वहून ह्वै गई लराई।
मनु फटि गयौ डिगरि चौं आई।
वा दुसमन नें बादर फारे।
तो बुढिया कू दए निकारे।
सुफेद वस्तर धौरे केस।
बुढिया रहति कौन से देस ।
उज्जलि गात भान कीसी लोइ।
जिया जन्त भकि जागे तोइ ।
बूढी उमरि कठिन की बिरिया।
चोरें पट पर खाइ जाइ लिरिया।
च्या बैठो तू कहा करतिऐ, हमें तू देइ न रे बत
जगल में बैठो कहा करै ।

८. जब बुढिया नें कही कुमर मैं तोइ समझाऊ
आरे जाहर पीर भेद मैं तोइ बताऊ ।
मेरा नगरु इदुरपुर गाम
बहमाता ऐ मेरो नाम।
जूरी को बाधू सजोग
करनी करै सो पावै भोग।
मो लिखनी में असुर सहारे
पाचौ पड हिवारे जारे।

मो लिखनी ते बाहर कौन
चार लाख चौरासी पौन*
आपु कृस्न नें पैदा कीनो
ए बावरिया बारी ताल ।
जे मोइ टहल रे बताई,
मैं सब को जूरी देंति ऊ ।

६. मेरी मेरी जूरी तैंनें कबरे दई बहमाता की ।
इक जूरी अरे बेटा तेरी दै जो दई गूगा नौमी कू
सातवी समुदर पार छै में तु दिल नगरी मुकाम
ब्वाको रानो नें जोगी सेइयौ जालदर नाथ ।
ब्वाकी दुआ की एक बालकौ एघन सिरियल नाम ।
ब्वा से रे तेरा होइगा ब्याह ।
जा को सगाई डूबें पारिपें, पल्ली पारधा पै
ब्वा का वो है जाइगौ और निबाह जा दुनिया में
जूरी भी लिखिकें डारतो बहमाता समद में ।
ना हाली ना डिगिमिगी ब्वाका जूरी
लगि गई पल्लो पारि ।
खांडा भा निवारा गजमेलि का
लहरी गूगे नें ।
बुढिया भी गई ऐ समाइकें बारह दूनों में ।
और जा सराप तोइ क्या दऊँ चेला जोगी के ।
माली भी बनिकें ब्वा रहै ब्वा नौलक्खे में ।
सपने भी सांचे हांत ऐं गूर भाई
बुई बुई देसु दिखाइ दै ना जो कौ ।
दृढ़ करि आसन मारिलें म्हारो पीठो पै
घोडा सरा सरर उडि जिगपा लीला घोडा रे ।
कारे बादर में गया ऐ समाइ जो लीला घोडा रे ।
मति रोवै जाहर गूर भाई ।
मैं ताल कटोरा देंउ न्हवाई ।
ताल कटोरा लीला धायौ ।
धरम सुम्म लीला दीयौ टेकि
जाहर हसे ताल कू देखि ।
लीला बांधि दुवगौ दीयौ ।
सूरजो ते जानें लोटा लीयौ
वगी लै लई हात केस घोडा वे काढ़े ।
लोटा लै लीयौ हाथ पीर सरवर कू चाले ।

*जौन ।

निरखत परखत चालें चाह
जाहर पीर देखि लै न्या उ।
सिंगमरमर की पटिया सेत।
मिही काम रानी की देखि।
वाच्यो आकु रही धन क्वारी
फिरति आनि राजा की भारी।
नर बच्चा कोई न्हान न पावें।
उड़त जिनावर राजा मारें।
सोने को सिढो दूध सौ पानी
कौन रजन की आमें रानी।
गोता लेंतु ताल केबीच
लीला घोडा ऐ देंतु असीस।
नीर सीर बाछिल के जाए।
तेनें घोडा ताल न्हवाए।
पहली लोटा भर्यो डारि अर्जुन ले (धरती) दीयो
दूजी लोटा भर्यो ध्यान गोरख को कीयौ।
तीजौ लोटा भर्यो जापु सूरज को कीयो।
चौथो लोटा भर्यो नीद घोडा कू दीयौ।
हसत पीर लीला ढिंग जाई
लीला घोडा रिस है जाई।
दाके दाके फिर्यौ ऐड दै खूब भजायो।
छिन मतर के बीच पीर मैं तोइ लै आयौ।
तोकू जरा मोहना आयौ।
आपुन जाइ ताल में न्हायौ
मेरी तेरी टूटी रीति
मेरी सुधि ना बिसराई
सो आपन न्हायौ बहू के ताल में।
१०. तुदिल नगरी जाउ जहा सुसरारि तिहारी।
गुन महलन के बीच प्यार करें सासु तिहारी।
मोहरी पट्टी दिपें दिपें माथें पै चोटी
सहर दलेले जाउ कहूँ बाछिल ते खोटी
तेरी जाहर मरयो जितो झगा अरु टोपी।
दात तिनूका दै लिए आड़े
हात जोरि जाहर भये ठाडे
तुही मेरी मैया बद तुही मेरी मा को जायौ।
परदेसन में मोइ लै आयौ।
अब वा लीला मोते रूठे

मेरी तेरी सगु मरँते छूटे।
सो मैं ऊ न्हायौ तूमी न्हाइ लै।
मति करै लोग हसाई
सो न्हाइलै ब्वाई ताल में।

११. जाहर खोल खुन खुना लीयौ
लीला हूलि ताल में दीयौ।
इतकौ पँर्यौ इतमें ग्रायौ।
ग्रचक पचक ग्रौरु चुप्पी चुप्पा में न्हा ग्रायौ।
तैं सरवर घुसि दु दु मचायौ।
जौ कहूँ धीम्र सज की ग्रावै
नौकर लेगी बोलि मार तोमें लगवावै
तैंनें लीला करे गजब के टूक किले की ईंट ढुवावै।
इतनी सुनि कैं बात ज्वाबु लीलानें दीयौ।
बागर वारे पीर तैंनें डर का कौ कीयौ।
क्या सिपाई करै किसी के हाथ न ग्राऊ।
ग्रागास लोक लै उड़ू किसी के हाथ न ग्राऊ।
इतनों नुकिसान कर्यौ लीलानें
बाग की सुरति रे लगाई।
नौलक्खा बागु जानें कैसौ होइगौ।

१२ म्वाते जाहर चले फेरि बागन में ग्राए
बागमान जल्दी बुलवाए।
हुकमु करै तौ खोलू तारौ।
तखता पट्टी बन्यौ बागु साचे में ढार्यौ।
रौस हजारा खिल्यौ फूलु गेंदा कौ पीरौ।
मलगा करै बहार केवड़ौ ग्रति गुन फूल्यौ।
जौ कईं धीम्र सज की ग्रावै।
नौंकर लेगी वोलि, मार तोमें लगवावै
नौंकर ब्वाई नारि कौरे क्वारी ऐ नारि जो
नौंकर नाऊ तेरे वाप कौ
सात टका दु गो गाठि के रे मालो फाटिक दीजौ खोलि।
नौकर नाऊ तेरे बाप कौरे, नौंकर हूँ ब्वाई नारि कौ रे
बूह सजा की धीम्र
बांधि कैं बी चौकड़ी कूदि जौ पर्यौ लीला घोड़ा ने
इक तखता बौसेर करौ दूजे में ग्रायौ
तीजे में चौहान पीर कू मरम्रौ पायौ।
पोस्त डोरा गाजौ भांगा बागन परे लोटना ग्राम

चार तखता की सैर करी जाहर नें दादा मेरे
फिर बंगला की सुरति लगाई क जानें बंगला कैसे
ग्वाते जाहर चले पीर बंगला में प्राए
चार्यौ ओर बंगला फिरि आयौ
बंगला कौ दरवज्जौ न पायौ ।
ऊपर कोट नीचे ऐं खाई ।
जाहर ऐ गैल बंगला की पाई
चार्यौ कौन पींजरा आठ
पढवैयन की ग्वा बिछि रही खाट
कमरि मर्द के बंधो दुलाई
जो पलिका पै झारि बिछाई
तान दुपट्टा जुलमी सौयौ
छैमासी नींद रे सुहाई
दादा मेरे
सोयौ बहू की सेज पैं ।
रेसम के रस्सा तोड़ारे ।
अनवोला के बाग उजारे ।
दातों से नारंगी खाईं
भरिगौ पेट जम्हाई आई
फोरि फुहारी पानी पीयें ।
लीला नें दुंदु बाग में कीयौ ।
इतनौ नुकसान बाग में कीयौ व्वा
घोड़ा ने दादा मेरे
तो जू आइ गई तीज रे हरियाली
सो पिछले पाख की
पिछले रे पाख तीज जब आई
सिरियल नें नाइनि बुलवाई
घर घर नाइनि फिरै नगर में देति बुलाए ।
तिरियन लगे उमाहु फौज के से बंधे तुलाए ।
तरुनी और नादान सिमिटि भईं सबु इकि ठौरी
बटै सुपारी छाल और पानन की ढोली
सिरियल नारि मात ते बोली
मेरौ डोला दै सजवाइ संग चौदह सै डोली ।
पाइजेब बांदी पहिरावै ।
पाउ धरै जैसे नौबति बाजै ।
नैनू की चद्दरि बुक्क खड़ी अजमत की फुलरी ।
नैन आम कीसी फांक, नाक जाकी सूआ सारो

नाइनि चतुर सुजान गुही माथे पै बैंनी
क्वारी के वेदों क्वहु न लगामें
सग की सहेली पान चवामें।
असगुन असगुन खूब बनामें।
वागन में कारी नागु जु आवै।
फूला पै धनि तोइ देखि खावै।
वागर बारी है देखि जुलमी
ताने भैंना देखि बुही सदावै।
डसि जाइ नागु हात ना आवै।
सात दिना देखि डाक वजावै।
तिरवाचा ववूल पै मरवावै।
मरी रे कुमरि सिरियल देखि ज्यावै।
सो सजि वजि धीम्र सज की ठाडी
दादा मेरे,
अम्बर में बाँजुरी रे घमारी,
छज्जे पै काँधा लैं रही।

१३. सात सैं डोला रानी के आगें चलेरे
मात सै जाके चलें पिछार
कलुआ धीमर क्यों उठि बोल्यो।
सजा तेरो वेटी में वजनु गायो भाइ।
फनि हाथ में लैलए
जानें वादर फारे फारि, साडिले,
वेटी में वजनु कैसें बढि गयो।
मरे डोला धरे ऐ ताल पै आइ
डोला में तैं ऐसे निकरी, भैना ज्यों पून्यों कौ सौ चादु
क्वाते चली तालन पै आई
जानें कौनें मेरो सरवर दीयौ ऐ विगारि।
तुम न्हाम्रो तो नहाइ लेउ री
मैं न्हाइवे का नाइ।
मोती में जलु ना मिलैं, भैना मैं न्हाइवे की नाहि।
चोर यहाँ करि दोजियो ऐ वनिया की धीम्र।
जेगयो बागन में,
मोज पकरि ठाडो भई ए चपा दे धीम्र
जै गयौ भैंना जे गयौ बागन में
क्वाते डाला चलै फेरि बागन में आए
बागमान अन्दी बुलवाए
चोर लियो दुवकाइ मार तो मैं लगवाऊ।
ठेंने करे गजब के टूक किले की ईंट ढुवाऊ।

बागर बारो तैनें राख्यौ ।
नेक ग्रदल बाबुल कौन राख्यौ ।
घोड़ा बारो ज्यातें कहा निकार्यौ ।
इतनी सुनि के बात हींसि घोड़ा नें दीनी
ज्वातें रानी यहा गई घोडा के पास ।
बीरा तेरा रे चढता कहा रे गया लीला घोडा रे
"मेरा भी चढ़ता भौजी सोवै तेरी सेज पै"
"क्वारो से तैनें भौजी वो कहीं दई मारे रे !
बीरा भी कहिकें टेरखऐं हमारी तु दिल में ।"
"भौजी भी कहिकें टेरतऐं हमारी बागर में ।
मैं जानि गयौ रे जानिगो धनि सिरियल तेरौ नामु ।
सपने में बात जो तेरी है जो गई जुलमी जाहर ते ।
पाँच-सात कमची सड-सड मारि जो गई लीला घोडे में ।
"मैं भी तो जानुगो री ग्राइ गयौ फागुन मासु
हम तुम होरी खेलिले री ग्रो सजा की धीग्र ।
सग की सहेली रे बोलि फूल उन पै तुरवावै ।
जाने गोदी भरि लई बेगि फूलमाला पहरावै ।
तेरौ पति सोइ रह्यौ बगला माल ब्वाकें नहि डारै ।
जौ सुनि पावै बापु तेरौ हमैं माडारै ।
तू राजन की धीग्र कहा गजबानौ फारै ।
तेरौ बाबुल सुनिकें बात हमें माडारै ।
तुम ज्याई ठाडी रहौ पास बगला मैं जाऊँ ।
ग्रपने बाल मैं जाइ जगाऊँ
ब्वाते रे फाँसे मैं तो खेलू ।
मैं घोडा लू गी जोति किले की ईंट ढुवाऊँ ।
फूलन ते भरि लीनी गोद ।
रानी रहै कमल कौ फूल ।
तैनें बाजू हमतें खेली
तैंनें बुलाइ लई सग सहेली
गलमाला ग्रबकें पहराऊँ
ग्रबकें चौपट फेरि बिछाऊँ ।
साँची महूँ बागर बारे गूगा राना
मानि लीजौ बात हमारी
नारि तिहारी मैं है गई ।

१४ संग की सहेली कहैं बात सुनि लीजो हमारी
यहा माया तैनें फैलाई
जिहो बात हम पै बनि ग्राई ।

तेरे सग डोला लै आई।
तालन को तैनें ठहराई।
बागन में बालम ढिग आई।
तैनें करे गजब के टूक बात बाबुल की डारी।
वो नाही करि चुक्यौ धीम्र सजा की क्वारी
सुनत खैम सब ही कू मारै
मैना मेरी, जोमत डारैगौ मारि
सजा ऐसो राजु ऐ।

१५ जागि जागि गोरी धन के बलमा
नामु भयौ वदनाम तुम्हारौ।
बागन में फेरा तुम डारौ।
इतनी सुनि कें बात ज्वाबु जाहर नें दीयौ।
पकरि लई ऐ धीम्र सज के जोडा दीयौ।
जाते जाहर कहै समभाइ।
त हमारी मानि लै चौपड अबकें देइ बिछाइ।
ौपड दीनी डारि नाथ कू जाहर भूल्यौ।
; गयौ इसक में भूलि
ासेन ते परिगौ दूरि, गयौ गोरख कू भूलि।
ाबके फाँसे सिरियल डारै।
ाल् पानी सबरौ वो हारै।
ारि गयौ सब गामु
ाल परगने सबुई हार्यौ, हार्यौ सागर तालु।
सेरियल नारि जाए वा डारै
ाहर दलेले जाउ खाउ म्वा मौठ मतीरा
ाु दिल नगरी रहौ खाउ ज्या दूध-महेला।
ाकडा की झौंपडी
ाठरा की बाड
बाजरे की रोटी
मोठरा की दार
धरिलै पीठि पीर घोडा की बागरवारे
गू गा राना
मै है गई नारि रे तिहारी
तू साची करिकें मानिलै
"रानी क्वारी ना लै चलें दागु गादी कू आवै
भैया दिगे बोल नारि नीचें कूं आवै।
इग दिन तोइ ब्याहिवे आमें

मानि लीजौ बात रे हमारी, राजा की बेटी
तोहि ब्याहि दलेले कू लै चलें
ब्या की ब्या रहि गई
ब्याते कछू और चलाई
पए कुमर के तेल रहसि हरदी चढ़वाई
रोरी मरुग्राटि घुरैं बैठिकैं कजरु लगायौ
एक ग्राखि मिचि गई एक में कजरु लगायौ
भौंह बिनूनो उडौ चादि पैं बार न ग्रायौ
कोतनारि ग्राखिन में कजौ, दात दतूसरि मुख में भारी
ऐसो जनम्यौ कुमरु कन्नि जाकी महतारी
पैगौ तेलु ग्रारतौ कीयौ
ब्वा दुलहा कौ, दादा मेरे
भीतर कू लै जाइ
जाके हात हलौना धरि दिए।
ग्राठैं कौ माढयौ राज घर नौते ग्राए।
भूप चलौ ज्यौनार पाति कू सबै बुलाए।
भूप चले ज्यौनार जोरि प गति बैठारी
दौना पत्तरि फिरैं हात गागर ग्रौरु पानी
दुहरे लड्डू फिरैं मगद नुकुतिनि के न्यारे
भई जलेबी त्यारु ठौरु बरफीनु कू कीयौ।
जाको बिगरै चित्त जाइका सौठि कौ लीजौ।
लुचई पूरी मगद कचौरी
बूरौ दही पाति दई गहरी
सुगढ राइते बने गहरि बेरा की ग्राई।
सरस दारि ब्वा भई जुरी महलन त्यौंनारी।
हीगु मिरच बटि लौग सौंठि ग्रौरु साम्हरि डारी
राघ्यौ सागु सुघारि ग्रौरु राघी चौलाई
मैथी पालकु फिरैं लहरि की गाडर ग्राई।
सरस दारि ब्वा भई जुरी महलन त्यौंनारी
हीग मिरचि बटि लौग सौंठि ग्रौर साम्हरि डारी
सो ऐसो पाति दई
ब्वा राजा नैं दादा मेरे
नगर में होंति रे बडाई
भूको ब्याते ना फिरैं।
दहगड दहगड भई मगन भए सबुहि
रथ बहली सजि गई परी हातिनु ग्रम्मारी
घूटु परवती सज्यौं सुरकी ऐराकी

रथ बहली सजिगई धरो हाथीनु अम्मारी
ताजी तुरकी सजिगो बडा ।
सुरख वनात नारि में ग डा
घोडा सजि गए भोर कराई
जब कछवाइनु नें सुरति लगाई
एक बरन के सजौरे सिपाइ
तुन्दिल नगरो की सुरति लगाई
नारि में तोरा दुहरी कठी
सो एक वरन के सजे सिपाही
सो दादा मेरे
सोमा वरनि न जाई
सो दुलहा ताखे (कानें) कू हम कहा करें ।
केसोडें के चारि नगर परिक्म्मा दीनी
लसकर फिरै नकीब देर काए कू कीनो ।
कटि कटि धूरि उडी अम्मर में
दादा मेरे
सूरज नें जोति रे छिपाई
सो भान गरद में अटि गयौ ।
साहब सीग नें कही देरकाए कू कीनो
सुनि लेउ मेरी रे बात लेख नें नीद न दीनी
तुम चलि लेउ मेरे सग
जो कछू होइगी बीतना, मेरी सवरी साहिबी सग ।
म्वाते साहबु चल्यौ सुरति तु दिल की लीनो
सखिया गामें गीत,
ऐसी कहू मोइ दीखति ऐ दुलहा की फिरि जाइगी न पीठि ।
ववारोई लौट्यावं तेरी बरना
अबकें सवदु सुनाइ हर चरना (भातई)
हरचरना अबु कहै बात परि गई अब भारी
चौहानन की नारि कहा है जाइ तिहारी ।
म्वापै गोरखनाथु सहाय
चौदहसैन की सग जाके चल्ति जमाति ।
सगऊ चलै जमाति, सग लागुए अगि मानी
नगर कोट की भात बात सुनि लेउ हमारी ।
म्वाके सवु सग ऐं रनधीर ।
बात रे हमारी मानि लै रे अरे म्वा फूटी उठैगी पीर ।
पीर बर्षं का पीर सम्हारै
म्वाके कहा सग में देखि भीर

चौहानन के बीच में रे खूनन की उठाइ दुंगो कीच ।
इतनो सुनिकें बात ज्वाबु ज्वाला नें दीयो
मैं तुंदिल कूं न जाउ
चौहानन के आगें मेरी नईं फरैंगी तरवार
साहर्वासह नें कहो वात सुनि लेउ हमारी
तुम आगें धरि लेउ कही मानो इक हमारी
तुम बनरस के सिरदार
ऐसी कच्ची लामतौ जी, हमारी घूमि घूमि चलैंगी तरवार
सिरियल नारि व्याह कें आमें
चौहानन ते तेग चलामें
वे पाँचई ऐं सरदार
एक फल में ते पाचौ भए, वे कहा तौ करिंगे तरवारि ।
मैं हरिगिज मानू नाइ
नातेदारी बिगरि जाइगी मे आगें न धरूंगो पाचा पाइ
सात लाख की मीर, राउ चितामनि भारी
तुदिल की ब्वानें करि दई त्यारी
तुंदिल नगरी कितनी दूरि
बात बताइ दै भेद की रे अरे म्वा नियरी ऐ कै दूरि
साहबसीग नें कही चलौ तुम मसकौ घोडा
सिरियल नारि के फेरि मिलाऊँ सिरियल ते जोडा
जो सजा की धीम्र
हीरा भेंट में दै गयौ रे, वहमाता नें जूरी लिखि दई, दै दई ऐ ब्वानें जोरी ठीक
गढ आमरिते चले फेरि तुदिल कू आए
राठौरी मिलि गए सगुन जे बिगरे तिहारे
अबऊ मानौ बात बगदि तुम चलौ विचारे
तुंदिल ते वगदि आयें ठीक
बात हमारी बिगरि जाइगी तुम बात हमारी मानौ ठोक
"अरे तू बादी को जामु बात तैनें खोटी कीनी
हम छत्री कैसें हटि जाइ बात सुनि लेउ हमारी
आगें चलैंगी तेग भेक जे चलै हमारी
नगरकोट की सग मातु जे हौंति अगारी ।
धौरा गढ की सग
तुम बनरस के सरदार,
ऐरो कच्चो लामतु ऐ रे म्वा घूमि घूमि चलैंगी तरवारि
सबु सिरदारी चली फेरि तुंदिल में आई ।
राजा बूझै बात फौज कितनी ऐ आई ।

नागर पान मगाइ बटै राजन कू बीरा
राम रामु में दै गयौ हीरा
कसि बाधँ हथियार कुमर आगौनी कू आए
करिकें भेंट हौटिगौ राजा
दादा मेरे, निरपु कचैंरी जाइ
असवारी जाकी हटि गई
काइदा ते घोडा लगवाओ
चौमेखा घोडा बधवाओ
मौतु करै मति देर
बागर बारौ आमतु ऐ रे
व्याकें सग साहिबी कितनी भीर
सग साहबी भीर
साची करिकें मानिलै रे वरौनिआ को करिलै भीर।
ज्या की ज्या रहि गई, ज्याते कछु और चलाई
मजि चौहानी चली भीर समदर पै आई।
जाहरपीर बनी मै डोलै
देवी जाहर खेलै सार
मीग गाजी करै जुवाब
तुम तुन्दिल कू जाउ व्याहु ग्वा होइ तिहारौ
मेरौ लीला घोडा कितनी दूरि
घोडा बेगि मगाइ दै मैं देखू तुन्दिल नगरी धूरि
जानें उल्टौ घोडा राह लगायौ
ठमु ठमु ताजी नचतौ आयौ
जाकी उगिलि परी तरवार, हान ते भाल्यौ सटक्यौ
हम तु दिल कू जाइ होइ ग्वातौ रे खटक्यौ।
जे व्याहु हति नाइ पीर कू बहुतई कसकौ
मेरी सुनि लै लीला बात
छनक पलक में लै उडौ हम पाचौ भ्राता साथ।
ग्वाते घोडा चल्यौ फेरि बागर में आयौ।
बाछलि माता ते करै जुवाब
अरी तू माक्ड घर जाऊ बेगि कांवनु लै आउ।
चौंरौ मचाइ रहौ भीर
हमतौ व्याहिबे जात एँ, सपनें कैसो है गई रीति।
बाछल कहै बात सुनि लीजौ मेरी
मोइ बारह वर्ष गई बीति डरी गूगुर की सेली
तुम है गए सिरदार
नरसिंह बीर अगारी चालें, भज्जू ऐ धरि लीजौ घोडा के पिछार

बाला भानुजो बु हासी को सिरदार
तोइ गैल में बो मिलै खेलतु होइगो सिंह की सिकार
म्वाते जाहर चल्यो फेरि हासी में आयौ
भूश्रा पूछै बात हात में कहा लै ग्रायौ।
जि महा वधि रह्यो तेरे हात में बीर
जे ककनु कैसें वधि रह्यौ मेरे पेट में उठी ऐ पीर
"कहा वाला मेरौ वीर
सग वरौनिया के बो चलै रे, बुही ग्रागें सम्हारै तीर।"
"भैया वो ञ्या तौ हतु नाइ
कहु बनखड के बीच मेरे खेलतुई मिलैगो सिकार।"
इतनी सुनि कैं रे बात ज्वाबु भज्जू नें दीयौ
हम चार्यो सिरदार पीर डरु कौन को कीयौ।
मेरी जिही ऐ नरसिंह बीर
मेरे मान मिसुर को कदमु ऐ रे, बरैनुग्रा पै जिही सम्हारैगो तीर।
म्वाते घोडा उडयौ, फेरि समदर पै ग्रायौ।
जाइ बाला भानजो खेलत पायौ।
"मेरी साची बताइ दै बात
तुम कैसें ग्रामतौ रे, मैं तुमते ऊ चलतू तुदिल कू ग्रगार।
तुम मती करो रे देर नाथु जे चलतु ग्रगारी
तु दिल नगरी रे नाथु,
चौदहसैन की जमाति परी तु दिल में न्यारी
खप्पर वारी परी पिछारी
नगरकोट की मात सग वो रहति ग्रगारी
तोइ नल कौसौ वरदानु
जहा सुमिरै तहा ग्रामति ऐ रे, थारौठी पै गावै मगल चार।
इतनी सुनिकैं बात ज्वाबु जाहर नें दीयौ।
सुनि लै रे मेरी बात कहा ढगु तेरौ कीयौ।
नल को सौ मोइ ऐ वरदानु
सग हमारे रहति ऐ रे, रहति ऐ सिंह सवार
मात हमारी यो बडी रे
जावें पीछें सबरी जाइफा मात
देखि समद कौ नीर बेगि घोडा दहलानो
कलि गोरख के नाम सम्हारौ
तुम बेडा वांधि समद में डारौ।
ग्रबु उडिबे की मोमें बाकी नाइ
मैं बेडा में ज्यों धनूं, मेरे ग्रघर चलिगे भैया पाइ

कजरी वन की नायु अगारी आयो
जादिन ते लीयौ अवतार, नाउ ना लियौ हमारो ।
पीर परै जब भीर
माये पै तौ लिखि दई रे वो सजा की धोम्र ।
म्वाते घोडा चल्यौ फेरि तु दिल में आयौ ।
आइगो तु दिल गामु
सग की सहेलो देखिबे रे आई दुलहाऐ हाल ।
सग की सहेली चली देखिबे दूलह आई ।
वो देखि कुमर को रूप भौतु मन में बैलाई ।
तिरिया रहि गई बाघ परे लरिकनु के टोटे ।
ऐसे पाए कत करम तेरे सिरियल लोटे ।
कछवाएन को कुमर नामु दुलहा को तारा
नाऊ कौ चतुर सुजान कुमर पै परदा डार्यौ
हसत सखी सिरियल ढिग जाई
कहा दुलहा की करे बडाई ।
व्याकौ पेटु मथनिया, चादि में गजो ।
दात दतूसरि मुख में भारी
ऐसौ जनम्यौ कुमर धन्नि व्याकी महतारी ।
"क्या खिसिआओ भैना मोइ ।
मेरो पति चदा कीसो लोइ ।
वो ठाली बहनें गढयौ देह साचे में ढारी
व्यावे नैन आम कीसी फाक नाक व्याकी सूआ सारी ।
व्याईते लगि रही डोरि खबरि मत लेइ हमारी
जल विनु तेल, तेल बिनु बाती
बनमा मेरे,
तडपति नारि रे तिहारी
जीमतु होइ तौ खबरि मेरी लीजियौ ।
बह्माता जोरी झूठी दीनी
मरूगी जहर विसु खाइ तनक पानी में डूबे ।
ऐसे पति के सग कुमरि या सिरियल जीवे ।
"कछवाइनु बोलिकें करो बारोठी
दादा मेरे
फिरि में व्याते लगो लडाई ।
परभात जग पै मैं पढू ।"
इतनी सुनि कें बात ज्वाबु आहर नें दीयो
सीता पोदा उद तैनें कौन कौ कीयो ।
भैया तुम तौ अगारी चलो, ज्वाबु घोडा नें दीयो ।

नरसिंह बीरा लयौ अगार
भज्जू चमरा चलतु पिछार
बाला भानज करै जुवाब
भैया ब्यापै रे बीरन की मार
कोई नरसींगै डारै मारि
इतनी सुनिकैं बात ज्वाबु नरसींग नें दीयौ
अरे बारौठी की कीनी त्यारी ।
सजा नें देखि मानौ न्यारौ ।
इतनी सुनिकैं बात ज्वाबु हरीसिंग दीनौ ।
पिछिली तोकू नाइ खबरि बाग में सिरियल खाई ।
सात दिना भए बीति ताल पै डंकु बजाई ।
नाम्रो भर्यौ बु नाम्रो खेल्यौ
सबु बाइगा पचि गए तनक ना मुखते बोल्यौ
तिरबाचा तुम पै भरवाई
मरी कुमरि तेरी सिरियल ज्याई
अबकैं ताखे फेरि खदावौ
डसि जाइ नाग हात नाइ आवैं ।"
अरे चौं गाडू तू सगुन बिगारैं ।
भाई जौ जिंदिगी बचिजाइ तिहारी
मानौ चाचा तुम बात हमारी
एकु कह्यौ तुम मेरौ कीजो
पीर को ब्याहु सिरियलतैं कीजौं ।
मोते ल्हौरो भैनि ब्याइ बछवाइनु दोजौं ।
मुसक बाधि बो तेरी डारै
सबु दल कूँ भज्जू माडारै
फेरालेगो डारि बात वो फेरि बिगारै
राजी ते चौंन फेरा ऊ डारै ।
चौं चाचा मेरी बात बिगारैं ।
जबरन रे वो मामरि डारैं ।
इतनी सुनिकैं बात ज्वाबु राजा नें दीनौ
चौं गाडू तू परनु बिगारै
हम चौहानन में परै न सगाई
हमनें पहले सीनी मौंग, उनते करैं लडाई
उल्टी मिड्डी बटा चौरे चढ़ावै
सा हटि हटि जुज्झ मरै तु दिल में
चाचा मेरे
मानि लीजो तू बातरे हमारी

दिल में साकौ होइगौ ।
ारौठी कूं कढवे ग्राए
ाते हरीसिंग चल्यौ फेरि जाहर ढिग ग्रायौ
ाई जानें दोनौ ठोंकि कें पीठि पीर ऐ दैंतु बड़ाई ।
ौं जाहर तैंनें देर लगाई ।
। बारौठी चढि जांइ माँग है जाइ बिरानी ।
ज्जू चमरा करतु जुवाव
या चौहानी ऐ कहा लगिजाइ दागु
लीला घोड़ा तुरत सजाइ
म तेरे देखि चलत ग्रगार
वाँ चौदहसैं चेलनु को परी जमाति
गरकोट की ग्राई मात
ुन लै जाहर मेरी रे बात
ाई चढि घोड़ा की पीठि फेरि दरवज्जे पै ग्रायौ
ावा नायु जाइ ठाडौ ई पायौ
ाबा ऐ तू संग ना लायौ ।
तनी सुनिकें बात ज्वाबु जाहर नें दीनौ
ाथ जारि जाहर भए ठाडे
ौदहसै ज्वान ऊ खडे ग्रगारी
ैमड जाते करि रह्यौ बात
ुनि रे जाहर मेरी बात
रे बीर ताल हमारे चलैं ग्रगार
गरकोट की मात ग्रगार
ाला घोड़ा ऐ दैंतु दवाइ
ज्जू चमरा करतु जुवाव
री सुनि लै भैया बात
तनी सुनि कें बात जाफू सजाऐ ग्रायौ ।
ाया जे दीखत ऐ पाच साहिबी रहावे लायौ ।
जा ठाडौ करै जुवाव
ं फेरा दुंगौ तेरे डारि ।
ोने जाहर खटकै मति हार
र मति हम पै बनि ग्राई
ठीग्रा हमनें करी सगाई ।
तनी सुनिकें बात ज्वाबु जाहर नें दीयौ
ंनें तौ सजा दइ कौन कौ कीयौ ।
तमें परि गई खबरि जोर ज्वालासिंह दीयौ ।

जो क्वारी लै जाइ बात डिगि जाइ हमारी
हमने रे संजा कोनी नांही
तैंने वाबा हिरिगिजि मानी नाही
सो हटि हटि जुज्झु करी तुदिल में
दादा मेरे
होन देउ रे लड़ाई।
बारोठी की कछवैनें कोनी त्यारी
सात लाख को भोर राउ कछवन की भारी
जो गांडू बनि जाउ बात बिगरि जाइ तिहारी
इतनो सुनि कें बात ज्वाबु जाहर नें दीयौ
जो गाडू अगारी परि जाउ तेगना भलें तिहारी
हसि हसि बात करै रे जाहर
दादा मेरे
सपने में है गई नारि रे हमार
तुम टरि जाओ अपनें गढ आर्यरि देस कूं।
इतनी सुनिकें बात ज्वाबु दुलहा नें दोनों
जे क्वारीई ना जाँउ बात गहि जाइ हमारी
मज्जू चमरा तेग सम्हारें
सबु कछवाइनु हाल बिड़ारें।
कछवाए लीने घेरि
काने तू चौं न तेग सम्हारें
हमारो जाहर चल्तु अगारो
तुम बारोठी की कोनी त्यारी
बीरन को ऐ तुम पै मार
कहा चलति ऐ हमारी वार
सो हाथ जोरि तेरे करूँ निहोरे
दादा मेरे
ब्याहि दीजो सिरियल नारि रे हमारी
जाइ गढ़ आमरि कूँसै जाँय
इतनी सुनिकें बात ज्वाबु जाहर नें दीनों
नरसिंग पाँडे चलतु अगार
मामा भानज करे जुवाब
सुनिरे मामा मेरी बात
कछवाइन ते खेलो घात
कुर्मी मूंड़ा लए मँगाइ
संजा जोरें ठाड़ो हात
भैया भक्क नक्क बहि चली, जैसे मति बहि चलै

दै लोथिन पै पाँइ लडै रजपूत तिलगा
बारोठी पै पहुँचे जाइ
जानें कुरसी दई बिछाइ
कुरसीन पै म्वाँ बैठे ज्वान
अबके चौकी फेरि मँगाइ
जापै कालीन दई बिछाइ
अबकें जाहर जोडा उतारि
चौकी पै तुम बैठौ आइ
कछवाइनु छोडी बाड
बे गाँडू देखि मानें नाँइ
भज्जू चमरा लग्यो पिछार
चौदहसैन की चलहि जमात
नगरकोट की माता साथ
खप्पर लैहैं डोलैं हाथ
तू बेटा महलन में जाउ
तुम देखि फेरा लीजौं डारि
फाँटिक सजा देइ लगाइ
सिरियल म्वा रही रुदन मचाइ
"बागर बारे तुमई आउ
लीला, भौजी तैनें लई बनाइ
बागन की तोइ यादिऊ नाँइ ।
सो धरि लै पीर पीठि घोडा तू ।
उडिकें तेग रे सम्हारौ
सो जैठु लडाई पीछें लेगो ।"
सजा तारे देंतु लगाइ
सजा हु बक्यो जैसें जाइ
हरोसीगु जाते करै जुवाब
चाचा रे तू आगें आउ
अबतो सुनि लै मेरी बात
चौं मरवावै सिरदारनु अपने हाथ
सो हटि हटि जुज्झु करें जे पाचौं
चाचा मेरे,
मानि लीजो बात रे हमारी
सो लीला कूद्यो महल में ।
म्वौ सिरियल ठाडी जोरै हात
नगरकोट की कहाँ ऐ मात
सुनिरी माता मेरी बात

जो जाहर ऐ न लागै दाग
अबकें कमठा फेरि सम्हारि
नरसीग वीरई म्वा खेलै सार
भज्जू चमरा लड़ि रह्यौ हाल
सुनि लै सिरियल मेरी बात
कन्यादान में आवै न तेरौ बापु
जार भमरिया लीजौ डारि
फेंटा कटारी की नाएं बात
सखियाँ गाओ मंगलचार
हरीसीग कही गैल तू देउ हमारी
भज्जू चमरा ने घेरी अगारी
सुनि लेउ संजा बात हमारी
नातेदारी जुरी हमारी
अब तौ सिहु पौरि पै गाजै।
लीला घोड़ा करतु जुवाब
भामरि भैया चौं न लेइ डारि
सिरियल तेरे खड़ी अगार
पाँच-सात भामरि लै जो गया, जाहर उन महलन में।
साढ़े तीन भामरि मेरी रह जो गई, बागर के रे पीर।
बुही तौ रे हरिगिज लुगो, साढे तीन भामरि, है जाँइ भया वीर।
वो सिरियल की मात फेरि माड़ए तर आई
अबकें माता करति जुवाब
मेरी सुनि लै जाहर बात
फेरा तैनें लीए बाग में डारि
सो जवई धीय हमारी तू लै जांतौ
जाहर बागर वारे
मानि लें तौ बात जो हमारी।
जे कुटमु नासु काए कूं होतो।
ठाड़ी ठाढी सिरियल कहि जो रही, महलन के बीच
घोड़ा तुबो लीला सुनि लै धरिलै मोइ पीठि के बीच।
'भौजो तोइ तौ पीठि पै मैं ना धरूं, मेरी जिही कुल की रीति
जाहर जो मेरा वीर है, बो धढ़ि लेउ मेरी पीठि।
केस पकरि लै तू मेरी नारि के अरी भौजाई वीर
नरसिग पाँड़े हमारे संग में तुम मानौ मेरी वीर।
भज्जू वो चमरा साथ में, तुम मानो मेरी वीर
नेग जो वाला वीर का, भुलेगो गोद में वीर।
म्वाते वो देही मैं ना लगाउंगी, लीला मेरे पीर

जेठु जो लागै बाल भानजी, सुनि लीजो मेरो पीर;
अवाज जु दै दै तू, महल में कूदि आओ पाँचौ बीर,
दैति अवाज सजा को धीअ रै नरसीग मेरे पीर।
बागर कू मोड़ लैजो चलौ बागर के जुलमी पीर
तौजू नरसीग आइ जा गया महलन के बीच
ना रथु हम पै साहिबी, घोडा ऐ इक्ला बीर।
नगरकोट की मात ऐ आइ गई ऐ बागर वारे पीर।
मेरे म्याने में बैठि जो चलौ, सजा को प्यारी धीअ।
बामन भैरौं, छप्पन कलुआ आइ जो गए महलन के बी
डोला जो धरि लयौ जानें अरे महलन के बीच
क्यों तो री भैया, मैं ना चलू, सुनिलै मेरी बीर
दूधा बी भानो न खाइ लई, मेरे बागर वारे पीर
मातु हमारी तू आइ जो जा, सामलदे माइ।
हम तौ री क्याते अब जात एँ फिरि आइवे के नाइ
तैनें वो जोगी सेइए वो जालधर नाथ
क्वाकी दुआते मैं तो है जु गई अरी मेरी माइ
गोरखनाथ का पति मेरा चेला कहिऐ बागर का पीर।
क्वानें कठिन तपस्या करी मात बाछल कौ जायौ
ठाडी री सासुलि देखै बाट
सात दिना क्वा बीते री हाल।
अबई रे जुज्झ भए पूरे सगराम।
इतनी सुनि के बात क्वाकु लीला नें दीयौ।
बागर बारे पीर तैनें डर कौन कौ कीयौ।
सो चढिलै पीठि पीर तू बागर वारे
देखि हम तौ क्वाते करें रे लडाई।
एकौ करि कें हम चलें।
पाचौ बीर जु लए चढाइ
लीला घाडा अगास उडि जाइ
सजा राजा घेर्यौ जाइ
सजा सुनि लै मेरी बात
अच्छा ह्वै ह्वै बातें तू हमते करि जौलै तुदिल नगरी के राज।
छिपि चो जात औ, जुरि गई नातेदारो हाल
जो जमाई जमु मैं गिनूँ लीला घोडा रै
पाँच बोर तेरे ऐसा ऐ भज्जू रे चमार
बाईस हौदा क्वानें खाली करि जौ दए उन कछवाइन के।
सबु दलु डार्यौ काटि

इन्नें तौ चेताइ कें तू जिनमें दीजौ सास तू डारि ।
तैंनें दईऐ सवद की मार
तोप गोला चलन नाइ पाए, नाँइ चलो पिस्तौल कमान
तैंनें दईऐ सबद की मार
सिर इनके कटे हुत नाँए, जे पीटि रहे परे परे पाँइ ।
इतनी सुनि कें बात ज्वाबु हरीसीग नें दीयौ ।
तेरौ कहा विगर्यौ ऐ लाल, लाल तैंनें सबवे लीये
तैंनें सब दोए मरवाइ
मरे मराए कहाँ बगदि आगे, तैंनें दीयौ भेकु कटवाइ
तू तौ भौतु बनामतु ऐ बात
तेरो बात कहाँ रहि जाइगी, तेरी लई चौहाननु काटि नाक ।
हात जोरि देखि कहि रह्यौ बात
मेरी तौ रे कछू नाइ चलती, तैंनें मारी सबद की मार
कहा ऐ गोरखनाथु
ब्यानें तौ गूगुर दयौ, जालदर नें दीनी ऐ भभूती हाल ।
मेरे कौन जनम के पाप, धीम ने सिरियल जाई ।
चौहानन की भीर आजु चढ़ि तुदिल पै आई ।
तुम बेटी ऐ लै जाउ
बात हमारी बिगरि गई ऐं, नातेदारी जुरैगी हुति नाइ ।
इतनी सुनिकें बात ज्वाबु जाहर नें दीनौं
चौं सजा तू गरूर विचारै
तू इतनी चाँधै हिम्मति बात तू अपनी बिगारै
हम बागर कूँ जात एँ भाई ।
तेरी धीम हम नें सिरियल व्याही
सजा तू अब कें तेग सम्हारै
हरीसीग ऐ वेगि बुलावै ।
घोड़ा प ताखो करै जुवाब
अरे सुनि रे सजा मेरी बात
लाई तेरी सिरियल नारि
मरि गई ऐ यू हालई हाल ।
तिरबाचा हमनें भरवाई ।
तेरो मरी कुमरि हमनें सिरियल ज्याई ।
छो बात मई सुनि बात हमारी
सजा बाचा
तू महरा कूँ चलि माई
सोवें में कहा तू देइगो ।
इतनी सुनि कें बात ज्वाबु सजा नें दीनौं

दुबकि चुपकि खाइ जाम्रो पतौ नांइ तिहारो भाई।
सामुई तौ तुम करौ लडाई
सो साँची कहूँ मानि लै ताखे
बेटा मेरे,
मैं तौ फिरि ऊ लु'गो लड़ाई
राजौ ते बेटी ना दऊ।
कछवाइन कौ कुमर फेरि वो तारा ग्रायौ।
व्याकी क्वारी रहि चल्यौ मौर कहाँ ऐ धीर हमारी
सो साँची कहूँ मानि लै ताखे
बात हमारी
व्याकी मामरि दऊ डरवाइ
व्याहि दू छोटी धीम।
इतनी सुनि कें बात ज्वाद नरसींग नें दीयौ
राजा मानौ बात हमारी
सहर दलेले के राउ हम सिरदार ऐं भारी
सुनि लेउ चाचा बात हमारी
क्वारी ना लैं जांइ व्याहि लई धीम तिहारी
सो चुपका चुपकी सग खदाइ दै
सो राजा राजा
मानि लीजौ बात रे हमारी
सो सोवे कौ नमूना तुम करौ।
म्वाते रे राजा चल्यौ सग जाहर के ग्रायौ।
राजा जाहर ते करतु जुवाब
तुम देखि फाँसि लीजौ डारि
जिन फरलु मैं मानतु नाहि
गलमाला लीजौ डरवाइ।
तारा ऐं औरें लै बैठारि।
सो मैं तो बात नीति की करि रह्यौ
जाहर बेटा
मानि लीजौ बात रे हमारी
तुम व्याहि दलेले लै अइयौ।
तेगा ते औरें बैठारें
हम चौहान ऐं बीर
बे गाड़ बछवाए पीर
बुनकी नैंक धरिगे न धीर
सो साँची कहूँ बात सुनि लीजौ

संजा राजा, चाचा मेरे.
सो सिर भुट्टा सौ लुंगों तारा कौ काटि कें।
परिकम्मा घोड़ा नें दीनीं
एक ठोकर संजा में दीनी
संजा राजा चलतु अगार
जुलमी घोड़ा करै विचार
गाँड़ू अब चौं चलतु अगार।
मूंज, बकौटा ओर चमार
चौंचौ कूटै चौंचौ फार
तो में दई ठोकर की मार
अब गाडू चौं चलतु अगार।
तारे दै अब तू खुलवाइ
फाटिक कौ रस्ता लै जाइ
अब कछवाइनु लेइ जगाइ
बुनते हमारी तेग चलै फराइ
वे सबरे तुमनें डारे मारि
अमिरितु बूंद हम सबपै डारें
चाचा मेरे
अमर सबनु करि जांइ
सो डोला में धीअ अपनी तुम धरी
माढ्यौ पट्टा गाड्यौ नांहि
भामरि कैसें लीनी डारि
खयौ पकरि ब्वानें लीयौ डारि
महलन में रही रदन मचाइ
तैनें जबरन लीनी डारि
बाबा गोरख करैं जुवाब
तौ जूं आए जलंधर नाथ
सो लै लीनीं धीअ गोद में
दादा मेरे
तौ जूं है गए नाथ जौ सहाई
सोबे की त्यारी करि रह्यौ।
बेटा तुम सहर दलेले लै जाउ नारि है गई तिहारी
जूरी हमनें दई मतवारी
ठाड़ौ गोरख जोरें हाथ
सुनि लेउ बाबा मेरो बात
एको देउ तुमऊ फरयाद
सोबे में लुटिया देतु गहाइ

दान पानी कछू चहियतु नाए
बाबा मेरे
एक लुटिया दीजौ रे दिवाइ
जे राम रमरमी म्वा करै।
जबरै ते तुमलै ई जाउ
दोऊ जोगी भए सहाइ
नगरकोट की माता ग्राइ
गोदी में जे लै ग्राई हाल
डोला में लीनो बैठारि
डोला जाको पचरगा ग्राइ जु गया दरवाजे के पास
सखिया भी सारी मेरी गाग्रो जु मगल चार।
फगुग्रा बी भैना तुम गाइ जो लेउ जा नगर को नारि।
धरि लई धीग्र डोला में प्यारी
सजा राजा खडो पिछारी
ग्रासुन की बधि रही धार।
धीग्र हमारी जाति ऐ करि ग्रामें गाइ-बजाइ।
करि ग्रामें गाइ बजाइ वात रहि गई तिहारी
ब्याते तुम लै जाउ
बचनन की जे बोधी धीग्र हमारी फेरा लै गईं ऐ बाग में जाइ।
सो धरि लई नारि डोला में जानें
सो बागर देस कू चलि दियौ
जानें घोडा तो खूब उडायौ।
सारद माइ सुरति करि सेरू
ज्ञान दिया मोकू परमेस
पति भरता घर बालक जनम्यौ
विकट भुम्मि म्वा बागरदेस
वको महरी बनो पार तेरा गचकोली ग्रौर कलई सेत
चार्‌यौ खू ट को ग्रावै मेदिनी, क़ादिम लेत पीर तेरी भेंट
पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिन धामत ऐ तोइ चार्‌यौ देस
नाथन का करवाई मान्ता राखी लाज भेक को टेक।
जेवर राजा सरग सिधारे
लै जाहर गादी बैठारे।
खेलि शिकार बाहुरे जौरा
ढिग मौसी के ग्रामें
बिस भुम्मि हमकू दै मोसी पिता को नामु चलामें।
कूग्रा ग्रौर बावरो मोसी सागर ताल खुदामें।
सहरपना तें बसिकें मौसी न्यारौ किलौ चिनामें।

न्यारो किलो चिनामें मौसी छोटे छोटे बुर्ज बनामें
छोटे छोटे बुर्ज बनाइकें उनपे तोप धरामें
अबई जांइ गाम अपनें कूं गांठि कछू ना बाधें।
सो हात जोरि तेरे करें निहोरे
बाछल मौसी
ऐ ठकुरानी
थोरो सो बिसवा बांटि दै।

२. लाला खेलन गयो सिकार औलिया ऐ ग्रामतई समझ
डिग लुगी बैठारि पीर तें भूम्मि की बात चलाऊं।
मन सन्तोक धरो रे जौरा, उर्जन सुर्जन
बैहन के बेटा
करि दुंगी तीनिरे तिहाई
सो ग्रावे मेरो औलिया।

३. माता तेरो जाहर सिरी दिमानो
बागर देस में है री रानी
तेरौ जाहर ऐसो धीगू
मागे बिसे दिखावै सीगू
जैसोई जाहर ऐसोई सिरियल
सो हात जोरि तेरे करें निहोरे
बाछल मौसी
ऐ ठकुरानी
सो जापै तो लिखवाई।
बाछल रानी कहत कहानी
मैं पतिभरता जगनें जानी
द्वात कलम महलनतें लाइदे, जेठनु भूमि की ठानो।
बाला तन ते मैनें पारे, अन्तर कछू न जानी।
बड़े भए जब घिरो भूम्मि को ठानो
सो बाछल मोरो
समझी थोरी
रवा मैमा में
द्वात कलम मगवाई
सो राजा की बेटी लाइ दै।

४. सीलमंत राजा की बेटी
सैसाने में धाई।
मनते भकलि उपाइ कुमरि नें द्वाति कलम दुचकाई।
सामुसि टूटी कलम धोंधि गई स्याहीं

मोइ महलन में ना पाई ।
सो हाल जारि तेरे मन्न निहोरे
सासुलि मेरी
नरसींगं पकराई
सो राति पुरोहित लै गए ।
. तोमें सिरयल बडे गुमान
तैं तोरी मौसो की कानि
लै सिरोही बन कूं जाइ
जाहर मारि भन्नु हम खाइ
तैनें सिरयल माड्यौ माड्
तोइ करै महलन में राड
मारैं पोर करैं द्वै टूक
तोपै घर घर की मगवाइ दें भीक ।
पाप के बीज गाठि मति वाधै
ऐ सजा की
तेरे नैनन ज्वानी छाई
मौसी ते नाही मनि करै ।
जेठ बडे मैं सिरियल छोटी
गैल चलत मोइ दैते गारी
मैंने जाने सूरे पूरे
तुम निकरे घूरे के कूरे
जाउ जेठ उठि जाउ सवारे
जे बादर कहा फारे
मेरी घर की सासुलि बैरिन ह्वैगई जाई ने
जेठ बडे मैं सिरियल छोटी
मैंने जाने मरद मये काछन कें छोरी
मेरी वारौ वलम घर नाइ करौ महलन ।
सो सुन्त खंम जौरन कू मारै
सासुलि मेरी
जोमतु छोडै हतु नाई
सो आवै मेरौ ग्रौलिया ।
,. सोलमत सजा को वेटी तहखाने में रोई ।
वागर वारे पीर ग्रौलिया ग्राजु पतिगा खोई ।
माता भुम्मि लिखति ऐ तेरी, ध्यान चलै कछु मेरी
भजमति होइ तौ ग्राउ ग्रौलिया
वागर वारे
गूगा राना

छिन भूमि होति रे पराई
सौ टूकरिया बाटे देति ऐ।
• देवी जाहर खेलैं सार
मौरा गाजी करैं जुवाब
जाहर पीर महलन कूं जाउ
तिहारी बाँगर बाटी जाइ
छोड्यौ पासौ पटक्यौ दाउ
लीला घोड़ा तुर्त मगाइ।
जाहरपीर वडे परवीन
कसि बाधे घोड़न पै जीन
सुई सुरख सीस पै पगडी
हाथ बनी भालें की लकड़ी
उल्टौ घोडा राह लगायौ
ठम ठम ताजी नचतौ आयौ।
उगिलिपरी तरवार, हाथ ते भालौ सटक्यौ
फडकै दाई आखि, होइ बागर में खटकौ
मारि घोडा महलन कूं आयौ
दादा मेरे सो पौरी पै झुलम्यौ धाई
सो जाकौ लीलौ घोडा हीसियौ।

७. बजी खमखमी टाप, भये महलन हुकारे
भाई अजमत धारी पीर, टूटि गए बज्जुर तारे।
अब तौरी सिहु पौरि पै गाजे, दरवाजे वाजैं तरवा
बेटा समुही परिकें करियौं रैलौ।
तुम पहलें वाटौ सहर दलेलौ।
जो कहू बाटैं आयें आधु
मति मानौ जाहर की बात
तुम फेंट पकरि डारो गलवाई
बागर बाटी तीनि तिहाई
ठाडी माता अर्जु करति ऐ
उर्जुन सर्जुन
मन में दहसति चों खाई
समुही बेटा ज्वाब करो।
सुर्जन बात चटपटी कही
बाँह पकरि बाह्रन लै गई
जो जौरा जिय में दहलाउ
तिहारी राह बनी मोरी में आउ
जो पाग उतारि कांस में दीनी

उन जोरन्नें
दादा मेरी
मोरी की राह रे मियारे
वाछल मोती राम् राम् ।
दोनों दोनो जोरा निरारि जो गए गादो रूप के जोरा ।
जाहरपीर महलों में आइ जो गया वावा गोरष का चेला ।
घोडा लगायो घुडसार में लहरो गूगे ने
सिरियल नारि विछाइ दियो पलिका ।
बैठि गयो जाहर नर बका
पगडी में सोने को झब्बा
आनि धरे आफून के डिब्बा
सिरियल नारि सजी अलवेली
आपु सजी और सग सहेली
पीए रे भग झुकाए वत्ती
अब सिरियल नारि खडी अलमस्ती
फेंकी कलम पटकि दई द्वाति
जा अपने वीर को मूड सिरोहीते काटि।
ठाडो ओट घोव वगला की
वो सजा की वेटी
वीरी देति रे लगाई
वलमा मेरे चाविलै ।
भैया देखि देखि कें सूरति अम्मा डॉक फोरिकें रोई ।
वेटा, एकन के ऐं लाख लोग, एकन के ना कोई ।
अम्मा कौनस को तौ लाख लोग और कौनम का ना कोई
उर्जुन सुर्जन कें लाख लोगुऐ, तेरी जानि अकेली
माता मेरे तौऐं लाख लोगु और गुनई कौना कोई
सो मागे विमे तनक तू दै दै
जाहर वेटा
ए वावरिया
नाहक करिंगे लडाई
थोरो सो विसवा बाटि दै ।
माता नें नामु भुम्मि को लीयो ।
जाहरपीर को भभक्यो हीयो ।
सबु वन्द टूटि गए जामा के
रिस में नैना है गए राते ।
जो कोई कहतो इतनो और

वाकूँ मारि डार तौ ठौर
सो तेरी कुक्षा जनमु लियौ ऐ
बाछल मैया
ए ठकुरानी
तोते मेरी कछू न वस्याई
मर्दन के विसवा न बटें।

१०. मारें मारें रिसके मारें निकरि जो गया बाबा गोरख का चेला
कासो बी दैंति लगाइ
राजा की बेटी भोजन लाई तू जैलें चित्तु लगाइ।
अब कें चलैंगी दल में तरवारि
समझि बूझि लै मेरे वलमा तेरी वरनी रहो ऐ खिसाइ।
वादर फारे जा राह नें
बहनौतऊ लीए पारि।
भौतु करिगे दिल्ली तक जागे बास्याह लामें चढाइ।
हम पै गोरखनाथ सहाइ।
चौदह सै सोटा ऐसे चलैंगौ, ब्बाको एक चलै न तरवार।
एक न मानी बाँगर वारे तौ जानें लीयौ जीनु सजाइ
फारिका डार्‌यौ जानें घोड़ा पैं, भालो लीयौ उतारि।
जाको धनऊ खाति पछार
ब्बाँनि चलती है ग्यायौ, तौजूँ है धायौ परभात।
उर्जुन सर्जुन दोनो आए।
मौंसी ते रहे बात लगाइ।
बेटा नाम्रो रिसके मारें पीयौ दूध
काँसी लाई लगाइ कें
सो भोजन फेंक्यौ दूरि।
मेरे दिल में उठति हिलोर
बाँधन को छौना गयो, बाँगर में माँइ मेरो मोह।

११. ब्बाँते सुर्जन चल्यो पास मोदी के आयौ
सुनि रे मोदी बान मेलु बाबा नें खूब बनायौ
सुनि रे मोदी बात
भोजन करि तैयार बीरन कूँ, हमें लड्डू देइ बताइ।
बजन बताइ देउ ऐ महजादे
जामें कितनों देंइ बिनकूँ हम डारि।

१२. सवा पौन सेर के धार्‌यौ लड्डुआ
नैंक जामें दीजो जहर मिलाइ।
हत्ना मनि करियो बाँगर में, हम पीर ऐ देंइ समाइ।
ब्बाँते घोड़ा दीए हाँकि

भैंस गही ऐ क्या बनखंड की
दोऊ जात एँ घोड़न पै बैठे ज्वान ।
बैठे जात एँ ज्वान, निपा जाहर की भाई ।
भाई क्या जाहर नें लीनें जानि
पमरि मर्द के बंधी दुलाई ।
जो जाहर नें झारि बिछाई ।
कुमरि कलेऊ महलन ते लाए
दादा मेरे
माता नें करो रे सहाई
सो खुदमा तन में लगि रही
१२. भैया, शहर दलेसे ते घोड़ा हांके
सगुन भए एँ बांके
कुपरी माइ जाहर पै बैठी
अपने मुँहडे माँगे ।
अपने मुँहडे मांगे—
पहलो लड्डू दयौ मरद कूँ, भई ऐ अमिरत की बूटी
गुन जौरान की गाँठि तबै हिरदे की छूटी
दूजौ लड्डू दियौ गहाई
जाहर अगड़ो गयौ चढ़ाई
जौ न मरैगौ पीर मौति दोउन की आई
इक लडुआ में ते द्वै जौ करे
लै जौरान के हाथन धरे।
देखत जौरा पोरे परे
जैसें माना नाग भुजगी नें डसे
सो देखत लडुआ पोरे परि गए
दादा मेरी
सरद गरम भई नारी
'सो लडुआ दादा जहर के ।'
१३. जाहर नामु कलि गोरख जपाए
खेलतु नाग भुजगी आए ।
खेंचि जहर सर्फन कौ लीयौ ।
विस कौ प्यालौ पीर नें पीयौ ।
पीयौ प्यालौ आयौ न लहरि
जाहर पीर फाडारयौ कहर ।
लटकि सिरोही नीचें आई
मारि डारि मौसाइते भाई ।
कूर मति हम पै बनि आई ।

विसके लड्डू लाए बनाई ।
ठेंठर खोटी जाति जहर लडउन में दीयौ
तुम मेरे नंगर में रहौ रौन सुरई न कौ पीयौ
जो जौरन कूँ देइ सहारौ
गधा पै देउ चढाइ, करूँ जाकौ मुहडौ कारौ ।
हम लैन कहत ऐ भुम्मि, उलटि भयौ देस निकारौ ।
बाँधन कूँ मंडील कड़े पहरन कूँ तोरा
वैठन कूँ सुखपाल और हाथी औ घोड़ा ।
सो करत ए ऐस पराए पीछें
उर्जुन सर्जुन ए मौसाइते
दादा मेरे
खतिए हम पान रे मिठाई
सो आपुनि जोरा निकरि गये ।
१४. म्वाँते मुर्जन कहे बात एक मेरी कीजौ
तुम दिल्ली कूँ चलौ सहारौ म्वाऊ कौ लीजौ
तुम अच्छे कसि लेउ जीन
दिल्ली म्याते दूरि ऐ
सजा जू पहुँचिगे कितनी दूरि
१५. धरि मसक्यौ सुर्जन नें घोड़ा
धरि मसक्यौ बोरनु घोडा
घोडा पैते भरतु उसास
एक डोकरी ऐ पूछन लाग्यो म्या कौन कौ ऐ राजु
रा राजा को काऊ ऐ मति पूछै
वो सहजादौ लाल ।
बनन में बोह खेलतु ऐ, काऊ पैते नाइ लैतु भेजऊ दाम ।
ऊटन केऊ हलकन बारे ज्वान
जे सवरी देखि राजुऐ जामें जाहर ऐ सिरदार ।
ऊचे कू चाहे नजर परि जाइ
जे मौसाइते दोऊ ऐं ज्वान
मेरी तौ जे हरि फोरि जागे, मोरे सुनि लैउ घोडा बारे ज्वान ।
घोरौ मौ राजु ऐ उर्जन सर्जुन को, वे मौसी पै लैइ लिखवाइ ।
जा डोकरी नें बादर फारे, जाऊने पहलें हम है आए ठोंकि बजाइ ।
म्वाकी एक चली हृति नाइ
जहर के लड्डू हम लै गए बनी के बीच में
म्वापै है गयौ नाथ सहाइ ।
स्यापन के जहर ते बुनामो मर्‌यौ मात ।
हम दिल्ली सहर कू जननी जात

हम दिल्ली कू जाइ, बास्या के जोरें पहुँचे
जो वहू धरि ले धीर
चार्यौ दिसान के राजा लामें, बागर कौ उठाइ दिगे धूरि।
बेटा मेरी कही तू मानि
अब कें तौ माता ते मिलि आओ, लेगी वहू ऐ समझाइ।
मानि कही मेरी उनु लई वीर
वो कही काऊ की मानति नाइ, जामा की उडाइ गयौ धूरि
जाहर कहता है—

१६ "माता सुत काका कौ होतौ भैया
करि देतौ ब्याइ तीनि तिहैया
सुत फूफी कौ होतौ बीर
सब फौजन कौ करू अमीरू
जौ कहू होतौ तेरौ जन्यौ
सब बागर कौ मालिकु बन्यौ
मागे बिसे तनक नाउगो
बाछल माता
ऐ ठकुरानी
बोलु रहो, सिर जाई
मरदन के बिसवाना वटें।

१७. जानें घोडा लयौ सजाइ
घोडा लयौ ऐ सजाइ
दिल्ली सहर कू जात ऐं, बागर माऊ जोरैं हाथ
जो वहूँ दिल्ली पकरैं बाह
तो करैं गऊन के दान
ब्यात लाला चले फेरि दिल्ली में आए।
जोरा आए दिल्ली खेत
चमकि रहे लाला के महल
वा तला सिरदार है,
ब्याके सग लडैगो बु बाकौ ई ऐं सिरदार
सो एक सिपाही ऐ बूझन लागे
दादा मेरे
कहा होंनि ऐ ऐ बाछ्याई
सा बाछयाई झडा कहा मिलै।

१८. हरी हरी गिलम बिछी ऐ दर्याई
प्यालौ पिऐं झुकि रहे ऐं सिपाई
सो टूटति तान थाप तबलन पै
म्वां होति ऐ बाछ्याई

बाछ्याई झडा म्वा मिले
म्वाते सुर्जन चल्यौ फेरि दरवाजे पै आयौ
पहुच्यौ ऐ रमनीक
तखत पै पहुरे दारुऊ पायौ
पहरेदार कहै मेरे बीर
कैसें श्रौ मन दिल गीर
हम कहा पूछतु बात
ब्वास्याइ ते दादा हम मिले
सो हमें दीजौ गैल बताइ
कौन रजन के पूत कहा गढ-किले तुम्हारे
रौतिर रूप भयौ एकु राजा
दिल्लो की बास्याइ लागतु चाचा
महम किले पै बज्यौ नगाड़ौ
व्वा दिन पाग राजा रूप तै पलटी ।
सो परि गई लाज पाग पलटे की
दादा मेरे
का हौति ऐ बाछ्याई
बाछ्याई तबला कहा ठुकै
१८. इतनी सुनिलई बात ज्वाब ज्वानन नें दीयौ
निरखी राज भयौ मन फूल
चार्‌यौ दिसान में जाकौ राजु रह्यौ चार्‌यौ खूट
सो जानि भजाही तेरी जाइगी
व्वा चौहानीन में
दादा मेरे
मरिगे जहर विस खाई
सो तेगा हमारे ना फवै ।
१६. "लम्बौ कौ यौ हाथ
सलाम बाछ्याइ ते कीनौ
बाछ्या ठाड़ौ ऐ करजोरि
कौन रजन के पूत श्रो तुम भौतु मलूक रखत श्रो मोह।"
"रौतिर रूप भयौ एकु राजा
दिल्ली कौ बाद्या लागत चाचा
महम किलें पै बज्यौ नगाड़ौ
लाल खिचौ तरवारि पीठि दै व्वा दिन भाज्यौ
मेरे पिता नें भुकाइ दए हाती
व्वा दिन पाग राजा-रूप तै पलटी
सो परि गई लाज पाग पलटे की

चाचा मेरे
सांजो फिराद रे हमारी
नांने में भतीजे लगत एँ।

२१. "कै कोई जाहर जिन्दु भरे राठौरो राना
ब्वै दिए हात को साइ दरें पोडन को दाना।
वु जमींदार अपनो भूम्मि को
ब्या में कितनो जोर।
हटिजा गाड़ जोल्ला वनें वहा मचायो गोर
सो ठाडो वास्या नहि रह्यो
जाहर मलवेलो, हा
छाइ रह्यो झडा रेतु
पुडीर, कीए असल भिगार, धारडे सब माडारे
वे सबर वारे कौन बिचारे
वे चाकर है रहे हमारे
• सिकरवार, परवार
किए कछवाहे तडकर
पुडीर कीने असलि भिगार
वे परे कैदि में दते दार
कैदि किए जायो कुलराई
चार्यो दिसन में फिरति दुहाई
सो इतनो जोर दयौ चौ चाचा मेरे
दिल्ली के धावे धरि रह्यो

२२ जोमतु छोडै हनुनाए
वात सुनिलेउ हमारी
तुम वागर की करि देउ त्यारी
हम वात कह रए ठीक
वु मरदानों ऐसो एँ
सा दिल्ली को उडाइ देगो धूरि
तोकू लेगो मारि करै तेरी दिल्ली वस में
तारा गढ़ सो गड नहीं, नहीं खिगू सो घोडा
मीरा गाजी सो मरदु नहीं सो वाने तारागड तोरा
बादसाइ नें लिखवाई पाती
चारि रूकन चारि चिट्ठी डारीं
लै चिट्ठी अहदी को चल्यौ
बीच मुकाम् कहू ना कर्यौ
मेरठ के दरवज्जे पै गयो।
मेरठिया पूछै वात

कहा कौ चौकीदार ऐ, सो साचुई साचु बताइ
नौरंग तौ सिरदार है, ज्वाके हैं पहरेदार
चिट्ठी दीनी हात में तुम बाचिलेउ सिरदार
दरमनिया कहि रह्‌यौ बात
लौटि पाछे कूं जइयौ
ज्या नाइ हमारौ सिरदार
हंस बिनास होइ बागर में
सो हमारी नाइ फलै तरवारि
नाइ फलति तरवारि
चेला गोरखनाथ कौ वो देसोटन कौ मार
हम चढ़ि कें कैसें जाइ
चौहाने में हमारो भैनिऐं, राठौरीनु लगि जाइ दागु
सो कहतु ऐ बात, लौटि जा।
दादा मेरे, पिछमनौ
ठाडौ ग्रहदीतें कहि रह्‌यौ

२३. ग्वाते ग्रहदी चल्यौ फेरि रौतक कूं ग्रायौ।
रौतक पूछैं बात कहा हरग्रानौ ग्रायौ।
वौ हरिग्राने कौ जाटु
ऐसौ तौ सिरदार ऐ जाहर ऐ लेगौ मारि कें
तुम ग्वाई करौंगे फिरादि।
जे ग्रामें दखिन के दखिनी
नाचें घोडी झूमें हतिनी
जे ग्रायौ हरिग्राने कौ जाटु
जाइ पर्‌यौ जमुना के घाट
जे ग्राए बिंदावन मुड़िया
मुड़ि रही मूछ, कटाइ ग्राए चुटिया
सो नरवर सेर जुरी दिल्ली में
चाचा मेरे
लखु ग्रावै लखु जाई
सो फौजन की गिन्ती ना रही।

२४. हवलदार बास्याह बुलवावै
बागर के जानें करे पिहाए।
चल्ति ग्रगारी फौज
हम लड़िवे कूं जांत एँ, सो वेगि सजाइ लेउ फौज
इतनी सुनि कें बात ज्वाब लाला नें दीयौ
गो छोटौ सौ सिरदार
ग्वाई वहा फौज पल्टनि ऐ मूड़न में करें ग्रपनो राजु

दल वापर तम्बू तन्यौ खेंचि गढयौ प्रधमान
लसकरु चाले सैद कौ
सो दहलाने गढ़ पापान
सो कटि कटि धूरि गई अम्बर में
सूरज नें जोति छिपाई
जा कौ भानु गरद में मटि गयौ
वाछ्याइ के जोरू खड़ी
सुनि वलमा मेरी वात
तुम वागर कू जौत भौ तिहारी नाइ फलै तरवारि
बाह् छुडाए जौत, ऐ निवल जानि कें मोहि
हिरदे में ते आउगे सवलु वदूंगी तोहि ।
निमक हरामी है गई, जिन लई पन्टनि तेरी मोल
ऐसौ दीखतु ऐ मोद,
घोसो दिगे तोइ
—सो हम विनास होइ बागर में
—चनमा मेरे
—ठाढ़ी वास्याइजादी कहि रही
२५. म्याने लसकरु चल्यो फेरि हांसी में आयो ।
जाइ वास्याइ पूछै खान कौन को रे बिल्ल्यो आयो ?
चाचा मेरे, सो ब्याको ऐ नातेदार,
ब्याको भानजो लगतु ऐ सुनि लै मेरी वात
डेरा दै दै साम में सो हम है पाप ब्यारे पास
बाछ्याइ धरि रह्यो ध्यानु
तुम हिन्दू बलवीर
कहूँ तुम मिलि मति जइयो
हमारे कोई नाइ दिपाउ
मेल पोडन की बँधि गई
सो तुम जैयो घाघा मरने पासु
हाँसी छोडी गए हिसार
माई चोकड़ को म्वो लायो बजाह
बास्याह नें सिलवाई पाती
आइ मिलि भानज मेरी छाती
बड़ो भरोसो बाना मोह
ह्इबन धर्म फौज की ठौह
नाम परगने वेंद्यौ लाई
चोरन ते मेउ तोरि निहारी
भागि जाउ बनि मेउ मराई

ज्यों तौ कोपि चढ़ौ बाछ्याई
लै चिट्ठी ग्रहदी कूँ दीनी
दादा मेरे
बाँचिलो जो हुरमरे सवाई
सो परवानौ बास्याके हात कौ ।

२५. लै चिट्ठी ग्रहदी कौ चल्यौ
चल्यौ चल्यौ हाँसी में गयौ
नीचे चाहि नजरि फिरि जाई
जाकी बस्तो बड़ी लग्यौ परकोटा
ग्रब सबु हासी कौ एकु लपेटा
नीचें चाहि नजरि फिरिजाई
दरवाजे पै तारी पाई
लै तारो जानें तारो खोल्यौ
बाला के बो जोरें गयौ
जाइ बाला पूछतु बात
कहाँ के तुम सिरदार ग्रो, कैसें ग्राए हमारे पास ।
कैसे ग्राए पास
सुनौ मेरी बात
ग्रहदी देरह्यौ ज्वाबु खर्बरि तोड़ ग्रबऊ न सूझो
जे दल तौ पै ग्राए भूमि
घेरि लैंबै हाँसी लीनी
चिट्ठी फेंकि तखत पै दीनी
बो बालानें बाँचि हात में लीनी
गसि मीजत रैख उठान
लिख्यौ बास्याइ कौ फार्यौ
ग्रहदी मोड़ै हात, यहा गजवानौ फार्यौ
सो चनन के मोरें मिरच चबाइगौ
बाला दादा मेरे
मरुगौ हलकु भयौ जाई
परवानौ बास्याह के हात कौ ।

२६. जानें ग्रहदी लीयौ घेरि फेरि गलबाही डारीं
ग्रहदी दयौ खम्भ ते बाँधि
जामें दई कुरंन की बानें मार
मोइ मति मारे दादा मेरे, मोइ मति मारे
जे गजवानौ बाला तू काँ फारे
मैं ऊ तौ नौकर बास्याह कौ भैया
चिट्ठी लायो बास्याह के हात की

तुम परवानो अपनो देउ
तुम परवानो लिखि देउ
सो अहदी ठाडो रहि रह्यौ
भागमल्ल दीवान बैठि पलको में आयौ
भागमल्ल जी कैसी कीजै
हटियौ कैसो होइ, जग चोरे में लीजै
हटियौ कैसो होइ, जुज्फ सरवरि को कीजै।
बैरी आवै द्वार बैठना बाऊ ऐ दीजै
सो हटि हटि जुज्फ करै हासी पै
सो दादा मेरे
बोलि रहयौ सिरजाई
हासी पै साको हम करैं।
लै चिट्ठी अहदी को चल्यौ
बीच मुकाम कहूँ ना कर्‌यौ
चल्यौ चल्यौ तम्मू पै गयौ
चीठी फेंकि तखत पै दीनी
बाछ्याने बाचि हाथ में लीनी
देखत चिट्ठी परिगौ धूआ
भोर करूँ हासी पै धूआ
सो चनन के भोरें मिरच चवाइ गयौ
बाला दादा मेरे
अरगौ हलकु भयौ जाई
तम्मू में ते बास्या कहि रहयौ।
चारि पहर रजनी के बीते
तुम करो रसोई भोजन घी के
बिगुल बज्यौ बास्या बजवावै
सूबेदार ऊ फौज सजावै
तुम बाँधि लेउ दुलमान कटारी
घु डीदार ऊ बाघौ पेच
अब घेरि लेउ बाला के महल
सो कटि कटि ज्वान गिरै धरती पै
बाला दादा मेरे
बोल रहै सिरजाई
तू भाज्जा बागर देस कू
जानें हासी लीनी तोरि लूटि दिल्ली पहुँचाई
बाला बागर भाज्यौ जाइ

सुनिरी मानो मेरी बात
अब जौरन में हम हारे री मारि
जौरा भाए हांसी गेत
म्वा दीखि रहे ताला के महल
जानें हाशी लीनी तोरि लूटि दिन्ली पहुचाई
सो ऐसा जुलमु कर्यौ ऐ नानी
उर्जुन सुर्जन नें
रुप मत में
मन में दया नाइ भाई
जानें भानज हार्यौ मारिकें ।

३०. म्वाते पल्टनि चलो फेरि बागर में भाई
सासुलि गढ़ति पडापड देखि, मेल
घोरा पडलि सेत, सुतौ भौंहरे तें बाहिर चलि कें देखि ।
नाहक रारि करी जौरान ते
फौजें लै लैं भ्राए माजनि भौहरे ते वाहर चलि कें देखि
अपने बलम की मैं तो घोडा पाऊ
घोडा पाऊ, पाँचौ कपडा पाऊ
कपडा पाऊ, पाँचौ हतियार पाऊ
लैकें बीकू बास्याइ तें मिलि आऊ
ऐसे बचि जाइगौ सासुलि हेरो तेरौ बेटा
भौर भ्रब बचिवे कौ सासुलि नाइ
जापै जे दल भ्राए घूमि
गोरख तुही
'भरी मेरौ री जाहर नाहर भया ऐ
सजा की बेटी,
जाइकें चाँ न देइ जगाइ
अरी बह भाजु देइ कौन जगाइ
गोरख तुही ।

३१. नासिका में बारी चुन्नी
मोतिन की तोतादार
जापै घाघरो घुमक्दार
टेडिया हमेल हार
रानी पायल की झनकार
गोरी वलमै जगावन गोरी जाई
सो पिउ की प्यारी बल में जगामन गोरी जाइ ।
पारक सजाइ लियौ
चौमुख जराइ लियौ

गैया सब घेरि लीनी
बच्छन पै परी भीर
जिनकी कौन बचावै पीर
बलमा सोइ रह्यौ जिउ दवकाई।
तैनें नाहक बैर कर्‌यौ जौरान ते
कोपक चढ़ी बास्याई
सोइ रह्यौ जिउ दवकाई।
धन सिरहानें, धनि पांइत भ्रावें
ठाडी ठाडी रानी जे बलमै जगावै
कबऊ तौ ठाडी तरवारें सहरावै
मेरे तौ जानें बलमा बागर तेरो घेरौ
जैसें हौसुलिया में गूदो मेरी घेरी
बलो जग्यौ गलगर्ज बली की फूली देही
च्याते कित गई सुन्दर नारि खडी मोइ तानी देही
भाई टूटे पलग के साल महल की खिचि गई रेही (खम्भ)
पाटो उडि गई किरच-किरच टूट्यौ सिरहानौ
सो ठाडी ओट घोक बगला की
वो सजा को बेटी
घोरो देति रे लगाई।
बास्याइ चढि आयौ तेरी सीम में।"

३२. "मानि लै बचन पूत मेरौ
पाच गाम जौरान कू दैदै, आयौ सहर दलेलौ खेरौ
सो मानि लै बचन पूत मेरौ।"
येरो कैसी हातुए रांड भुम्मि दैवे
में टुकडे है है लड़ भुम्मि पै
जे चौहानी खेरौ
सो कैसी हौतिए राड भुम्मि दैवौ
अरे जाहर ठाडौ करै जुवाव
तू नरसीग पाडे ऐ लैति बुलाइ
जानें नरसीगु लीयो बुलाइ
जे पल्टनि चढि आई बेटा
बागर घेरीऐ सबरी तेरी आइ।
तेरी बागर घेरो आइ
भैज्जू चमरा बोलिकें तेरी खूब चलै तरवारि
वैरो बाला लीयो घेरि लूटि हासी की करवाई
तुम पै नाथु सहाइ

फौज हम पै हाति नाई
वे कछवाए भरि रहे जोर
मार्ग लायो ब्याहिकें सो वो सूधु दिखामदु जार
सो सामत सिघु भयो कछवायो
लडिवे कू ठाडो है रह्यो
सा सुनि ठाडो माता यहि रहो
इतना सुनि कें बात ज्वाबु लोलोनें दायो
बागर वारे पीर तैनें डरू कायो कीयो
मैं ता ऐसो भरू उडान
नौ जोजन मरजादें जाऊगो फारि
ऊपरते छोडो तरवारि
नरसिगु पाछे देतु जुवाब
अरो माता यहा लीना वो ऐ गिरदारु
लीला नें तोरि कें रस्सा ऊ लानो
चढि कें पामु महल में दीनो
एक गुरु को पैदाति
नरसिगु भज्जू ग्रौर चमारु
हम पै तो जाहर सिरदारु
भैया देखि चलेगी गुपत्त की मार
खोदा वारी ग्रावै वावाजी
माता रचादे (घोडो)
वुसवनु डारैंगो मारि
तुम कसि वाघो ग्रव जौन
बोलि लेउ नरसींगु कू नीर
भज्जू चमरा चलै ग्रगार
जाहर तो लीले के गात
खूबु फलै वीरन तरवारि
हलकारो जानें फौजन में बोल्यौ
वे गजवानो कैसो बीत्यौ
नौसैं नवासो तगु जो टूट्यौ
तुम सुरजनै लेउ बुलाइ
राजा पैं लायो काऊ देवता पै
सब को हात में तें छूटि गई एँ तरवारि
ग्राजु सबकी छूटि परी एँ तरवारि
भैया मेरे घोडा लेंतु बढाइ पिछमनो तू मति मरियो
नरसींगु कूदि परयो धर जोरि
कछवाए लीये घेरिकें, मारि मारि कें भजाइ दए सबरे ग्रौर

भज्जू चमरा करि रह्यौ जोर
घेरि जानें नाके लीयें।
दोऊ मचाइ रहे सोर, घेरि जानें सबरे लीये।
कर जोरें सिरदार
उर्जुन सुर्जन लीजों मारिकें
भाई म्हारो नाई फली तरवारि
जब दल में जानें घोडा हकार्यौ
सोमनु तौ बास्याइ जानें दाब्यौ
सबु दलु लीयौ जाकौ मारि
भरे ठाडौ बास्या जोरें जाके हाथ
बास्याइ पें महरी बनवाऊ
अब मोइ मति मारें वीर
हेमुसहाय बनिया जानें जाने जाते घेर्यौ
हेमुसहाय बनिया जानें पइया परतु छोड्यौ
बास्याइ पेंरे महरी बनावाऊ
बनिया ने कलस चढाए भारी
गोरस तुही
वे बहु देखे तुमनें उर्जन सुर्जन
अर्जुन सुर्जन दोऊ मौसाइते रे भाई।
कहा रौतन के वे सिरदार
बास्या नें लबौ करि दयौ हातु
दोऊ भैया जात ऍं पकरि लेउ महाराज
हा तिहारी महरी बनवावें
कलस चढायें दिनराति
उर्जुन सुर्जन जानें जात जात घेरे
जात जात घेरे दोऊ मौसाइते भाई।
दोऊन का लीया सीस काटि
दोनो रे सीस खुरजी में धरि लीए
उर्जुन सर्जुन दा मौसाइने भाई
आइकें सलामु अपनी अम्माजीते कोनी
'कं दल हार्या बछडे कं दल जीत्या
कंई दल हार्यौ अम्मा कंई दल जीत्यौ
नरसींग पाडे तेरौ जांतु जात जूझ्यौ
दूजौ अढावौ बास्याई छूट्यौ
भज्जू चमरा तेरौ काम जो आयौ।
जब दल में घोडा हकार्यौ
तीजौ अढावौ बास्याइ कौ आयौ

लीलें घोडा के पैर घावु-घावु भायौ
दुपटा री फारि क्वाकौ पैंड मैंनें बाध्यौ
दिल्ली कौ वास्याइ मैंने पैंया परतौ छोड्यौ
हेमूसाह बनिया मैंनें जात जात घेर्‌यौ
ज्यापै तौ महरौ बनवाऊँ
बनिया कलस चढावै भारौ''
गोरख तुही
"ग्ररे वे कहू देखें तैनें उर्जुन सुर्जन
उर्जन सुर्जन दोऊ भैनि के बेटा
भैनि के बेटा बेटा बद रे तिहारे
बेटा उनकी रहौंगे सुसराति
सौने की थारी ग्रम्मा माजि-माजि लैयौ
जौरन की री सौगाति दिखाऊ
थारी लाई माजि
जाहर के ग्रागें धरी, थारी में धरे ऐं दोऊ सिरदार''
"मैंने तौ पारे बछडे तैनें चौं मारे
जिनकी तौ कामिनी बेटा कैसें कैसें जीमें
लबे लबे पट्टे इनकी खुली सी बतीसी
जिनकी रे कामिनी बेटा कैसें जीमें
तोइ नेंक तरसु ग्रायौ हतु नाइ
तेरौ रे मुखडा बेटा कबऊ न देखू
तोइ तौ रे दूधु मैंनें बकडी कौ प्यायौ
मैंनें दोये ग्राचर कौ इनकौ दूधु
ग्रपनो खोइ मेंने इनकू प्यायौ
बकडी कौ दूधु बेटा तोइ जौ पिवायौ
नेंक तरसु तोइ इन पै नांइ ग्रायौ।
तेरौरो मुखडा मैं तौ कबऊ न देखू"
"ग्ररी मैया मैं तौ तोइ दिखाइबे कू नाइ"
घरते चल्यौ ऐ जुलमी
जाकी देखि ब्याही खाति पछार
'तुम तौ रे जातौ, राजा, चेला जोगी के
मेरौ देखि कौन हवाल
ग्राजु बलमा मेरौ कौन हवाल
गोरखजी।
"मन में उदासी तू तौ मति री लावै
ग्ररी ब्याहता नारि
वचन तौ पूरौ मैं तो, ब्याते करूंगो

मेरी बाछल मैया,
मेरो धरमु घटि जाय"
दाता तुही।
"घोड़ा बढ़ायौ जानें सबद सुनायौ
तुम धनि भू जो बैठी राजु।"
"दोही न रहैगी वालमा
राज पल्ट है जाय
आजु वलमा राज पल्ट है जाय"
दौरानी जिठानी रे
बोलु जो दिगी रे वालम प्यारे रे
माहि घर-अगना न सुहाइ।"
गोरख जी
'दिल तो री टूटें अबतो
बचनन को तो बोध्यौ
अम्मा को प्यारी
जानें खाई ऐ धरवार
आजु राजा खातु जिमी में पछार"
तुम तोरी रानी मोकू
खानो बनाइलै रानी
वासो लगाइ दै
भोजन जैंगो तेरे हात वे आज
मारें मारें रिस के मारें जुलमी डिगरिजु गयौ
चेला जोगी का
आजु जानें रोहिया की देखि गैल
घर में तो कामिनि जानें रोमति छोडी
गयौ अर्जुन ले वे तो पास
"तू तो रे कैसें मेरे जोरें आयौ
चौहानो ऐ लागि आइ तेरी दागु
तेरे घर में बैठा सुन्दर कामिनि
माता तो रोमति छोडी आजु
"मोकू तो तू तोरो ठोह जु दीजो,
अर्जुन से मैया,
आजु जिमो पै ठोह मोकू हनु नाइ।"
इतनो रे सुनि कें जानो घोड़ा हींस्यो
बागर बारे सुनि लै जुवाबु
आजु लाला सुनि लै जुवाबु
दूयौ सुनाइ दै अपनो सबदु बताइ दै

पात पात पै लिखि गए
बाबा नबी रसूल ।
पच्छिम सहरू माता ईसुरी
धुर पूरब साहू मदार
गड मंदनों का संरूं प्रौलिया
भगड़ें का कमाल खां पीर ।
पीरू बिरहना बैठियो
हानी रहूयो बलु खाइ
लोले बारा छावड़ा सु
धरती में जाइ समाइ ।"
म्वाते चल्यो ऐ रे
चेला जोगी को भैया प्राजु
घोड़ा उड़ायो, अर्जुन ले पैं आयो
माता ते करतु जुबाब
जौरें रे आयौ जानें मुख जौ फारयौ
आजु बेटा आइजा धरती के बीच
आजु तोड़ दे रही ऐ अर्जुन ले ठौर
"ज्यों तौ न आऊं मेरी अर्जुन ले मैया
मैं तो मन आवै जहां रहुउ
तो में समागों कामिनि लाऊ
घर नारी ऐ लैकें जागो समाइ
अरी माता कू वचन दीयौ आजु ।"
बारह बारह वर्स भई एँ गुजिस्ता
आजु बनी के जाकू बीच
सुधि जौरे आई घर की जाकू
घोड़ा पलानै आधी राति
"कहा रे असनौ तोपै परचौ ऐ
घोड़ा पलाने आधी राति
घर कू री जाऊँ कामिनि ते मिलि आऊँ
मेरी अर्जुन ले मैया
मेरौ तू सुनि लै जुबाबु
आधी रैनि आगें बछड़े आधी राति पाछें
आधी राति महलन में कहा कामु जी
राजा उम्मरू के चौकीदार वो जगिगे
चोर चोर कहिकें डारें मारि जी
चौकीदार बी हमारे गस्तीमान बी हमारे
अजी प मैया जागो मैं तो आधी राति

दिन में री जाऊ ससार लखैगो
दरवाजे पै पावै बाछलि माइ
घोडा बी खोल्यौ जालें जीनु निकार्यौ
चेला जोगी के
फरिका लीयौ डारि
कूदतु आवै जाकौ उलल बछेडा
मोरतु आवै दादा वाग
म्वातें चल्यौ ऐ सहर दलेले अपने खेरे में आयौ ।
म्वातें उडायौ, घोडा उडायौ
आयौ सहर दलेले अपने गाम
अरी चन्दन किवारी म्हारी खोलि खोलि दीजो
मूगा दे बादी,
दरवज्जे पै ठाडे जाहर वीर जी ।
अजी राजा उम्मर के चौकीदार जगिगें
पहरेदार जगिगे
तुम कू चोर चोर कहिकें डारें मारि
गस्तीमान बी हमारे
चौकीदार बी हमारे
क्या भई ऐ दिमानी खोलौ तुम बजुर किवार
अरे करानी खोलौगी बजर किवार
तू तौरो बादो हमनें टूको से पारो
अरे क्या हो गई ऐ दिमानी तू तौ आजु ।
मैं तो रे राजा नंनें टूको से पारी
गैल बटोहीरा सुनिलै बात
तू तौ जाहर ऐ चिरनें बताइदै भैया आजु
औरे हमारो तूतौ सिर कौ साईं
अरे तुम ही सिरियल के भरतार
गगा रे जमुना तेरे साख बिराजें
जे हो महलन में चिरनें आजु
अजी मैं खोलू नाइ बजर किवार जी
और सरापु री म्हा तोइ दुगो
परको बमेरो
मोर परैं कोढो की तापै मार
गोरख जी ।
मोर भयौ सिरही चौहानी
भयौ तौ गरारौ अरे हां
मोमउ ते जागी मजा की बेटी

अरे बादी तै करति जुवाद
अरे क जे तो बादी तै करति जुवाद
'राति री बादो मैंनें पीतम् देखौ
सिर कौरो बालम् हा।
ख्वाव में देखे मैंने सपने में देख्यौ
झगड्यौ ऐ सारी मोतै राति
तुम नें तौ रानी ख्वाव में देख्यौ
अरे बेटी संजा की सुनिलै मेरी बात
जाहर भगरे सबरी राति रो, हा।
मोतै कही ऐ री साकर खोली
मैंने देखि खोली हुति नाइ।
अरी कहर किया तैंनें
गजबानो फार्यौ
कुंवरी गई तौ मेरी बालम् आयौ, तैनें बादी बादर डारे फारि।
घोडा को तौ कोडा रे
जे मरवावै
बादी में लगावै देखौ मार
अब मति मारं बेटी
घर सामल, बेटी सजा की तू आजु
राति तौरी आए वे तौ फिरि वा तौ धामें
पिया तौ तेरी भरतार
वनखड में तौ वे तौ ऐसें री घूमें
जाते अर्जुन ले करति जुवाव
घर आयौ बेटा बचनन सुनायौ
चेला जोगी के
तेरी अजमति जगत जहार
राति की बात मैया कहाजु सुनाऊ
मेरी अर्जुन दे,
बादी नें खोली नाइ वजर किंवार
बारह बारह बर्स तोकू भई गुजिस्ता
चेला जोगी के
पहरे पै बादी ऐ हुस्यार
आजु तौरे जाना तूतो जोडू से मिलि आना
बाप दादे को चलाओ अपनो नामु।
घोडा उडायौ जानें
आधी रैनि भागें जाके
आधी रैनि पीछें, दरवज्जे पै आइगो जाहर बीर

अरे चढ़िकें महल पै मैं कूक मचाऊ
सोता नगर रे जगाऊ
का गस्तीमान रे जगाऊ
क्या तू भया या दिमाना
तो मैं लगवाऊ कुत्तों की मार
म्वाते चली ऐं धन सिरियल आई
जाहर ते करैं रो जुवाब
मेरे देह को, मेरे रे सिर केरे साईं, चिरनैं बताइदै तू आजु
दाईं ओर तेरे देखि लहसनु कहिऐं
म्हारे बाप के तू तो रह्यो तौ मजूरा
तैंनें मैं गोद तो खिलाईं
सुनि लै परदेसी जुवाब
बदी खोलै नाइ बजर किवार
जौ तू हमारे सिर को साईं
अरे चेला जोगी कें
खोलो तुम अपने बजर किवार
घोडा उडायो रे, घोडा कूदि कें आयौ
जाको उलल वछेरा
आमी महल के बीच जो।
जिन बातन्नें मैं तो कबहू न मानू मेरे सिर के साईं
ठोकर ते खोलौ जौ किवार
दुनिया ऐ क्या दोसु ऐ
मौपै घर की तिरिया परचौ मागै
मेरे लीला बछेडा
गुरु तो मनाइलौ जानें आपनौ
ठोकर मारी बाए पाम की, खुलि जाइ बजर किवार लोहे सार को
घोडा लगायौ घुडसार में
हसि हसि कें बातें होइ
नारीरे पुरिप की
भोजन लाओ तुम तो यहा बतराओ
बेटी सजा की
अपने पोया ऐ देउ न जिमाइ, हाँ।
आधी रैनि गई ऐ रे, आधी खसि आई
राजा नाए भाग विलास जो, हा
अब तौरी जाइ रहे रानी
फिरि तो आमें
सजा की बेटी

रोजुना भामें तेरे पास जो
वाद्यन—"अरो वहू तेंनें अच्छो पगु दीयो
सहर दनेले को जरतो दीयो तेंनें भ्रामतई गुल कीयो
भई ना बेटा को सायो
जोरान पीछें पिया निकार्यो, गासी चौं मारो
भ्ररो रांड तू कौन की होइगी
राजपाट गए छोड़ि पीउ भये बनोवास वासी
सिरियल—फेंकि दए छला छाप वेड़ा
कजरो वन के नाथ मिलाइ दै सिरियल को जोड़ा
सासु तू अवलो हो राजी
जे लै सासु मेरी हरी हरी चुरिया अव तो हो राजी।
सास बहुरिया दोनों ढूंढन निकसी
ढूढ़िगो बिकट उजार
सबरोरी बनखड सूखो री पायो
तू डूगर भैना
कहा गुन हरियल तेरो डार
घोड री वारा जो आयो था सिपाई
लीला लीला घोड़ा
जार्प जरद दुसाला
गल में मोतियों की माला
लंबो सो भालो जाके हात।
खाभे को चादरि वो तो झारिकें बिछावें
जपतु अलखजी कौ तो नामु
आंसू री टूटि ब्वाको धरतो गिरंगो
बेटो संजा को
मेरी जाई गुन हरियल डार
कै तोरो डूगर मेरी जोडी कूं मिलाइ दे
नही हुति दू गो तोई पें पिरान
अब तो री जाम्रो भैना,
फिर वो बु आवे, में ब्वाई से करूंगी जुवाव
सासु वहुरिया दोऊ ढूढ़ति डोलें
तू कहां दुवक्यो बेटा राति
अब जू गये तोरो मरो अर्जुन ले भैया
अव जाइवे के हत नांइ।
अरज करेंगी बहू सासु ते
मैं धन पीहर है आऊ
फूलन की विरियां

न आयौ नाऊ बाम्हन कौ
न आयौ मा जायौ बीर
राजा को बेटा
बिगरि बुलाई बहु जाउगी
तेरे न होइ आदर भाउ
उन महलन में
जो तेरौ भैया कहूँ आमतौ
मैं जांत न बरजू तोइ
राजा कौ बेटौ
घर भूलौ री घर पालनौ
महलन में सामनु होइ
राजा की बेटौ।
रानी धमकि महल पै चढि गई
खाती कौ लालु बुलाइ
लालु बिसकरमा
अरे बीर कहू, कै तोते बाढई
तोते देवर कहू कै जेठु
रे नवल खाती के
एकु पालनरौ गढि लाउ
काइ कौ तेरौ पालनौ
काए के बान मगावै
राजा कौ बेटौ।
भैया अगर चदन कौ पालनौ
वुही लाइ दै रे समबान
सुगढ़ खाती के
गुहि लैयौ लहरिया बान।
अरी भाक-ढाक गढि लागा
मोपै चदन पैदा नाइ
धीम राजा की।
लाला भोर बाग मति जइयो
जइयौ ससुर के बाग
क्वा बीजा वन में
लाला माठ कुठारो नौजनें
गहि लई ऐ गैल वा बीझा वन की
भैया रे भामत देख्यौ बिरछ नें
वो बिरछा रोयौ रोइ
चदन कौ पौधा

हम तो आए तेरी आस करि
अब चों दोयो ऐ रोइ
चन्दन के बिरवा
जो तू आयो भैया आस करि
मेरी लंजा गुदिया काटि
नवल खाती के ।
भैया रे डरिया काटें ना बनै
तेरो चलैगो पीडि ते काम
चन्दन के पौधा
खानी पहलो कुड़ारो मारियो
जामें निकरो दूध को धार
चन्दन के पौदा
दूजो ते तीजो दई
चौयी में दोयो लुढकाइ
चन्दन को बिरवा
लाला रे भरि गाढो चन्दन चल्यो जे
लै गयो सिरियल द्वार
नवल खाती को ।
गड्यो हिंडोरो बाग में
जे काछन-वाछल जांइ दोऊ आजु झूलि वे
काछल झूलै वाछला वहू सिरियल लेइ न बुलाइ
राजा की वेटी ।
स्वाति बांदी चलि दई
तू यादि करी ऐ आजु
सजा की बेटी
मेरी सासु ते ज्यों कह्यो
इक दस दिन आमनु नाइ
धीम्र सजा को
सग की सहेली बुलामती
जे सिरियल भूलन जाइ
ब्वा लाखा वन में
भैया रे जाइ टाडी भई बाग में
जाने मुख ते बोलति नाइ
धीम सजा को
काछल भूतै वाछला
वहू सिरियल झोटा देइ
राजा की बेटी

भैया नरसींग मार्यौ रोरिवा
पलरैयन मैं उरभ्यौ हारु
बहू सिरियल कौ
टूटि हारु धरती गिर्यौ
ऐ मन रोवै पछताइ
रे घर सासु लड़ैगी।
भैया रे भूलि भालि म्वांते चले
दोऊन अधवर परिगो वादु
सासु बहून में
कौन पै पहरी जे चुरी
तैंनें कौन पै कर्यौ सिंगारु
राजा की बेटी
अरी अपने बलम पै जे चुरी
बलमा पै कर्यौ ऐ सिंगारु, सासुलि प्यारी
मरि जइयौ री डुकरिया
मेरौ री बेटा मरि गयौ धरती में समान्यौ
रग-जग नें जान्यौ
तैंनें महल कर्यौ ऐ भरतार
तू मोइ जाइ न बतावै।
तेरे जानें मरि गयौ
मेरे नित आवै नित जाइ
सासु तेरौ बेटा
जौ तेरें आमतु जातु ऐ
मोइ इक दिन देइ न बताइ
लाल मेरे कू।
इतमें लजायौ बहू सासुरौ
तैंनें दोऊ कुल खोइ दई लाज
राजा की बेटी
आजु सकारौ होन दै
मरवाइ दु गी ढोल बजाइ
तैंनें कुटमु लजायौ
राजा की बेटी
जौ बेटे की सादिली
तौ इक दिन पहरौ देइ बैठि आगन में
हाथीदांत की पलिकिया जानें लई मरुए तर डारि
मैया पहरे पै बैठो
इतकौ पहरौ इत गयौ चहुगयौ पिछवार

पीर नाइ बगदे
बेटा हों तो ग्राम तो
चोह बगदिवे की नाइ
तू ब्याते नाहीं करि ग्राई
ग्राजु उकारी माँग्यो मिलै
वल्लि बताइ दऊ लालु
कहा ऐं परि पाछें ।
सिरियल ग्रागन केवड़ो
डरिया पै बोल्यो कागुरे
भवर रतुनारी
मौनें मढाऊ तेरी चेंचुरी
पामन में पदमु लगाऊ
नेंकु जैयो पीर पै
जैयो रे बलम पै ।
मुख के वचन मानू नहीं
कोई लिखि लिखि चांठी बांधि
बलम अपने की
कागा, कागद को टोटो पर्‌यो
कलम न मैं परि गई भागि
बनवामो कागा ।
चीर फारि कागद कर्‌यो
उगरीन की कलम बनावैं
राजा की बेटी
ब्या जाहर ते क्यों कही तेरो धन नाजु न खाइ
मरे मैं जीवे ।
बोतो रे झुरि-झुरि पिजरा है गई
ब्याके नाइ जीबे की ग्रास
लवडिया देखा
धीर पास लिखी मरमी
जाके बीच में जै जै राम
बलम ग्रपने कू
गोनु मारि कागा उड्‌यो
महरी पै बैठ्यो जाइ
म्यां जाहर बैठ्यो
बोनें तो कागा कहा कहै
तेरी धन नाजु न खाइ
मरे के जीवें ।

मैया झुरि झुरि पिजरा है गई
ब्वाकी नाइ जीवे की ग्रास
लचडिया दैश्रा
मरि गई ऐ मरि जान दै
मैं चलत जिवाऊ राजा की बेटी
कागु दियौ ऐ बहकाइ कें
पीर ग्राप भए ग्रसवार
ब्वा लीलें से बछेडा
घोडा उडायौ जाहर वीर नें
पौरी पै झुलम्यौ ग्राइ
जाकी सिय पौरि पै।
रानी सोमति ऐ कै जागतयै
तुम धन खोलो बजर क्विार
जाहर म्वा ठाडे।
जाहर ऐ तौ खोलिलै
नही चोरु बगदि घर जाउ
मेरी सासुलि जागें।
लीला दुनिया ऐ कहा दोसुऐ
घर की तिरिया परची मागै
मेरे लीले से बछेडा
ठोकर मारी बाए पाम की
खुलि गई बजर किवार म्वा लोहे तौ सार कौ।
घोडा लगायौ घुडसार में
खुटियन पै धरे हुथियार
पीर मरदानौ
मैया रे भरि लोटा जलु लै चली
जे धोवै बालम के पाइ
नैननु भरि रोवै।
रानी ग्रौर दिन हसती खेलती
ग्राजु कैसें मैलौ भेसु कहै चौ न मन की।
तेरी मैया मोलें जाऊ लगावै
भरतार लगायौ
चुरिया उपटी
मैं सहर करी ऊ बदनाम
तेरो मैया नें, हा
ग्रामन ऐ सो ग्राइ चुके
तेरे ग्रब ग्राइबे के नाइ

बाभन के छौना
जोगी सेयौ तैनें भलौ करौ
करि दुंगी मुलिक में नामु मेरी बाछल माता
मेरे जिय कौ कहा परौ
तेरे लगी महल में आगि
मालु जर्‌यौ जातु ऐ
बेटा महलन कौ तौ कहा जरै
सोटि लकड़िया ककरा पथरा
मेरी लगी ऐ कोखि में आगि
पीरु भाज्यौ जातु ऐ
अरे मूडन पै पहुँच्यौ गयौ।
यों घोड़ा गयौ समाइ
धुर बागर बारौ
रानी तौ रोवै जाकी गोरी रे रोवै
बाछिल खात पछार
बारह बारह बर्स रे धोई तौ लंगोटी
ठाडी तौ रही ऊं दिन-राति
तोइ निरमोही ऐ मोहु न आयौ जी
तैनें भैया डारे मारि
बेटा बीरन डारे दोऊ मारि
ऐसौ री जुलमी तैनें जुलमु गुजार्‌यौ
रोमति छोड़ी तैनें नारि जी।
रुदन मचावैं रे सासु बहुरिया
आजु अपनी सासुलि ते करैगी बिलाप
राड जो कीनी तैनें जुलमु गुजार्‌यौ
बहुनीतनु भूलति बैरिनि नाइ।
जिनके काजें मैंने जोगी सेयौ
मेरी बहुअरि प्यारी
सेवा तौ करिकें ब्याइ लाई मागि।
नामु जु डूब्यौ रे जातु सुसर कौ
मैंने जोगी सेए दिन-राति
मेरी सासु नें ऐबु लगायौ
सिरियल बहुअरि री
मेरौ पिया तौ घर ना आौरी
हम तौ निकासे मेरे उम्मर राजा
तोसी तौ बहुअरि जाइ समाइ री
मेरौ री बलमा री आजु तौ समानौ

इन भूडन में
मैं तो न्याई करुँगी गुजरान
गोरख जो।
दाईं दाईं ओर तो सिरियल सीनो
बाईं ओर बाद्धलि माय
बाद्धलि रानो जाकी माइ रो
सिरियल पै तो रे चुरिया चढ़ति ऐं
बाद्धन पै नागर पान
इन भूडन में
रानी को सिंगार पूरो भयो
गुनि सेठ रानी

मैना-सत

[साधन]

[सम्पादक—श्री अगरचन्द नाहटा]

साधन रचित मैना-सत

(ले० अगरचंद नाहटा)

हिन्दी साहित्य में काव्यों की विविध संज्ञाएँ और उनमें से कइयों की परंपरा भी काफी प्राचीन है। पर राजस्थानी और गुजराती के साहित्य प्रकारों और रचनाओं की विविध संज्ञाओं के संबंध में जितना अच्छा और अधिक प्रकाश डाला गया है, उतना हिन्दी के रचना प्रकारों पर नहीं डाला गया। करीब २५ वर्षों से मेरा इस संबंध में काफी रस रहा है और अनेक रचना प्रकारों के संबंध में प्रकाश डालने का प्रयत्न भी किया है। अभी अभी हिन्दी पत्रों में भी मेरे कई लेख इस संबंध में प्रकाशित हुए हैं, उनमें 'सत' संज्ञक काव्यों की परंपरा भी है, जो करीब दो वर्ष पहले लिखे जाने पर भी अब राष्ट्र भारती में प्रकाशित हुई है। मैं चाहता था कि मेरी यह हिन्दी रचना प्रकारों सम्बन्धी लेखमाला जल्दी ही प्रकाश में आ जाय पर हिन्दी विद्वानों को उसमें अधिक आकर्षण नहीं मालूम होता। गहरे अनुसंधान के बाद एक लेख तैयार किया जाता है और बहुत दिनों तक संपादकों के पास योंही पड़ा रहता है। इससे मालूम होता है कि हिन्दी में अभी शोध के प्रति जैसा उत्साह और आकर्षण होना चाहिये—नहीं हो पाया है।

'सत' संज्ञक काव्यों की परंपरा वाला लेख तब लिखा गया था जबकि 'अवन्तिका' में 'मैनासत' पर डा० माताप्रसाद गुप्त का एक लेख छपा था। आलोचना में प्रकाशनार्थ मेरे उक्त लेख को स्थान नहीं मिला। शायद सम्पादकों ने उसका कोई महत्व ही न समझा हो। उसके बाद एक और अच्छे हिन्दी पत्र को भेजा गया, वहाँ से भी वह लेख वापिस आगया। तीसरी बार राष्ट्र भारती को भेजे हुए भी करीब एक वर्ष हो गया, कई बार पत्र लिखने पर 'मई' के अंक में प्रकाशित हुआ।

जहाँ तक मुझे ज्ञात है 'सत' संज्ञक काव्यों की परंपरा अपभ्रंश से सीधी हिंदी में आई है। पाटन भंडार में २० पद्यों वाली 'सीता सत' नामक एक अपभ्रंश रचना है। यह १३वीं १४वीं शताब्दी की होगी। उसके बाद के जो कई काव्य मिले हैं उनका परिचय मैंने उपरोक्त लेख में दिया है। इस संज्ञावाली बहुत सी रचनाएं हिंदू व जैन कवियों की हैं। जबकि 'मैनासत' एक मुसलमान कवि की एक प्राचीन रचना है। और उसके बाद कविवर जान की रचनाएं भी मिलती हैं। मैनासत' का सर्व प्रथम विवरण सन् १६०२ की खोज रिपोर्ट में छपा है। पर उसमें उसका रचयिता अज्ञात लिखा है। वह रिपोर्ट मुझे प्राप्त नहीं हुई। मुझे करीब १० वर्ष पूर्व इसकी एक प्रति मिली थी, जो मुनि विनयसागर जी के संग्रह के गुटके में अन्य रचनाओं के साथ लिखी हुई थी। इसका विवरण मैंने अपने राजस्थान में हस्त लिखित ग्रंथों की खोज भाग दो में प्रकाशित किया था। बीकानेर की सुप्रसिद्ध अनूप संस्कृत लाइब्रेरी में भी इसकी दो प्रतियां हैं। एक राजस्थानी विभाग के गुटके नं० ७६ में और दूसरी हिंदी विभाग की प्रति नं० ११३ में है। ये तीनों प्रतियां १८वीं शती की लिखी हुई हैं। अनूप संस्कृत लाइब्रेरी का गुटका नं० ७६ संवत् १७२४

से २७ में लिखे जाने का कई ग्रन्थ प्रयो के अत में उल्लेख है। इसके बाद फलोदी के श्री फूलचन्द जी भावक के सग्रह से मुझे एक गुटका मिला, जो वीसलदेरास को प्राप्त प्रतियो में सबसे पुराना है। इसमें साधन कृत 'मैनासत' वारहमासा स० १६३३ द्वि जेठ वदी १२ को आगरे में प० सीहा का लिखित प्राप्त हुआ। अभी तक मुझे प्राप्त सम्वतोल्लेख वाली समस्त प्रतियो में 'मैनासत' की सबसे पुरानी प्रति यही है। सन् १९५४ के जुलाई में अवन्तिका में डा० माता प्रसाद गुप्त का साधन का मैनासत लेख छपा है उसमें 'मधुमालती' की दो शाखाओं में मैनासत्त की कथा एव साक्षी कथा के रूप में प्राप्त होने का दिया है। साथ ही एस० एच० असकरी की प्राप्त प्रति का उद्धरण भी दिया है जो मनेरशरीफ खानकाह-पुस्तकालय में है। खानकाह पुस्तकालय वाली प्रति शाहजहाँ कालीन या उससे पुरानी है। मेरा विचार था कि प्राप्त समस्त प्रतियो के पाठान्तर के साथ इसे प्रकाशित किया जाय, पर अग्रवाल जी को कई पत्र दिये उनका कोई उत्तर नही मिला। इधर डा० सत्येन्द्र जी का यही विचार रहा कि मैं इसे जल्दी तैयार कर दूँ। मुझे प्राप्त प्रतियों के मिलाने से मालूम हुआ कि इनमें पाठ भेद बहुत ही अधिक है। स० १६३३ वाली पुरानी प्रति का पाठ कुछ अस्तव्यस्त देख अनूप सस्कृत लाइब्रेरी गुटका न० ७९ से नकल करवाई गई और महोपाध्याय विनयसागर जी के सग्रह से गुटका मगवाकर पाठान्तर दिये गये हैं। पाठ भेद कितने अधिक हैं—यह एक प्रति के पाठान्तरों से ही अनुमान लगा सकते हैं। मनेर शरीफ का खानकाह पुस्तकालय और अनूप सस्कृत लाइब्रेरी की दूसरी प्रति—ये मुसलमानी ढग की हैं। अत उनके पाठो का मिलान कर शुद्ध एव प्राचीन पाठ का निर्णय करना आवश्यक है।

मैनासत के रचयिता मिया साधन का समय निश्चित तो नही पर प्राप्त प्रतियो के आधार से १६वी शती माना जा सकता है। उसकी ग्रन्थ रचनाए हो तो उनको भी प्रकाश में लाना चाहिए। डा० माता प्रसाद गुप्त ने स १५६१ या उससे पहले का ही रचना काल माना है।

हिंदी के बहुत से मुसलमान कवियो ने भारतीय कथानको और सास्कृतिक परपराओ को ग्रहण किया है। मैनासत में उसके पति का नाम 'लोरक' दिया गया है। सतीत्व की रक्षा को ही यहा 'सत' सज्ञा दी गई है। राजस्थान में आज भी यह शब्द इसी अर्थ में प्रचलित है। ऐसी आदर्शनारी-कथाओ का प्रचार स्त्री समाज में अधिकाधिक होना वाछनीय है। नैतिक प्रेरणा देने वाला साहित्य ही मानव के लिये बहुत हितकर है। पर आज कल विकृत प्रेम कथाओ को ही अधिक बढावा दिया जा रहा है और शृगारिक साहित्य की ओर झुकाव है वह भी राष्ट्र के लिये अवाछनीय है। आशा है मैनासत का सुसम्पादित सस्करण किसी योग्य विद्वान के द्वारा शीघ्र ही प्रकाश में आयेगा। मेरा यह प्रयत्न तो प्रेरणा देने का प्रयास ही समझना चाहिये।

मैना-सत

।।६०।। श्री सरस्वत्यै नमः—प्रथमहिं[1] गाउं सिरजन हारू ।
अलप अगोचर मया भंडारू ।
आस तोर मुहि बहुत गुसांई ।
तोरे डर कंपो कररिक नाई ।
शत्रु मित्रु सब कहुं सँभारै ।
भुगति देइ काहू न विसारै[2] ।
अपनै रगि आपै[3] राता ।
कोई बूझि कहै किछु वाता ।
पिलै इह रही जग मैं फुलवारी ।
जो राता सो चल्या सभारी ।।१।।[4]

सोरठा—*जिन[5] कलि विलसी राह । अस दल गज दल दलमले ।
साधन भए ते खेह । प्रथमी चीन्हा ना रह्या ।।२।।

चौपाई—जातौ देखो यहु ससारू । वया लोका[6] तुम धरहु पियारू ।
पानी जैसा वुदवुदा[7] होई । जो आवा सो रह्या न कोई ।
पहलैं राय जु दई उपाने । आवत देखे जातन जाने ।
इक छत्र राज निरजन कीन्हा । प्रथमी रह्या न तिन कर[8] चीन्हा[9]।।३।।

दोहा—धूवा जैसा[10] धौरहर । कोई[11] रह्या न निदान ।
साधन रोइ उफानीया । ज्यौं ज्यौं मनह तुलान ।।४।।

सोरठा—कौडी कौडी जोरि । मूये ते[12] किरपन वापुरे ।
गमे गडत करोरि । मन पछिताने पापीया ।।५।।

चौपाई—सात न कवर नगर कर पूतू । वपट रूप नारद कर पूतू ।
तिहि रतना मालिनि हकराई । मैनासत तुम्ह[13] देहु डुलाई ।
दूत वचन जो मालनि पावै ।[14] तुह मालनि सिर हत पहराऊ ।

*सं० १६३३ वाली प्रति में यहीं से प्रारभ होता है अन्य पाठ भेद भी काफी हैं ।

१. विनऊ, २. इसके आगे उक्त प्रति में यह अश ७/८वी पंक्ति में इस प्रकार है—
फूलिज रही जगत फुलवारी, जो राता सो चला सभारी ।।१।।

३. आपु रग राता, बूझै कौनु तुम्हारी वाता । ४. इसके बाद यह दोहरा विशेष है—
वचन आखि हमारोया, एको चरित न सूझि ।
सोवत सपनो देखियौ, कोऊ करै कछु बूझि ।।

५. जिहि, ६. का लोगा तुम्ह करो पियारू, ७. बुलबुला, ८. तिहिकर रहा न,

९. इसके आगे ये पंक्तियां हैं—
हम पुनि दिनि इकु चलाचल अहै, मुख आखर समुझो ताकै है ।।

१०. कौसो, ११. पृथमी कोऊ न रहे निदान, १२. सु, १३. तैं, १४. तो मलिनि सिर ते पहिनाऊं ।

मालिनि गान दुति मर[1] लीन्हे । रपट रूप सब भागे कीन्हे ।
जोहन मोहन चली[2] संवारी टौना टामन पहिरि सिंगारी[3] ॥६॥

दोहा—रपट रूप दूती चली । गई मैना के वारि ।
जिहि विधि रासै सत सौं । कौन डुलावन हार ॥७॥

सोरठा—जिह रासै करतार । ताकर[4] वार न वांकीयै ।
हुठि[5] लागै मसार । साधन[6] छाह न चांपीयै ॥८॥

चौपाई—मालिनि जाइ मदिर महि पैठी ।
मैना जहा गिहा(स)न बैठी ।
चंपक फूल चोसर हारू ।
दीन्हा भेट अरु कीन्ह जुहारू ।
हसि करि पूछै मैना रानी ।
गह आवागमनु[7] कौनि जग मानी ।
कहि मालनि सुनि मालिचि[8] मैना ।
अन[9] चीह्नै कस बोलहि बैना ।
तोर पिता धाइ हौ कीनी ।
वारपनै[10] तोहि चूची दीनी ॥६॥

दोहा—मनु न रहै हियरा उठायो[11] आगि जरै[12] तन मोहि ।
सिवरि सिवरि दुख उपजै[13] । देखन आई तोहि ॥१०॥

सोरठा—सीस न मैं भुइलाइ । मुखि अमृत उरि कपटिनी ।
साधन धनप चराइ । जिम पर ढूकै अहेरीया[14] ॥११॥

चौपाई—मैना वात साचु करि जानी[15] । कुटनी[16] के बोलै पतियानी ।
तबहीं नाइनि बेग बुलाई । कुकुम मरदन कुटनि न्हवाई ।
घेवर यावर खांडि जिमावा[17] । नेत[18] पटोर आनि पहिरावा ।
रहसी[19] कुट्टनि अग न माई । अब मैना मो पहि कत[20] जाई ।
मैल चोर तोरे देखो मैना । सैदुर मागि न काजर नैना ॥१२॥

दोहा—वदन जोति तुव[21] धूवरी । कस[22] अवहैरति आपु ।
माग कूखि तोरी सीयरी । सिरह छत्रु तोर बापु ॥१३॥

सोरठा—हीयरा कोठा साठि मुखि । रोवै नैन हसै ।
दूत लछन इहि पाठि । साधन आपु सभारीया[23] ॥१४॥

---

१. मे, २. लीन्ह, ३ मभारी, ४. तिहि, ५. जो, ६ साधुन ।
७. कहा गवन कीन्हो, ८. मालति, ६. अव, १०. तोहि मैं वारै, ११. जीउ गहसरै,
१२. परो १३. सुमिर मोह चित ऊपज्यो
१४. सीस नवै भैलागि, मुख रोवै नैननि हसै ।
साधन धन कुचटाइ, ज्यो घर ढूकै अहेरीया ॥
१५. कैमानी, १६. दूती, १७. खवावा, १८. सुरग चू(न)री, १९. हरखी मालिनि,
२०. कहा, २१. तोरी धूमरी, २२. कत, २३. यह सोरठा उक्त प्रति में नहीं है.

चौपाई—पिता मोर अनु बाहिक राजा ।
पिता राज मोरे कौनें काजा ।
पिय दुखु मोहि परउ[1] है आई ।
अस दुखु सवतनि[2] परि जौ धाई ।
महरे कीधो चादि गुवारी[3] ।
लै गई माग सिन्दूर उतारी ।
काकरि[4] मालनि करउ सिंगारा ।
मोहि परहरि गयौ कतु पियारा ।
करहि न बैर चाद जो कीन्हा[5] ।
बारी[6] बैसि मोहि दुखु दीन्हा ॥१५॥

दोहा—फिर भाग अदि न भया[7] । मौत कि[8] बैरी होइ ।
वाके दोहा जो करहि[9] । ऐसा करै न कोइ ॥१६॥

सोरठा—तिह सो कीजै नेह । जिह सो उर नीवा हीयं[10] ।
साधन कौन सनेह । टूटै वाचे सूत ज्यौ ॥१७॥

चौपाई— दूती वचन सुनत गहवरी[11] । कपट रूप रोवै[12] अनुसरी ।
तोरे दुख सुनत मरति हौं मैना । हीये आग झर[13] फूटसि नैना ।
रितु आसाढ वरिषा पैसारा । सब काहू घर वार सभारा ।
दीपग ऐसे आवन हारा । तोर पियनें रित देखि उवारा[14] ।
मास आसाढ गए नहि जाई । भुइ बादर लागे बरसाई[15] ।

सोरठा— बोल-छाडि देहि मोहि । मनु मैना साची कहौ ।
आनि मिलावौं तोहि । मालति कौं भौरा जिसै[16] ।

सोरठा— जिह सत ऊपरि चाउ । सुपनै असतु न रुचई ।
इहु[17] सिर जाइ तौ जाउ । साधुन सतु न छाडीयै ।२

चौपाई— दूति वचन मालिनि जो कहा । मैना धाइ कैर मुखु[18] चहा ।
रूखे बैन तोखे तोरे नैना[19] । बोले सही[20] महा सति मैना ।
लाज कान तोहि कहत[21] न आई । अस वूझत जस बोलहि[22] धाई ।

---

१. पराहै, २ सौ तिहि परोयहु, ३. महरा का धीय चदकुमारी, ले गयो सिदुर मोर उतारो, ४. का कहु, ५. वैरोन करे चद अस कोन्हा, ६ वाली, ७ ओछे दिना, ८. सु, ९. करंजु वाके ग्रोहरा, १०. जिहिसौ दुहु जग थिर रहै ।

११. भरी १२. रोवन, १३. अरु फूटति

१४. दीप गए ते आवन हारा, तोरो पी उन देखो वारा ।

१५. जिहि घर कत सुकरहि विलासु, नार न छाडइ पीय कर पासु ॥

१६. दोहा—तोरो दुख सुनि मरतिहो, बोल वाहु दे मोहि ।
जिसि मालति को भवरा, आनि मिला वहु तोहि ॥

१७. जे, १८. रामु मुखु चहा, १९. तीखे नैना दूखे बैना, २०. सती, २१. मोरि, २२. बोलसि,

फाटो सासु नारि का हीया । एक छाडि जिन दूसर[१] कीया ।
एकोएक करत जोउ देउ । जग दूसर का नामु न लेउ ।

दोहा— मोर भवर जग[२] मालनी । रूप कि पूजै कोइ ।
जँ व स्याम गुवर तणो[३] । भवर कि सरवर होइ।

सोरठा— नारि इकेली सेज । सावन रुति वरसै घणा ।
का तो[४] होइ क रेज । साधन साइं बाहरी ।

चौपाई— सावनु मैंना भाइ उलाणा[५] । घरि घरि सखीय हिंडोरा ताना ।
हरीयर[६] भुइ कसुमी रतनारी । नाह सरीसी खिलसि धमारी ।
उन्ह[७] सुप्नु तोहि रयन दुहेली । झुरि झुरि मरिहै सेज इकेली ।
सो दुखु तोर देपि हौं मैंना[८] । सावन गंग नीर[९] भए नैना ।
कंत सुहागनि झूलहि वारा । गावहि विरह होइ[१०] झनकारा ।

दोहा— जोवन जात न जानीयैं । गयें होत[११] पछिताव ।
आनि भवरु तोहि मिल्लवौं[१२] । लैन जगत कछु जाव ।

सोरठा— जो प्रिय प्रीनी न जाइ, जोवन जातैं ना डरौं ।
सूखि रहै कम्हिलाइ, बहुरया जोतन प्रीति सौं ।

चौपाई— सुन मालिनि सावनु तिहि भावै । जाकर[१३] पिउ पर देसहि आवै ।
मुहि लेखै ससार उजारी । भोग भुगति चित[१४] धरो उतारी ।
रितु मानुक जो लोर कहावै[१५] । ना तरु मैंना मुई वरावै[१६] ।
मोर पिता माइ अरु भाई । जो सुनि पावहि मारिहि धाई ।
सुनि मालिनि आगम जो हारो । तिह हौं घालि अगिनि महि जारौं[१७] ।

दोहा— मोरा बचन सुधाइ सुनु । जनमु कि जुगि-जुगि होइ ।
काजो दूध परत हो विणसै । बिरला जानैं कोइ[१८] ।२७

सोरठा— भादौं गहर गभीर । नैन गगन[१९] गोरो भरैं[२०] ।
क्यौं करि पावहि तोर । साधन तिरिया नाह विनु ।

चौपाई— भादौं मैंना मेघ झकोरा । उचो प्याल[२१] भरो नीर हलोरा[२२] ।
दादुर पपिहा कुहकहि मोरा । सूनी सेज हिया फाटसि तोरा ।
थोर बोल जई तारा पाऊ । इहि वे तोहि वरहि दिखाऊ ।

---

१. जिहि दूजा, २. सुनि, ३. जोरे स्यामु गुवरोरा, ४. पानी, ५. आइ तुलाना, ६. हरिहुरी भूमि, ७. उनको, ८. तोरो दुख सुनत मरति हूं मैंना, ९. मेरे, १०. गीत उठै, ११. वार, १२. मेलउ ।

१३. नहकरखि, १४. सब, १५. रितु, मानो जो लोरक आवैं, १६. मुऐ गवावैं, १७. तूं पापिनी मोहि पाप सुनावसि, इनी बातन सूं ओखर पावसि, १८. काजो बूदक दूध जिम, विक्सै परतक खोइ, १९. गग, २०. तरैं, २१. ऊंच खाल, २२. घन गरजैं वरसैं अतिवानी, गरिम करैं जा सोहु भयो पानी ।

सखी सहेली अस मनि आवा[1]। को अपना को रचै[2] परावा।
अध कुप्प निसि रयन दुहेली। झुरि-झुरि मरि है सेज इकेली[3]।

दोहा— जोवन काहि न विलसहू। अलप यै प छाह[4]।
केतक भवरा बैठही। कमल फूल दल माहि[5]।

सोरठा— चौगन जोवन जाउ। गय पिया पिरति न चाहीयै।
सूकि रही कुमिराउ। वहुते जोवन पिरति विनु[6]।

चौपाई— सुनि भादौं घन उठ्यौ रि जाई[7]। अब तुहि ओ खर बोलिहौ धाई।
काहू को अस रौतौं[8] खाई। जाकरि[9] बात सुनावसि आई[10]।
जोर[11] मरो सो साथि न आवै। तिलगि[12] आपहि को डहनावै[13]।
डहकत जाइ न बाधै थोतौं। तिह जोवन सौं कौन परीती।
सु॰ तिलु एक करतु बहु पापू। तिह लग कौनु विटारैं आपू[14]।

दोहा— काजर कीयो ऊवरी[15]। धाइ पापु तस[16] आह।
दरसनु होई लोर सन[17]। ऊतर देउ त छाह[18]।

सोरठा— सारद ससिहर जान[19]। साधन विरह चवगना।
जनु[20] अरजन के बाण। मार तार[21] चूकै नही।

चौपाई— मुनि मैना यह चढ्या कुवारू।
नए ताग सह[22] गूथहि हारू।
घर घर वार[23] कनागत होई।
पियु भोगत[24] विनु रह्या[25] न कोई।
ज्यो तऊ हारहि होइ उजियारो।
तिरिया खेलहि सहज धमारो[26]।
तू काहे आपहि अब हेरसि[27]।
मोर बोल[28] तू काहे फेरसि।

---

१. भावा, २. रचै, ३. तिल एक सुख्य जनम को पापु, तैलगि कोड रुकावै आप, ४. वैस सुकुमारि, ५. विरह आगि सिगवारि, ६. सोरठा—
तासौं कोजै नेह, जासो और निवाहियै।
तासन कौनु सनेहु, साधन डहकि जु छाडियै॥
७. रिसाई, ८. अमरोतो, ९. जिहि की, १०. घाई। ११. जोवन मूए, १२. लोनै, १३. नसावै, १४. अधवार जे रैनिटु दुहेली, झुरि झुरि मरिहै सहज अकेली, १५. जस ओवरी, १६. असरज्जो लोरसौं, १७. सम १८. उतर का देताहि, १९. दरस ससि निरवाण, २० जसु, २१. मदना सर।
२२. सव, २३. उपजै साल, २४. मुगति, २५. रहे,
२६. जोन्हु दहु दिस उवैभरारी, तरुणी खेलहि प्रेम धमारी
२७. तूं आपुहि कहि मोरहि खेलसि, २८. मेरी बात

धन जोबन जिन होंन न साथा।
गए वार पाछे पछताथा।
मानि भवर ताहि मेलवो।
लैन घग त नि धो जाय।

दोहा— मानि सरति तो ऊपरा। तोगे नरनि न मानि।[1]
तिह लग जोबनु सोयसी। पाले हो हि[2] मगानि।

सोरठा— जिह राता सोग पोउ। हौं चेरी ता सौतिरी।
बार न बाधौं जोउ। भाया गोम कि रागोर्य[3]।

चौपाई— सुनि मालनि कौं यारि कि[4] ग्रावा।
बात सुनत मोहि नाज न भावा[5]।
होहि कनागत परब दिवारी[6]।
मुहि[7] लेखे ससार उजारी।
भोग भुगति तो तासिर्ग मानिय।
जो मालिनि अपुना करि जानिय।
कर कारिक बस मापहि लीजै।
कारी माग वमन धारो जै[9]।
करवत सीसि देइ जो लोरा।
तबहू भगु न डारौं[10] मोरा।

दोहा— इहु जोबन लारक बिनु। जारि करौ तन छार।
फिरति जाइ इन्ह[11] बात तें। मरा होइ मुहु कार।

सोरठा— दोजै हाथ उचाइ[12]। पानै[13] पोजै बिलसीये।
गए न मूंडि चराइ[14]। सावन बिरपन बापुरे।

चौपाई— जगि जोवन भोगवै ससारू।
तो पहि मैंना वहुतु विचारू।
वामनि वैसनि पत्रिनि नारी।
वरो मन पद बन तरणमु नारा।

---

१ सोतिन की तुहि ऊपरा, तोरा कानन कानि।
२ होसि।
३ मो जरिहौ पिय लागि, जैसे छुवा न देखिये
जरा कया कि आगि, मायन सनी सुलेखिये।
४ किनि, ५ लोरिक बिन मोहि जगतुन भावै, ६ सरस उजारो, ७ मो
८ तासों मानो,
९ कुल कारिस कस भाप लगावसि, कारोय मसि कसलै मुख लावसि।
१० उमगें, ११ जिन बात नहि।
१२. उठाइ, १३. खेयै, १४. चढाइ सचिमुए,

तु[1] पर वो दिन कातिगु आवा।
सहु को पेलै परव बधावा[2]।
पेलै[3] पवन छत्तीसो जाती।
तुम्हरी[4] वैस भोग की ताती।
तुहि देपत और हि लैगावा।
छोडि सि तोहि निरापनु[5] भावा।
ऊडि गयौ तासौ कम नेहू।
तह करे काजि उदेहू।

दोहा— जोवनु भोग[6] नु रापीयै। का पोवसि तिहि[7] लागि।
सारस[8] सबद फटसि होया। जिउ जिउ देपसि जागि।

सोरठा— जो राता जिहि[9] पास। सो जिउ ताहू[10] मनि वसै।
तिहि[11] तन की का आस। साबु नु जनु माटी परो।

चौपाई— का वर[12] कातिग परव दिवारी।
झूठी बात का[13] कहसि गवारी।
रितु परवो दिनु मानो सोई।
जिहि सरीर मालिनि जिउ होई।
जियरा मोर चाद लै धरा।
जिय विनु सव घर[14] माटी[15] परा।
माटी लग जो आपु चिटारौ।
धरग परतर दुहु नगि हारी[16]।
रितु[17] जानौ लोरक संगि[18] मानौ।
पिय विनु जगतु धुधु[19] करि जानौ।

दोहा— राइ भोग[20] इह पृथवी। तिल इकु होइ[21] न साउ।
जुग जग चलै इन्ह बात तै। तिहि लगि मुहि सताउ[22]।

सोरठा— काया[23] विटारै कोइ, जगु राता माटी वसै।
चरितु पिलावै[24] सोइ। झूठं झूठा पेलीयै[25]।

चौपाई— माटी माटी कहा वषानसि।
माटी भेद न मैना जानिसि।

---

१. उत्तिम कातिग परवु दिवारी, सब कोई खेलै परम घमारी।
२ वरइ निपट इनी सुरग सुलारी।
३ मानै परवु, ४ तपै भई असि भाग की ताती, ५ विराना, ६. रतनु भोग करि,
७. खेवसि वह, ८ सरद ससि वहुरे निहि, अ फटै देखै जागि,
६ तिहि, १०. जनु ताके, ११ ता घर की वस आस, १२. काका, १३. कस,
१४. घर, १५ माटी में, १६ दुहु जुगु धर्म सुनिहवे हारे, १७. और परवु,
१८. सो, १६ झूट के।
२०. भोगवै पृथिमो, २१. पिमाउ, २२. जुग जुग झूट पतीरवतिहि, लगी मोहि न सताउ, २३. काय २४. खेलवै २५. झूठी झूठ ज बोलुना।

[1]कांपहि हार डोर मन हारा ।
गावहि दसन[2] नीर सब नैना ।
गरब तुहार न पावहि मैना ।
मीत[3] सुपेनी जाइ न जाई ।
अधिक मदनु तरासैं[4] धाई ।
मानु बोल तुहि देउ मिलाई ।
पोसैं[5] केले पउ निसि जाई ।

दोहा— बोल[6] नेह चित विलसइ । कामिनि इह संसार ।
अजहूँ[7] रसिया मेलवो । राखहु बोल हमार ।

सोरठा— झूठा[8] नेह न कीज जगु । लपट वैगी घना ।
जैसा परे सहीज । साधन जीयरा राखीयै ।

चौपाई— सुनि कुट्टिनि[9] मैना उठि जाई ।
ताकहु भुरहु जनु रई जाई ।
पोस मास का करहि भोरा ।
का तनि[10] जिउ हरि लै गउ लारा ।
लोरकु बिरहु तयैं मोरो[11] मांगा ।
सिवरौं नेह पहिरियो आगा ।
बिरह आगि पुनि[12] पवनु बहाई ।
यह वा यम मुनावसि आई ।
भोग भुगति कै नियर[13] न जराऊ ।
सीह[14] घाम कै परि न डराऊ ।

---

१. कांपे हियरा फटे मनहारा २. गात ३. सौरि, ४ हियैं तरसाई, ५. पासे अकेले जाइ न जाई, ६ नवल नेह नित कामिनी, विलसैं यह ससार । ७. अबहि,
८ झूठा यह ससार, झूठैं नेहु न कीजिए ।
　साधन पिय के बार, साचु होइ जिउ दीजिए ।।
९. रतना मालिनी हकराई, तिहि यह भुरउ जु भरइ जाई ।
१०. झंझरि कै
११. मारैं मगा, सुरति सनेह सु पहिरैं अगा ।
१२ तन तिलु न बुझाई, रहा बिरहु में नासै जाई ।
१३. नियरैं न जाऊ, १४. घाम सीत कै डर न डराऊ ।

।। श्री मैना का सत ।।

चौपाई— प्रथम ही विन वुं सिरजन हारू। अलप अगोचर मया भंडारू ।।
आस तोरो मोहि वहुत गुसाई। तोरं डर कापी करर कि नाई ।।
सत्रु मित्र सव काहू संभारं। भुगत देई काहू न विसारं ।।
फूलि ज रही जगत फुलवारी। जो राता सौ चला सभारी ।।
अपने रग आपु रग राता। वूझं कौनु तुम्हारी बाता ।।

दोहरा— वंध न आंखी (पि) हमारीया
एको चरित न सूझि।
सोवत सपनौ देपियौ
कोऊ करं कछु बूझि ।।

सोरठा— जिहि कलि विलसी एह। अस दल गज दलमले।
साधन भए ति पेह। पृथमी चिन्हा ना रहा ।।

चौपाई— जाता देष्यौ यह संसारू। का लोगा तुम्ह करो पियारू।
पानी जेसि बुलबुला होई। जो आवा सो रहया न कोई ।।
पहिलें राइ जु दई उपानं। आवत देपं जात न जानं ।।
इक छत्तु राज निरजन कीन्हा। प्रियमी तिहि कर रहा न चीन्हा ।।
हम पुनि दिनि दकु चलाचल अंहै। मूप आपर समुझोता कं है ।।

दोहा— धूवा को सौ धोरहर। पृथमी कोऊ न रहै निदान।
साधन रोइ डफानियं। जो जो मन ह तुलान ।।

सोरठा— कोडी कोडी जोरि। मुए सो किरपन वापुरे।
गए गडंत करोरि। मनि पछताने पापीया ।।

चौपाई— सातनु कुंवर नगर कर धूत। कपट रूप नारद कर पूत।
तिहि रतना मालिनी कराई। मैना सत तं देहु डुलाई ।।
दूत वचन जो मैनहि पाऊ। तो मालिनि सिर ते पहिनाऊ।
मालनि पान दूत के लीन्हे। कपट रूप सब आगं कीन्हे ।।
जो हन मोहन लीन्ह सभारी। टोना टामनि पहरि सभारी।

सोरठा— कपट रूप चली दूती गई मैना के बार।
जिहि विधि रापं सत सौं कौन डुलावन हार ।।

सोरठा— जिहि रापं करतार। निहि कर वार न वकोयं।
जो लागं समार। साथु न छाह न चपोयं ।।

चौपाई— मालिन जाइ मदिर में पैठी। मैना जिहा सिंयासन वंठी।
चपं कं फूल चोनरा हारू। भेट दीन्ह अरु कीन्ह जुहारू ।।
हसि करि पूछं मैना रानी। कहां गवन कीन्ही जग मानी।
कहै मालिनि सुनि मालति मैना। अव चीन्है कस बोलति बैना।
तोरे पिता धाइ हौं कीन्ही। तो मैं वारं चूचो दीन्ही ।।

दोहरा— मनु न रहै जीउ गृह सरै। भ्रागि परी तन मोहि।
सुमिर मोह चित ऊपज्यो। देखन आई तोहि।।

सोरठा— सीस नवै भैं लागि। मुष रोवै नैननि हसै।
साधन धनकु चटाइ। ज्यो थल ढूकै अहेरीया।।

चौपाई— मैना बात साच कै मानी। दूनी कै बोलिनि पतियानी।
तब नाइनि को वेगि बुलाई। कू कू मरदन उबटि न्हवाई।।
घेवर बावर काढि धवावा। सुरग चूरी आनि पिहरावा।
हरखी मालिनि अग न भाई। अब मो पै मैना कहा जाई।।
मैल चीर तेरो देखौं मैना। सेंदुर माग न काजर नैना।

दोहरा— वदन जोति तोरी घूमरी। कन्त अब हेरसि आपु।
माग कोपि तेरी सीयरो। सिरह छत्र तोरा बापु।।

चौपाई— पिता मोर अरु काहे न राजा। पिता राज मेरे कोनैं काजा।
पियु दुषु मोहि परा है आई। अस दुषु सौतिहि परीयउ धाई।।
महरा का धीय चद कुमरी। लै गयौ सिंदुर मोर उतारी।
का कह मालिनि करौं सिगारा। मो परि हरि गयौ कतु पियारा।।
वैरी न करै चद अस कीन्हा। पाली वैसि मोहि दुष दीन्हा।

दोहरा— फिरै भाग भ्रोछै दिना। मीत सु वैरी होइ।
करै जु वाके चोहरा। ग्रैसा करै न कोइ।।

सोरठा— तिहि सौं कीजै नेह। जिह सो उर निवाहीयै।
साधन कौन सनेह। टूटै काचे सूत ज्यौं।।

दोहा— तिह जगि आगु गु दे उही। जहा न सुरजन मोर।
झूठ नेह मोहि[1] मोर वसि। कहा करौ कस तोर[2]।

सोरठा— समुद्र कि उपै रा जाइ। पवन कि वाधा वाधियै।
साधन कि वर पटाइ। माह इकेली पीय विनु[3]।

चौपाई— माघ तुसाह कहौं[4] सुनु वारा।
नैन करा विनु पिचहि धारा[5]।
पवन सु सबदनुसार के बाजै[6]।
डरे नर नाग देव मुनि भाजै[7]।
पाच इद्र कै एकै वैना।
कठे भवरु लुको नै मैना[8]।

---

१. झूठी बात ता, २. कहा सुनै कछू तोर
३. समुद कि पारै जाइ, पौन कि बधै बंधीयैं।
साधनु कोनु खटाइ, माघ अकेली गोर री ।।
४. सहै को पारा, ५. हीएँ अगीठी वरै असरारा, ६. उठि सरगैं वाजा, ७. सुर नर सबै देखि कै भाजा।
८. भाजे पाच इंद्री के ,जना, कठ अलोप भमर भए मना।

सात सपेती पवनु फुराई ।
फूटहि हाउ गोड झरि जाई ।
विरह छइल जिह ऊपरि होई ।
तिह की सीव न चापै कोई[1] ।

दोहा— विरह तुसार[2] सेजु दुपु । मैंना बहुतु[3] सतापु ।
पाच भूत की हतिया । इहु काहे कस पापु[4] ।

सोरठा— इहु काहे का पापु पिय कारनि सिर[5] दीजई ।
साधन बहुतु[6] सतापु बैरी नितु मार्‌या भला[7] ।

चौपाई— धरमहि मालिनि करता[8] चाऊ ।
पाप पंथ धरो नहु पाउ[9] ।
का किहु पापु धरम किहु[10] केरा ।
लोर पंथ मुकता इहु मेरा[11] ।
कै वहि जाउ कि लागौ तीरा ।
लोर सनेह न तजौ सरीरा ।
तनु महि आगि आनि तनु दहै ।
जह चा आगि तुमारु का करै ।
माघ मासु मोहि सुनत न भावै ।
जाइ आग जोलौं रकु आवै[12] ।

दोहा— तिल इकु आगि सु साग मुहि । पुनि विरहा सतावा ।
घरी एक कहु मालिनी । को आपुहि डहवावा[13] ।

सोरठा— जोबन आया[14] बार । साधन सार न करि सकी[15] ।
उतरि गया सो पार[16] । सिर दीजै फिर सँ[17] नहीं ।

---

१ इन चार चरपाइयो के बदने में दो चौपाइयाँ हैं—
माघ मास होउ कि जाऊ लोरिक बिनु मोहि मौर न भाऊ ।
माघ मास होऊ कि हैवतु, मेरे जाय वहे है कतु ॥

२ सतावै, ३ गरुव ४ यह छाडि दे सतापु ५ जीउ दोजिये ६ दान, ७ जोवे तें मरना भला ८ करि हौं ९ निपरिहौं, १० है मारा, ११ लोरक सग जाव है मारा १२ आग की ६ चौपाइ इस प्रकार ८ हैं—
जिहि तन आगि विरह की जरै । पाम तुमार ता देखें डरै ॥
के यहे जाउ कि लागौ धार । लारक नेह में तज्या सारी ॥
माघ मास सुनत न भावै । जाइ आगि जो लारिक आवै ॥
मानि देउ तोहि परम पियारा । कहा सुनसि जा बालु हमारा ॥

१३ तिस इक प्रिथिमी आग परि, यहारि हाइ पछिताव ।
घरी एक के बारने को, मालिनि आपु डहवाव ॥

१४ आए, १५ साधन सनु कस कजीये, १६ उतरि गये, ते पार १७ बहुरयो,

चौपाई— फागुन मदनु न[1] मानै कहा[2]।
उपर्‌या[3] पवनु[4] विरह सनु दहा[5]।
व्यापै विरहु पच नहि हरना[6]।
वनसपती भई[7] इंगुर बरना।
विरहु अगनि फुनि पवन वहाई।
हरि मैना गिरहु न बुझाई[8]।
कुं कुं चंद[9] बहु पौरिहि वारी।
चहु जग[10] दै भइ रतनारी।
जिहि घरि कंतु ति नारि अमोली।
ते फुनि नारि चहि सब होली[11]/[12]

दोहा— रितु विलसहु[13] चित मानहुं। पिरमु[14] न अगमुहाइ।
तिन्हहि[15] देपि नहि थिर। रसीया देउ दिपाइ[16]।

सोरठा— फुनि झूठा संसारु। झूठा नेंहु न कीजियें[17]।
साधन पिय कै वारि। साचो हुइ सिर[18] दीजिये।

चौपाई— का झूठा झूठा[19] जगु पेलसि।
झूठ नेह लगि[20] चित्त न मेलसि।
पिय म[21] झूठ मम[22] कपट ज पेला।
झूठ नेह लगि चित्त न मेला।
विनु सुहागु कुंकुम वस अगा।
सीदूर झूठ नाह[23] विनु भगा।
गीत नाद चाचर घन[24] तारा।
तिन्ह रुचै जिन्ह पासि पियारा।

---

१. जो, २. कोई, ३. उसरि, ४. पौन, ५. होई, ६. सीतल, ७. भए अंगरे पानी, ८. प्रति नं० २ में नही है। इसके बाद 'जिहि घर' वाला पद्य है और फिर 'कुंकुं' वाला। ६. हर्ते, दुर पुरैवारी।
१०. चिहु दिसि जगत भरे फुलवारी।
११. वे फागुन नित खेलें होरी।
१२. गावति फिरै तरुण अरुवारी, काम धरे सुरग सो नारी,
नं० १६ के बाद नं० २ में यह अधिक है,
१३. मानौं पिउ विलसो,
१४. प्रेम अंग न समाइ,
१५. तेहु देखि न समझाती,
१६. मिलाइ,
१७. झूठा यह संसार, झूठा खेल न खेलिये,
१८. जिउ, १६. झूठी झूठी, २०. झूठी बात कस आनि, परम २१. जिय, कटुजु खेलै, २२. नरक कुंड सो आपहि मेलै, २३. नही, २४. धरै,

मो[1] जीय पीय बिनु जगतु[2] गतु उजारी।
हीं[3] कहा पेलौ पिरम[4] धमारी।
करउ[5] फागु लोरक घरि आवैं।
नातरू मैंना मुए बरावैं।

दोहा— कत नेंह चितु बाधि[6]। औउर न[7] मन महि भाव।
तार्[8] दिन करहु फाग मैं। जब लोरक घरि आव।

सोरठा— सावन चढ़या बसतु। बिरहनि बिरह चवग्गुना।
परतीय, लुबधा कत। मरनैं[9] घ जियना भला।

चौपाई— चेत[10] राउ रितु आइ तुलाना।
रितु[11] बसतु करु मन माना।
बन बन भवरा कुसुम[12] नु भाना।
फूलहि[13] भवर भवर चितु माना।
अगर कपूर ल[14] लेवा सहि।
कामिनि फूल सेज भरि डासहि।
रावहि[15] रैनि सेजि चढि बारी।
मानहि[16] आसति परम पियारी।
कवल[17] फूल बनसपती फूली।
बासमती कामिनि रसि भूली।
चचलु बिरह न मानैं कहा।
सुनि अति बिरहु बलव होइ रहा।
मद सो भवर नाद झनकारा।
अधिको उठै बिरह तन झारा।
जिउ जिउ पेलहि नारि पियारी।
छँ[18] सु जाति है मैंना तोरी।
कहौं बात[19] जो सुनि है मोरा।
मिलें[20] वीं तोहि परम[21] पियारा।
चंन[22] बसंत बाम सर मारा।

---

१ मोहि, २. रे जगत धयारी, ३. मै- ४. फाग, ५. न० २ में यह पद नहीं है।
६. बाँधियो, ७ नेह नही मान, ८. तिह, ९. जियनैं तैं मरना भला, १०. न० २ में यह नहीं, ११. बमु ग गधाना, १२. न० २ में नहीं, १३. फुनेल निवासहि, १४. रवहि रानि, १५ मानैं मग पति परम धवारी, १६. यहाँ से ७ पंक्तियाँ न० २ में नहीं है, १७. बंग जान हिय हरैं तोरी, १८. बुधि सुनि जैं मोरी, १९. आनि देउ, २०. छंतु, २१. 'कहा सुनिगु बोल हमारा', न० २ में अधिक है, और 'चंत' शब्द से आगे की तीनों पंक्तियाँ नहीं हैं। इसके बाद में यह दोहा है—चंत बसत परम रतु, मैंना मानहु भोग।
प्रियमो जगतु देखि थो, कहा करतु है सोग॥

चैत मास रवि तिहु बल माहा।
जोवनु असु जैसे है छाह।

सोरठा— मालति[1] भवरा जोगु, भवरा कवल हि बेधिया।
साधन पूरो सोग, जोगु[2] वरी सरवरि करै।

चौपाई— रितु[3] वसतु मालिनि बिन आवै।
बात करत मोहि नामु न भावै।
दूती दूत चलनु[4] सह तोरा।
भवरु चलावै बधाइ[5] हि मारा।
अपति[6] पठौनी अठहि न दारी।
नितु[7] उठि आइ देत हसि गारी।
हौं[8] मालिनि फूल न सिरि राजा।
सेज मोर जु वरहि सिरि छाजा।
जनहि[9] चितु अपना न डुलाउ।
लोर पथ सिरजा उत जाउ।
मैना[10] तब मालिनि झझकारी।
अब लौं मैं पति राखि तुम्हारी।
लोक कुटुब की[11] अहै ज कानी।
सिर तोहि आज अनावौ पानी।

दोहा— रितु अनरितु रस[12] अनरसह। मोहित[13] मनहि न भाव।
रितु बसत तब मानि, जब[14] लोरकु घरि आव।

सोरठा— आया[15] लीजै धाइ। साधन जे[16] तनु पाहुना।
मान विहूणा जाइ। पछिनावा पाछै रहै।

चौपाई— मा[17] जरि मासु चढा वै साप।
मदन भुयग रहा[18] चढि तापू।

---

१ मालति भयो वियोगु, भवरू कमल में बधियो,
२ गुवरोरा,
३ प्रथम की दो पक्तियाँ न० २ में नही। पीछे की आगे पीछे है, ४. लखन सव, ५ वधावा, ६ आपति उतार अजा तिनदारी, ७ तू आनि ८ ये पक्तिया न० २ में नही हैं।
९ जनमह चित्त न डुलाऊ काऊ, भवर पथ जिउ रहो कि जाउ।
१० मैना मालिनी धरि झकझोरी, बहुत भाति पति राखू तोरी।
११ होत निकानी, सिरते आजु उतारतिउ पानी।
१२ रसु अनरसु १३ और न देखा भाउ, १४ जो, १५ आए, १६ जोवनु,
१७ मैना यह आवा बैसाखू, १८ जानि जिउ राखू,

मूदि[1] आपि र तौ छीटी जाई।
भोर भए रवि किरन दिषाई।

दोहा— जैं[2] इह जोवनु जारि करि, कै अधिको पैल उडाव।
इहु सिर दिया लोरकहु, अवर न देष न पाव।

सोरठा— कीया[3] न जोबन भोग वर। सग बाई हे सषी।
घर घरि नितु सोग साधन। अहि रौ जनम ठायौ।

चौपाई— जेठ मास रवि किरन पसारी[4]।
टूटति[5] धरती परत अगारी।
दधि[6] धरती सुत पैं पट सारा।
घामु[7] ततु जरि हुइ है छारा।
अगन सीतल है मानौं[8] देहा।
अधिकौं[9] उठैं विरह तनु येहा।
सुसर[10] कठ कोइल कुह काई।
चला वसतु टाल्हार[11] जनाई।
केही[12] पिरति गयौ जम वारा।
वहुत न आई परति है वारा।

दोहा— हेम[13] सरद अरु बरिय रा। ग्रीपम सरसु वसतु।
गए छवौ रित अहिर रा। तो निरास छितु कतु।

सोरठा— सो[14] जानैं जिह पीर। विरहा घाउ न देषियैं।
कोइल वरण सरीर। साधु न डाह जडाहीयैं।

चौपाई— कि नर[15] चितवैं जेठ सिरि आई। जरि[16] धरती किन जाइ उडाई।
जौ[17] जरि विरहु छार होइ जाई। तबहि न छोरो लोर को नाउ।

---

१. न० २ में ये दो पक्तिया नहीं हैं।
२. जो मोहि मदना जारइ, जारि करैं तनु खेह।
तो उडिकैं लैं जाइ, लोरिक ही के गहैं।।
३. आगि जरैं ज सरीर, विरला कोइ सम्हारि है।
साधन विरह की पीर, जेठमास सीतला रुचै।।
४. पसारा, ५ टूटि टूटि धरती परैं आरा, ६. धरनि आनि पाटी पर सारा,
७ घास-पात, ८ मानै तैंहो, ९ विरह होइ है तैंहो, १० सरस, ११ मल्हार,
१२. वही बात एक करहु विचारु, एक मास सुनु बोल विचारु।
१३. वरिषा शशिर हेमत रितु ······ ···
१४. कबहु न डिगहि पाइ, साधन सत के पथ में।
जेठ जारिविन जाइ जा उडि लोरपगन परैं।।
१५ कसन दूती, १६ करि धरति छगर उडि जाइ।
१७. काहे न विरह खाई खोई जाइ, ऊ तव हू नत जो लोरकानाउ।

मोह महेरी जिन्ह[1] जई पाई। तिहिं[2] वै चिति कस अवर पठाई।
अबहीं बारह मास पठावे। दीन एक म म लोर करावे[3]।

दोहा— तोर[4] कहा जो ठेलउ[5]। सतु राषा करतार।
रहि[6] म मीत लोरक सिवा। जसु प्रगटया ससार।

सोरठा— पाप पुन दाइ बीज। जो बीजै[7] सो ऊपजै।
साधनु जैसा बीज। तैसा आगे फलु[8] मिलै।

मालिनि[10] तब मालिनि हकराई।
धारि झौंटे कुटिनी ललराई।
मूड मुडाइ सिर[11] बाल बधाए।
कार[11] पिया सिर टीका लाए।
गदहि[11] बैसाइ तबहि मुकराई।
हाट हाट सहु नगर फिराई।
जो जस[14] करै सु तैसा पावै।
इन बातनि करि[15] माप न आवै।
नागर[16] बेल कसतूरी पान।
को दो बैस क लु नीपज हि धान।

दोहा— सतु मैना का साधनी[17]। किछ राषा करतार।
भई[18] पिरति लोरक सतु। कुटिनी के मुष छार।

(इति श्री मैनासतु समाप्त)

---

१ रोकउ, २ नेकरमनकस स्याद खटाइ
३ अब ए बारह मास तुलानै दिन इक आए कूक हैरानै
४ गोरख पुरी पामरम आये, अवधि कै विरह हियै तव साये।। नं० २ में अधिक है।
५. तेरा, ६ पेल कै, ७ प्रीति रही लोरक सौं, सौकत करै ससार।।
इसके आगे यह चौपाई अधिक है।
मो घरि आए लोरकु राने, फिरि मास रितु आइ बुलाने।
अब हौं होऊ लोरक घर रानी, सौतिन पास भराऊ पानी।
८ बोवै सोई लुनै, ९ हालारै।
१०. मैना मालिनी नियर बुलाई, धरि झौंटा कुटिनी निहुराई।
११. केसे दुर दीनें, १२ कारे पोरे मुख टीका कीन्हे, १३. गदह पलानिकै आनि चडाई १४ जैसा, १५ का अनखुन आवै,
१६. आगे दीये जो ओर हवाना, को दा बए कि लुनी पै धाना।
१७ साधन,
१८ कुटिनी देस निकारि, कीन्ही गगा के पार।।

नलदमन

[कवि सूरदास कृत]

संपादक--श्री वासुदेवशरण अग्रवाल

कवि सूरदास कृत 'नलदमन' काव्य

[श्री वासुदेव शरण अग्रवाल, काशी विश्वविद्यालय]

ये कवि सूरदास सुप्रसिद्ध हिन्दी कवि सूरदास से भिन्न हैं। इन्होंने हिजरी सन् १०६८ अर्थात् संवत् १७१४ (ई० सन् १६५७) में 'नलदमन' काव्य लिखना आरम्भ किया। इनके पिता का नाम गोरधनदास था। इनके पुरखों का निवास स्थान गुरदास पुर जिले का कलानौर स्थान था। वहाँ से आकर उनके पिता लखनऊ में बस गए थे। लखनऊ में ही सूरदास का जन्म हुआ।

इस कवि का पहले पहल परिचय श्री मोतीचन्द्र जी ने हिन्दी संसार को दिया था।[1] उनके लेख का आधार बम्बई संग्रहालय में सुरक्षित फारसी लिपि में लिखी हुई एक सचित्र प्रति थी। उस प्रति से उन्होंने पूरे ग्रन्थ की एक देवनगरी प्रतिलिपि कराई थी जिसकी एक टंकित प्रति नागरी प्रचारिणी सभा के पुस्तकालय में है। कितने ही स्थानों में फारसी से देवनागरी लिपि में लाया हुआ पाठ संदिग्ध है।

अभी दो वर्ष पूर्व श्री मुनि कान्तिसागर को डीग–भरतपुर की ओर हिन्दी ग्रन्थों की खोज करते हुए 'नलदमन' की एक देव नागरी प्रति प्राप्त हुई थी। उन्होंने जब वह प्रति मुझे जयपुर में दिखाई तो मैंने वह प्रति कुछ समय के लिये उधार ले ली जिससे पहली प्रति के साथ पाठ मिलाकर देख सकूं। पीछे मुनिजी ने अपनी सहज उदारता से मेरी प्रार्थना पर वह प्रति हिन्दी विद्यापीठ आगरा विश्वविद्यालय, आगरा को भेंट कर दी और पाठ संशोधन के बाद वह वहीं विद्यापीठ पुस्तकालय में सुरक्षित हो जायगी। इस प्रति में लेखन संवत् १८१५, चैत्र मास शुक्ल पक्ष तिथि १२ है। प्रति यद्यपि देवनागरी लिपि में है पर जगह-जगह पाठ मिलाने से अनुमान होता है कि फारसी लिपि में लिखी हुई किसी मूल प्रति से यह उतारी गई।

इस नई सामग्री की सहायता से नलदमन काव्य का एक पाठ तैयार किया गया है। इसमें बम्बई की फारसी प्रति की प्रतिलिपि से जो सभा में सुरक्षित है सहायता ली गई है। दोनों प्रतियों के पाठों को तुलनात्मक दृष्टि से मिलाया गया है। खेद है कि ऐसा करते समय बम्बई संग्रहालय की मूल फारसी लिपि वाली सुलिखित प्रति प्राप्त नहीं हो सकी, केवल उसकी प्रतिलिपि से ही संतोष करना पड़ा है।

ग्रन्थ में १७वीं शती के मध्य की अवधी भाषा का स्वरूप सुरक्षित है। इसलिए वह मूल्यवान् है। अतएव बम्बई के पाठ के लिये अधिक प्रतीक्षा न करके इसका एक संस्करण यहां प्रस्तुत किया जा रहा है। जैसा मोतीचन्द्र जी ने लिखा था 'नलदमन' की रचना हिन्दी

---

१. श्री डा० मोतीचन्द्र, कवि सूरदास कृत 'नलदमन' काव्य, नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग १६–अंक २ (संवत् १९९५), पृ० १२१–१३८।

में सूफी विचारों से रंजित प्रेमाख्यानक काव्यों की भांति ही की गई थी। भाषा में पंजाबी का पुट भी है—

निस सारन मह प्रेम कहानी। पूरबदी भाषा विच आनी॥

सभा की प्रतिलिपि [संकेत स०] और मुनि कान्तिसागर जी की प्रति [संकेत मां०] से पाठ मिलाने का प्रारम्भिक कार्य श्री दौलतराम जुयाल ने किया है। अर्थ की दृष्टि से संशोधित पाठ को मैंने देख लिया है।

स्वस्ति श्रीसर्वज्ञाय नमः ॥

अथ नलदमन सूरदासकृतमारभ्यते ॥

ईश वदना

सुमिरौं[1] आदि अनादि जो कोई । आदि अंत[2] पुन एकै सोई ॥
जाहि न बरन न रूप न रेखा । अविगत गति अभेख बहु[3] भेखा ॥
सिथिल न चचल[4] बडा न छोटा । तरुन न बूढा लटा[5] न मोटा ॥
बहुत न थोरा सजा[6] न फूटा । मिला न बिछुरा जुरा न टूटा ॥
ज्यो कुछ त्यो का गाँऊ[7] नाऊ[8] । नाउ जो[9] धरै धरै तिहि[10] नाऊ ॥
नाउ इहै[11] जो कहै[12] सो नाऊँ । इही कहब[13] वर[14] रापत[15] नाऊँ ॥
नाउ धरत खिन सरगुन होई । जो निरगुन तिहि[16] नाउँ न कोई ॥
वह जो रूप वा काउन[17] कहा । बचन न चलै तहाँ थकि रहा[18] ॥
जहाँ बचन कर गवन न होई । तहाँ कौन विधि बरनै कोई ॥

दोहा— आपुन बना न[19] बनै बिना आपुन बना[20] बनाव ।
ज्यो सो[21] बना त्यो नहि[22] बना कहत[23] न बनै बनाव ॥१॥

दोहा० १—१. सुमरू (का०), २ अनत (स०), ३. तिन्ह (स०), ४. चपल (का०), ५ लघा (का०) । ६ सचा (का०) । ७ नाव (का०) । ८ बताऊँ (का०) । ९ जु (का०) । १०. तिन्ह (स०) । ११ एही (का०) । १२. कहै (स०) । १३ कहिन (का०) । १४. पर (का०) । १५. राखव (स०) । १६. तिन्ह (स०) । १७ को अन कहा (का०) । १८. रहा (का०), १९. बनान न बनै बना (स०) । २०. बना (का०) । २१. सू (का०), २२ त्योही बना (का०) । २३ कहित (का०) ।

जद्यपि ज्यो ज्यों कहा[1] न जाई। पै घट औघट रहा[2] समाई ॥
जहाँ न वह[3] सो ठौर न कोई। सकल[4] ठौर मँह एकौ[5] सोई ॥
औ[6] पुनि छेद[7] भेद[8] कछु नाही। सिमिटि[10] समाय रहा[11] सब माँही ॥[1]
ओहि जो ठाठ या कोउ न ठठा। सदा एक रस बढा न घटा ॥
ज्यों आकास समान समाना। वहों जान एही[12] उनमाना[13] ॥
पै वह चेतन यह जड़ सूना[14]। वह सजोति यह जोति बिहूना ॥
जो कुछ दिस्टि परे सो नाही। पै इहि[15] या मँह वो[16] इहि[17] माँही ॥
चर्म[18] दिस्टि सो जाइ न देखा। तौ[19] दीखे जो होई कुछ रेखा ॥
बातहि बात जाइ वह जाना। दिस्टि न आवै प्रगट[20] हेराना ॥

दोहा— देख देखत देखि जब, दिस्ट कहै[21] कछु नाहिं।
दिस्टि अगोचर अलख वह, वा नाही[22] कै माँहि ॥२॥

सब मे औ[1] सबही सो न्यारा। सब कुछ करै अकरता प्यारा ॥
तिह[2] चेतन[3] बिन कछू न होई। पै करतूत न लागै कोई ॥
मंदिर माहँ दिया ज्यों बारा। त्यो घट घट तासो उजियारा ॥
घट मह[4] करन[5] सक्त[6] सब तासो। पै वह अलग दिया ज्यो यासों[7] ॥
जैसे कवल सुरज मिलि[8] खिलै। पै याको गुन ताह न मिलै ॥
कवल खिलै कछु सुरज न खिला। औ ताकै मुख मिलै न मिला ॥
त्यों चेतन जड माह समाना। अनमिल जाइ मिला सा जाना ॥
ज्यों पानी[10] पूरे घट माहीं। दिस्टि परै ससि कै[11] परिछाहीं ॥
जल गुन जान[12] परै जब[13] हलई। चद सो अलग न हलइ न चलई ॥

दोहा— कहो[14] न जाहि बनाय कछु ता साहब के रग।
रग[15] अग सब ता मिल बनै, आपु[16] न रग[17] न अग[18] ॥३॥

दोहा २—१. कह्यो (का०)। २. रह्या (का)। ३. बाहि (का०)। ४. ठौर ठौर मैं (का०)। ५. एकै (का०)। ६. क (म०)। ७. बिन (स०)। ८. छद (स०)। ९. हद (स०)। १०. समत (स०)। ११. रह्या (का०)। १२. तिन्हही (स०), १३. अनमाना (स०), १४. सोना (स०), १५. वह (स०), १६. वह (स०), १७. या (म०), १८. चरम (स०), १९. तो (म०), २०. प्रघट (स०), २१. कहो (म०), २२. माही (का०)।
[दोहा] ३—१ औ (स०), २. तिन्ह (म०), ३. चिन्तें (स०), ४. बुद्धी (स०), ५. मै (का०), ६. कर्ण (का०), ७. शक्ति (का०), ८. वासों (का०), ९. मिल (स०), १०. पाणी (का०), ११. की (का), १२. जानि, १३. जनु। १४. कहे (का०)। १५. रङ्ग रङ्ग रङ्ग ताहि मिल (का०), १६. आप (का०)। १७. निरङ्ग (का०)। १८. नरङ्ग।

जदपि[1] आप अलिप्त अकरता। पै करता भरता औ हरता ।।
सरजनहार जगत कर सोई। अलख निरंजन और न कोई ।।
जो देखौ सब यहै बनावा। न कुछ माहि कुछ कै दिखरावा ।।
कीन्हेसि प्रथम जोत परकासू। कीन्हेसि पानी पवन[2] अकासू ।।
अगिन पौन[3] जल रज इमि साजे[4]। जिन्ह[5] सौं ए कौतुक उपराजे[6] ।।
कीन्हेसि धरती सुरग पतारा। मेरु समुन्द सूर[7] ससि तारा ।।
दिन अरु[8] रैन धूप अरु छाहा। मेघ वर्ण[9] पानी[10] जिहि[11] माहा ।।
देव मनुज दईत[12] औ प्रेता[13]। पसु पंछी जल थल जीव[14] केता ।।
तरुवर मूल[15] बेल अरु[16] बूटी। अगिन[17] सिरजना[18] गिनत[19] न टूटी ।।

दोहा—जे देखा ए खेत[20] जग, अलखन[21] बरन[22] अपार।
छिनक एक[23] महु सब किए[24], करत न लागी[25] बार ।।४।।

जहु[1] लग जीव जतु उपराजा[2]। भूख[3] सबहि कर साथहि साजा ।।१।।
आपु सवन[4] सुधि कै पहुँचावै। कीट पतगन बिसर न पावै ।।२।।
हस्ति[5] आदि दै चाटा ताई। छिन न बिसारत ऐसउ साई ।।३।।
अस अटूट कीन्हेसि भडारा। घटै न अघट अपूर अपारा ।।४।।
जो जिहि[6] जोग देइ[7] तिहि[8] सोई। ताकर दीन लेइ[9] सब कोई ।।५।।
जो कोउ गरब करै मन माही। हम[10] उपराज[11] दरब तब खाही ।।६।।
गरब[12] माझ का दरब कमावा[13]। तहा कौन उद्यम करि[14] खावा ।।७।।
पसु पछो जो बसै बन माहा[15]। केतक अरथ दरब तिन्ह पाहां[16] ।।८।।
वहै एक जग कै सुधि लेवा। अलख अपार निरजन देवा ।।९।।

दोहा—करन हरन पोषन[17] भरन, जग कर्ता[18] के हाथ।
पल[19] छिन कैं[20] सुधि लेइ[21] लगि रहै सबन के साथ ।।५।।

दोहा ४—१. जदप (स०)। २. प्रौन (स०)। ३. खेह सब रचि (का०)। ४. साजो (का०)। ५. तिहि (का०)। ६. उपराजो (का०)। ७. सुर (स०)। ८. औ (का०)। ९. प्रान (स०)। १०. पाइ (स०)। ११. जिन्ह (स०)। १२. दैत्य (का०)। १३. परेता (स०)। १४. ज्यो (स०)। १५. मूर (स०) १६. औ (का०)। १७. अग्नि (का०)। १८. सिरजटा (का०)। १९. कटत (का०)। २०. लखे (का०)। २१. आनो (स०)। २२. वर्ण (का०) २३. मे (का०)। २४. कहै (स०)। २५. लाई (स०)।

दोहा ५—१. जिन्हि सो (का०)। २. अपराजा (स०)। ३. भेख (स०)। ४. कहै ४. सबहि। ५. हस्त (स०)। ६. जिन्ह (स०)। ७. दिये (स०)। ८. तिन्हि (स०)। ९. लिए (स०)। १०. हमहो (का०)। ११. उपाय (उपराज को काट कर उपाय बनाया गया है। उपाना = उत्पन्न करना भी अवधी की धातु है (जोहि सृष्टि उपाई, राम चरित्र मानस)। (का०)। १२. गर्भ (का०)। १३. गमावा (स०)। १४. कर (स०)। १५. माही (का०)। १६. पाही (का०)। १७. पूपन (स०)। १८. जग को ताके (स०)। १९. छिन (का०)। २०. को (का०)। २१. लेन (का०)।

करता कीन्ह चहै सो करै। भरे ढार[1] छूछै लै[2] भरै ॥
परबत छिन ज्यों तारि उडावै। तिनकहि[3] परवत कर[4] दिखरावै ॥
सागर सोखि[5] उखारै छारा। सूखे महं जल भरै अपारा ॥
कंचन मंदिर बसत उजारै[6]। औ[7] उजार मैं कंचन ढारै[8] ॥
राजा बिरछि करै बिनु पाता। ठुंठ[9] नियात[10] करै तिह[11] राता ॥
पंडित गुनी निरगुन[12] कै डारै। मूरख पंडित करि[13] बैठारै ॥
छत्रपती सो भीख मंगावै। लै भिखमंगा राज बैठावै ॥
इंद्रहि चांटा करि[14] अवतारै। चांटहि[15] इंद्रासन बैसारै[16] ॥
बद[17] मता फिर फिर अवतारै[18]। अधम अधरम[19] करत उधारै ॥

दोहा—अमरत[21] विस मूरै[22] करै, औ विरव अमृत[23] मूर।
सदा हजूरी दूर करि, दूरै करै हजूर ॥६॥

ऐसो बल ऐसी प्रभुताई। छमा[1] बूझ कछु बरनि न जाई ॥
जौन अंग भजै जो वाका[2]। तेही अंग मिलै वह ताका ॥
जो ताकौं साहब कै[3] मानै। ताहि कहौ सेवक कै[4] जानै ॥
जो काउ[5] कहै कि सखा हमारा। ताहि सखा होइ मिलै पियारा* ॥
जो काउ[6] ताकै[7] जात कहावै। जात[8] मान तिन्ह[9] पात[10] मिलावै[11] ॥
जो कोउ[12] कहै अंस हौं ताका। एक रूप मेरा अरु वाको ॥
तिहि[13] अपना[14] अंस[15] कै जानी[17]। निरमल अमल आप सो मानी[18] ॥
जो काउ[18] ढीठ कहै हौं सोइ। मो अरु वामैं भेद न कोई ॥
ता पर रीझ बहुत सुख मानै[20]। अंतर मेटि आप सो मानै[21] ॥

दो०—ऐसो साहब और नहिं इतना प्रभुता जाहि।
सेवक जो सरवर[22] करै, करै आप सरि ताहि ॥७॥

दोहा ६—१ ढारै (स०)। २ ते (म०)। ३ कहु (म०)। ४ करि (का०)। ५ सूर (स०)। ६ उजारा (का०)। ७ या (का०)। ८ धारै (स०)। ९ ठुठ (का०)। १० नयात (स०)। ११ वहु (का०)। १२ निगण (का०)। १३ कै (म०)। १४ कै (स०)। १५ चाटा (का०)। १६ बैठारी (का०)। १७ बंदनतं (का०)। १८ अवतारा (का०)। १९ अधमं (का०)। २० अवधारी (का०)। २१ अमृत (का०)। २२ मूरि (म०)। २३ अमृत (का०)। २४ दूरी (का०)।
७—१ छिमा (का०)। २ तिन्हहीं (म०)। ३ करि (का०)। ४ करि (का०)। ५ कोई (का०)। ६ काई (का०)। ७ तारा (का०)। ८ जाति (का०)। ९ तिह (का०)। १० पाति (का०)। ११ लगावै (का०)। १२ काई (का०)। १३ तिन्ह (म०)। १४ वाहु (का०)। १५ अमु (का०)। १६ जानहीं (का०)। १७ मानहि (का०)। १८ काई (का०)। १९ ढीठ (का०)। २० मानहीं (का०)। २१ जान्हीं (का०)। २२ पर (म०)।
* जयपुर की प्रति में यह पांचवी चौपाई है।

निज समुझौ[1/2] तो एकौ सोई। साहब सेवक भेद न[2/2] कोई॥
जड चेतन अंतर पुनि[1] नाही। सर्व समाइ रहे वा माही॥
ज्यो जल माहि बुदबुदा[2] भएऊ। है जल नाव और होइ गएऊ[3]॥
गाठि छूट जब जलहि समाना। जल को जल कुछ भयो[4] न आना॥
कनक सिला ज्यो चित्र बनाए[5]। पसु पछी लिख नाव धराए[6]॥
एक[7] कनक होइ[8] रहा[10] अनेका। कारण[11] टूट एक को एका॥
त्यो यह सब मोइ होइ रहा। भेद कीयें[12] तिन मरम न लहा॥
वहे[13] नचैया[14] वहे[15] बजैया। वहे[16] खेल औ वहे खेलैया॥
जब चाहै तब धरै उठाई। अपना ज्यो को त्यो रहि[17] जाई॥

दो०— वह जो रूप वाको अचल, तासों भयो न भग।
जग समुंद्र जल माहि ज्यो, उपजा एक तरग॥८॥

जो सदेह धरै जिउ[1] कोई। वह[2] चेतन कैसे जड होई॥
जद्यपि वह[3] चेतन जड नाही। पै जड प्रगट[4] भए[5] ता माही॥
जड कछु[6] दूजे वस्त[7] न जाना। मकरी कर[8] जारा कै[9] माना[10]॥
काढि आप सो कौतुक कीन्हा। औ[11] छिन माहि[12] लील पुनि लीन्हा॥
अत महा परलै जब होई। दिष्टि पदारथ रहे न कोई॥
होइ अलोप[13] तत्तु[14] गुन[15] मेला। कछु न रहै वह रहै अकेला॥
सब कुछ[16] ताही[17] माझ समाई। चेतन अविनासी कहि[18] जाई॥
आदि अत जो एकै सोई। मध्य[19] उपाधि[20] न मानौ कोई॥
ऐसे समुझि एक निज जानहु। दुविधा भूलि[21] न मन में आनहु॥

दोहा—और न भाउ[22] जो[23] कुछ सो वह[24] अलख निरजन एक।
भाति[25] भाति कै भेख धरि[26], एकै भयो अनेक॥९॥

दोहा ८—[1/2] समझै (का०)। [2/2] एकै (का०)। [1/3] और (का०)। २. कछु (का०)। ३. भयो (का०)। ४. गयो (का०)। ५. भेव (स०)। ६. बनाई (स०)। ७. धराई (स०)। ८. कनक अग (का०)। ९. हुइ (का०)। १०. रह्या (का०)। ११. कारै (स०)। १२. गिनै (स०) १३. वही (का०)। १४. नचावहि (का०)। १५. वही (का०)। १६. वही (का०)। १७. रहि (का०)।

दोहा ९— १. जन (का०)। २. विन (स०)। ३. बिन (स०) ४. प्रघट (स०)। ५. भई (का०)। ६. दूजी (का०)। ७. जानहि (का०)। ८. को (का०)। ९. करि (का०)। १०. मानहि (का०)। ११. ऊ (स०)। १२. माझ। १३. अनूप (का०)। १४. तत (स०)। १५. खन (स०)। १६. कछु (का०)। १७. ताहि (का०)। १८. हो रहि (का०)। १९. मरद्ध (स०) २०. उपाइ (का०)। २१. मूल (का०)। २२. कछु कछु (का०)। २३. सो (का) २४. वोह (का०) २५. कई (स०)। २६. धर (स०)।

अव गुन कथन मत मैं करौं। जिन्ह मैं प्रेम प्रताप सिरतरौं ॥*
जवते प्रघट मोहिं निसितारे। उन एते केते निस्तारे ॥*
प्रथम निरमन वह जोति उपाई। तिन्ह मैं प्रीत सब सिद्धि बनाई ॥*
रसन एक अस्तुति बहु भेखा। लिखें सा को नाहि कछु लेखा ॥*
जाके प्रेम हिम मह मदमाते। ताके प्रीत प्रथमें रंगराते ॥*
हौं बलहार ताव कै जाग्रौं। जिन्ह प्रताप प्रभु दरसन पाग्रौं ॥*
ग्रौ उन्ह प्रेम बिन मुक्ति न होई। जिन भूलो भटको गत कोई ॥*
ग्रतम सब मन माह सो जानहु। यहे वचन सत्य कै मानहु ॥*
निस बासर रावर जस कहौं। कवल चरन मन परसें कहौं ॥*

दोहा— तीन लोक नौ खड मह, ऐसो ग्रौर न कोइ।
ग्रातम ग्रादि तैं ग्रंत लग, भयो न कोऊ हाइ ॥१२॥*

बादशाह वर्णन

साह जहा सुलतान चकत्ता। भानु समान राज एकछत्ता ॥
दिहली उवा[1] सुरज[2] उजियारा। चहूँ ग्रोर जस किरन पसारा ॥
राजन्ह के मुख रहा न पानी। मना[3] बेलि रवि तेज झुरानी[4] ॥
हुते[5] जु[6] गढ[7] मेर ज्यो ठाढे[8]। गारि[9] नवाइ[10] नीर कै[11] काढे ॥
किये नमान[12] सबै ग्रभिमाना। मान छोड[13] ग्रब[14] करहिं[15] किसानी ॥
सोस नवाइ रहा जो बाचा। जो उकसा सा काल मुख खाचा ॥
रहा न कतहू जुद्ध[16] कर[17] मानू। ग्रस दिढ होइ बैठा सुलतानू ॥
छत्री छत्रधार जो कहाए। ते जुहार का[18] बार[19] न पाए ॥
खड खड कै राजा राऊ। ठाढे रहत जोरें कर पाऊ ॥

दोहा— जे राजा तरवार धरें[20] कटक देत है[21] टार[22]।
तोरि तोरि तरवार तिन्ह[23] फार[24] गढाए[25] फार ॥१३॥

दोहा १३—१ हुवा (का०)। २ सूर्य (का०)। ३ मान (स०)। ४ झरानी (स०)
५ हाते (स०)। ६ जो (स०)। ७ घर (स०)। ८ बाढे (स०)। ९ कार
(स०) गार (का)। पर शुद्ध पाठ गारि' है। गारना = दवाकर निचोडना।
मेरु के सदृश दुर्गों को झुका कर उनह कउका पानी निचोड कर बहा दिया।
१० लुदाय (का०)। ११ कद (का०)। १२ अपमान (का०)। १३ छरो
(का०)। १४ ग्रति (का०)। १५ करै (का०)। १६ जड (का०)। १७
करि (का०)। १८ कहि (का०) १९ पार (स०)। २० धरि (का०)।
२१ हो (का०)। २२ तार (स०)। २३ वह (का०)। २४ फार (स०)।
२५ गढाई (का०)।

* ये चौपाइयाँ ग्रौर दोहा श्री मुनि कांतिसागर जी की प्रति में नही है।

साज काज जब करै चढाई। महि मडल[1] हय[2] मय होइ जाई ॥
चलहिं[3] गयद ठाठ चहु ओरा। मेघन अनौ[4] कीन्ह मनु[5] जोरा ॥
अनगिन सैन न वार न पारू। महि पहु[6] सहि[7] न जाइ सो भारू ॥
काँपै धरनि मेरु थम जाई। कमठहि आन बनै कठिनाई ॥
वासुकि डुलै[8] होइ कलमला। परै पताल लोक खलवलो ॥
परवत चूर चूर होइ जाही। असल मराल होइ धूर उडाहीं[9] ॥
इद्र लोक पहुचै सो धूरी। अधकार उपजै तिहि[10] पूरी ॥
सूरज प्रकास न देइ देखाई। बासर अछत रैन होइ जाई ॥
बन[11]पड टूटि खेह मिलि जाही। सरवर सागर सलिल[12] सुखाही ॥

दोहा— अगलै ऊज्जल जल पिवै[13], पिछलै खदर[14] छानि[15]।
ता[16] पिछलि चोवा सनै, तब पावहि[17] ते पानि ॥१४॥

न्याउ नीत जो पुरानन गाई[1]। सो भ्रिममोपति कै देखराई[2] ॥
गऊ सिंघ एक घाट पियाए[3]। राव रक सर कै[4] देखराए[5] ॥
रहा न जग अभीन[6] कर[7] चीन्हा। यव सौं बैर प्रजा[8] सुख लीन्हा ॥
नीर खीर सो होइ निरारा। वडं नियाइ[9] बार[10] कै सारा[11] ॥
पुत्र[12] अवीत करै जो काऊ। मोल[13] न राखै करै नियाऊ ॥
देस देस कै पतियाँ आवैं[14]। सो नोवे[15] नित बाचि सुनावैं[16] ॥
सुना[17] अनानि कीन्ह जो काहू। वाँधि मगावै ताहु[18] सिपाहू[19] ।
वुद्ध बार वह यह ठहराई। बैठै[20] साह भार[21] होइ न्याई[22] ।
जिन्ह[23] जाको जैसो दुखहोई। बिनवै जाइ न बरजै कोई ॥

दोहा—ज्यों तन कै सुधि जिउ धरै, त्यों जग कै सुधि ताहि।
चाटी दुखी जो[24] पाव[25] नर, सोउ[26] सुनै मो[27] साहि ॥१५॥

दोहा १४—१. मदिल (ग०)। २ है मई (का०)। ३ चलहु (ग०)। ४ उनै (ग०)। ५. जनु (का०)। ६ पहि (का०)। ७ सह (ग०)। ८ दवै (ग०)। ६. मिलाहीं (ग०)। १० तिहु (ग०)। ११ बगदु (ग०)। १२ गलल (ग०)। १३. पियन्हु (ग०)। १४. खदर (ग०)। १५ रिछान (ग०)। १६. पिछने जब चोरा सुनै (का०)। १७ पावै (का०)।

दोहा १५—१. गाए (ग०)। २ देखराए (ग०)। ३ सिराई (का०)। ४. कर (का०)। ५. दिखराई (का०)। ६. अनात (का०)। ७ करि (का०)। ८ परजा (का०)। ६. ताहि (का०)। १० दारि (का०)। ११ सारा (का०)। १२. पुतर (ग०)। १३. चाह राखन (का०)। १४. आवहु (ग०)। १५. नेगी (का०)। १६. सुनावहु (ग०)। १७ सुनत (का०)। १८ ताहि (का०)। १६. पपाहूं (का०)। २०. बैठि (का०)। २१ सब (का०)। २२. निराई (का०)। २३. जिहि (का०)। २४ जु (का०)। २५. पाइ (ग०)। २६. सोउ (ग०)। २७. सिर (का०)।

धरमराज परजा सुख पावा। देस देस सब सुबस बसावा ॥
सुख सों करैं किसान किसानी। बोइ सो बाट देइ रजधानी ॥
राज अन सो बाढ[1] न लीजै। परजहि[2] आध बचै सो[3] कीजै ॥
परजा घर आनंद बधाई। भूखा एक[4] न सबै अघाई ॥
अपने भाग दुखी जो काई। ताकै मुखि मभार पुनि होई ॥
बरख[5] बीज अस[6] मन तिन्ह[7] दीजै। जब ताकै उपजै तब लीजै ॥
निरभै बनिज करैं व्योपारी। लासन साज रहै मग डारी ॥
चोर जगत मह दिष्टि न आए। जिन चोरी सब चोर चोराए ॥
राज नीति सब कह सुख दाई। जग सुख सो उद्यम[8] करि[9] खाई ॥

दोहा—देखि जगत सबही[10] सुखी, सुखहू पायो सुक्ख।
दुख अति[11] सुख सो[12] दुखी छोड, समुद पार[13] गयो दुक्ख ॥१६॥

दाता बहियात एकै साईं। ता सरवर[1] कहि और न कोई ॥
एक बार तिहि[2] सा जिन मागा। पुनि[3] भर[4] जनम न काहू लागा ॥
जे मगत टूकन[5] कौं मागा। तिन धन भरहि[6] रतन कै मागा ॥*
जे[7] मगत धन घर[8] घर डोलैं। सो दर पग न[9] धरै बिन डोलै ॥
जे मगत चोरन्ह कै जोरा[10]। तिन्ह[11] कै काक चोर कै जोरा ॥
जे[12] मगत[13] चैने[14]* कर चूनू। ताहि सा मुक्त[15] बिनी[16] कर चूनू ॥
लीन्ह[17] जो सदाबरत कै दाना। दीन्ह[18] अब[19] सदाबरत कर दाना ॥
असेष[20] मान दान जग कीन्हा। मगत जन दाता सब कीन्हा ॥
जिन दानन[21] हातिम जग जाना। दीन्ह साह मगन[22] ते दाना ॥

दोहा साहजहा दातार उर, धरै पतार दुराइ।
दधि मुकता तऊ[23] ना बचै देइ[24] नडाइ लुटाइ ॥१७॥

दोहा १६—१. हन (स०)। २ परजन (स०)। ३ रयो (का०)। ४. एको (स०)। ५. बरद (स०)। ६ भूख (का०)। ७ तिहि (का०)। ८. उद्दम (स०)। ९. कर (स०)। १० सब सुख (का०)। ११ तातें (का०)। १२ दुख दुखी (का०)। १३. दिखन सका तिहि दुख (का०)।

दोहा १७—१. सर बड (स०)। २ सर (स०)। ३. तिन (का०)। ४. फिर (का०)। ५ लोकन (का०)। ६ फिरहि रतनग (स०)। ७ फिरि आतनि लगि (का०) जा (स०)। ८. दर दर (का०)। ९ हरे (का)०। १०. चोरा (का०)। ११. तिहि (का०)।
१२. जिन्हन (स०)। १३. मिलत (स०)। १४. चूनी (का०)। १५. मुक्ति (का०)। १६. चूना (का०)। १७ लेहि (का०)। १८. देहि (का०)। १९ जु (का०)। २०. अब तक (स०)। २१. दानन (का०)। २२ मगत (का०)। २३. नै सचै तो (का०)। २४. दिए (का०)।
* जो मगते टुकडा मागते थे उनकी स्त्रियाँ रत्नो से माग भरने लगी।

अब गुर देव केर गुन गाऊं। रग बिहारी[1] जिन धर नाऊ ॥
सो बरनौं मा कथा उज्यारी। जग[2] जानइ ज्यों रग बिहारी ॥
आदि नगर लहोर जिन्ह[3] नाऊ। जनम भूमि उन्हकैं[4] तिन्हि[5] ठाऊ ॥
छत्री[6] ववर जात यहाई। भय्या चारहु[7] भले देखाई ॥
पहले कहियत नाव बहोरा[8]। बसन बहोरैं[9] नाव बहोरा[10] ॥
थोरी वैस बहुत मति धरै। सिद्ध साधु कै सेवा करै ॥
दयावत[11] दुखी पर दुखी। देखि न सकै प्रतीपिहि[12] भूखी ॥
धरमी धरम पथ पग धारैं। कथा वारता सुनैं[13] बिचारैं ॥
रहैं पवित्र भजन सो कामू। सुमिरन करैं सदा हरिनामू।
साधु सिद्ध[14] सगत करैं, साधुन सों ब्योहार।
सुन[15] न सकहि समुझा चहैं, आतम रूप विचार ॥१८॥

नित प्रति प्रात उठैं जस[1] भानू। जाइ सलित[2] (सरित) जल करहिं[3] सनानू ॥
बालक तहा सखी पुनि खेलैं। लिपटैं[4] भिडैं[5] दड मिलि पेलैं ॥
तिन्ह[6] कौतुक छिन मन बहरावहि[7]। नित प्रति तहँ देवल जो[8] आवहिं[9] ॥
देवल पाइ बालक सुख पावैं। अधिको कौतुक कर दिखरावैं ॥
एक दिन देखत हुतै तमासा। सिद्ध एक आवा उन[10] पासा ॥
अद्भुत भेख धरै अविगती[11]। सूफी[12] औ न सेवडा जती ॥
सन्यासी पुनि कहा न जाई। ब्रह्मचर्य[13] गति जाइ न पाई ॥
जगम कहा न जाइ न जोगी। खट दरसन सो[14] भेख वियोगी ॥
माथे[15] तिलक हाथ जपमाला। सीगी गरे[16] बाघ[17] मृगछाला ॥
मन कै सुरति पीउ सो लागी। भ्रम मिटि गयो सका सब भागी ॥
दोहा— पलक न लागै आखिन[18], माखी निकट न जाइ।
औ[20] न अग परिछाहीऊ, अधर भूमि[21] सों पाइ ॥१९॥

दोहा १८—१. रगभारी (स०)। २ जानैं (का०)। ३ जिह्नि (का०)। ४. तिनकी (का०)। ५. निन्ह (का०। ६ छतरी (स०)। ७. चारि पुनि (का०)। ८. बिहारा (का०)। ९ बिहोरैं (का०)। १०. बिहोरा (का०)। ११. सभा की प्रति में यह अश त्रुटित है। १२ आतमा (का०)। १३. सोहं (स०)। १४. साधु (स०)। १५. सुनहि शिष्य शिष्टाचर हैं (का०)।

दोहा १९—१. जब (स०)। २. सलिल (का०)। ३. करैंहि (का०)। ४. लिपटह (स०)। ५ फिरह (स०)। ६. तिहि (का०)। ७. भरमावह (स०)। ८. कांति सागर जी की प्रति में वह शब्द नहीं है। ९. जू आवहि (स०)। १० सन्यासा (स०)। ११. अवगती (का०)। १२. सोपहि और न सेव राजतं (स०)। १३ ब्रह्मचरच (स०)। १४ सुन (स०)। १५. माथन (स०)। १६. करैं (स०)। १७. बाधें (स०)। १८. आख न (स०)। १९. माखें (स०)। २०. औ न अग पउ छाहो (का०)। २१. मुई (स०)।

* चैना = एक प्रकार का निकृष्ट धान्य।

इन वह पुरख दिष्टि मह[1] आगा। देखत सिद्ध पुरख पहचाना॥
सिद्ध पुरुख इन्ह तन पुनि पेखा। भई परस्पर देखी देखा॥
तब इन[2] देवल[3] गोद सों[4] काढी[5]। हिय[6] मैं पीत दरसन तें बाढी॥
हस कै पुरुख हाथ गह[7] लीन्ही[8]। लै रचक अपनै मुख दीनी[9]॥
करजो रहे[10] इनके मुख डारे[11]। डारत बुद्धि विचार उघारे॥
कै चेला चल भय[11] गुरु आगे। ए गुरु के पीछे[12] उठ[13] लागे॥
एक[14] वचन पूछा तिहि ठाऊ। कहौ[15] गुरु तुम आपन नाऊ॥
कहा अचित नाम सुन मोरा। रग बिहारी राखौं तोरा॥
कहि[16] सुबचन[17] पुनि दिष्टि न आवा। पुरुख जहा कर तहा समावा॥
दोहा— उनही[18] घरी[19] कृपा भई, दया कीन्ह[20] गुरु देव।
आतम[21] रूप लखा प्रगट[22] रहा न अंतर भेव॥२०॥

दोहा— २०. १ मैं (का०)। २. उन (का०)। ३. द्योल (स०)। ४. तें (का०)। ५. काढे (का०)। ६. ते ताके सनमुख भये ठाढे (का०)। ७. फल (का०)। ८. लीन्हें (का०)। ६. दीन्हे (का०)। १०. रहि (स०)। ११. डारी (स०)। १२. विरह कुवार ओजारी (स०)। १३. भागु (का०)। १४. पाछे (का०)। १५. उठि (का०)। १६. बूझौं बचन जो अज्ञा पावो (स०)। १७ कही कहौ (स०)। १८. कहसि (स०)। १६. बचन (स०)। २०. वही (का०)। २१. घडी (का०)। २२. करी (का०)। २३. उत्तम (स०)। २४. प्रघट (स०)।

सिद्धान्त-माधुरी

[श्री रूपरसिक जी कृत]

सिद्धान्त माधुरी

जैं जैं श्री हरि प्रिया देवि दंपति की दासी ।
इछा शक्ति स्वरूप महल की टहल उपासी ।।
रहे प्रसन्न मुख किये लिये रुख हिये उलासी ।
दुरि देखत सखि जहा तहा की करत खवासी ।।

यहां कोउ प्रश्न करै कि सखी दुरि देखें अरु श्री हरि प्रियाजू तहां की खवासी करत हैं तो राहू तो एक सखी हैं इनकों निरंतर सुख को प्राप्ति कैसें संभवे तो तहां कहियें कि हरि प्रीयाजू हैं सु जुगलजू की इछा शक्ति निज दासी स्वरूप धारण कीनों है इनि बिना विहार बनत नांही। काहे तैं जो इछा होइ तौ विहार होय या तें इनि को स्वरूप मुख्य जानियें। श्रौरू सखी जु है सु श्री रंगदेव्यादिक प्राधान्य जू ये स्वरी हैं । पैं एहू सब श्री निज दासी जू को स्वरूप हीं। आपु ही अष्टधाविग्रह धर्यो है। यातें उनमें इनिमें भेद नाहीं। जैसे श्री प्रीयाजू प्रीतम प्रीतम श्री प्रियाजू या प्रकारि जानियें। अन्यथा नाहीं । श्रौरू कोऊ कहै कि अष्ट सखिन में मुख्य श्री ललिता जू सुनियतु हैं । अरु तुम श्री रंगदेवी मुख्य कही तौ तहा कहिय कि अपने इष्ट माहित्मत्व तत्तोपदेश कारिनी कृपा इनिहीं कौं हैं। यातें मुख्य कही अन्यो अन्य स्नेह पूर्वक अति प्रसन्न जुगल जू कौं सेवति हैं तत्व एक ही हैं। सेवा निमित्त अनेक रूप आभासतु हैं। भेदन करनों। ए प्यारी प्यारेजू की प्यारी सखी है। जब दोऊ प्रीतम परम प्रकास मय मोहन मदिर में अलबेले अति स्नेह सौं सुरत जुद्ध करत हैं तब वा समें न्यारारस है अति सुख अमृत पांन करिबे के लियें निरीक्षण करत हैं। अरु श्री हरि प्रियाजू भीतरि यातें रहति हैं कि वहा सुरत जुद्ध है। जो दोऊनमें कोऊ एक विवस होय तौ संभराइवेकों चाहियें। अरु वे श्री रंग देव्यादिक सखी जु हैं सु उनि पर मरमनीय परम अद्भुत लाल पीत स्याम सेत मनिनि करि जटित मुक्तानिकी जालिनि के रंध्रनिमग लगि वा पूर्ण प्रेम रग भरी माधुरी कौं अवलोकनि करि परस्पर निज भाग सराहति हैं अरू कहत हैं कि धन्य धन्य भाग है सजनी रसिक रसीलेजू को रहसि निहारैं दिन रजनी। तातें यह सुख जु है सु इनिके आश्रय विना अति दुर्लभ हैं । सुल्लंभ जाही कौं हैं कि जापर श्री निजदासा जू निज करि कृपा करै। यातैं प्रथम इनको आश्रय लेय जब इनकी कृपा होय तब सखी रूप कौं प्रापति है करि श्री मन्निज वृंदावन में नित्य विहार को सेवन करै। अरू निरंतर रूप माधुरी कौ पान करै। कैसो हैं श्री मन्निज वृंदावन जाकी दिव्य कंचन मय भूमि हैं । अनेक भांतिनि की मनिनि करि जटित हैं अति चिचित्रता सौं। वृक्षन की सोभा पैंठ नीलमनि मय हैं। तौ साखा हरित मनि मय हैं पत्र पीतमनि मय हैं तो फल अरूनमनि मय हैं। फूल अति सुकग सुपष्ट सौरभ मधुर वमत द्रुम एसे हैं। जितके पत्र फल फूलसखा मूल सर्वत्र नानारंग आभासतु हैं। परम मनोहर रम्य कोटि कोटि सूर्यनि को प्रकासुहैं। लता हैं अति रसीली ते ललित तरुनि सौं लपटाइ रही हैं व भतकलता ऊरधगामिनी हैं। व झलक लता भूमि कौं प्रसरित हैं श्री जमनाजू फकना कर अति सिंगार रस मय पर करि पूर बहत हैं। नाना रंग तरंगनिकरि छवि छलकति है। अरून नील स्वेत

कमल कुल जहा तहा प्रफुलित हैं। तिन पर मधुर मधुलुब्ध गुंजार करत हैं। अनेक स्वरनि सौं सार सहस चक्रवाक कारज कोकिला कोक कीर चकोर चात्रिक मोर इत्यादिक नाना पक्षी जुगलजू के नाम रटतु हैं स्वतंत्र। अरु उभय तट हैं सु रत्न बद्ध हैं। तिन पर वृक्षन की डारें झुकि झुकि फल फूलनि के भार जल कौं परसि रही हैं। अति सोभायमान हैं। तहा की सोभा देषि दंपति जू आप लोभायमान ह्वै रहे हैं। अरु इक छिनु न्यारे नहि ह्वै सकति हैं। ऐसौ जो निज धाम ताके मध्य नव नित्य स्थल अनेक दल कमलाकार तिनमें निज पर्वति अष्टदल हैं। तिन पर अष्ट प्रिय सखीनिकी कुंज हैं जिनके नाम रंग रसद नव नवल सुख सुखद मंजु मंजुल। इन विषैं समस्त सेवा की सामगिरी रहत हैं। जिहि जिहि समें सो सो सहज ही प्रवर्ति हैं। अति कमनीय कर्णिका तेजोमय ताके ऊपर चारि सरोवर हैं मान सरोवर मधुर सरोवर, स्वरूप सरोवर, रूप सरोवर। च्यारयौं ही भौरनि जिनकी रचना अपार है। अनेक नगनि करि घाट निर्मित हैं। सुंदर सिढीनकी प्रभा को प्रकासु है तिन सरोवरनि के मध्य भाग एक अष्ट द्वार को महल है। द्वार द्वार प्रति तोरन ध्वजा पताकादि अलकृत है। विशाल मुक्तानिको वदनमाला कुंदन कपाटनि कुंभनिके निकरन करि जटित जगमगाति हैं। जोति जाकी एक छविलेसपर कोटि कोटि दुति वरचि के प्रकास कीन हैं। स्फटिक मनिमय भीत अति स्वच्छ है। जामें श्री मन्निज वृंदावन को प्रतिबिंब गैर गैर अनेक ह्वै प्राभासत हैं। अद्भुत अनेक रंग चित्रनिकरि चिनित हैं। चारू चारू चूनी चहूं ओर चमकति हैं। खिरकिनि की गोखनि झरोखनि की जारिनि की अटनि अटारिनि की दुति दमकति है। छाजनि की छाजनि विराजनि विविध विधि साजनि निरखि सोभा झूमि झमकति हैं। चमकति खरी खिलिसमय ताप ननि कीर' मवतिराजो रवि छविवि छमकति हैं। ता महल के भीतर चौक बीच रत्न मडल पर कल्प वृक्ष नीचें मोहन मदिर है। गरस मनि मृदुल मनि कचन मनि सूर्य काति चद्र काति हेम काति मनि काति पद्मराग पुष्पराग इत्यादि दिव्य अद्भुत मनिन करि विचित्रता सौं रचित है। ताके मध्य मृदुल सेज पर स्याम की सुरत विहार है। यहां और काहू को प्रवेश नाहो। बिना एक श्री हरि प्रियाजू की कं ए इछा शक्ति निज दासी स्वरूप है या तें अरु इनिको जो भेदाभेद को अभिप्राय है सो तो पहिलें लिख्यो ही है। ऊं तेसैं समुझिनो। मोहन मदिर के अग्रभाग आंगन मे मोहन मडल ताके ऊपरि अनोपम अष्टकौन को एक सुख सिंहासन है। तहा जुगलजू विराजत हैं। कौन कौन प्रत्येक एक प्रिय सखी निज निज गननि जुत अनेक भावनि सो सेवा करत हैं। प्रिय सखीन के नाम। श्री रगदेवी, सुदेवी, ललिता, बिसाखा, चम्पलता, चित्रा, तुगविद्या, इन्दुलेखा, इनिकों प्रिय सखी जानियें। काहू काहू मतातर विषैं इनके औरहू नाम सुनियतु हैं। यदि यामें कछू सदेह न गिनियें। जैसें श्री प्रिया प्रीतमजू के अनेक नाम हैं। निज मडल के अंगी तैसें हू सखिन के ऐसहि यह जु स्वमतानुसार लिखे हैं। निश्चित यहीं महत्माचार्य प्रवर पत्र चारु चूडा मनी जू कौ हृद है सो तो यह बिना कृपा अगम्य है। यदि याको सहज ही उपाव है। श्री गुरु चरन अरु श्री गुरू हैं सो साक्षात भागवत रूप हैं। तहा प्रमान श्लोक लिखें।

श्लोक—प्राचार्यो विष्णुरूपोऽहि पुराणेष्वपि निश्चय,
निधानु ब्रह्मादिर्भे यौ कृष्णेन यथानघा।

जिनको निग्रह अनुग्रह श्रीकृष्ण कैं समान हैं परन्तु इतनौं अधिक हैं सो भगवान रूठें तो श्री गुरु सहाय करें पै श्री गुरू रूठें भगवान पैं सहाइन होय सकैं। तातें सर्व भाति करि श्री गुरू को प्रसन्न राखें। तथा ही।

श्लोक—हरौ रुष्टे गुरू स्त्राता गुरौ रूष्टेन कश्चन।
तस्मात्सर्वं प्रयत्नेन प्रसाद्य सर्वं देहिना।

अरू श्री गुरू विखें मानुषी बुद्धिन करें। तथा ही

श्लोक—आचार्य मानुषी बुद्धिर्नकर्तव्याक दाचन।
अस्मामि श्रेयइच्छद्भिर्यत स्यानहि श्रेयसा।

दीक्षा मंगले।

समझै गुरूहि न मानवी है। गुरू श्री हरिदेव।।
मनसा वाचा कर्मना करें कपट तजि सेव।
हरि रूठें राखे जु गुरू गुरू रूठें नहि कोय।।
तातें सोई विधि करें ज्यौं गुरू राजी होय।

अरू श्री गुरू हैं सो ज्ञान मजन की सलाका करि नेत्रन के प्रकासकारी हैं। अज्ञान तिमिर करि अंध भये हैं। तिनकौं पुराणांतरे।

श्लोक—अज्ञान तिमिरांधस्य ज्ञानांना जन सिलाकया
चक्षु रून्मीलित येनतस्मै श्री गुरूवे नम

जैसे जु श्री गुरू हैं तिनकौं नमस्कार है। जिनके चरणाश्रय तें सर्व सु मिलें। अरू जो कोऊ भगवान की प्राप्ति चाहै सो श्री गुरू कौ आश्रय लेंय। वेद हू कहत हैं कि बिना गुरू भगवान की प्राप्ति नाही। पंच संस्कार के दाता हैं। श्री गुरू तिन समान प्रत्युपकार कारने कौं द्वितीयोनास्तिलुस्तवे।

श्लोक—पंच संस्कार दायीच महो धर्तांभवार्णवात्।
तेषा प्रत्युपकाराहो न कोपि जगती तले। दिक्षामंगले।
छाप तिलक अरू नाम पुनि माला मंत्र जु पाव।
संसकार जब गुरू करें तबही हरि जन साच।।

तातें प्रथम जब गुरू को आश्रय मिलें कृपा करि जब श्री गुरू नवधा भक्ति दिठावें। करत करत परिपक्व भयो जानें। तब प्रसन्न ह्वै हृदय गत वस्तु उपदेसें। अरू निज रूप की प्राप्ति करें। नित्य लीला दरसावें। सो नित्य लीला ब्रह्मादिकनि कौं अलभ्य है। तो तुम कैसें जानी तो यहा यह उत्तर कि ब्रह्मादिक हैं सो वैकुंठनाथ के अधिकारी हैं सो अपने अधिकार में मग्न हैं। जिनके जानिवे कौ यह रस नाहीं। रसमारग भिन्न हैं। यह तो मुक्तिनि हू कौं अलभ्य हैं तो कर्म ज्ञानिन कौं कहा याकौं तो कृपा चाहियें कृपा होय। जब प्रेम होय तब यह रस पावें। तहा महावाक्य प्रमान हैं कर्म ज्ञान को नेकहू नाही जहाँ ससर्ग प्रेम विना पहुचे नहीं। पावौं ही अपवर्ग। तातें प्रेम ही मुख्य हैं। सर्वथा जो कोऊ

चाहै कि विना प्रेम ही प्राप्ति हैं तो कदाचित नाहीं क्यों के ग्रन्य दुर्लभ प्रेम मुल्लनाम है विरद विदत हैं सो कृपा साध्य हैं ग्ररु कोऊ कहृ कि कृपा कौंन को श्री हरि प्रयाजू की कि प्रिया हरिजू कौ तो यहा यह उत्तर जो कृपा न्यारी नाहीं कृपा एक ही है। इनिकी जो उनकि जो इनिकी इछा कहा भिन्न हैं। यह तो भावना के भेद हैं। ग्ररु वस्तु एक है। परन्तु इनिमें गुरुत्व हैं। तातें कृपा इनहीं कौ। जाकरि प्रेम रूपो सुख मिलै। सो सुख कैसो है। ग्रनदमय दिव्धारूप ग्रलिबेलो है। ग्रलबलडैलो है रसीलो रंग रगीलो है छबीलो है।

यह सिद्धात जु माधुरी कही बुद्धि ग्रनुसार।
रूप रसिक जन जो कहैं लहैं सोई सुख सार।।

विरह-शतं

[सोलहवीं शताब्दि का एक अप्रकाशित हिन्दी ग्रन्थ]

सम्पादक--अगरचन्द नाहटा

सोलहवीं शताब्दि का एक अप्रकाशित हिन्दी ग्रन्थ—विरह-शतं

[अगरचन्द नाहटा]

सोलहवी शताब्दि के पहले का हिन्दी साहित्य बहुत ही कम जानकारी में आया है। बडे बडे ग्रन्थ कम मिलते हैं और छोटी छोटी रचनाओ की ओर अभी ध्यान ही नही गया है। गुजराती राजस्थानी साहित्य के १३वी शताब्दि से १६वी तक को अनेक फुटकर रचनाओ के सग्रह निकल चुके हैं, जिनसे उन भाषाओ के क्रमिक विकास, रचनाओं के प्रकार व परपरा आदि पर बहुत ही सुदर प्रकाश पडता है। पर हिंदी की प्राचीन रचनाओ के सग्रह का अभी तक कोई प्रयत्न नहो किया गया। इसीलिये इनी-गिनी रचनाओ के अतिरिक्त हमें १३वीं शती से १५वी शती तक की रचनाओ के सबध में बहुत ही सीमित जानकारी है। अब इस कमी को पूरा करना अति शीघ्र आवश्यक है।

जब तक प्राचीन हिंदी रचनाओ के सग्रह ग्रथ प्रकाशित न हो, हमारी शोध-पत्रिकाओ में छोटी छोटी प्राचीन रचनाओ के प्रकाशित होने का प्रबध होना चाहिये। इसलिये हिंदी अनुशीलन में जिस प्रकार ग्रन्थानुसधान चालू किया गया है उसी प्रकार अन्य त्रैमासिक शोधपत्रिकाओ में कुछ पृष्ठ इसके लिये अवश्य रहने चाहिये। यह सुझाव देने पर डा० सत्येन्द्र जी ने भारतीय साहित्य एव आगरा विश्वविद्यालय के वार्षिक अक में प्राचीन ग्रथ प्रकाशन के लिये एक स्तम्भ नियमित रूप से प्रारम्भ करना स्वीकार किया है। और उसके लिये नियमित सामग्री देते रहने का मैं वचन दे चुका हूँ।

प्रारंभिक रचना के तौर पर साधन कवि रचित मैना-सत को देने का विचार था। पर उसकी दो प्रतियाँ मेरे पास हैं। दो अनूप सस्कृत लाइब्रेरी, एक 'जोधपुर पुस्तक प्रकाश' में प्राप्त हैं। इस अक में सोलहवी शती के लगभग का विरह शत प्रकाशित किया जा रहा है। हमारे सग्रह में १७वी शताब्दि की लिखी हुई तीन पत्रो की एक प्रति है जिसमें इस विरह शत के साथ दूसरा एक शत भी लिखा हुआ है। उसका नाम नही लिखा होने से उसके विषय को देखते हुए प्रेम शत नाम देकर मैंने इन दोनो रचनाओ का आद्यान्त विवरण राजस्थान विश्वविद्यापीठ उदयपुर से प्रकाशित राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रथो की खोज के चौथे भाग में दिया था। अभी जयपुर के दिगम्बर तेरह पथी भडार में इन दोनो रचनाओ की एक और प्रति मिल गई है। उन दोनों का मूल आधार एक ही प्रति है। इसमें दूसरे शतक का नाम आर्डर में शृगार सतक भाषा लिखा है, जिसे मैंने प्रेमशत सज्ञा दी थी। यह दूसरी प्रति चार पत्रो की है। इनके अत में हर्ष कीर्ति का उल्लेख है। जिनका समय १७वी शती का पूर्वार्द्ध है। पीछे की पक्ति में भिन्नाक्षरी में स० १७२२ चैत्रवदी १ लिखा हुआ है और इसके पहले और पीछे की एक एक पक्ति पर काली स्याही फेर दी गई है। दोनों प्रतियाँ १७वीं शताब्दि की हैं। मूलाधार उससे पहले १६वी शताब्दि का होना सभव है। शृगार शतक फिर कभी दिया जायगा।

विरह-शतं

जो उच्चरिय सु नाम तुम्र । ग्रस बुझिये जु ग्ररत्थ ।
सोइ करता ग्रक्षर सरिस । भंजन गढन समत्थ ।। १।।
सम कहुं कहू न ही कहां हहि । रे पवित्र कहि मोहि ।
माया मुद्रित नयन मम । क्युं करि देखुं तोहि ।। २।।
इन नयनन देखु' नही । इह विधि ढूं'ढयो जग्ग ।
सोइ उपदेसो ज्ञान महि । जिहि पावो तु' ग्रमंग्ग ।। ३।।
विरह उपावन विरह मैं । विरह हरन सावंत ।
विरह तेज तन नहिं सकत । व्याकुल महि जावंत ।। ४।।
विरह पुव्व प्रभु कुं भयौ । सब रचि राषिउ मूल ।
नैन बुझति नहि ग्राप महि । तां लगि रच्यो रसूल ।। ५।।
प्रथम कही विधि ग्राप मुखि । हिंदू तुरक मझारि ।
हो जि कहति इह रसन लग । पावन करति विचारि ।। ६।।
तू ग्रनाम न गुन न चिह्न प्रभु । जनम एक परि लेइ ।
घोर ग्रगनि परसैं नही । ग्रति परम पद देइ ।। ७।।
देहि प्रदक्षन रयन दिनि । नखत न पास मजाहि ।
सोई ग्रालम राज न कु तब । महि भेटे प्रभु साहि ।। ८।।
कही जु दारुण दुख दहे । तुहि पेमु कि किह तीर ।
विरह व्यथा प्रान न हरइ । सो परम पीर हर पीर ।। ९।।
वन तिन वडवानल भुपहि । जिम मल परसत नीर ।
हरे पाप दुख राम जहि । सुपि जिय राजन पीर ।।१०।।
प्रीति रची ग्रति सुक्ख लगि । दुख चरिउ मम हत्थि ।
मन मति सच लोयन श्रवन । पंच चले तुम्र सत्थि ।।११।।
पग ग्रागै मन पछिमइ । हीयइ मझि विपरीत ।
मीत पयानौ धजा सम । नयना जल मुख पीत ।।१२।।
हियइ रुंध(ति) विरसना थकित । लोचन जल भरि लीन ।
ऐसो त दुज्जन पुनि करहु । जो इन तिहूं न कीन ।।१३।।
जे दिढु बंनहु तेज पिय । ते चल्ले सग सुज्झि ।
निठुर विपछिज मोहि तन । रह्यौ लजावन मुज्झि ।।१४।।
को बोलइ भाकम मरहि । कोइ गहै तुम्र पाइ ।
गम तजु ग्रज[1] भव उप्पजिउ । हुं गही सु[2] साथिग माइ ।।१५।।
वासर विरह निमत्त कुं । विन संगम मम छांह ।
स्याम रमन नहि सहि सरन । सु हुं विमुक्कति ताह ।।१६।।

---

१. मधमुष, २. जु सातिग ।

विरह व्यथा अति कठिन तन । सुर नर सकहि भाखि ।
मदिर पव्वइ कूप वन । सुन बोलति मम साखि ॥१७॥

रयना[3] परि रचि पेम की । होसी करम सयोग ।
कौन पदारथ करि चरइ । मिलनै कौ है वियोग ॥१८॥

विधि वत्त दीन्ही प्रेम धन । विरह सग दियो काइ ।
खिनि हि जियावत पिन दहति । पल पल रक्ख न थाइ ॥१९॥

हीयै हुतासन झर वरै । छटाथि मुक्कति सास ।
विरह[4] जा रवि ते भस्म करि । विहुर न ग्रक असाम ॥२०॥

लिखत भूत भविकसत[5] । पल मञ्झहि प्रभु साहि ।
दुख अक ज मोटि न सकत । को[6] लेखक तू ग्राहि ॥२१॥

पेम सरोवर माहि परि । जिन्ह तक्किउ तरि तीर ।
निकसि मीन सिर घुनिउ । तव पायो सच नीर ॥२२॥

रे जिय परिहइ पेम दहि । विलसि अनेक तरग ।
आउ समप्पति मुख कोवन[7] । नयन मीन कै सग ॥२३॥

विरह तेज कहु जगत नहि । मुहि तन चुक्को ग्राहि ।
विहुरन ताता सग विन । यो दुख दीन्हौ जाहि ॥२४॥

साहि कठिन अति विरह झर । परसो जिन्ह सरीर ।
तिह चिय मुज्झ सहिम सरिस । सहि त सकी पिय पीर ॥२५॥

नयन तपत तन मैं नभो । मइ नहि जान्यो तव्व ।
वा निरमोही मिलन दिन । सो हू पुछु कव्व ॥२६॥

नेह मैन विरहा अनिल । ते मिल उठी जु जोति ।
मन पतग मज्झिह परत । जानति नहि कहा होत ॥२७॥

रे मन पेम पतग तू । रूप ज्योति रूप लेत ।
रतन दीप मुख जग मगति । उह अगनि जिउ देत ॥२८॥

मन पतग[8] उत्तिम करत । विरह ज्योति झलतेतु ।
जरइ तौ पावइ परम पद । बचै त लाभै हेतु ॥२९॥

पेम वैद औपध गुनिव । पूछयो जह वह धाइ ।
विरह मत्र चलि लेउ तह । पीर विषम जिह जाइ ॥३०॥

हु जइ सो पिय पेम ग्रहि । ते जु दए वद तव्व ।
जहा कहा को गारुर मिलइ । तौ विष हरइ सरव्व ॥३१॥

पनग विरह डस्यो जु मा । लग च गारुर मोहि ।
पिय रवि उदइ कठिन लहरि । नहि जगहि विन तोहि ॥३२॥

३. रयनायर, ४ विहि, ५ भविर कसत, ६. का, ७. वस, ८. पतग ।

विरह उसासन जरति रवि । तिय मुक्कति बिननाह।
मनहु सिराख[9] तन तपत । साझ परत दधि माहि ॥३३॥
मदन सचरति साझ[10] हिय । जह लौ तौ सब जाति ।
मोहियँ बसति जु विरह अति । डसति सपूरन राति ॥३४॥
दीपक भुवन न अलि कमल । तरु विहगम तिहु सत ।
मोतन विरहानल बसै । तपत सकल तन मझि ॥३५॥
पुहमी वदति[11] दीपधर । सझि सुख मनसि अनग ।
विरह दीप मो उर बसै । मन फिरि परै पतग ॥३६॥
रयनि जु रमनी विरह की । काम दियइ विच छाइ ।
सो रग रक तन ननि चुवै । सचित रग हुइ जाइ ॥३७॥
नयन कलस भुर त्रिकुटि कुच । कुच शिव मस्तक आहि ।
कोट बूद दिन पति परति । तुग्र दरसन को साहि ॥३८॥
जाम चतुर तुग्र विरह जरि । रजनी भई लि हार।
पुनि जारिवौ जारि दियइ । सुरगि भयौ जिवार ॥३९॥
मो हिया विरइजु वइरि । खिरि खिरि जुरि आवति।
जहम जुठारत पवन मिसि । तह असुवन वरिसत ॥४०॥
इद पटल पर पूर जल । इद वदन वर पत ।
इदी वर पिय तुम्र विरह । इद वधू निरखत ॥४१॥
अबर पूरत घन पटल । पिय बिदेसि निसि स्याम ।
असि दामिनि दव्विन करह । वाम गहइ कच काम ॥४२॥
आथि सरोवर सकल महि । नीर जी नीर पूर ।
मन मरालि मन मानसर । रमै न जद्दिप दूर ॥४३॥
पेम सलिल पिय सुवख जौ । दौ दीन्हो तन लाइ ।
वरि विरह झरि परि जरी । वह सुन जिरत[12] जाइ ॥४४॥
मिलि पिय पिय चातिग रसन । प्रेम तिया दाहति ।
लोचन घन वरसत नित । स्वाति अधिक चाहति ॥४५॥
पावस निसि या पूर तम । छट विजुल छल कीन ।
इ विरहनिवह जलद सग । विहसि महा दुख दीन ॥४६॥
मातौ वता देप मम । तुग्र विजोग जिउ जाम ।
टटि वेनी श्रम धर्म जल । मुख कचन तुग्र नाम ॥४७॥
जोगी गिरि आरत चवन[13] । मिलइ न आश्रम कौन ।
हस पुरी जिह पिय मिलइ । विह[14] मग्गौ लिय गौन ॥४८॥

९. सिरावन, १०. साइ, ११. वदति, १२. सर, १३. वन, १४. तिहु ।

काननि मुद्रा करि चलौ । सीस चरन करि भव्व ।
भसम दयें जौ पिय मिलइ । भसम करं तन सव्व ॥४९॥

कहा राम दूपत नल । ते जानत तीय वियोग ।
हुज दिन्ह विधि तुच्छ तन । इह पीर परम महि योग ॥५०॥

कहू बधव कहू मित्त जन । जो पीर बटावन मोहि ।
विरही कहाति पच जन । जा पहि पूछु तोहि ॥५१॥
रे कहियो को जिम क्वन । को वाल्लिम दिन कौन ।
कोइ जनम ससार को । कौन सुघट दुख कौन ॥५२॥

लैं आयें सुत पवन जिम । चपा सु जीवन मूर ।
मकति रही नहि साह महि । सर लगे तन पूर ॥५३॥
रे मन हसहु[१५] दी जियहु । अत परी नम सग ।
सेद सलिल दरपन दहन । रज पद अचल पग ॥५४॥
भुज आलिगहि हियौ भरि । मुख देखिहि चख रक ।
यु विधि अके जनम पट । इह लिलाट तिउ अक ॥५५॥
जह सु फद सुर नर रचेइ । छोर न जतन वताहि ।
विन फद फदे जु प्रेम फद । ते निरवनि न साहि ॥५६॥
अदभुत पीर परेम की । व्यापि रही जगपूर ।
वहु त स्याने पचि रहे । कहू करि चढी न मूर ॥५७॥
तूअ सनेहि तन अति दहै । जरौ विरह प्रतिवार ।
साह सिरावन नयन जल । उठति अधिक तन मार ॥५८॥

रावन परतिय हेत लगि । दह सिरि दिये कुभाउ ।
उह मारग चंपावती । एकउ देत नकाउ ॥५९॥
जह पल लोचन चारि भै । तव जु दये जिय साठ ।
तन गर पर दौ छार भइ । तौ उन छुट्टी गाठि ॥६०॥

श्रवन धरहि सताप सुनि । रसन गहै जपि मुक्ख ।
ए अमर हिन रस नेन । देखन चाहू हि मुक्ख ॥६१॥
मिलि चलित यान माहि तन । मन पाहुनौ करित्त ।
को आलिग हि को सुनै । को दर्पहि चरित्त ॥६२॥
जो मुहि भावन माइ करत । मन जानिति निसि चिति ।
यहै न जानत आप मन । भावनि करति सुनिति ॥६३॥

विरहग्नि उर छिन जरइ । रमन कहन नहि जाइ ।
जिम दम मस्तक चीय उर । सिनि रिवनि जरै बुझाइ ॥६४॥

---

१५. मम अमहु　१६. निसरति ।

एकोतन का एक जिय । खेह करें विन काम ।
मह जनम जनम कहु एह सजो । जुठ जु न तेरौ नाम ॥६५॥
पग देखत लगि साहि जिउ । नयन रहे पचि हारि ।
जिउ प्रस्थानौ दिन करैं । हु राखित करि मनुहारि ॥६६॥
ताहि न साहि विसरियहु । दया[18] आवारि जीवति ।
हु कुमदनि तुम्ह सरद ससि । कृपा करन पीवति ॥६७॥
कह दिनियर कहा कमलिनी । कह कुमदनी मयक ।
प्रीति तिहु पूर वल्लहा । कह राना वह रक ॥६८॥
विन साहिब सब स्याम निसि । किउ न मोर तिय लेइ ।
विरह व्यथा दुख कहति हु । हुकारौ न विदेइ ॥६९॥
सिसकति जारि भसम्म करि । मा जन लकि मृग अक ।
तिय वधू सुठ सव तें कठिन । सुदून् चरइ कलक ॥७०॥
जौ ससि जुगवें रैंनि किय । पलल गो नहिं नयन ।
तापर कटक किरन किय । पूरि रहति मम सैंन ॥७१॥
जीव जतन करि मिलन कु । मन पठ्यौ तुम्र पासि ।
मन कुच सकट फधियौ । हिय धकधुकी यौ सास ॥७२॥
तैं जु दए दुख नखत सम । पिय गन सैंन सिराहि ।
ए भ्रम राम विराम मुहि । इह विसाल निसि जाहि ॥७३॥
जाइ टक दृग्नि रैंन दिनि । गनत तराइन गैंन ।
डडो भ्रकुटी नयन पल । तुलति समप्राल रैंनि ॥७४॥
को जानैं किहि करवर हि । पकहि परे जु नयन ।
करिवर छर अठेन लए । आवन दए मतैंन ॥७५॥
तुह देखन लगि मोह विधि । नइन करति इक सरिय ।
पछताए कर राम मरति । नख सिख तन पद हत्यि ॥७६॥
दव्व गव्व सोभाग हित । अरधगो पुनि दीन ।
दुक्ख न जानति हे सखी । विछुरति तिन्ह जो कीन्ह ॥७७॥
विछरन सरिसौ दुख नही । मिलन समान न सुक्ख ।
विधि ललाट नेउ अक लिखि । सतति देखौ मुक्ख ॥७८॥
प्रिय मग्गहि जउ कीजियें । जनम अमग्गि न जाइ ।
जिहि मग्गिहि पिय पाइयें । सो मग्ग देखहु भाइ ॥७९॥
लोचन पत्री महि लिखू । कै कादि पथिक कर देउ ।
इहै जुगति जिहि तू मिलें । देखि जनम फल लेउ ॥८०॥

१७. मह, १८. दया, १९. मोर ।

सक सहि करि झंपो नैन । मंति आवइ निसि सोइ ।
सुपनइ देखौ पिय वदन । इहु दरसन पुनि होइ ॥९७॥
दुख असुर हएति संचिरउ । मो तन सव्व सरीर ।
पंच भवानी प्रगट हुअ । संहु संहरि हरि पीय ॥९८॥
तुअ सनेह चंपावती । जन मन छोड़ो काउ ।
सवत इ दुल्लभ प्राण घट । तुअ मग रहौ कि जाउ ॥९९॥
चंपा चंपा जिय जपति । और हि मुक्कवि काम ।
नई सिष्ट ज यो । लेत उठू तुअ नाम ॥१००॥
ज्ञान ध्यान संजमन व्रत । मंत्र यंत्र सभ सून ।
इहु भेखन प्रसन तुअ । को रखौ मम मौन ॥१०१॥
पंच जहा तहं पंच मग । पंच रहति नहि हत्थ ।
मल इक्को वलि इवक कं । इक चलति पिय सत्थ ॥१०२॥
नवमिय विरहो त जुप्पजै[१६] । किहि निमित्त किहि काज ।
मो तन देतन प्रेम वलि । चंप भवानी आज ॥१०३॥
मनसा वाचा करमना । कहौ तदिव्व कर लेउ ।
चंपक माला दरस पर । कोटि जीउ वलि देउ ॥१०४॥
रोही अवरोही जतन । विश्वास जिय जाम ।
इक्क कहै चइक्कपा । प्रति लगाति तुअ नाम ॥१०५॥
किहु जप तप किहु ज्ञान धन । किहु विद्या किहु राज ।
मैं सीव्यौ तु अ नाम निज । तु अ पेमहि स्यु काज ॥१०६॥
वरिस दिउस दिन वरस गय । गैवर साचि जु लाल ।
ए प्रभु अजहु दयाल हुई । कृपा न करहु दवाल ॥१०७॥
जीवन दिन अवृथा सबै । आहि वाय सजि लीन्ह ।
पिय भेटन की येक मल । भुजा अलिंगन दीन्ह ॥१०८॥
प्रीतम भेट्यो इह समैं । सुन्यो अमिय मुख वैण ।
संप्रदाउ पुनि तिह धरी । विहु देखौ इह नैण ॥१०९॥
अंतरि पुट मानिनि धरी । तामहि देखौ पीय ।
वयन रचौ दुख कु दहै । ए विरमावौ जीय ॥११०॥
विद्या रूप न भर्तिहि वत । उ वुधि गहि सरीर ।
जिस घट विरह न संचरइ । क्या जानै पर पीर ॥१११॥
सम चातुरी न बंध न हि । नव रस पियौ न नेह ।
विरस पीर जु न पीरियौ । क्या बुझइ सच एह ॥११२॥

१६. जिप वप ।

लोचन इंद्र हरस पुनि । आयुर वल सत्ताह ।
प्रेम चरित कहि नहि सकत । होहि सबै इक्काह ॥११३॥
कवि विचार धरि जुगति जग । अंसुव दोषनि खोरि ।
कति विशेष कवित्त गुन । भाखा जो काइ होइ ॥११४॥
कवि जन इक्क न भारती । कल्लोलति सविचित्त ।
मोकर देपी आपनी । दोष दुरावइ मित्त ॥११५॥
स्वाति सलिल पिय पेम तुम । भाजन भाव धरंति ।
अहि विषमहि मुत्तिय भगति । कदलि कपूर भरंति ॥११६॥
अहि मुख सुधा कि पाइयइ । सीतत तनु मन सेहि ।
दुजन पाहि मलप्पनउ । सुचि दवानेह का मेह ॥११७॥

सिंगार-सतक भाषा

[शृङ्गार-शतक]

[हिन्दी का एक अप्रकाशित ग्रन्थ]

सम्पादक—अगरचन्द नाहटा

सिंगार सतक भाषा

ओ३म नमो त्रैलोक्य मैं । प्राना कर करतार ।
प्रेम रूप उद्धरन जग । दया सिंधु अवतार ॥१॥
इक्वल रे पति लोक विय । सचेव वहि निसि जगि ।
आडंबर रचि पेम को । रच्यो महम्मद लगि ॥२॥
सिंगार प्रभु सज्जि करि । वेगहि होइ सिंगार ।
मोह न हुई रजहि सकल । रही न बुद्धि विचार ॥३॥
पति सिर ताज सिंगार रस । अष्ट महानंद ग्राहि ।
भाव तरंग समान सब । नव रस रंजन साहि ॥४॥
रस आगम निवास रस । रस लघित तिय बाल ।
तिनही मह सुख उपज्य । रत विरत जंजाल ॥५॥
पेम उदधि तिय निद्दलगि । किय मत्थन मनमत्थ ।
पेम जार संसार पर । विस्तरीयौ नर नत्थ ॥६॥
मथ्यौ ज चौदह रतन लगि । ते तिय तन सब आहि ।
मूरख देवज पित्त जन । उदधि विगारयौ साहि ॥७॥
पुहुवी रतन ज उप्पजिउ । भयौ न सुरनर गोत ।
पटतर देखन तौ वनै । रति अनंग सुत होत ॥८॥
अलिमाला वल्लिन गई । अहि कुल दुरे पतार ।
मृग मद को वरना छुअै । वरन वास तुअ वार ॥९॥
स्याम कुटिल चित्तह डसन[1] । परतपि विषधर ग्राहि ।
मन्न कहूं जो हसि पटत । करह गहत मच साहि ॥१०॥
सुरति श्रम जल उप्पजै । बूंद रहो लट अंत ।
शिव लिलाट पैं तृपति भैं । ग्रहि मुधि अमी चुवंति ॥११॥
पट पटो लट उन्ह है । छुट विज्जुल मुसकंति ।
बूंदन श्रम जल वदन पैं । विपरीत हि बरषंति ॥१२॥
श्रम जल बूंद ज चून भो । मलय वनी फद वारि ।
चित पर सौंच रचत कधिउ । सक्कइव को निरवारि ॥१३॥
पेम अपेटन करन लगि । राग पर त्रिय दिन्ह ।
अलका धरि बावरि रची । मा मन मृगधर लिन्ह ॥१४॥
रच झारत तम विरथरिउ । गयौ सुरवि दधि माहि ।
पति मंजु पक्षति दरस मुख । भई संध्या गत जाहि ॥१५॥
पच बूटें तुम सीस पर । पुहप रहे सोभंत ।
देखि अनंग खिसि गयौ । मानहु तिमिर हसंत ॥१६॥

---

१ रसन ।

श्रम जल बुंद मुख चद परि । हसि जु लेत पिय नाम ।
लोचन मध्य जु भसम करि । सीचि जु आवत वाम ॥३५॥
हारावलि पैन्हौ जतन । सोभित मुतियन फद ।
वदन बीच इम देखियत । ज्यु पावस वैठौ चद ॥३६॥
तिन तो रहु राहु न गहै । तिय घूघट करि टक ।
वदन सुधाकर सरद को । मृग मद आउ कलक ॥३७॥
चपा वरन तुम्र देखिकैं । चपा सतु तर डार ।
कचन समसर होन लगि । दिनहु सहन तन झार ॥३८॥
वदन चपिका चद सम । भूल्यौ भय मति चित्त ।
उह वदीयं जगि दुइज दिनि । इह पति वदइ नित्त ॥३९॥
मन पतग फिरि फिरि परै । चपा रूप तुम्र जोति ।
रतन दीप मुख जग मगै । फूकि मरहि सुठि सौति ॥४०॥
हित परीति सहि जु चपा । मूरति चपा अनग ।
तरु सुहाग तरु ना सकल । कचन चपा सुरग ॥४१॥
कवि पटतर है मयक सम । आनन चपा सु काई ।
निकलक जलि लाट पर । सोठ लग्रत तिय पाई ॥४२॥
खडित अधर जु दरपनहि । निरखि लई तिय सीव ।
मुख कुदन जन जरिय पिय । चूनि रही जिन पीक ॥४३॥
वचन पान कछु कर गहे । बोलति सियल जु वैन ।
मकरद जु लयौ कमल जिम । देखहु सखि ए नैंन ॥४४॥
ग्रहै जुनवरस साखि धरि । अर्द्ध प्रीति रग जाहि ।
मच वदन दुज राज कर । सकल्पौ जिउ साहि ॥४५॥
साहिव सचौ मैंन रचि । शशि के तेजत याज ।
हेम पेम कुदन करति । मूरति भरीग्र चपाजु ॥४६॥
नयन अवटि साचौ कियौ । पचि तरु चिति विधि ग्राहु ।
हिमकर हिम हिम कटित भरि । मूरति चपा जुसाह ॥४७॥
भौर चच रत्तिय कुटिल ।
रास पिमुक्कति नासिका । वर्णत बनत न मूल ॥४८॥
पल सकुचित पल उस्ससति । मधुप पुहप पर होइ ।
मुतिय मुकट जु इक्क पुर । त्रिपुर विराजत सोइ ॥४९॥
कहु फूली सुख तिन्ह रवा । कवहु विराजत नत्य ।
विनह घलकृत सोहिवौ । छवि वर्णे अकथत्य ॥५०॥
कहा वधू विद्रुम कमल । कहा मानिक कहा लाल ।
सुरत घत वहत न वनहि । सोहत अधर गुलाल ॥५१॥
अधर सुरग कुरग भै । नैन कुरग सुरग ।
बरं जु रगति रग तन । रहै न भग सुचग ॥५२॥

नयन जु आए रवन हुइ। सुमिर न बड दुप दिन्ह।
अधर पिड पर मौपधी। वर न व्यथा हरिलिन्ह ॥५३॥
वयु कटाक्ष सोभित तरनि। फिर चितवनि मुसकात।
मुद्रित अलि क्षुद्रति मनौ। मौर कवल विक्सति ॥५४॥
बल्लभ तुह अनर्मो रह्यो। गए लच्छिनहि चिन्ह।
पेम पियासे अधर मधु। क्या पुव्वक लिन्ह ॥५५॥
दिव्य कवल मुख वास लगि। लए दसन अलि ताहि।
मुतिय जन वधन भरे। सोभित चौका साहि ॥५६॥
अलि चदनि हीरा धरनि। गगन वीजु दधिमोति।
दारिम मुख मुद्रित रहित। देखि दसन की जोति ॥५७॥
कूप चिवुक मो मन परिउ। त्रिषा अधर जल भास।
कुतल कटक कुटिल परि। कर करि कट्टति तास ॥५८॥
मनु तुम पेम हि गह रम्यौ। नयन धरत आवास।
कूप चिवुक पर वावरे। पुनि निकसन की भास ॥५९॥
वदन सरोवर मदन जल। जुव्वन लहरी लेत।
नैन पियासे दरस के। घूघट घाट न देत ॥६०॥
कह पायो कठ मोर पिक। कह कपोत कि मान।
चलिति जु नारि फणिद गति। वर्णत बनै न वान ॥६१॥
मद जुव्वन कुच कुभ दुइ। गर्वति तीम मतग।
अर्द्ध मयक लिलाट पर। मकुश गह्यो अनग ॥६२॥
पन्नग पक्ज मुखि गहै। विप जनतिहा दिठ।
उर सिहासन साजि करि। साहिब साहिब इठ ॥६३॥
चक्रवाक कुच हृदो सर। मुपतिन्ह जटित मुघाट।
तहाँ फुल्लित भई कुमुदिनी। देखत चद ललाट ॥६४॥
उर सर परि कुच कमल दोउ। मुद्रित अचल षाम।
उडे जु सौरभ नयन अलि। मति मलती मोर स्याम ॥६५॥
[illegible]धि वहि भ्रम जानि करि। माहि बुचह क्या दिन्ह।
[illegible]वत आवत मुष्शन हि। उठिहँ आदर दिन्ह ॥६६॥
[illegible]ाज सरित याहर मदन। मरूप महतकटि वधि।
[illegible]च तू या हिय रक्षित करि। धर्मों वहि नम गधि ॥६७॥
[illegible]तम अधर माहि एु। बुच घतर तन तप।
[illegible]रि वानर उद्योततम। हरण करण मोहरप ॥६८॥
[illegible]र वराहि जुव्वन मर्म। भए जु लिहन उत्रग।
[illegible]दौ ठलायौ पीम बहु। छाए हरवरे मनग ॥६९॥
[illegible]ह पुरद वस केलि करि। रानि करौ मन मत्थ।
[illegible] निमित्त कुच ममुहे। पुहवि पसारत हत्थ ॥७०॥

मंडलीक कुच अवल बल । उच्चत कठिन समर्व ।
स्याम छत्र सिरि चक्रवति । कर दाइक जन सर्व ॥७१॥
न्याय , पयोहर चक्रवति । कुंदन श्री फल ग्राहि ।
दिग मंडल कर जे ग्रहत । ते करदे तव साहि ॥७२॥
भरे जु कुदन कलस कुच । कुद करन नखि कुंद ॥
जुव्वन मद गुन गव्वं करि । मुखज मैन मसि बुंद ॥७३॥
चित्त हरत कंचन वरन । सिहुन रचे जगदीस ।
दृष्टि निवारण कर परस । मसि कज्जल दिय सीस ॥७४॥
जुव्वन समैं जु कंचुकी । कुच हैं दोउ उतंग ।
शिव जित्तन कहु गूडरा । मान हुईड अनंग ॥७५॥
उब्भलता कर जोरि कइ । कुच उन्नत कटि सुद्ध ।
मदन महाजल उम्मटिउ । घाघ निहारति मुद्ध ॥७६॥
तोरत अंग अनंग कुच । तापर परीजु दृष्टि ।
अति उतकंठा पुत्तरी । ऊछटि सीस वइट्ठ ॥७७॥
भृंगी कुल जनितवयर । केहरि लंक जुसाहि ।
सौतिनि गव्व गयद जिमि । भुजंत सौरम साहि ॥७८॥
धूप सिखा रोमावली । शिव कुच अक्षत फूल ।
इह तपक्रम पायौ जु फल । साहिब पति अनुकूल ॥७६॥
पिय भेटत घर वलय वद । चदन रहत न अंग ।
हित स कुतल अधर कुच । पीर सहत मोर सग ॥८०॥
मज्जन राम सुगंध तन । अभरन वनं अनूप ।
पान वदन छवि देखि मुनि । चेतुप मुक्कहि रूप ॥८१॥
मुकलित भूषन कुच वासन । मउ लित वलय विराम ।
दपति मदन विरच्चिये । थकवे सुरति सग्राम ॥८२॥
विभ्रम हलि मिलि थकित तन । दोउ निद्रा वि करीर ।
प्रीत गमन भुज फद । फदे अरुझे वारह वार ॥८३॥
निसि विभ्रम पूहपित नखत । परमल भिन्नित अंग ।
लोचन निद्रा सिथिल हित । गहत परस पर सग ॥८४॥
निद्रा नयन विलास गय । धूपित दीपग नार ।
सीरक मोतिन्ह पुलक तन । फीको वदन उगार ॥८५॥
दोऊ भावत मति पेम रत । सकुच पमुक्कि मिलेजु ।
सुरत अंत नयन तु मिलहि । दुरि मुसकात भलेजु ॥८६॥
श्रम थके थकम सिथिल । हेतत होत विमौन ।
हुं जानत पिय मानि है । रूसन वदि उव कौन ॥८७॥
भावत सुरत वियाम करि । मिलति उपजति सास ।
दुहु तन आउस साधि जन । जोम तै इक्कहि आस ॥८८॥

कस्प पिट्ठिहि देखियत । कठ विना गुनहार ।
नौ ग्ररविंदज इक्क कर । कर तव कौन विचार ॥८६॥
रे वलि तू जिन विस गहहि । मोचिहि नही और ।
जिम कमल छवि पुतली । तिम हिय ग्रोर न ठौर ॥६०॥
कमल निरखति कमल गहि । कमल मिलहि न ग्रघाइ ।
द्वादस कमलहि इक्क हुइ । कमल-कमल नहि जाइ ॥ ६१॥
कमल नयन जिनि रुदिन करि । पुजु ग्रनिमेष धराहि ।
वरनि मुत्ति गुज कुवदन । परत नीर हुइ जाहि ॥ ६२॥
नयन सीपि छवि स्वाति जल । पीपत पलक पसारि ।
पिय मुत्ताहल चाहियत । हसति मुकावति नारि ॥ ६३॥
पिय पगि लागि मनाउ तू । मिलुपहि पच्छिम जाम ।
नहि ग्रक्षर विपरीत कर । माननि मुक्कहि मान ॥ ६४॥
कत ग्रानन सु रूसकरि । जिउ छिज्जै किहि काज ।
रूसति रमणि मनाइयै । उपम खात कि लाज ॥ ६५॥
चचल तिरक्ख निचित विवि । मनलोयन ज कहत ।
तू ग्रमूरति देखन हलगि । ठौरहि ठौर उगत ॥ ६६॥
सपनस पानि पदक्ख वहु । कर ग्रगुल ज धरति ।
रे मुक्ताहल निलज तिय । हसि हसि गुज करति ॥ ६७॥
ककन पीठहि देखियत । कठ विना गुन हार ।
नौ ग्ररविंदु जु इक्कठा । करतव कौन विचार ॥ ६८॥
ग्रक्षर मुत्ताहल रच्यौ । गुन गुथि रक्खो पति ।
दूभर मानौ दोहरौ । हिय सपुट इहि भाति ॥ ६६॥
मुत्तिय गुन हृदौ सकति । सुकृत पीठ कमठ ।
मध्य लाल को नाम गुन । कठ माल मम कठ ॥१००॥
नयन चतुर मूरति चपा । पल पल दुतिज धरति ।
जनु दुतिया के चद जिम । दिनि दिनि कला चडति ॥१०१॥
मुरि बैठति पन्नगह जिम । कसत ग्रनल न जीय ।
मानुज विष नप सिष चरिउ । मत्र न मानति तीय ॥१०२॥
इन्ह नैनन पहर सन नहि । रसन नैन न हुग्राहि ।
चित्त हरत चेटक वदन । रूप कहा काहू साहि ॥१०३॥
उर समुद्द मथि ज्ञानवर । काढे सात रतन्न ।
पेम हेम कुदन करत । जुरे जुतिम्र रतन्न ॥१०४॥
इति शतम् ।

पीछे के भिन्नाक्षरो में इह पोथी हरष कीरति पासि लीन्ही छै । इह पोथी रा पत्र ४ ग्रकै चारि पत्र छै । पडवा की छै । सवत १७२२ चैतवदि १ ॥

॥ सिगार सतक भाषा ॥

सवाई पचीसी तथा सवाई बतीसी

[मुनि कान्तिसागर जी से प्राप्त]

लेखक—किसोर पोष्करणों

।। अथ सवाई पचीसी कृति दिली मै किसोर पोष्करणो ।।

।। दूहा ।।

सरसति समरू स्यघ गुण, अवतारा ज्यौ वोप ।।
पेस पचीसी भूप की, प्रगट बिसन पछोप ।।१।।

।। छंद जाति मनहर ।।

आगै आप अवतार, नृस्यघ सरूप धार, हैनाकुस मारि, पहैलाद कू उबारे जू
वारन पुकार कीरकार सुणि ततकार, जल माँहि तारवे कू पाव आपधारे जू ।।
हेटि हेटि जैतवार असुर पछार मार, अपने उधारन कू ढील न करारे जू
नृप जयस्यघ की उमग आगै टिकै कौन बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ।।२।।

आप अवतार राम भेता माहि धारि नाम बडे बडे कीन्हे काम दस्थ उधारे जू
जानकी कौं व्याहि अर सेमौ बनवास जाय, दुष्ट के उडायवे कू जोग तप घोर जू ।।
सीता को हरन हार तै बिडारयौ रावन ज, वार वार जोत कै अयोध्या हू पधारे जू
नृप जयस्यघ की उमग आगै टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ।।३।।

बडे महाभारथ मै स्वारथ न कीन्हो कदे, सदा परमारथ सुक्यारथ के भारे जू
जीत कुरषेत, लक भभीषण देत, तिके आय लेत आसिरो ते सरणि उबारे जू ।।
बडे बडे रापस तै पाव मै मिलाय दिए, आपत किसो जस कुल उजियारे जू
नृप जयस्यघ की उमग आगै टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ।।४।।

बडे घाट दल छल बल सू अमल कीयौ, वडे बडे जेर कीए आगैर अबारे जू
आगै राजा मानस्यघ लीए डाण समद्रपै, चिगतौ न चित कीयौ कैई काम सारे जू ।।
साहिब सू सरपह सदा मदि कूरम ऐ, तिके महै मडल के मडलीक लोर जू
नृप जयस्यघ की उमग आगै टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ।।५।।

मान कै तो माहास्यघ सदा पगार हुवो, ताकी तरवारि आगै धरक ससारे जू
तार्कै हुवौ जयस्यघ सेवाहू से कीन्हे जेर, घेरि घेरि गनीमू कू फेरि हेरि मारे जू ।।
तार्कै रांम औरग पै सेवा कू उवास्यो सही, पारयौ बोल बाप वोर आप वहा तारे जू
नृप जयस्यघ की उमग आगै टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ।।६।।

केहरि कू मार कै नो तरवार ही कौ जौर, ठौर ठार रोर मारे चोर र चिकारे जू
साप तीन बीसी सेती मारे है हजार तोन, बडे मुगलान पान पठान कू मारे जू ।।
विष्ण भयो किष्ण कै ज, विष्ण के जगतपति, तो कू नमै महलीक नृप बस सारे जू
नृप जयस्यघ की उमग आगै टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगौर जू ।।७।।

जाद्रन से कान्हर सौ वृजनाथ हुवौ तपै, वाके कोटि छपन जाते रे तप लोर जू
कान्ह घूसि कसासुर राज दीयौ उग्र कू ज, वाध्या सूर अघासुर पटकि पछारे जू
ससिपाल जरासिंध को ता कीयो मान हीण, हरि लेकै रुकमणि द्वारिका सिधारे जू
नृप जयस्यंघ की उमग आगै टिकै कौन, वाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥८॥

कान्हर मैं सैंहस ज सौला माहि निज रूप, वोयमा अनूप मा पैं बरनीन भारे जू
सुदामा के भजे रार, द्रौपता को वाध्यौ चीर, दीऐ राज पडवा कू कैरव स्यधारे जू ॥
वैसे ही प्रताप तपै म्हाराजा अवावती, बडे बडे नृपति मरणि तिहारे जू
नृप जयस्यंघ की उमग आगै टिकै कौन, वाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥६॥

कलिक प्रगट मैं सुभट नृप जयसहि, मारे मारे वडे मीर तीर तरवारे जू
नौरंग की रग ए कीयो जाय दखिन मैं, लीयौ गढ पैलना ज पडी धाक सारे जू ॥
बहादर साहि की बिलाय गई बहादरी, हुवौ सो कुहाडा कहू चु पत्यौ न पारे जू ॥
नृप जयस्यंघ की उमग आगै टिकै कौन, वाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥१०॥

भारी जुध भारथ कीयौ है पूत्र सामरि मैं, मारे मैंदजादे मोर मुगल पछारे जू
होडोणि की बाणा तो उठाय दयो पल माहि पडी धाक साहि घर सके न सभार जू ॥
फरक कू तपन को घणा कीयौ पल माहि, करैं नोही भाप स्वाल मुष थो उचारे जू
नृप जयस्यंघ का उमग आगै टिकै कौन, वाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥११॥

फरकस्या फरि कहे जैस्यंघ कू दीन्हो सौप, कीन्हो हठ जयसाहि फिरयौ मिरसारे जू
हौणहार माफिक जू हुवौ सही सब कहै, कुरम को बोलवाला भूति हीण हारे जू ॥
तेरा तप तेज आगै अजवैंव मारे सैंद, तेग वाधि कौन सकै तू ही पाछौ तारे जू
नृप जयस्यंघ की उमग आगै टिकै कौन, वाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥१२॥

फरक के मरत मैं उनरक भूप किने, जिने यौंही गरव अजरत सगारे जू
संद करी हरक जक रक बरक भए, लरवन राख्यौ पीछै तरवन भारे जू ॥
संद करी हरक जक रक बरक भए, दा दिन किरादि कहू बूझी न बकारे जू
जो मीव गजराज मारे गए मरत ज्यौं, दा दिन किरादि कहू बूझी न बकारे जू
नृप जयस्यंघ की उमग आगै टिकै कौन, वाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥१३॥

लूण ज हलाल दोय महैमद जैस्यंघ की मुगल कू षोजै नाहि कुरम करारे जू
जोम धारि अमी महै मल्लि तजे जायौ, अयूही मरि गयौ भयौ धुम धुम मारे जू ॥
पोज रपतोज नेपवाई न्टपनाथ भव, तपत के धम सदा स्वाम काम सारे जू ॥
नृप जयस्यंघ की उमग आगै टिकै कौन, वाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥१४॥

अमी भूपे महैमदस्या पातिसा नचित हुवौ, नेपवाहा जयसाहि कू जलम गारे जू
बिदा हुवौ जटन पैं बडे से सामान सार, टिक्यौ नहीं महो क्यौं एक हलकारे जू ॥
हुते वृजराज सा निमान ज महावे सँरे, मिले आय जिते लगे दावन तिहारे जू
नृप जयस्यंघ का उमग आगै टिकै कौन, वाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥१५॥

अकबराबाद को जो सूबा पायो अपपती, बडो बडे छत्रपती फिरत है मारे जू
तेरो जोम देखि देपि मन दीपत मि कीन्ही, गरीब पैं जेजीयोव लगायौ भरे भारे जू ॥

तपत के धणी बीज पाय के बलायौ नृप, माफ कीयौ जेजीयार हुकम तिहारे जू
नृप जयस्यध की उमग आगें टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥१६॥

जेजीयो छुडायौ चहू चक जस छायौ, कोई मूढै नाँहि आयौ इह बिरद उबारे जू
वडो जस पायौ ईह काम सुनि दारि ध्यायौ, मुथरा से दिलो आयौ लप दल लारे जू ॥
सवाई कीयौ सवायौ बोल बाला, सुर छायो असुर गुमायो हद बाँधी सिरदारे जू
नृप जयस्यध की उमग आगें टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥१७॥

बालक बुरान्हपुर बीजापुर बिदरज, बागड बदकसान अवाई बपारे जू
बारधि बुदेल बीजा बाणारस बुघेलज, बेहड बिकट बाट तहा घाट धारे जू ॥
बलाबध बडा जूर बडज धाक, बीकपुरि बधनौरी हुकम करारे जू
नृप जयस्यध उमग आगें टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥१८॥

काबिल कमाय कोर करणाट कासमीर, कागरू किलगी कोट कोटते उबारे जू
तिलगी सबोल तारा आगरें अटरे इल्हाबास आय मिले तेऊ सरणि तिहारे जू ॥
गोलवु डा भानगढ मदोर के मिले रहे धारै तिके जोम ताकी पोम पोम मारे जू
नृप जयस्यध की उमग आगें टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥१९॥

गगा को कराय घाट गया को छुडायौ नेग, पाच पाच सै ज कौस लग आण सारे जू
हीदू ध्रम कीनो हद, भई ह हुकम थारै, ताईया तपत सू तो स्वाम ध्रम पारे जू ॥
पोकर पिराग लाग मेटि असुरान को ज दया ध्रम तप तेज दुनो जै जैकारे जू
नृप जयस्यध की उमग आगें टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥२०॥

राठा ज केमेर क्तिे हेरि हेरि काढे घेरि, नर नारी तेरे राज सबै सुप धारे जू
बिकट मेवास सौ बिणा स गास दर्प मेरे, मीणा आय मिले बली रही बिसतारे जू ॥
ठसक जवालू की तो ठसक हुई ज ठस, कसि बसि का ए तेज बकीया बिडारे जू
नृप जयस्यध की उमग आगें टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥२१॥

पूर पाछी उत दाछी च्यारू दिसि मडल मैं मानत जिहान आन रान पेसकारे जू
पोट पोठ देषियो जठै तिनक निपोट कीए, चोरन के सिर चोट तैसमै सकारे जू ॥
वहानू बडाई करू आप तणी क्लाकी ज, पावै कौन पार कवि किसोर उचारे जू
नृप जयस्यध की उमग आगें टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥२२॥

आपज प्रताप को तो मानै छाप पाति साहा, दुबल बिलाप मेटवे कू है दातारे जू
स्यघ गाय एक घाटि पीवत है तेरे राज गरीबि नवाज आप दुष्ट कू पछारे जू ॥
निबल निवाजि कै ज सबल कू दीजै सजा, एही जस जीवनि असीस देत सारे जू
नृप जयस्यध की उमग आगें टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥२३॥

आपकी बडाई को न करवा की मुति मोमैं, आप हो प्रतछि रूप इसुर ससारे जू
राजि के चरण गहे निसतारो होत सही, महीपति म्हाराजा ताजा तेग तारे जू ॥
मारवाड मेवाड मो मालव मरेट मेद, सबै जन सेव करै देव बल धारे जू
नृप जयस्यध की उमग आगें टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥२४॥

॥ कवित छप्पै ॥

वजै जैति के बंब, घन पतिसाहा घाट थिर
सुमट स्यंम सिरदार, नमैं नृपवस सबै नर ॥
किता करै अरदासि, किता पेस ले आवे
किता कहे करसार, लप घाट दबावै ॥
रुघबंस अंस कुछाहा तिलुक नमैं मीर पतिसाहि के
बाजत सदा फते तबलु, म्हाराजा जयसाहि के ॥२५॥

पचीसी संपूर्ण लिपते सं० १७८३ का जेठ सु० ११॥ निर्जला व्रति पोक्करणां किसोर मालपुरा का ॥

अथ सवाई जैस्यघ जी म्हाराजाधिराज की वतीसी कृति ।
किसोर पोष्करण मालपुरा का गोत्रे सज्याति देवेरा ।।

॥ दूहा ॥

सरसति प्रसन हसासणी, दीयो माय उपदेश ।
वतीसी भो बुधि सरू, श्री ज्यैसघ की पैस ।।१।।

।। छंद इल्लः ।।

बिसन छवाज चढे दल साजि
लीए सूर जोध ज साथि ग्रमाना ।।
भोमे भूपाल सबू सक थईज
पेस कसी जसि तावी भराना ।।
रूघवंस महै ग्रवतार भयो
सीताराम सहाय ज दास बषाना ।।
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यघ
फबै ज फते पचरग निसाना ।।२।।
श्री दुष ग्राप चट लक पै ज
कलक कू मारि कीए कमठाना ।।
थूहानि मारि गरद करी
भरि डोघ ग्राय लीयो ज सिचाना ।।
ग्राडा वलावध के केसर थान
पगार देवा मन माहि किसाना ।।
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यघ
फवै ज फते पचरग निसाना ।।३।।

गरब गल्यो गुषरेडा तणो ज, पडारि तणा ज पजाना
चत्रवात चिगया महैमदसाहि, सितावी भेज्यो षडी माहि फुमाना ।।
ता राजगट का मुपा दीया ज तो, ग्राय मिल्यो ज कि ताज ग्रमाना
तपे म्हाराजि सवाई ज्यैसघ, फवै ज फते पचरग निसाना ।।४।।
बडे मीर ग्रमीर पूजै पीर विरज, भाजि गए ज कितेक फराना
पेलूणां गढ का ग्यान कीया ज तो, पग्हि से वाकू डोल पचाना ।।
हुसन ग्रलीषा कीया ग्रति जौर, सो गैब ही म दगादार उडाना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यघ, फवैज फते पचरग निसाना ।।५।।

मुहनि घूसि विधूति गनीमर, दूनी में आय बैठायो ज थाना
थासीर गढ का पूब लड्या ज तो, आवा ज थाला ज देप्या अमाना ॥
देयस्यथ पगार या भाजि गया ज तो लार लीया ज प्रकट गुमाना
तपैं म्हाराजि सवाई जैंस्यथ, फवैंज पते पचरग निसाना ॥६॥
धागुरे गढ कोट लगूर चढे जा, आदा दुगोला ज उडे असमाना
आवा दुनी आयकै घेरि लोया, इक टकर मे सब मकर माना ॥
हाडा बलावंध कहै नृप सू, अब लाजीए पैंस भए फिसैं माना
तपैं म्हाराजि सवाई जैंस्यथ, फवैं ज फते पचरग निसाना ॥७॥
सबैं बृज के जट सुघट कीए ज, सुभट की धाक बिकट मिलाना
कुघट चले कुजघट चलावत, कुरम घट प्रगट प्रमाना ॥
अरट धरैं ते हुवै द्रहेपट, निपट निकट अघट असमाना
तपैं म्हाराजि सवाई जैंस्यध, फवैं ज फते पचरग निसाना ॥८॥
चमकि भ दौड के नृप गोपाल, दई पेसकसि बेटी निजराना
धमक सुणै अर कि धर धूजत, पूजन को ईन स्यध सू स्वाना ॥
जाद्रम आय मिलैं सगरे, तापैं बेई लई केते दाम भराना ॥
तपैं म्हाराजि सवाई जैंस्यध, फवैं ज फते पचरग निसाना ॥९॥
कुतिल सो जति सो मारमल, भणा भगवत तिसो कुल माना
मान की आन तो मानि रजोहान बडे घमसान जीत्यौ बलवाना ॥
जगैंती माहो स्यध जैंस्यध जिसा ज, भए राम किष्ण ज विष्ण बषाना
तपैं म्हाराजि सवाई जैंस्यध, फवैं ज पते पचरग निसाना ॥१०॥
आपौ पडदावि प्रपड की आण, अडडन पैं डड लेत अमाना
पुनि प्रचड के झुड कु पेषि, अरिड बिहड बसड पडाना ॥
इसो बलिबड भूमड औतार, घमड सू जीतै केई घमसाना
तपैं म्हाराजि सवाई जैंस्यध, फवैं ज फते पचरग निसाना ॥११॥
गोड र तू वर घोचो पिढयारज, जाद्रम हाडा जलार बगाना
सोलषी पवार भाटीर सोसोद, चमषजवो गहैलोत मिवाना ॥
भदोड बुदेल रजू हिंदवाना, सबै धषकैंधाक सू पुरसाना
तपैं म्हाराजि सवाई जैंस्यध, फवैं ज फते पचरग निसाना ॥१२॥
मान समद्र पैं डाण लीए, मुसलाण र राणपठापा मिलाना
पूरब दषि पछी उतराध, नओपड आन ज मान की माना ॥
चिगयो पतिसाह कीयो कुछवाह, दिली थम है अब कोज घराना
तपैं म्हाराजि सवाई जैंस्यध, फवैं ज फते पचरग जिसाना ॥१३॥
आप चढयौ जमस्यध दिषन कौं, आप घेरयौ ज मरेट को थाना
पल माहि पकडि भेज्यौ सिवा कुज, दिली सुरतान मरान कुमाना ॥
रामकवार उबार सोसोदीयौ, आपको बाहर बाप को बाना
तपैं म्हाराजि सवाई जैंस्यध, फवैं ज फते पचरग निसानो ॥१४॥

बरस नारायन उमर मैं, वडी गुमर सू नवरग मिलाना
कसाव कराव पराव कीए ज, सराव पुराव को श्राव उडाना ।।
पुकाव हूई पतिसाब नपाव थुकाव श्ररोव चहू श्राब दुपाना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यघ, फबै ज फते पचरग निसाना ।।१५।।

श्रराबा चहू दुपवाय जैस्यघ पै, श्रारग जी चढना फुरमाना
तदी महाराज कवार तैऊ केसरया गहैरा सबै साथ कराना ।।
चढे हजरति श्ररजि हुईज, फबै ज फते पचरग निसाना ।।१६।।

श्राप दिलीपति सा श्रवरग, बुलाय हजूरि करा पकराना
कह्यौ भुप सू श्रव जोर कहाज, दुवै पकरे निसतार किलाना ।।
दीयो ज किताब सवाई सरस, सदा जंगजीत सू जस सुहाना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यघ, फबै ज फते पचरग निसाना ।।१७।।

पाय किताव तै श्राव सवाय, लीयो गढ चेलना एक चुटाना
गोग को रग एक कीमी ज, सुरा श्रवतार भजै असुराना ।।
बहादर की ज बहादरी श्रैसे, बिलाय गई तैसें श्रातुस छाना ।।
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यघ, फबै ज फते पचरग निसाना ।।१८।।

सामरि जीतरि लीन्ही हीडोनि, उडायो श्रनीत तणो कफराना
नीत धरी फकस्या हजारति, सुनीत न चीत तपै सुरताना ।।
नीत घटे ते मिट्यौ तप तेज, भयो जफ जीत मृतग जिहाना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यघ, फबै ज फते पचरग निसाना ।।१६।।

लूण हराम भए सैद जाम सो, मारे गए तैसे बाज चिडाना
लूण हलाल ज कूरम को वज, मानै हजरति दिली तपताना ।।
तेरे भरोसैं महैमद दिलीपति, बैठो किला मैं श्रलार कुराना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यघ, फबै ज फते पचरग निसाना ।।२०।।

बडो जाणि मरद कू सोपी सरम, सरद के रोज गनीम के थाथा
माफ कीयौ तुमकु जे जीयार, श्रोसाफ तुम्हारो कल्पा जरहाना ।।
श्राय नवाय कै बृज कौ मोकम, कीन्हो पराब सो मागो फिराना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यघ, फबै ज फते पचरग निसाना ।।२१।।

पायो प्रकाश ज भूप उजास, भेजे सिवदास मैवास उडाना
तिवे श्ररिवास श्रैवास उचास, सोराले निसा सर दास कहाना ।।
हुकम योही सिवदास कू कीन्होज, पाडो गढासर भास दिपाना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यघ फबै ज फते पचरग निसाना ।।२२।।

केते भोमिए तो रजू श्राय हुवे, तू चाला कीया लुरवा की वजाना
मिले श्रायरहू तिन देरै तिके, तिन कू तो निवाजि कीया बालवाना ।।
रानें कुरम राज सिरी जय साहि को, ताकी सवाई धरी हदिजाना
तपै म्हाराजि शवाई जैस्यघ, फबै ज फन पचरग निसाना ।।२३।।

मूहनि डोंघ र भागरा को सूबो, तहां अमल प्रडिग बैठाना
जीत्यौ सही गूथरेडा को जग ज, पावटै आय लेंगे घमसाना ॥
उमराव बडे विस टालो करै ज, फते पचरग निसाना ॥२४॥

अडाव हठी स्यघ कीन्ही भडाव, सौ एक ही हाक गढाक चलाना
डाक बजाव सुणाक जैस्यघ की, कार्चौ लडाक पडा कपडाना ॥
डाक बजाव सुणाव जैस्यघ
किलाक जोराक बिलाक गए ज, सवाई की धाक सू धूलि समाना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यघ, फबै ज फते पचरग निसाना ॥२५॥

लई तो पडारि उडाय के ग्रावोज, हाडा किता पे सवध रहाना
ग्राडा वला पै चढयौ अब हीरजू, चो गरधा म्हरी जमसाना ॥
अधौणि कू कुटिर लूटयाजमेर, एरि भाजि गया सब छाडि ठिकाना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यघ, फबै ज फते पचरग निसाना ॥२६॥

स्याहन सो जिको नाहि हुवै वसि, ता परि कुरम राज रिसाना
वहि इनके घर को अचिरज, सो मारी लका उचका थरराना ॥
हेटि हेटि जोती हय रूघ तणोबस, तास प्रकाम सुरास प्रमाना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यघ, फबै ज फते पचरग निसाना ॥२७॥

दुष्ट धरा दिसि दिष्टि करै भू, अनिष्ट अवाई सुनत डराना
राम को इष्ट अरिष्ट को काल, सरिष्ट महा जग रिष्ट है जाना
आदिष्टि छाडे कू जमिष्ट कीया ज, तेरो रिपूराज अभिनिवा माना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यघ फबै ज फते पचरग निसाना ॥२८॥

चढै वारन ढालन सू भूपाल, पाताल पुतालन सू ज बजाना
वडे वैहड घट विकट हुते, घट कुरम सू अवघट भजाना ॥
कसकै कवनभ ससैस चमकत, भूरि उडै उगली लरजाना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यघ, फबै ज फते पचरग निसाना ॥२९॥

गरजै गजरा हय नहोसत हेज, किसो लुप दल लार सजाना
गहै री सलितान वसै जनि नयाण, खुमाण डेरे अवसाण अमाना ॥
वलकै ज परै अटकै धमकै, मनि सैस मिलै पे सलास लीयाना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यघ, फबै ज फते पचरग निसाना ॥३०॥

धरकै ज धरा अरको जितनी, कितनी अरि नारि नरो उकलाना
द्रुजन के दल पल हुवै ज, प्रवल घटा मद गल सुहाना ॥
निकसै ज सवाई चढे तैं किसौर पुतालन सु जपताल को पाना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यघ, फबै ज फते पचरग निसाना ॥३१॥

इती बुधि कहा कयू गुनराजि को, मा बुधि सारूज कोहा वयना
अब के नाथ सनाथ भएज ज्यौ किष्ण सुदामा को रोर उडाना ।,

तैसे ही दालिद कू हरीए, करोए वडो मोज क्रिराज निवाना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यघ, फबै ज फते पचरग निसाना ।।३२।।
कीने है व्दादस बीस कवित्त पहोक्करण व्यास किसोर प्रमाना
सभा सैं पिचासे बदी तीज भादुर, बार भ्रदीत उदार वहाना ।।
भ्रसीस हमारी कछू जगदीस, तुम्हारी सुदिष्टि सू होत कल्याना
तपो म्हाराजि सवाई जैंस्यघ, फबै ज फते पचरग निसाना ।।
बतीसी सपूर्ण लिखतं ।।

ब्रजभाषा व्याकरण

मूल लेखक

लल्लू जी लाल

ब्रजभाषा व्याकरण

डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या ने मीरजा खा इब्न फखरुद्दीन मुहम्मद रजित तुहफ तुलहिंद नाम की पुस्तक मे मिलने वाली भाखा व्याकरण को ब्रजभाषा का ही नही आधुनिक भारोपीय देशी भाषाओं का सबसे पुराना व्याकरण बताया है। उन्होंने लिखा है—

"The Braj-Bhakha grammar in the Tuhfat would appear to be the oldest grammar of a Modern Indo-Aryan Vernacular that has so far to light".

इसी के साथ उन्होंने बताया है कि जेकव जोशुआकेटेलएर की हिन्दुस्तानी ग्रामर तथा पादरी मनोएल द अस्समपस्म की बगाली ग्रामर से मीरजा खा का व्याकरण भली प्रकार समानता कर सकता है। ये दोनो यूरोपियनो के व्याकरण १७४३ ई० मे प्रकाशित हुए हैं।

मीरजा खा का व्याकरण १६७६ ई० का है।

इसी सबध में मीरजा खां की व्याकरण के अग्रेजी अनुवादक श्री जियाउद्दीन महोदय ने भी लिखा है—

"हिन्दी अथवा हिन्दोस्तानी की व्याकरण लिखने के लिए मीरजाखा से पहले भी कोई प्रयत्न हुआ उसका मुझे ज्ञान नही। जेकब जोशुआ केटेलएर ने हिन्दस्तानी की व्याकरण १७५१ ई० के लगभग लिखी जो डेविट मिल्लियस ने १७४३ ई० में प्रकाशित की। सर जी० ए० ग्रीयरसन † ने मसादिर-ए-भाखा नाम की व्याकरण के लेखक के तौर पर आगरा के लल्लूलाल (१८०३ ई०) का उल्लेख किया है।" मीरजाखा, केटेलिएर और लल्लूजीलाल के बीच में शुल्ज की हिन्दुस्तानी व्याकरण* का उल्लेख और होना चाहिए जो १७४५ में प्रकाशित हुई। किन्तु जहां तक ब्रजभाषा का सबध है मीरजाखा के बाद लल्लू जी लाल का ही नाम आता है। अत यह लल्लू जी लाल का व्याकरण प्राचीन व्याकरणों में दूसरे स्थान पर आता है। यह १८११ ई० में प्रकाशित हुआ।

लल्लूजीलाल का यह व्याकरण अप्राप्य है। हम जो व्याकरण यहा दे रहे हैं वह नेशनल लाइब्रेरी कलकत्ता की प्रति की प्रतिलिपि है।

---

*देखिये प्रोसीडिंग्स सोसाइटी बगाल मई १८९५ में ग्रियर्सन का निबध।

† ग्रियर्सन महोदय ने १७७८ ई० में Grammatica Indostana published (lisbon) का भी उल्लेख किया है।

आज भाषा और उसके व्याकरण के भाषा वैज्ञानिक ऐतिहासिक अध्ययन और अनुसंधान की प्रवृत्ति जागृत हो रही है। इसके लिए यह आधुनिक काल में लिखा व्रजभाषा का पहला व्याकरण हम प्रकाशित कर रहे हैं। यह व्याकरण अंग्रेजी में लिखा गया है और इसके पारिभाषिक शब्द हिन्दी के नहीं। जिससे स्पष्ट है कि यह व्याकरण ऐसे पाठकों के लिए लिखा गया है जिसका माध्यम अंग्रेजी था और जो हिन्दी के पारिभाषिक शब्दों को नहीं जानते थे। फोर्ट विलियम कालिज के विद्यार्थी ऐसे ही थे। उन्हीं के लिए यह व्याकरण प्रस्तुत किया गया है।

आज इसका भाषातत्व और भाषा विज्ञान की दृष्टि से अपना निजी महत्व है।

GENERAL PRINCIPLES

OF

INFLECTION AND CONJUGATION

IN THE

BRUJ BHAKHA

OR

The Language spoken by the Hindoos in the Country of Braj in the District of Goaliyur, in the Dominions of the Raja of Bharutpoor, as also in the extensive countries of Bueswara, Bulundawur, Untur and Boonkelkhund.

Composed for the use of the Hindoostanee students

BY

SHREE LALLOO LAL KUVI

Bhakha Moonshee in the College of Fort William.

Calcutta.

Printed at the India Gazette Press.

1811.

CAPTAIN JOHN TAYLOR,

Professor of the Hindustanee Language in the College of Fort William.

THIS ATTEMPT

To Facilitate the Study of the

BRUJ BHAKHA

Is most respectfully inscribed
As an acknowledgment for the
Assistance received from
him towards its compl-
etion, by his most
obliged and devoted
humble servant.

Calcutta,
1, May, 1811.

THE AUTHOR.

INTRODUCTION.

In offering to the Public the following work upon the grammar of the Bruj Bhakha, the Author conceives, that a few preliminary observations upon its origin and construction, as well as the affinity it bears to the other dialects in use amongst the inhabitants of Hindoostan, may not be deemed superfluous. To render this more obvious he proposes, to illustrate them by examples drawn from the most brated writers.

The Hindoos suppose, that the Universe is divided into three Regions (Lokus) for each of which there is a distinct language: 1st, the Region in the Heavens, or Sooru Loku, supposed to be the residence of Angels: 2nd, the Region under the Earth, or Patalu Loku, (Patal signifying, under the earth) which is entirely inhabited by Snakes; and 3rd the Earth, Nuru Loku, or the world of Man; also Murtyu Loku, or the World of human beings.

For each of these three Worlds, there is also a distinct language, or Bhakha, and a mutual intercourse is supposed to have existed between their respective inhabitants till the commencement of the Kuli Joog, when, from the increasing wickedness of man, the power which he then possessed, of transporting himself to the other two regions, was taken from him; 1st, the Sooru Banee, or speech of the Sooru Loku, called also Sooru Bhakha and Devu Banee (Soor and Devu having the same meaning) which is supposed to be the Sanskrit a language too celebrated to need explanation here. An example of a Shloku (the name of the stanza in which the Sanskrit is written) is here given.

*शेते धरा भरावान्तेशेषेनारायण: स्वयम्
लक्षमीवन्तोनजानन्तिदु : सहापरवेदनाम्

Shete d,hura b,hura kante sheshe Narayunuh swuyum;
Lukshmee vunto nu janunti, dooh-suham puru vedunam.

2nd, the Nag Banee, or speech of snakes (Nag, signifying a snake, and Banee, B,hak,ha signify language, k,h and sh being interchangeable, as will be hereafter shewn) called also by them Prakrit, a language differing from the B,hak,ha (properly so called,) by having the Nooni Ghoonnu, or nasal noon, much more frequent, and in having many of its letters mooshuddud, an arrangement necessary to adapt it to the formation of the tongues of these animals. This language is no longer a living one, but may be considered as having been that of an age intermediate with that in which Sanskrit was spoken, and the present B,hak,ha An example is given

येणविणाण जिविज्जई अणुणिज्जई सोक वाव्नराहोवि

पन्नोविणअडडाहेमणवस्मणवल्लहो अग्गी

Yenu vina nu viju,ee unoo niju,ee sokuvaburahobi, putte hinururu, hunu kuffu nu vulluho uggee

3rd, Nur Banee, or B,hak,ha, or that language of which we are treating B,hak,ha, is a Sanskrit word, originally signifying speech in general but now applied to the Nur Banee or living language of the Hindoos particularly that spoken in the country of Bruj, & in the district of Go, aliyur, Bruj is a district lying between Dillee and Agra and reverenced by the Hindoos with peculiar honours as the scene of the last incarnation of the Deity in the from of Krishn, its capital is Mat, hoora, and it has also in it the cities of Brindabun and Gokool, both celebrated as the scenes of the sports and miracles of their favorite Deity, it also includes the dominions of the Raja of B,hurtpoor and the Hill of Govurd,hun Go, aliyur is the country dependant upon the celebrated fort of that name, and is usually called Gohud, in these two districts the Bruj B,hak,ha is spoken in it utmost purity, and is considered by the Hindoos as the most comprehensive and eloquent language in existence In proof of what we have observed of the three languages, the following couplet from the teeka of the Sutsuhee, a work of Krishan Kubi, a celebrated Poet, is given

पौरूष कविता त्रिविधिहै कवि सव कहत बखान ।
प्रथम देववानी वहुरि प्राकृत भापा जान
Puorooshu kuvita tribid,h hue, kuvi sub kuhut buk,han;
Prut,hum devuvanee buhoori Praktritu b,hasha jan.

And he particularly explains, that by the word B,hak,ha there used, he means the language spoken of above as peculiar to the countries of Bruj and Go,aliyur; for example :

देस देसतें होत सोभापा वहुत प्रकार
वरनत हैं तिन सवनमें ग्वालियरी रससार
Des Des ten hot so b,hasha buhoot Prukar,
Burnut huen tin subun men gwaliyuree rusu sar.

The word B,hak,ha has thus become exclusively confined to this language, although as we have shewn, originally signifying any language whatsoever, and afterwards applied to the general colloquial language of Hindoostan.

It is difficult to ascertain from what time the Bruj B,hak,ha became a written language; but there is reason to suppose, that it was not till long after it had become the only living tongue in those districts, and with a very inconsiderable variation, the countries surrounding them; or whether it is derived originally from the Sanskrit, a point most positively denied by the Hindoos, but which appers almost certain, from the numerous words which have been transferred into it from that language. However this may be, it has attained such a degree of credit and excellence, that the Hindoo composers, of whatever part of Asia they may be, compose their poetic works in it as the Khiyal, Took, Dhoorpud, Bishun Pud, stoot, various kind of Songs, and the Kubit, Ch,hund, Doha, Chuopa,ee, Sor,tha, Koon, duliya, C,hhuppue, names of different kinds of Poems; and their learned men have in consequence declared it to equal the Sanskrit, as in the following couplet from Kesho Das in the Kubi Priya;

भासा बोलन जानई जिनके कुलके दास
भापा कविमो मद मति तिहि कुल केसो दास

B,hasha bol nu janu,ee jin ke kool kuodas
B,hasha kuvi b,huo mund muti tinhin kool kesodas

And Koolputi Misr, who was a Brahmun and poet of great celebrity has praised the B,hak,ha in his Rusu Ruhusyu

जिती देववानी प्रगट है कविता की घात
ते भाषा में होयतो सब समझें रस बात।

Jitee devu banee prugut hue kuvita kee g,hat,
Te b,hasha men hoyu tuo sub sumjhen rus bat.

And again

ब्रजभाषा भाषत सकल सुरबानी समतूल
ताहि बखानत सकल कवि जान महा रस मूल

Bruj b,hasha bhak,hut sukul soorbanee sum tool,
Tahi buk,hanat sukul kuvi jan muharusmool

ब्रजभाषा वरनी कविन बहु विधि बुद्धि विलास
सब को भूषन सत सैया करी बिहारीदास

Bruj b,hasha burnee kuvin buhoo bid,h boodd,hi bilas,
Sub kuo b,hooshun Sutsueya kuree Bihareedas

The earliest books of which I have been able to obtain any information as having been written prior to the reign of Ukbur, are the Prut,hee Raj

Rasa, or the wars of Prut,hee Raj and the Humeer Rasa, the former supposed to have been written about the time of the invasion of the Moosulmans under Muhmood of Ghuznu, by Chand Kub, who was ambassador to that Prince from Prit,hee Raj or Pit,huora and the latter said to be much later, but of the exact date the author has been able to gain no information With the exception of these, most of the books now to be found in the Bruj B hak ha were either written during the reign of that enlightened Prince, or since that period, and so scarce are those former works that we may be considered as indebted to him for all which we possess in this comprehensive and most useful language

As the author trusts that he has by the foregoing remarks and examples, shewn the estimation in which this language is held by the learned Hindoos, he will conclude

by observing, that, although the countries which he has mentioned as being as it were the brith-place of this language, are sufficiently extensive to render it can object of interest; yet he has no doubt, it will become still more so when he asserts that, not only in these but in the extensive countries of Bueswara, B,hudawur, Boonkelk, hund and Untur Bed, with a variation too trifling to be preceived, but by an intimate acquaintance with them, this is the original and only vernacular tongue that throughout India, with a greater or smaller proportion of difference, naturally arising from accidental causes, is the ground-work of every dialect of the Aborigines of the Country.

The ancient language spoken in the Cities of Dillee and Agra, and stiill in general use among the Hindoos of those Cities, is distinguished by the inhabitants of Bruj, by the name of K,huree bolee, and by the Moosulmans indiscriminately by looch Hindee, nich,huch,h Hindee or in theth Hindee, and when mixed with the Arabic and persian from what is called the Rekhtu or Oordoo

It may be necessary to observe, that there are in Hindee two letters which have not the pronounciation which would appear applicable to their from, viz. ड ढ which ough actually the harshd, and it's aspirate, are pronounced as harshr & its aspirate Ex घोडा g,hoda, or g,hora, पढ़ना pud,hna, or pur,hna The letter ष is in discriminately pronounced Shu or K,hu, and the following letters are interchangeable लर, डर, वब, यज, शस, क्षछ, मव, मब, भब, गघ, थन, तथ, पव, यइ, येऐ, अय, पख, होई, कज In this work जालो, जारी, पालो, पारी, घोडा, घोरा, घडा, घरा, वन, बन, वसुदेव, बसुदेव, यमुना, जमुना, यस, जस, दाख, सख, शिशु, सिसु, मक्षर, मछर, लक्षमी, लछमी, गाम, गाव, नाम, नाव इमलो, इब्रलों, कम, कबू, कभी, कवी, पगडी, पघडी, पगा, पघा, रथ, रत, भरत, भरथ, योतिशी, योतिकी, योतिष, मोतिक, यह, इह, माये, भाऐ, लाये, लाऐ, विया, विप्रा, दिया, दिमा, षट, खट, षष्टी, खष्टी, येही, येई, तूहो, तूई, तुहे, तुभे, तुझ, तुज,

and in the new Edition of the Prem Sagur, lately printed, it will be observed that, there are five letters अखचरर substituted

for ग्रपमह्न of the former Edition, these are not new bvt in fact the old Devunagree restored in lieu of the Kuet,hee nagree.

Conjugation of the verb hona, shewing the difference in the Termination of the Hindee (or K, huree bolee) and Bruj B, hak, ha.

Hindee		B, hak, ha,
Sing होना	To be	होनी, हैवो
Sing मैं हू	I am	हौं, मे, हौं
तें, तू है	Thou art	तें, तू, है
वह है	He is	वह सो है
plu हम हैं	we are	हम हैं
तुम हो	you are	तुम हो
वे हैं	They are	वे ते हैं
1. sing. होना था	I was, thou was, he was becoming.	होतु हो
2. plu. होते थे	We, you, They, were becoming.	होत हैं
1. sing. होती थी	Fem. I was, thou wast, she was becoming.	होति हो
2. plu. होती थीं	fem. We, you, they were becoming.	होति हो
sing. mas. मैं था	I was	मैं, हूं, हो
तू था	Thou wast	तू, तें, हो
वह था	He was	वह सो हो
sing. fem. मैं थी	I was	मैं, हौं हो
तू थी	Thou wast	तू, तें हो
वह थी	She was	वह सो हो
plu. mas. हम थे	We were	हम हे
तुम थे	You were	तुम हे
वे थे	The ywere	तें वे हे
sing. मैं हुआ	I became	वे ते हो
तें तू हुआ	Thou becomest	तें तू भयो
वह हुआ	He became	वह सो भयो
plu. fem. तुम थीं	You were	तुम हीं
वे थीं	They were	वे ते हीं
हम थी	We were	हम ही

sing. mas	मैं हुई	I became	हौं मैं भई
	तैं तू हुई	Thou becamest	तैं तू भई
	वह हुई	She became	वह सो भई
plu. mas.	हम हुए	We became	हम भये
	तुम हुऐ	You became	तुम भये
	वे हुऐ	They became	वे ते भये
plu. fem.	हम हुई	We became	हम भईं
	तुम हुई	You became	तुम भईं
	वे हुईं	They became	वे ते भईं
sing. mas.	मैं हुआ था	I had been	हौं मैं भयौ हो
	तैं तू हुआ था	Thou hadst been	तैं तू भयौ हो
	वह हुआ था	He had been	वह सो भयौ हो
sing. fem.	मैं हुई थी	I had been	हौं मैं भई ही
	तैं तू हुई थी	Thou hadst been	तैं तू भई ही
	वह हुई थी	She had been	वह सो भई ही
plu. mas.	हम हुऐ थे	We had been	हम भये हैं
	तुम हुऐ थे	You had been	तुम भये हैं
	वे हुऐ थे	They had been	वे ते भये हैं
plu. fem.	हम हुई थीं	We had been	हम भई हीं
	तुम हुई थीं	You had been	तुम भई हीं
	वे हुई थीं	They had been	वे ते भई हीं
sing. mas.	मैं होउ गा	I shall, or will be	हौं मैं होउगो हैहै।
	तू तैं होवेगा	Thou shalt, or wilt be	तू तैं होयगो हैहै
	वह होवेगा	He shall, or will be	वह सो होयगो हैवहै
sing. fem.	मैं होउंगी	I shall, or will be	मैं हौं होउंगी हैवहौ
	तैं तू होवेगी	Thou shalt, or wilt be	तू तैं होयगी हैवहै
	वह होवेगी	She shall, or will be	वह सो होयगी हैवहै
plu. mas.	हम होंगे	We Shall or will be	हम होयगे हैवहै
	तुम होगे	You shall, or will be	तुम होउगे हैवहै
	वे होंगे	They shall, or will be	वे ते होयगे हैवहैं
plu. fem.	हम होंगी	We shall, or will be	हम होयगी हैवहैं
	तुम होगी	You shall, or will be	तुम होउगी हैवहौ
	वे होंगी	They shall, or will be	वे ते होयगी हैवहैं
sing.	मैं होउ	I be, or I may be	हौं मैं होउं
	तैं तू होवे	Thou beest.	तैं तू होय
	वह होवे	He be	वह सो होय
plu.	हम होवें	We be	हम होय
	तुम हो	You be	तुम हो

	वे होवें	They be	वे होय
sing.	होता	I were, Thou wert, He were	हो तौ तु
plu.	होते	We, you, they, were.	हो त ते
sing. fem.	होती	I were, thou wert, she were.	होती
plu. fem.	होतीं	We, you, they, were.	होतीं
sing. mas.	होनेवाला होनेहारा	Becoming	होनवारो होनहारो
Fem. sing	होनेवाली होनेहारी	Becoming.	हानवारी होनहारी
plu. mas.	होनेवाले होनेहारे	Becoming.	होनवारे होनहारे
fem. plu.	होनेवाली होनेहारीं	Becoming.	होनवारीं होनहारीं
	हुआ	Become	भयौ
	होनेपर होने पै	About to be	होन पर पै ह्वैवे पर पै
	हुआ चाहता है	About to be	भयौ चाहतु है
	मेरा	My	मेरो
	तेरा	Thy	तेरो
	उसका	His, her, its	वा, ता को
	मुझको	To me	मोकों
	तुमको	To thee	तोकों
	उसको	To him, her, or it	वा ताकों
	मुझे	To me	मोहि
	तुझे	To thee	तोहि
	उसे	To him, her, or it	वा, ताहि
	इसका	Of this	याकौ
	उसका	That	वाकौ
	तिसका	Of that or it	ताकौ
	मुझसे	From me	मो, मोतें
	तुझसे	From thee	तो सो तें
	उससे	From him, her or it	वा तासों तें
	तिससे	From that	ता, सों तें
	इससे	From this	या, सो तें
	अपना	Own	आपनौ
	कौन	Who ?	कौन को
	किसका	Whose ?	काकौ

कैसा	How ? of what kind ?	कैसो
किसको	To whom ?	काकौं
किसे		काहि
किससे	From whom ?	का सों तैं
क्या	What ?	कहा
कोई	Any body	कोऊ
किसीका	Of any body	काहूको
किसूको	To any body	काहूकौं
किसे	Whom	काहि
कुछ	Some	कुछ
किधर	Whither ?	कित
क्यों	Why	क्यों कत
कभी	Ever.	कबहू
जो	Who	जो जौन
जो	Who	जे
जिसका	of which	जाको
जिसको	To whom	जाकों
जिसे		जाहि
जिससे	From whom	जा सों तैं
तक	To, upto,	लौ
जिनने	Who	जिन
जिन्होंने	Who	जिननि
जितना	As much as	जेती
जैसा	As, such, so	जैसी
जितना	As much as, so much	जितनो जितेक
जिधर	Where ever	जित
भला	Well, good	भलो
भले	Good	भले

खड़ी बोली

निकलन चौखट से घरकी बाहर जो पट की ओकल ठिठक रहा है।
सिमल के घट से तेरे दरस को नयन में आजो अटक रहा है॥
अगन ने तेरे विरह की जब से झुलस दिया है मेरा कलेजा।
हियेकी धड़कन में क्या बताऊ यह कोयला सा चटक रहा है
क्या बुढ़व पड़गया है उलकेड़ा, हरि भजन बिन नहीं है सुलकेड़ा।

नाम बल्ली से पारहू पलमें बृह्म बिन माफ पार है बेडा
लगवे चरनो से बृह्म के यह यहू कुजगलियो में हो जो मुटभेडा
दो मुक्के ठौन वह अचल हरिजो जैसे धू का दिया अटल खेडा
तेरे मिलने की बाट है सीधी यो ही मारें हैं कितने भटभेडा
बृह्म को रख गुपाल नित उठ भोग मिसरी मक्खन मलाइ और पेडा
यही सब में रहे हरि आप हर हर से नियारा है
वही है देखलो परतछ जगत उस का पसारा है
उसीने बात के कहते ही यह रचना रची सारी
उन्हीने क्या अलग ब्रह्माड यह मदिर सवारा है
उसी का नाम ले के तर गऐ लाखो कडोडो यहा नलीना नाम जिसने
हरि का उसका बोझ भारा है
किया था गर्व सागर ने कि सरबर कौन है मेरे कि तीन अजलो से ले अचमन
किया मीठे को खारा है
कुटुम का देख भूला है नही साथी कोई उस बिन न भाई वधु है
तेरा यहा अब सुत न दारा है
जो चातुर है तो मन में रह निराला जगत से अब यहा
कि जैसे आच के लगने से भागे तडफ पारा है ।

भाषा

उनबिन सब ऋतु फिरगई देख दिनन के फेर,
जेठ भिजोई आसुवनि सावन जारी घेर
गौन समें फेंटा गह्यो सुदरि हित जिय जानि,
छूटत ही दोउ छुटे उत फेंटा इत प्रान
मन राखा हो वरज कै जिय राखो समुझाय
नैना वरजे नारहे मिलें अगाऊ जाय ।
जब वरजे तब नारहे गये प्रेमरस लैन
आप बस तें पर वस भये ये बिसवासा नैन
प्रीत जु ऐसो कीजिये ज्यों निस चदा हेत ।
ससि बिन निस है सावरी निस बिन चदा सेत ।
कागद भीजत नैन जल कर कापस मसि लेत
पापी बिरहा मन बसत बिथा लिखन नही देत
बिरहो लोयन में रहत तिय बिन नीर गभीर
मीन रहत सब नीर में इन मीननि में नीर
तेरे बिरह समुद्र में हो जहाज भई कत
तन मन जोबन बूडि यो प्रेम ध्वजा फहरत
रोम रोम बूदें चुवै लोग प्रस्वद कहत ।

संजनी सजन वियोग तें सब तन सदन करंत
चतुर चितेरो जौं लिखै रचि पचि मूरति नारि
वह चितवन अरू मुरहंसनि किहि विधि लिखै संवार

BURSES IN K, KUREE BOLEE.

NIKULnu chuok, hut se g,hur kee bahur, jo put kee oj, hult, hit, huk ruja hue,

Simut ke g, hut se tire durus ko nuyun men a jee uuk ruha hu
Ugun ne tere biruh kee jub se h,hoolus diya hue mere kule ja,
Hiye kee d,hurkun muen kya buta, oon yih ko, ela sa chutuk ruha hue.

Kya kood, hub pur guya hue ooj, hera,
Huri b,hujun bin nuheen hue sulj, hera.
Nam bullee se par hoon pul men,
Krishn bin man j,h d,har hue bera
Lug ke churnon se krishn ke yih kuhoon,
Koonj guliyon men ho jo mootb, hera.
Do moo j,he t,hour wooh uchul huri jee,
Jue se D,hroo ko diya utul k,hera.
Tere milan kee bat hue seed,hee,
Yonhee mare hue kitne b'hutb,hera.
Krishn Ko ruk,h goopal nit oot,h b,hog,
Misree mukk, hun mula,ee uor pera.
Wuhee sub men ruhe huri ap hur hur se niyara hue
wuhee hue dek,h lo purtuch,h, jugut ooska pusara hue.
Oosee ne bat ke kuhte hee yih rachna ruchee saree,
Oonheen ne kya ulug bruhmand yih mundir sunwara hue.
Oosee ka nam leke tur guye lak,hon kuroron yuhan,
Nu leena nam jisne huri ka ooska boj,h b,hara hue.
Kiya t,ha gurb sagur ne ki surbur kuon hue mere,
Ki teen unjlee se le uchmun kiya meet,he ko k,hara hue.
Kootoom ko dek,h b,hoola hue nuheen sat,hee ko,ee oos bin,
Nu b,ha,ee bund,hoo hue tera yuhan ub soot nu dara hue.
Jo chatoor hue to mun men ruh nirala jugt se ub yuhan,
Ki juese anch ke lugne se b,hage turp,h para hue.

B,HASHA DOHA

Oon bin sub ritoo p,hir gu,een dek,h dinun ke p,her,
Jet,h b,hjo,ee ans owun sawun jaree g,her
Guon sumen p,huenta guhyo soondur hit jivi jan,
Ch,hootut hee do,oo ch,hoote oot p,huenta it pran
Mun rak,hon hon buruj kue jiyu rak,hon sumooj,hae,
Nuena burje na ruhen milen ugi,oo ja,e—
Jub burje tub na ruhe guye prem rus luen,
Up bus ten pur bus b,huye ye biswasee nuen
Preet jo uesee keejiye jyon nis chunda het,
Susi bin nis hue sanwree nis bin chunda set
Kagud b,heejut nuen jul, kur kamput mnsi let,
Papee birha mun busut bit,ha lik,hun nuheen det
Birhee loyun men ruhut tiyu bin neer gumb,heer,
Meen ruhut sub neer men in meenun men neer
Tere biruh sumoodr men hon juhaj b,huee kunt
Tun mun johun booriyuo prem d hwuja p,huhrunt
Rom Rom boonden choowen log pruswed kuhunt
Sujunee sujun biyog ten sub tun roodun kurunt
Chutoor chiteruo juo lik,hue ruch puch moorut nar,
Wuh chitwun uroo moor hunsun kihin bid,h lik,hue sunwar

THE HINDEE ROMAN ORTHOGRAPHICAL ALPHABET.

According to Dr. Borthwick Gilchrists excellent System.

u	a	i	ee	oo	oo	ri	ree	lri	lree
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ

e	ue	o	uo	n	h
ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः

k	k,h	g	g,h	n	ch	ch,h	j	j,h	n
क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ

t	t,h	d	d,h	n	t	t,h	d	d,h	n
ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न

p	p,h	b	b,h	m	y	r	l	v	s	sh	s
प	फ	ब	भ	म	य	र	ल	व	श	ष	स

h	h ksh	gr
ह	क्ष	ज्ञ

ku	ka	ki	kee	koo	koo	ke	kue	ko
क	का	कि	की	कु	कू	के	कै	को

kuo	kung	kuh
कौ	कं	कः

अस्मा

हालति

सेंग़एवाहिद		सेंग़एजमग्र
फाइल	पुरुष	पुरुष
इजाफत	पुरुष को के का	पुरुषनि को के कौ
मफ़ऊल	पुरुष कौं	पुरुषनि कौं
निदा	हे पुरुष	हे पुरुषौ

हालति

फ़ाइल	पुत्र	पुत्र
इजाफत	पुत्र को के को	पुत्रनि को के कौ
मफऊल	पुत्र कौं	पुत्रनि कौं
निदा	हे पुत्र	हे पुत्रो

हालति

फ़ाइल	पुत्री	पुत्री
इजाफत	पुत्री को के को	पुत्रीन पुत्रियन को के को
मफ़ऊल	पुत्री कौं	पुत्रीन पुत्रियन कौं
निदा	हे पुत्री	हे पुत्रियौ

OF NOUNS.

Singular.	Plural.
N. A. man, or the man.	Men.
G. A. man's, the man's or of a or the man.	Men's, or the
A. A. or the man.	Men, or the men.
V. O. man ?	O men ?

N. A. or the son	Sons
G. of a, or the son.	Of sons.
A. A., or the son.	Sons.
V. O. son ?	O sons ?

N. A, or the daughter.	Daughters.
G. Of a, or the daughter.	Of daughters.
A. A, or the daughter.	Daughters.
V. O daughter ?	O daughters ?

आस्मा

	वाहिद	जमम
हालति		
फाइल	पोथो	पोथी
इजाफत	पोथो कौ के की	पायीन पोथियन कौ के की
मफऊल	पोथी कौं	पोयीन पोथियन कौं
निदा	दे पोथो	हे पोथियौ

जमाइर

मुतकल्लिम

हालति		
फाइल	हौं मैं	हम
इजाफत	मे रौ रे री	हमारौ रे री
मफऊल	मोकौं माहि	हमकौं हमनकौं हमें

हाजिर

हालति		
फाइल	तू तैं	तुम
इजाफत	ते रौ रे री	तिहा तुम्हा रौ रे री
मफऊल	ताकौं तेहि	तुमकौं तुमनिकौं तुम्हें
निदा	म्हे तू तैं	म्हो तुम

OF NOUNS.

Singular.	Plural.
N. A, or the book.	Bookr
G. of a, or the book.	Of books.
A. A, or the book.	Books.
V. O book ?	O books ?

OF PRONOUNS.

Ist Person.

N. I	We
G. My, mine, or of me.	Our, or of us.
A. Me	Us.

2nd Person.

N. Thou.	You.
G. Thy, thine, or of thee.	Your, or of you
A. Thee	You.
V. O thou ?	O you ?

जमाइर

ह़ालति — ग़ाइब

	वाहिद	जमम्
फ़ाइल	वह सो	वे ते
इज़ाफ़त	वा ता को के की	उन विन तिन कौ के की
मफ़ऊल	वा ता कौं हि	उन विन तिन कों उ ति वि न्ह

आस्माएशार:

बई़द

ह़ालति

फ़ाइल	वह सो	वे ते
इज़ाफ़त	वा ता को के की	उन विन तिन को के की
मफ़ऊल	या ता कौं वा ता हि	उन विन तिनकों उ ति वि न्हें

क़रीब

ह़ालति

फ़ाइल	यह	ये
इज़ाफ़त	या को के की	इन को के की
मफ़ऊल	या कौं याहि	इन कौं इन्हें

OF PRONOUNS.

3rd Person.

Singular.	Plural.
N. He, she it.	They.
G. His, her's, it's	Their, of them
A Him, her, it.	Them

DEMONSTRATIVE PRONOUN.

REMOTE

N. That	They, those.
G Of that	Of them, their.
A That	That.

PROXIMATE.

N. This	These.
G Of this	Their, of these
A This.	These.

ज़माइर

मुश्तरक

	वाहि॒द	जमअ़
ह़ालति		
फ़ाइल	आप	
इज़ाफ़त	आप नौ नें नी	
मफ़ऊल	आप आपन कौं	

इस्तिफ़हाम

हालति		
फ़ाइल	कौन को	कौन को
इज़ाफ़त	का कौ के कौ	किन कौ के कौ
मफ़ऊल	काकौं काहि	किनकौं किन्हैं

ह़ालति	
फ़ाइल	कहा
इज़ाफ़त	काहे कौ के कौ
मफ़ऊल	काहे कौं

PRONOUNS.

Singular.	Plural.

N. Self, I, thou, & c. He, she, &c.
G. Self, own, my, thy, his, our, your & c.
A. Self, me, & c.

Interrogative Pronouns.

N. Who, what ? & c.　　　Who. what, which ?
Whose of whom ? & c.
Whom ? & c.

N. Which, what ?
G. Of which ? & c.
A. Which, what ? & c.

मौसूल

वाहिद	जमग्र	

हालति

फाइल	जो जौन	जे
इज़ाफत	जा की क का	जिन जिननि कौ के को
मफ़ऊल	जाकौं जाहि	जिन जिननि कौं जिन्हैं

नकर

हालति

फाइल	काऊ	काऊ
इज़ाफत	काहू को के को	किन्हू किन्हा को के का
मफ़ऊल	काहू कों	किन्हू किन्हा कों

हालति

फाइल	कछु	कछू
इज़ाफत	काहू को क की	किन्हू किन्हीं को के का
मफ़ऊल	काहू कों	किन्हा कों

PRONOUNS.

Relative

Singular.	Plural.
N. Who which what.	
G. Whose, of which, & c.	
A. Whom, which, & c.	

Pronomical Adjectives

N. A, any, person, body, or thing	Some persons, bodies or things.
G. Of one persons, body of thing.	Of some persons,
A. A, an, any, person, & c	Some persons, &

N. Any.	Some.
G. Of any.	Of some.
A. Any.	Some.

सिफ़तओमौसूफ़

	वाहिद	जमअ़
हालति		
फ़ाइल	भलौमनुष	भले मनुष
इज़ाफ़त	भलेमनुष कौ के की	भलेमनुषनि कौ के की
मफ़ऊ़ल	भलेमनुष कौं	भलेमनुषनिकौं कौं
निदा	हे भले मनुष	हे भले मनुषौ

हालति		
फ़ाइल	भलौछोहरा	भले छोहरा
इज़ाफ़त	भले छोहरा कौ के की	भले छोहरानि कौ के की
मफ़ऊ़ल	भलेछोहरा कौं	भले छोहरानि कौं
निदा	हे भले छोहरा	हे भले छहरामौ

हालति		
फ़ाइल	भलीपोथी	भलीपोथी
इज़ाफ़त	भलीपोथी कौ के को	भलीपोथीन भलीपोथियन कौ के की
मफ़ऊ़ल	भलीपोथी कौं	भलोपोथियन भलीपोथीन कौं
निदा	हे भलीपोथी	हे भली पोथियौ

OF ADJECTIVES, WITH THEIR SUBSTANTIVES.

Singular.	Plural.
N. A, or the good man.	Good men
G. Of a, or the good man.	Of good men.
A. A, or the good man.	Good men.
V. O good man ?	O good men ?

N. A good boy.	good boys.
G. Of a good boy.	Of good boys.
A. good boy.	Good boys.
V. O good boy ?	O good boys ?

N. A, or the good book.	Good books.
G. Of a, or the good book.	Of good books.
A. A, or the good book.	Good books.
V. O good book ?	O good books ?

सिफ़तओमौसूफ़

	वाहिद	जमअ़
ह़ालति		
फ़ाइल	भलीपुत्री	भलीपुत्रीं
इज़ाफ़त	भलीपुत्री कौ के की	भलीपुत्रीन भलीपुत्रियन कौ के की
मफ़ऊल	भलीपुत्री कौं	भलीपुत्रीन भलीपुत्रियन कौं
निदा	हे भली पुत्री	हे भली पुत्रियौ

राबितिरूगऐमअ़रूफ़

ह़ाल ह़वैवी

	वाहिद	ह़ाल	जमअ़
से़ग़ऐ			
मुतकल्लिम		हौं मैं हौं	हम हैं
मुख़ातब्		तू तैं है	तुम हैं
ग़ाइब		वह सो है	वे ते हैं

इस्तिमरारी

से़ग़ऐ		
मुतकल्लिम	हौं मैं होतुहौ	हम होतहे
मुख़ातब्	तू तैं होतुहौ	तुम होता है
ग़ाइब	वह सो होतुहौ	वे ते होव है

OF ADJECTIVES, WITH THEIR SUBSTANTIVES.

Singular.	Plural.
N. A, good daughter.	Good daughters.
G. Of a good daughter.	Of good daughters.
A. A good daughter.	Good daughters.
V. O good daughter ?	O good daughters ?

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

---

to be

Present Tense.

Singular.	Plural.
1. I am.	We are.
2. Thou art.	You are.
3. He is.	They are.

Preterimperfect.

1. I did, or was.	We did or were.
2. Thou didst, or wast.	You did or were.
3. He did, or was.	They did or were.

माज़ीमुतलक़

	वाहिद	जमग्र
सेंगए		
मुतक्लिम	हौं मैं हो कै भयौ	हम हे कै भये
मुखातब	तू तैं हो कै भयौ	तुम हे कै भये
गाइब	वह सो हो कै भयौ	वे ते कै भये

माज़ीकरीब

सेगए		
मुतकल्लिम	हौं मैं भयौ हौं	हम हुऐ कै भये हैं
मुखातब	तू तैं भयौ है	तुम हुऐ कै भये हौ
ग़ाइब	वह सो भयौ है	वे ते हुऐ कै भये हैं

मीजवईद

सेगए		
मुतकल्लिम	हौं मैं भयौ हो	हम हुऐ कै भये हे
मुखातब	तू तैं भयौ हो	तुम हुऐ कै भये हे
ग़ाइब	वह सो भयौ हो	वे ते हुऐ कै भये हे

मुस्तकबिल

सेगए		
मुतकल्लिम	हौं मैं होउगो के है हौं	हम हौंयगे कै है हैं
ग़ाइब	वह सो होयगो कै है है	वे ते हौंयगे कै है हैं
मुखातब	तू तैं होयगो कै हैव्है	तुम हो उगे कै हैव् हौ

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE

Perfect.

Singular.	Plural.
1. I was.	We were.
2. Thou wast.	You were.
3. He was.	They were.

Preterperfect

1. I have been.	We have been.
2. Thou hast been.	You have beei
3. He has been.	They have been.

Preterpluperfect.

1. I had been.	We had been.
2. Thou hadst been	You had been.
3. He had been	They had been.

Future.

1. I shall, or will be.	We shall, or will be.
2. Thou shalt, or wilt be	You shall, or will be.
3. He shall, or will be.	They shall, or will be.

अमर

सेगऐ

वाहिद		जमअ
मुतकल्लिम	हौं मैं हौं उं	हम हौंय
मुखातब	तू तैं हो	तुम होउ
ग़ाइब	वह सो होय	वे ते हौय

मुज़ारअ

सेगऐ

मुतकल्लिम	हौ मैं हौंउ	हम हौंय
मुखातब	तू तैं होय	तुम होउ
ग़ाइब	वह सो होय	वे ते हौय

मुज़ार अमाजी

सेगऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं भयोहौंउ	हम भये हौंय
मुखातब	तू तैं भयोहोय	तुम भयेहोउ
ग़ाइब	वह सो भयोहोय	वे ते भयेहौंय

माज़ीमुतमन्नी

सेगऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं होतो	हम होते
मुखातब	तू तैं होतो	तुम होते
ग़ाइब	वह सो होतो	वे ते होते

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

Imperative.

Singular.	Plural.
1. Let me be.	Let us be.
2. Be thou.	Be you.
3. Let him be.	Let them be.

Aorist, or Present Tense Subjunctive.

1. I be, or may be.	We be, or may be.
2. Thou hast, or mayst be	You be, or may be.
3. He be, or may be.	They be, or may be.

Preterperfect Subjunctive.

1. I may have been.	We may have been.
2. Thou mayst have been.	You may have been.
3. He may have been.	They may have been.

Imperfect Subjunctive.

1. I would, or might have been.	We, & c. have been.
2. Thou mightest, &c. have been.	You, &c. have been.
3. He, &c. have been.	They, &c. have been.

हालिमुतशक्की

वाहिद	जमग्र

सेगऐ

मुतक्लिम	हौं मे होतु हौंउगो हैव्हौं	हमहोत हौंयगे हैव्है
मुखातब	तू तैं लोतु होयगो हैव्है	तुमहोत होउगे हैव्हौ
गाइब	वह सो होतु होयगो हैव्है	वे ते होतहौंयगे हैव्हैं

माजीशरतीयः वर्डट्

से.गऐ

मुतक्लिम	हौं मैं भयोहोतो	हम भये होते
मुखातब	तू तैं भयोहोतो	तुम भये होते
गाइब	वह सो भयो होता	वे ते भये होते

माजीमुतशक्की

सेगऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं भयो हौंउगो हैव्हौं	हम भये हौंयगे हैव्है
मुखातब	तू ते भयो होयगो हैव्है	तुम भये होउगे हैव्हौ
गाइब	वह सो भयो लेयगो हैव्है	वे ते भये हौंयगे हैव्हैं

इसिहालिय

होतु होत होत होते

माजीमग्रतूफग्रलैहि

हो होकर होकै होको कै होकरकर

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

Present Doubtful.

Singular.	Plural.
1. I may be.	We may be.
2. Thou mayest be.	You may be.
3. He may be.	They may be.

Perfect Conditional.

1. I had, or might have been.	We had, or might have been.
2. Thou hadst, or mightest have been.	You had, or might have been.
3. He had, or might have been.	They had, or might have been.

Perfect doubtful.

1. I may have been.	We may have been.
2. Thou mayest have been.	You may have been.
3. He may have been.	They may have been.

Participle Present.

Being. Being.

Participle Preterperfect.

Having been.

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

Participle Active

Singular.	Plural.
Being	Being.

Participle Passive.

Been.

Future Proximate.
About to be.

Helping verbs in the passive Voice.

To Go

Present Tense.

1. I go.	We go.
2. Thou goest.	You go.
3. He goes.	They go.

Imperfect.

1. I was going.	We were going.
2. Thou wast going.	You were going.
3. He was going.	They were going.

माज़ीमुत्लक़

वाहिद		जमग्र
मुतकल्लिम	हौं मैं गयौ	हमगये
मुखातब	तू तैं गयौ	तुमगये
ग़ाइब	वह सो गयें	वे ते गये

माज़ीकरीब

से गए

मुतकल्लिम	हौं मैं गयौ हौं	हम गये हैं
मुखातब	तू तैं गयौ है	तुम गये है
ग़ाइब	वह सो गयौ है	वे ते गये हैं

माज़ीवईद

सेगए

मुतकल्लिम	हौं मैं गयौ हा	हम गये हे
मुखातब	तू तैं गयौ हो	तुम गये हे
ग़ाइब	वह सो गयौ हो	वे ते गयें हे

गऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं जाउगो जहौं	हम जायगे जैहैं
मुख़ातब	तू तैं जालयौ जैहै	तुम जागेउ जैहो
ग़ाइब	वह जो जायगो जैहै	वे ते जायगे जैहैं

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE.

Perfect Tense

Singular	Plural
1 I went	We went
2. Thou wentest.	You went.
3 He went	They went

Preterperfect

1 I have gone	We have gone
2 Thou hast gone	You have gone
3 He has gone.	They have gone

Pluperfect

1 I had gone	We had gone
2 Thou hadst gone	You had gone
3 He had gone.	They had gone

Future

1 I shall, or will go	We shall, or will go
2. Thou shalt, or wilt go	You shall or will go
3. He shall, or will go	They shall or will go

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE
Imperative.

Singular.	Plural.
1. Let me go.	Let us go.
2. Go thou.	Go you.
3. Let him go.	Let them go

Aorist, or present Tense Subjunctive.

1. I may go.	We may go.
2. Thou mayest go.	You may go.
3. He may go.	They may go.

Preterperfect subjunctive.

1. I may have gone.	We may have gone.
2. Thou mayest have gone.	You may have gone.
3. He may have gone.	They may have gone.

Imperfect subjunctive.

1. I would, or might have gone	We would, &c, gone.
2. Thou wouldst, &c. gone	We would, &c. gone.
3. He would, &c. gone.	They would, & c. gone.

हालिमुतशक्की

वाहिद		जमअ्

से गऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं जातु हौंउगो हैव् हौं	हमजात होयगेहैव्हैं
मुखातब	तू तैं जातु होयगो हैव्है	तुमजात होउगे हैव् हौ
गाइब	वह सो जात होयगो हैव्है	वे ते जात होंयगे हैव्हैं

माज़ीशरतीय: वईद

से गऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं गयोहोतो	हम गये होते
मुखातब	तू तैं गयोहोतो	तुम गये होते
गाइब	वह सो गयोहोतो	वे ते गये होते

माज़ीमुतशक्की

से गेऐ

मुतकल्लिम	हो मैं गयो हौंऊगो हैव्हौं	हम गये हौंयगें हैव् हैं
मुखातब	तू तैं गयो होयगो हुव्है	तुम गये होउगे हैव्हौ
गाइब	वह सो गयो होयगो हैव्है	वे ते गये हौंयगे हैव्हैं

इसिहालिया

जातु जातें

माज़ीमअ्तूपअ्लैहि

जा जाकर जाके जानरके जाकरकर

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE

Present Doubtful.

Singular.	Plural.
1. I may be going.	He may be going.
2. Thou mayest be going.	You may be going.
3. He may be going.	They may be going.

Perfect Conditional.

1. I might have gone.	We might have gone.
2. Thou mightest have gone.	You might have gone.
3. He might have gone.	They might have gone.

Perfect Doubtful.

1. I may have gone.	We may have gone.
2. Thou mayest have gone.	You may have gone.
3. He may have gone.	They may have gone.

Present Participle.

Going Going.

Participle preterperfect,

Having gone.

इस्मिफ़ाइल

जान वारो हारो	जान वारे हारे

इस्मिमफ़ऊल

गयोगयोभयो	गये गयेभए

मुश्तकबिलिकरीब

जान पर पै जवे पर पै कै गयो चातु है

राबिति सेगऐ मजहूल

लाज़िमी

मरनो मरवो

सेगऐ

	हाल	जमअ
वाहिद		
मुतकल्लिम	हों मैं मरतु हो	हम मरत है
मुखातब	तू तैं मरतु है	तुम मरत हो
गाइब	वह सो मरतु है	वे ते मरत हैं

इस्तिमरारी

सेग़ऐ

मुतकल्लिम	हों मैं मरतु हो	हम मरत है
मुख़ातब	तू तैं मरतुहो	तुममरत है
गाइब	वह सो मरतुहो	वै ते मरत है

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE PARTICIPLE ACTIVE

Going	Going.

Participle passive

Gone	Gone

Future Proximate

About to go

OF THE VERB NEUTER

To Die

Present Tense

Singular	Plural
1 I die, or am dying	We die, or are dying
2 Thou diest, or art dying	You die, or are dying
3 He dies or is dying	They die, or are dving

Imperfect

1 I was dying	We were dying
2 Thou wast dying	You were dying
3 He was dying	They were dying

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE.

Perfect Tense

Singular.	Plural.
1. I died.	We died.
2. Thou diedst.	You died.
3. He died.	They died.

Preterperfect.

1. I had died	We have died.
2. Thou hast died.	You have died.
3. He has died	They have died.

Pluperfect.

1. I have died.	We had died.
2. Thou hadst died.	You had died.
3. He had died.	They had died.

Future

1. I shall, or will die.	We shall, or will die.
2. Thou shalt, or wilt die.	You shall or will die.
3. He shall, or will die.	They shall, or will die.

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE.

Imperative.

Singular.	Plural.
1. Let me die.	Let us die.
2. Die thou.	Die you.
3. Let him die.	Let them die.

Aorist, or present Tense Subjunctive.

1. I die, or may die.	We die, or may di
2. Thou diest, or mayst die.	You die, or may die.
3. He dies, or may die	They die, or may die.

Preterperfect Subjunctive.

1. I may have died.	We may have died.
2. Thou mayest have died.	You may have died.
3. He may have died.	They may have died.

Imperfect Subjunctive

1. I couls, would, or might have died.	We could, &c. died.
2. Thou couldst, &c. died.	You could &c. died.
3. He could, &c. died.	They could, &c. died.

हालिमुतशक्की

वाहिद जमअ्

सेंग़ऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं मरतु होंउंगो हैव् हौं	हम मरत होयगें हैव्है
मुख़ातब	तू तैं मरतु होयगो हैव्है	तुम मरत होउगे हैव्हो
ग़ाइब	वह सो मरतु होयगो हैव्है	वे ते मरत होयगें हैव्हैं

माज़ीशरतीयः वई़द

सेंग़ऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं मर्यौहोतौ	हम मरे होते
मुख़ातब	तू तैं मर्यौ होतौ	तुम मरे होते
ग़ाइब	वह सो मर्यौ होतौ	वे ते मरे होते

माज़ीमुतशक्की

सेंग़ऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं मर्यौ होउगो हैव्हौं	हम मरे होयगें हैव्है
मुख़ातब	तू तैं मर्यौ होयगो हैव्है	तुम मरे होउगे हौंव्हो
ग़ाइब	वह सो मर्यौ होयगो हैव्है	वे ते मरे होयगे हैव्हैं

इस्मिहालियः

मरतु मरतौ मरत मरते

माज़ीमअ्तूफ़अ्लैहि

मर मरकर मरकै मरकरकै मरकरकर

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE

Present Doubtful.

Singular.	Plural.
1. I my be dying.	We may be dying.
2. Thou mayest be dying.	You may be dying.
3. He may be dying.	They may be dying.

Perfect Conditional.

1. I had, or might have died.	We had, or might have died.
2. Thou hadst, or mightest have died.	You had, or might have died.
3. He had, or might have died.	They had, or might have died.

Perfect Doubtful

1. I may have died.	We may have died.
2. Thou mayest have died	You may have died.
3. He may have died.	They may have died.

Participle Present.

Dying Dying

Participle Preterperfect.

Having died.

इस्मिफ़ाइल

वाहिद	जमम्
मरन वारौ हारौ	मरन वारे हारे

इस्मिमफ़ऊल

मर्‌यौ मर्‌यौ मयौ	मरे मरे मये

मुस्तक़बिलिक़रीब

मरन पर पै मरबे पर पै मर्‌यौ चाहत है

सैक़ए मअरूफ़

मारनौ मारबौ

हाल

सैगएँ

मुतकल्लिम	हौं मैं मारतु हौं	हम मारत हैं
मुखातब	तू तैं मारतु है	तुम मारत हौ
गाइब	वह सो मारतु है	वे ते मार हैं

इस्तिकरारी

सैगएं

मुतकल्लिम	हौं मैं मारतु हो	हम मारत हे
मुखानब	तू तैं मारतु हो	तुम मारत हे
गाइब	वह सो मारतु हो	वे ते मारत हे

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE

Participle Active.

Singular.	Plural.
Dying.	Dying.

Participle Passive.

Dead.	Dead.

Future Proximate.

About to die.

VERB ACTIVE.

To Beat.

Present Tense.

1. I beat, or am beating.	I beat, or are beating.
2. Thou beatest, or are beating.	You beat, or are beating.
3. He beats, or is beating.	They beat, or are beating.

Imperfect.

1. I was beating.	We were beating.
2. Thou wast beating.	You were beating.
3. He was beating	They were beating.

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

Perfect Tense.

Singular.	Plural.
1. I beat.	We beat.
2. Thou beatest.	You beat.
3. He beateth, or beats.	They beat.

Preterperfect.

1. I have beaten	We have beaten.
2. Thou hast beaten.	You have beaten
3. He hath, or has beaten.	They have beaten.

Pluperfect.

1. I had beaten.	We had beaten.
2. Thou hast beaten.	You had beaten.
3. He had beaten.	They had beaten.

Future.

1. I shall, or will beat.	We shall, or will beat.
2. Thou shalt, or wilt beat.	You shall, or will beat.
3. He shall, or will beat.	They shall, or will beat.

अमर

	वाहिद	जमम
सॅगऍ		
मुतकल्लिम	हौं मैं मारौ	हम मारैं
मुखातब	तू तैं मार	तुम मारौ
गाइब	वह सो मारैं	वे ते मारैं

मुजारअ

संगऍ		
मुतकल्लिम	हौं मैं मारौं	हम मारैं
मुखातब	तू तैं मारैं	तुम मारौ
गाइब	वह सो मारैं	वे ते मारैं

सॅगऍ		
मुतकल्लिम	मैंने मार्‌यौहोय मारे हौंय	हम ने नि मार्‌यौ होय मारेहोय
मुखातब	तू तैं ने मार्‌यौ होय मारे हौंय	तुम नैं नि मार्‌यौ होय मारे हौंय
गाइब	याने वाने जिन तिन उन मार्‌यौ होय मारे हौंय	जिननि तिननि उननि मार्‌यौ होय मारे हौंय

माजीमुतमन्नी

ंगऍ		
मुतकल्लिम	हौं मैं मारतौ	हम मारते
मुखातब	तू तैं मारतौ	तुम मारते
गाइब	वह सो मारतौ	वे ते मारते

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE

Imperative.

Singular.	Plural.
1. Let me beat.	Let us beat.
2. Beat thou.	Beat you.
3. Let him beat.	Let them beat.

Aorist, or present Tense Subjunctive.

1. I may beat.	We may beat.
2. Thou mayest beat.	You may beat.
3. He may beat.	They may beat.

Preterperfect Subjunctive.

1. I may have beaten.	We may have beaten.
2. Thou mayest have beaten.	You may have beaten.
3. He may have beaten.	They may have beaten.

Imperfect Subjunctive.

1. I would, or might have, or if I have beaten.	We would, &c beaten.
2. Thou wouldst, &c. beaten	You would, &c, beaten.
3. He could, &c beaten.	They would, &c, beaten.

हालिमुतशक्की

	वाहिद	जमम्
सेंगए		
मुतकल्लिम	हौं मैं मारतु होउंगौ हैवहौं	हम मारत होंयगे हैवहैं
मुखातव	तू तैं मारतु होयगौ हैवहै	वे ते मारत होंयगे हैवहै
गाइब	वह सो मारतु होयगौ हैवहै	वे ते मारत होयगे हैवहैं

माज़ीशरतीयश्र वईद

सेंगए		
मुतकल्लिम	मैंने मार्यौ होतौ मारे होते	हमने नि मार्यौ होतौ मारे होते
मुखातव	तू तैं मार्यौ होतो मारेहोते	तुम नें नि मार्यौ होतौ मारे होते
गाइब	वाने ताने विन तिन उन मार्यौ होतौ मारे होते	विननि तिननि उननि मार्यौ होतौ मारौ होते

माज़ीमुतशक्की

सेंगए		
मुतकल्लिम	मैं ने मार्यौ होयगौ हैवहै	हम ने नि मारे होयगे हैवहैं
मुखातब	तू तै ने मार्यौ होयगौ हैवहै	तुम ने नि मारे होयगे हैवहैं
गाइब	वाने ताने विन तिन उन मार्यौ होयगौ हैवहै	विननि तिननि उननि मारे होयगे हैवहैं

इस्महालियः

मारतु मारतौ — मारत मारते

माजीमग्रतूफ़ग्रलैहि

मार मारकर मारकै — मारकर्कै मारकरकर

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE.

Present Doubtful.

Singular.	Plural.
1. I may be beating.	We may be beating.
2. Thou mayest be beating.	You may be beating.
3. He may be beating.	They may be beating.

Perfect Conditional.

1. I had, or might have beaten	We had, or might have beaten.
2. Thou hadstest, or might have beaten.	You had, or might have beaten.
3. He had, or might have beaten.	They had, or might have beaten.

Perfect Doubtful.

1. I may have beaten.	We may have beaten.
2. Thou mayest have beaten.	You may have beaten.
3. He may have beaten.	They may have beaten.

Participle Present.

Beating Beating

Participle preterperfect,

Having beaten.

इस्मिफ़ाइल

मारन वारो हारो   मारन वारे हारे

इस्मिमफ़ुउल

मार्‌यो मार्‌यो भयो   मारे मारे भये

मुस्तकविलिक़रीव

मार न ने पर पै है कँ मार्‌यो चाहतु है

सेगऐ मजहूल

मार्‌यो जानों मार्‌योजैवो

सेग़ऐ

वाहिद	हाल	जमग्र
मुतकल्लिम	हौं में मार्‌यो जातु हौं	हम मारे जात हैं
गाइव	वह सो मार्‌यो जातु है	वे ते जारे जात हैं
मुखातव	तू तें मार्‌यो जातु है	तुम मारे जात हो

इस्तिमरारी

संगऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं मार्‌यो जातु हा	हम मारे जात हैं
मुखातव	तू तें मार्‌यो जातु हो	तुम मारे जात हैं
गाइव	वह सो मार्‌यो जातु हो	वे ते मारे जात हैं

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE.

Participle Active.

Beating.	Beating.

Participle Passive.

Beaten.	Beaten.

Future Prosimate.

About to beat.

IN THE PASSIVE VOICE.

To be beaten

Present Tense.

Singular.	Plural.
1. I am beaten.	We are beate
2. Thou art beaten.	You are beat
3. He is beaten.	They are bea

Imperfect.

1. I was then beaten.	We were then beaten.
2. Thou wast then beaten.	You were then beaten.
3. He was then beaten.	They were then beaten.

माज़ीमतलक़

वाहिद		जमअ

सॅगए

मुतकल्लिम	हौं मैं मार्‌यौ गयौ	हम मारे गये
मुखातब	तू तैं मार्‌यौ गयौ	तुम मारे गये
गाइब	वह सो मार्‌यौ गयौ	वे ते मारे गये

माज़ीकरीब

सॅगए

मुतकल्लिम	हौं मैं मार्‌यौ गयौहौं	हम मारे गये हैं
मुखातब	तू तैं मार्‌यौ गयौ है	तुम मारे गये हौ
गाइब	वह सो मार्‌यौ गयौ है	वे ते मारे गये हैं

माज़ीबईद

सॅगए

मुतकल्लिम	हौं मैं मारयौ गयौ हो	हम मारे गये हे
मुखातब	तू तैं मार्‌यौ गयौ हो	तुम मारे गये हे
गाइब	वह सो मार्‌यौ गयौ हो	वे ते मारे गये हे

मुस्तकबिल

सगए

मुतकल्लिम	हौं मैं मार्‌यौ जाउगौ जैहैं	हम मारे जायगे जैहैं
मुखातब	तू तैं मारयौ जायगौ जैहै	तुम मारे जाउगे जैहौ
गाइब	वह सो मार्‌यौ जायगौ जैहै	वे ते मारे जायगे जैहैं

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE.

Perfect Tense.

Singular.	Plural.
1. I was beaten.	We were beaten.
2. Thou wast beaten.	You ware beaten.
3. He was beaten.	They Were beaten.

Preterperfect.

1. I have been beaten.	We have been beaten.
2. Thou hast been beaten.	You have been beaten.
3. He has been beaten.	They have been beaten.

Pluperfect.

1. I had been beaten.	We had been beaten.
2. Thou hadst been beaten.	You had been beaten.
3. He had been beaten.	They have been beaten.

Future.

1. I shall, or will be beaten.	We shall, or will be beaten.
2. Thou shalt, or wilt be beaten.	You shall, or will be beaten.
3. He shall or will be beaten.	They shall, or will be beaten.

अमर

	वाहिद	जमग्र
सॅगऐ		
मुतकल्लिम	हौं मैं मार्यौजाउ जाऊं	हम मारे जाय
मुखातब	तू तैं मार्यौजाय	तुम मारे जाउ
गाइब	वह सो मार्यौ जाय	वे ते मारे जाय

मुजारअ

सॅगऐ

मुतक्लिम	हौं मैं मार्यौजाउ जाऊ	हम मारे जाय
मुखातब	तू तैं मार्यौजाय	तुम मारे जाउ
गाइब	वह सो मार्यौजाय	वे ते मारेजाय

मुजारअमाजी

सॅगऐ

मुतक्लिम	हौं हैं मार्यौगयौहोउ	हम मारे गये होय
मुखातब	तू तैं मार्यौगयौहोय	तुम मारे गये होउ
गाइब	वह सो मारयौगयौहोय	वे ते मारे गये होय

माजीमुतमन्नी

सॅगऐ

मुतक्लिम	हौं मैं मार्यौजातौ	हम मारे जाते
मुखातब	तू तैं मार्यौजातौ	तुम मारे जाते
गाइब	वह सो मार्यौजातौ	वे ते मारे जाते

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE.

Imperative.

Singular.	Plural.
1. Let me be beaten.	Let us be beaten.
2. Be thou beaten.	Be you beaten.
3. Let him be beaten.	Let them be beaten.

Aorist, or present Tense Subjunctive.

1. I may be beaten.	We may be beaten.
2. Thou mayest be beaten.	You may be beaten.
3. He may be beaten.	They may be beaten.

Preterperfect Subjunctive.

1. I may have been beaten.	We may have been beaten.
2. Thou mayest have been beaten.	You may have been beaten.
3. He may have been beaten.	They may have been beaten.

Imperfect Subjunctive.

1. I would, or might have, or if I had been beaten.	We would, &c. been beaten.
2. Thou wouldst, &c. been beaten.	You would, &c. been beaten.
3. He could, &c. been beaten.,	They would, &c. been beaten.

हालिमुतशक्की

	वाहिद	जमग्र
सेंगऐ		
मुतकल्लिम	हौं मैं मार्‍यौजातु होउ गो हैव्हौं	हम मारे जात होयगे हैव्हैं
मुखातब	तू तैं मार्‍यौजातु होयगो हैव्हो	तुम मारे जात हाउगे हैव्हो
गाइब	वह सो मार्‍यौ जातु होयगो हैव्हैं	वे ते मारेजात होयगे हैव्हैं

माजीशरतीयः वईट्

सेंगए		
मुतकल्लिम	हौं मैं मार्‍यौ गयौ होतु होतौ	हम मारेगये हात हाते
मुखातब	तू तैं मार्‍यौगयौहोतु होतौ	तुम मारे गये होत होते
गाइब	वह सो मार्‍यौगयौ होत होतौ	वे ते मारे गये होत होते

माजीमुतशक्की

सेंगए		
मुतकल्लिम	हौ मैं मार्‍यौगयौ होउंगो हैव्है	हम मारे गये होयगें हैव्हैं
मुखातब	तू तैं मार्‍यौगयौ होयगो हैव्है	तुम मारे गये होउगे हवही
गाइब	वह सो मार्‍यौगयौ होयगो हैव्है	वे ते मारे गये होयगे हैव्हैं

इस्मिहालियः

मार्‍योजातु मार्‍योजातौ मार्‍योजातुभयौ मारेजात भये मारे जाते भये

माज़ीमग्रतूफ़ग्रलैहि

मार्‍योजा मार्‍योजाकर मार्‍योजाके मार्‍योजाकरके मार्‍योजाकरकर

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE.

Present Doubtful

Singular.	Plural.
1. Perhaps I am beaten.	Perhaps we are beaten.
2. Perhaps thou art beaten.	Perhaps you are beaten.
3. Perhaps he is beaten.	Perhaps they are beaten.

Perfect Conditional.

1. I had, or might have been beaten.	We had, or might have been beaten.
2. Thou hadst, or mightest have been & c.	You had, &c. been beaten.
3. He had, or might have beaten.	They had, &c. been beaten.

Perfect Doubtful.

1. I may have been beaten.	We may have been beaten.
2. Thou mayest have been &c	You may have been beaten.
3. He may have been beaten.	They may have been beaten.

Participle Present.

Being beaten.	Being beaten.

Participle Preterperfect,

Having been beaten.

इस्मिफ़ाइल

मार्‌यौ जान वारो हारो मारेजान वारे हारे

इस्मिफ़ऊल

मार्‌यौगयौ भयौ मारेगये भये

मुस्तकविलिकरीव

मारेजान पर पै मार्‌यौगयौ चाहतु है

सेगऐ मअरूफ़

पहुँचनौं पहुचवौ

सेंगऐ

वाहिद	हाल	जमअ
मुतकल्लिम	हौं मैं पहुचतु हौं	हम पहुचतु हौं
मुखातव	तू तैं पहुचतु है	तुम पहुचत हौ
ग़ाइव	वह सो पहुचतु है	वे ते पहुचत हैं

इस्तिमरारी

सेंगऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं पहुचतुहो	हम पहुचत है
मुखातव	तू तैं पहुचतु है	तुम पहुचत हौ
गाइव	वह सो पहुचतु हो	वे ते पहुचत हे

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE.

Participle Active.

Being beaten.	Being beaten.

Participle Passive.

Been beaten.	Been beaten

Future Proximate.

About to have been beaten.

ACTIVE VOICE.

To arrive.

Present Tense.

Singular	Plural.
1. I am arriving	We are arriving.
2. Thou art arriving.	You are arriving.
3. He is arriving	They are arriving.

Imperfect.

1. I was then arriving.	We were then arriving.
2. Thou wast then arriving.	You were then arriving.
3. He was then arriving.	They were then arriving.

माज़ीमुतलक़

	वाहिद	जमम
सेंगऐ		
मुतकल्लिम	हौं मैं पहुच्यो	हम पहुचे
मुखातव	तू तें पहुच्यो	तुम पहुचे
गाइब	वह सो पहुच्यो	वे ते पहुचे

माज़ीकरीब

सेंगऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं पहुच्यो हौं	हम पहुचे हैं
मुखातव	तू तें पहुच्यो है	तुम पहुचे हौ
गाइब	वह सो पहुच्यो है	वे ते पहुचे है

माज़ीवईद

सेंगऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं पहुच्यो हो	हम पहुचे हे
मुखातव	तू तें पहुच्यो हो	तुम पहुचे हे
गाइब	वह सो पहुच्यो हो	वे ते पहुचे हे

मुस्तकबिल

सेंगऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं पहुचिहौं पहुचौंगो	हम पहुचेंगे पहुचिहैं
मुखातव	तू तें पहुचेंगो पहुचिहै	तुम पहुचौगे पहुचिहौ
गाइब	वह सो पहुचेंगो पहुचिहै	वे ते पहुचेंगे पहुचिहैं

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

Perfect Tense.

Singular.	Plural.
1. I arrived.	We arrived.
2. Thou arrivedst.	You arrived.
3. He arrived.	They arrived.

Preterperfect.

1. I have arrived	We have arrived.
2. Thou hast arrived.	You have arrived.
3. He has arrived.	They have arrived.

Pluperfect.

1. I had arrived.	We had arrived.
2. Thou hadst arrived	You had arrived.
3. He had arrived.	They had arrived.

Future.

1. I shall, or will arrive.	We shall, or will arrive.
2. Thou shalt, or wilt arrive.	You shall, or will arrive.
3. He shall, or will arrive.	They shall, or will arrive.

अमर

वाहिद		जमअ
सेंगऐ		
मुतकल्लिम	हौं मैं पहुचौ	हम पहुचें
मुखातब	तू तैं पहुचै	तुम पहुचौ
गाइब	वह सो पहुचै	वे त पहुचैं

मुजारअ

सेंगऐ		
मुतकल्लिम	हौं मैं पहुचौं	हम पहुचैं
मुखातब	तू ते पहुचै	तुम पहुचौ
गाइब	वह सो पहुचै	वे ते पहुचैं

मेजारअमाज़ी

सेंगऐ		
मुतकल्लिम	हौं मैं पहुच्योहोउ	हम पहुच होय
मुखातब	तू तैं पहुच्यो होय	तुम पहुचे होउ
गाइब	वह सो पहुच्योहोय	वे ते पहुचे हाय

माज़ीमुतमन्नी

सेंगऐ		
मुकतल्लिम	हौं मैं पहुचतो	हम पहुचते
मुखातब	तू तैं पहुचतो	तुम पहुचत
गाइब	वह सो पहुचतो	वे ते पहुचते

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

Imperative.

Singular.	Plural.
1. Let me arrive.	Let us arrive.
2. Arrive thou.	Arrive you.
3. Let him arrive.	Let them arrive.

Aorist, or Present Tense Subjunctive.

1. I arrive, or may arrive	We arrive, or may arrive.
2. Thou arrivest, or mayest Arrive.	You arrive, or may arrive.
3. He arrives, or may arrive.	They arrive, or my arrive.

Preterperfect Subjunctive

1. I may have arrived.	We may have arrived.
2. Thou mayest have arrived.	You may have arrived.
3. He may have arrived.	They may have arrived.

Imperfect Subjunctive.

1. I would, or might have, arrived.	We would, &c. arrived.
2. Thou Wouldst, &c. arrived.	You would, &c. arrived.
3. He could, &c. arrived.	They would, &c. arrived.

हालिमुतशक्की

	वाहिद	जमअ
सेंगऐ		
मुतकल्लिम	हों मैं पहुचतु होउगो हैव्हों	हम पहुचत हौंयगे हैव्हैं
मुखातब	तू तैं पहुचतु होयगो हैव्है	तुम पहुचत होउगे हैव्हो
गाइब	वह सो पहुचतु होयगो हैव्है	वे ते पहुचत हौंयगे हैव्है

माजीशरतीयः वईद

सेंगऐ		
मुतकल्लिम	हों मैं पहुच्यौहोतो	हम पहुचें होते
मुखातब	तू तैं पहुच्योहोतो	तुम पहुचें होते
गाइब	वह सो पहुच्योहोतो	वे ते पहुचे होते

माजीमुतशक्की

सेंगऐ		
मुतकल्लिम	हों मैं पहुच्यो होउगो हैव्हों	हम पहुचे हौंयगे हैव्हैं
मुखातब	तू तैं पहुच्यो होयगो हैव्है	तुम पहुचे होउगे हैव्हों
गाइब	वह सो पहुच्यो होयगो हैव्है	वे ते पहुचे होयगें हैव्है

इस्मिहालियः

पहुचतु पहुचतो पहुत पहुते

माजीमग्रतूफग्रलैहि

पहुच पहुचकर पहुमकै पहुचवरकै पहुचवरकर

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

Present Doubtful

Singular.	Plural.
1. I may be arriving.	We may be arriving.
2. Thou mayest be arriving.	You may be arriving.
3. He may be arriving.	They may be arriving.

Perfect Conditional.

1. I had, or might have arrived.	We had, or might have arrived.
2. Thou hadst, or mightest have arrived.	You had, or might have arrived.
3. He had, or might have arrived.	They had, or might have arrived.

Perfect Doubtful.

1. I may have arrived.	We may have arrived.
2. Thou mayest have arrived.	You may have arrived.
3. He may have arrived.	They may have arrived.

Participle Present.

Arriving Arriving.

Participle Preterperfect.

Having arrived.

इस्मिफ़ाइल

पहुचनि वारौ हारौ — पहुचनि वारे हारे

इस्मिमफ़ऊल

पहुच्यौ भयौ — पहुचे भये

मुस्तकबिलिकरीब

पहुचवे पर पं है पहुच्यौ चाहतु है

सेंगऐ मअ्रूफ

पहुंचावनौ पहुचैवौ

वाहिद	हाल	जमम
सेंगऐ		
मुतकल्लिम	हौं मं पहुचावतु हौं	हम पहुचावत हं
मुखातब	तू तें पहुचावतु है	तुम पहुचावत हौ
गाइब	वह सो पहुचावतु है	वे ते पहुचावत हैं

सेंगऐ

मुतकल्लिम	हौं मं पहुचावतुहो	हम पहुचावत हे
मुखातब	तू तें पहुचावतु हो	तुम पहुचावत हे
गाइब	वह सो पहुचवतु हो	वे ते पहुचावत हे

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

Participle Active.

Arriving.	Arriving.

Participle Passive.

Arrived.	Arrived.

Future Proximate.

About to arrive.

CONJUGATION OF THE VERB ACTIVE, IN THE ACTIVE VOICE.

To reach, or to cause to arrive.

Present Tense.

Singular.	Plural.
1. I am reaching.	We are reaching.
2. Thou art reaching.	You are reaching.
3. He is reaching	They are reaching.

Imperfect.

1. I was reaching.	We were reaching.
2. Thou wast reaching.	You were reaching.
3. He was reaching.	They were reaching.

माज़ीमुतलक़

सेंगुऐ

वाहिद		जमअ़
मुतकल्लिम	मैं ने पहुचायो	हम ने नि पहुचाऐ
मुख़ातब	तू तैं ने पहुचायो	तुम ने नि पहुचाऐ
ग़ाइब	वाने ताने विन तिन उन पहुचायो	विननि तिननि उननि पहुचाऐ

माज़ीकरीब

सेंगुऐ

मुतकल्लिम	मैं ने पहुचायो है	हम ने नि पहुचाऐ हैं
मुख़ातब	तू तैं ने पहुचायो है	तिननि विननि उननि पहुचाऐ हैं

माज़ीवई़द

सेंगुऐ

मुतकल्लिम	मैं ने पहुचायो हो	हम ने नि पहुचाऐ हे
मुख़ातब	तू तैं ने पहुचायो हो	तुम ने नि पहुचाऐ हे
ग़ाइब	वाने ताने विन तिन उन पहुचायो हो	विननि तिननि उननि पहुचाऐं हे

मुस्तकबिल

सेंगुऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं पहुचाऊगो पहुचो हौं	हम पहु चावेंगे चेंहैं
मुख़ातब	तू तैं पहुचावेगो पहुचै है	तुम पहु चाओगे चेंहो
ग़ाइब	वह सो पहुचावेगो पहुचै है	वे ते पहु चावेंगे चेंहैं

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

Perfect Tense.

Singular.	Plural.
1. I reached.	We reached.
2. Thou reached.	You reached.
3. He reached.	They reached.

Preterperfect.

1. I have reached.	We have reached.
2. Thou hast reached.	You have reached.
3. He has reached.	They have reached.

Pluperfect.

1. I had reached.	We had reached.
2. Thou hadst reached.	You had reached.
3. He had reached.	They had reached.

Future.

1. I shall, or will reach.	We shall, or will reach.
2. Thou shalt, or wilt reach.	You shall, or will reach.
3. He shall, or will reach.	They shall, or will reach.

अमर

वाहिद		जमअ

सॅगऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं पहुचाऊ औं	हम पहुचावैं
मुखातब	तू तैं पहुचावैं	तुम पहुचा वो औ
ग़ाइब	वह सो पहुचावैं	वे ते पहुचावैं

मुजारअ

सॅगऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं पहुचा ऊ औं	हम पहुचावैं
मुखातब	तू तैं पहुचावैं	तुम पहुचा वो औ
ग़ाइब	वह सो पहुचावैं	वे ते पहुचावैं

मुजारअमाज़ी

सॅगऐ

मुतवल्लिम	मैं ने पहुचायौ हाय	हम ने नि पहुचाये हाय
मुखातब	तू तैं नें पहुचायौ होय	तुम ने नि पहुचाये होय
ग़ाइब	वानें तानें विन तिन उन पहुचायौ हाय	विननि तिननि उननि पहुचाये होय

माज़ीमुतमन्नी

सॅगऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं पहुचावतौ	हम पहुचावते
मुखातब	तू तैं पहुचावतौ	तुम पहुचावते
ग़ाइब	वह सो पहुचावतौ	वे ते पहुचावते

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

Imperative.

Singular.	Plural.
1. Let me reach.	Let us reach.
2. Reach thou.	Reach you.
3. Let him reach.	Let them reach.

Aorist, or present tense subjunctive.

1. I may reach.	We may reach.
2. Thou mayest reach.	You may reach.
3. He may reach.	They may reach.

1. I may have reached.	We may have reached.
2. Thou mayest have reached.	You may have reached.
3. He may have reached.	They may have reached.

Imperfect Subjunctive.

1. I would, or might have or (if) I had reached.	We would, &c. reached.
2. Thou &c. reached.	You would &c. reached.
3. He would, &c. reached.	They would, &c. reached.

हालिमुतशक्की

वाहिद	जमम

सेंगऐ

मुतकल्लिम	हौं में पहुचावतु हाउगो हैवहै	हम पहुचावत होयगे हैवहैं
मुखातब	तू तें पहुचावतु होयगो हैवहै	तुम पहुचावत होउगे हैवहौ
गाइब	वह सो पहुचावतु होयगो है है	वे ते पहुचावत होंयगे है हैं

माज़ीशरतीयः वईद

सेंगऐ

मुतकल्लिम	मैं ने पहुचायो होतौ	हम ने नि पहुचाये होते
मुखातब	तू तैंने पहुचायो होतौ	तुम ने नि पहुचाये होते
गाइब	वाने ताने विन तिन उन पहुचायो होतौ	विननि तिननि उननि पहुचाये होते

माज़ीमुतशक्की

सेंगऐ

मुतकल्लिम	मैं ने पहुचायो होयगो हैवहै	हम ने नि पहुचाये होयगे हैवहै
मुखातब	तू तें पहुचायो होयगो हैवहै	तुम ने नि पहुचाये हायगे हैवहैं
गाइब	वाने ताने विन तिन उन पहुचायो होयगो हैवहै	विननि तिननि उननि पहुचाये होगगे हैवहै

इस्मिहालिय

पहुचावतु तौ	पहुंचावतु भयौ	पहुचावत कैं पहुचावते भये

माजीमअतूफअलैहि

पहुचाय	पहुचायकर पहुचायकरकैं	पहुचायकरकर

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.
Present Doubtful.

Singular.	Plural.
1. I may be reaching.	We may be reaching.
2. Thou mayest be reaching.	You may be reaching.
3. He may be reaching.	They may be reaching.

Perfect Conditional.

1. I had, or might have reached.	We had, or might have reached.
2. Thou hadst, or mightest have reached.	You had, or might have reached.
3. he had, or might have reached.	They had, or might have reached.

Perfect Doubtful.

1. I may have reached.	We may have reached.
2. Thou mayest have reached.	You may have reached.
3. He may have reached.	They may have reached.

Participle Present.

Reaching. Reaching.

Participle Preterperfect.

Having reached.

इस्मिफ़ाइल

पहुंचावन वारो हारो	पहुंचावन वारे हारे

इस्मिमफऊल

पहुच्यो पहुच्यो भयो	पहुचाये भये

मुस्तकबिलिकरीब

पहुचावन पर पं है	पहुचायो चाहतु है

सेंगएं मअ़रूफ

मारसकनौं मारसकबौ

सेंगएं

वाहिद	हाल	जमअ़
मुतकल्लिम	हौं मैं मार सकतु हौं	हम मार सकत हैं
मुख़ातब	तू तैं मार सकतु है	तुम मार सकत हौ
ग़ाइब	वह सो मार सकतु है	वे ते मार सकत हैं

इस्तिमरारी

सेंगऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं मार सक्तु हो	हम मार सक्त हे
मुख़ातब	तू तैं मार सक्तु हो	तुम मार सक्ते हे
ग़ाइब	वह सो मार सकतु हा	वे ते मार सक्त हे

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

Participle Active.

Reaching. Reaching.

Participle Passive.

Reached. Reached.

Future Proximate.

About to reach.

ACTIVE VOICE.

To be able to beat.

Present Tense.

Singular.	Plural.
1. I am able to beat.	We are able to beat.
2. Thou art able to beat.	You are able to beat.
3. He is able to beat.	They are able to beat.

Imperfect.

1. I could beat or was able to beat.	We could &c. beat.
2. Thou couldest &c, beat.	You could &c. beat
3. He could &c. beat.	They could &c. beat.

माज़ीमुतलक़

सेंगऐ

	वाहि.द	जमग्र
मुतकल्लिम	हौं मैं मार सक्यो	हम मार सके
मुखातव	तू तैं मार सक्यो	तुम मार सके
गाइब	वह सो मार सक्यो	वे ते मार सके

माज़ीकरीव

सेंगऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं मार सक्यो हौं	हम मार सके हैं
मुखातव	तू तैं मार सक्यो है	तुम मार सके हौ
गाइब	वह सो मार सक्यो है	वे तें मार सके हैं

माज़ीयई.द

सेंगऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं मार सक्यो हो	हम मार सके हे
मुखातव	तू तैं मार सक्यो हो	तुम मार सके हे
गाइब	वह सो मार सक्यो हो	वे तें मार सके हे

मुस्तकबिल

सेंगऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं मार सकैंगो सकिहौं	हम मार सकेंगे सकिहैं
मुखातव	तू तैं मार सकैंगो सकिहै	तुम मार सकोगे सकिहौ
गाइब	वह सो मार सकैंगो सकिहै	वे ते मार सकेंगे सकिहैं

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

Perfect Tense

	Singular	Plural
1	I could beat	We could beat
2	Thou could beat	Yon could beat
3	Ho could beat	They could beat

Preterperfect

1	I have been able to beat	We have been able to beat
2	Thou hast been able to beat	You have been able to beat
3	He has been able to beat	They have been able to beat

Pluperfect

1	I had been able to beat	We had been able to beat
2.	Thou hadst been able to beat	You had been able to beat
3	He had been able to beat	They had been able to beat

Future

1	I shall, or will be able to beat	We shall, or will be able to beat
2	Thou shalt, or wilt be able to beat	You shall, &c be able to beat
3	He shall, or will be able to beat	They shall, &c to be able to beat

अमर

वाहिद	जमग्र

मुजारअ्

सेंगए

मुतकल्लिम	हों मैं मार सकों	हम मार सकैं
मुखातव	तू तैं मार सकै	तुम मार सको
गाइब	वह सो मार सकै	वे ते मार सकैं

माज़ीमुतमन्नी

सेंगए

मुतकल्लिम	हौं मैं मार सकतौ	हम मार सकते
मुखातव	तू तैं मार सकतौ	तुम मार सकते
गाइब	वह सो मार सकतौ	वे ते मार सकते

हालिमुतशक्की

सेंगए

मुतकल्लिम	हौं मैं मारसक्तु होउगौं हैव्है	हम मारसक्त होंयगे हैंव्हैं
मुखातव	तू तैं मार सक्तु होयगो हैव्है	तुम मारसक्त होउगे हैव्हो
गाइब	वह सो मार सक्तु होयगो	वे ते मार सक्त होयगे हैंव्हैं

हैव्है

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

Imperative.

Singular.	Plural.

Aorist &c.

1. I may be able to beat.	We may be able to beat.
2. Thou mayest be able to beat.	You may be able to beat.
3. He may be able to beat.	They may be able to beat.

Imperfect Subjunctive.

1. I may have been able to beat.	We may have been able to beat.
2. Thou mayest have been able to beat.	You may heve been able to beat.
3. He may have been able to beat.	They may have been able to beat.

Preterperfect Subjunctive.

गपत नामः

गलत	सही.ह.	सफा	सतन
का	को	४	८
का	कों	४	१०
वे	के	५	१३
पहुत पहुते	पहुचतें पहुचते	३०	१८

ERRATA.

Page 9. 2d person Sing. of Aorist, read thou beest, for thou hast.

10 pl. of Participle present. read Being, for being.

22 Line Ist, read Active for Passive.

23 Line Ist, read Active for Passive.

25 3d Person Sing. of Emperfect Subjunctive, read He would, for He could.

KITAB COLLEGE FORT WILLIAM
SEAL

प्रकाश नाममाला

[मियाँ नूर कृत]

श्री गणेशायनम्

प्रकाश नाममाला लिष्यते ॥ मियाँ नूर कृत भाषा ॥

दोहा ॥

प्रथम नमो परब्रह्म कौ ॥ जो परमातम ईस ॥
नामन की माला करौ ॥ सुमिरो जस जगदीश ॥१॥
आल रसूल कबूल कुल ॥ जग में जागति जोत ॥
दान वली भुज बल अली ॥ कीनो वंस उदोत ॥२॥
पान जहां नव षंड में ॥ प्रगट बहादुर षान ॥
जाके दान कृपांन कौ ॥ साहि करत सनमांन ॥३॥
षांन जहा बहादुर वली । जफर जंग जिह नाम ।
सिपहदार षांनंद तिह । जीते अरि संग्राम ॥४॥
साहि सराहत सर्वदा । जानत सब संसार ।
सिपहदार षां कौ सुजस । पारावार सुपार ॥५॥
सिपहदार को बहादुर । ताको नादिर नूर ।
कादर करयो उदार बर । कवि कुल जीवनिमूर ॥६॥
पोथी ग्रथ कथानि कौ । जानत सकल विधान ।
नूरै रचौ करतार को । दाता सुघर सुजान ॥७॥
ग्यान दान बिनु ग्यान कौ । अधिकारी नहि कोइ ।
नूर नाम ही दाम को । ज्यो परमारथ होइ ॥८॥
परमारथ उपगार बिनु । परमारथ न लहाहि ।
नूर जनम ताकौ सफल । जिह अस बोल रहाहि ॥९॥
यातै यह संछेप सो । माला रची बनाइ ॥
नूर नाम जग में अमर । पढत चित्त बिरमाइ ॥१०॥

ईश्वर नाम :

परब्रह्म पूरन पुरुष । परमेश्वर परधान ॥
परं जोति अविगत अलष । अविनासी भगवान ॥११॥
निर्विकार निर्गम विभु । निरंजन जगदीस ॥
सर्व दरसी सरवज्ञ अज । नाथ चिदानन्द ईस ॥१२॥
जाको आदि न अंत है । नहि आकार न रूप ॥
ताको नाम कहा कहो । विरद अनूप अनूप ॥१३॥
मैं अजान जानो नही । एक नाम कौ ग्यान ।
अपने मन को सुद्धि कौ । दोहा बुद्धि प्रवान ॥१४॥
बालक हू सम कै कछू । पढ़ै जु या को नाम ।
अमर कोस तै साढि कै । कीनी प्रगट सुदाम ॥१५॥

मत्रह सै चवन वरस । विजै दसिम इषु माम ।
नूर नाम माला करी । भाषा नाम प्रकास ।।१६।।
पहलै पीछै नाम को मोहि न कछू बिचार
जैसे समझ्यौ चित्त मैं । तैसैं करो उचार ।।१७।।

कृष्ण नाम :

विस्नु नारायन क्रिस्न हरि वैकुंठ गोविन्द ।
माधव दामोदर स्वंभू । इंद्रा वर्ज उपेंद्र ।।१८।।
चक्रपाणि श्रो चतुर्भुज । पद्म नाम दैत्यारि ।
कैटभ जुत विश्वम्भर । जनार्दन कंसारि ।।१६।।
विष्वक्सेन त्रिविक्रम । हृषी केस विश्व रूप ।
मुरु मर्दन रु मुकुंद सौ । नरतक सुमनूप ।।२०।।
श्री पति पुरुषोत्तम विभुः । गरुडध्वज जलसायि ।।
विष्टरश्रवा अधोक्षजः ।। वासुदेव जल सायि ।।२१।।
मधुरिपु अच्युत सार्गंर । शौरि पुंडरीकाक्षि ।।
पीतांबर वनमाल सो श्री वत्स लाछन साक्षि ।।२२।।
केसव वलि ध्वंसी वहुरि । यज्य पुरुष सु पुरान ।।
पुत्र प्रगट वसुदेव कौ । श्रानक दुंदभिजान ।।२३।।

तीर्थंकर नाम :

विनायक सर्वज्ञ जिन । वीतराग अरहत ।
अछय वादी मारजित । धर्म्मराज मुनि संत ।।२४।।
षडभिज्ञ: दसबल सुगत । बुद्ध लोक जित जान ।
शास्ता श्रीघन तथागत । समत भद्र भगवान ।।२५।।

गौतम नाम :

मायादेवीसुत प्रगट । सौधोदनि रविवीर ।।
साक्य सिंघ सर्वाथ सिघ । सावय मुनि मति धीर ।।२६।।

कृष्ण के आयुध नाम :

हरि कौस्तुभ मणि पाच जन्य सष सुदर्शन चक्र ।
नंदक असि कौमोदकी गदा वलिष्ट प्रवक्र ।।२७।।

गरुण नाम :

मरुत्मान् तार्क्ष गरुड ।। वैनतेय खगईस ।
गावक श्रो नागभुक् सुपर्णरथ, जगदीस ।।२८।।

वलिभद्र नाम :

हलधर श्ररु अच्युताग्रज । रेवतीरमण राम ।।
प्रलवघ्न बलदेव सो । मुसली पालक नाम ।।२६।।

कालिन्द्री भेदन बल । सकर्षण सीर पाणि ॥
रौहिणेय तालाक मो ॥ नीलाबर तिह्जाणि ॥३०॥

कमला नाम

श्रीपद्मा पद्मालया रमाभार्गवीमा सु ॥
लोक जननी छीरा ब्धिजा बिस्नुप्रिया इदिरा सू ॥३१॥

कामदेव नाम

काम मदन मनमथ समर । मकरध्वज सुअनग ॥
दप्पक मन भव आत्मभू । पुहुप चापु वहुरग ॥३२॥
मनसिज रतिपति प्रद्युम्न । मीनकेतु अरु मार ॥
मैनअन्य-नज अब्रम्ह सू बिरही जननि बिदारि ॥३३॥
सबरारि कदर्प पुनि नाम पच सरताहि ॥
बिनुक वहुरि झष केतु । अनुरुद्ध उपापति आहि ॥३४॥

काम के पचवान

मोह उचाटन बसिकरन उनमद ताप अपार ॥
पच वान हैं काम के तीनि लोक व्योहार ॥३५॥

पितामह नाम:

ब्रह्मा चतुरानन दुहिण आत्मभू सुर जेष्ट ॥
स्रष्टा वेधा बिधाता । प्रजापति परमेष्ट ॥३६॥
विधि विरचि कमलासन । अब्ज जोनि लोकेश ॥
हिरण गर्भ औ स्वय भू बिस्वसृज पितामहेश ॥३७॥
धिषण भिषण अज कमल भू वाहनहस बपान ॥
सुता सारदा पुत्र तिहि नारद प्रगट प्रवान ॥३८॥

मानसीक पुत्र ब्रह्मा का

सनक सनदन सनातन सनत कुमार विचार ।
ब्रह्मा सुत बैधात्रि कहि मानसीक एच्यार ॥३९॥

महादेव नाम

शभु ईश शिव विश्वपति । शूलीभव ईशान ॥
शकर ईश्वर शर्व मृड । स्थाणु रुद्र सोई जान ॥४०॥
चद्र सिषर सु गिरीश पुनि ॥ भूतेश्वर सर्वज्ञ ॥
कपाल भृत् प्रथमाधिपति । हर वृषभध्वजभर्ग ॥४१॥
व्योम केस अधकरिपु । क्रतुध्वसी सित कव ॥
भीम महेश्वर समर हर गगाधर श्री कव ॥४२॥
षड परसु मृत्युजय । कृति वासा सिपिविष्ट ॥
त्रिलोचन त्रिपुरातक त्रिबुक तद्दु प्रतिष्ट ॥४३॥

कृशानुरेता धूर्जटी विरुपाक्षिग्रो वामा ।
पच वक्त्र ग्रहिर्बुध्न पुनि उग्र उमापति नाम ।।४४।।
नन्दरेश्वर ग्रगेवेश पुनि नील लोहित त्रिपुरारि ।।
जटा पिनाका कपर्दी विश्वनाथ उर धारि ।।४५।।
जटा जूट हर कपर्द: । ग्रजगव धनुष पिनाक ।
प्रथमा जानहु पारषद । ग्रष्टसिद्धि तिहि वाक ।।४६।।

ग्रष्ट सिद्धि के नाम:

ग्रणिमा महिमा लघिमा । गरिमा प्राप्ति प्रकाम. ।
वसी करन ग्ररु ईसता ग्रष्ट सिद्धि के नाम ।।४७।।
भूति विभूति सु ऐश्वर्य । ग्रष्ट भाति सिधि सर्व ।।
हा हा हू हू ग्रादि दै । देवन के गंधर्व ।।४८।।

नवनिधि के नाम:

महा पद्म ग्रौ पद्म पुनि कच्छप मकर मुकद ।।
शख वर्च ग्ररु नील इक ग्ररु इक कहियत कुद ।।४६।।

पार्वती नाम:

गौरी गिरिजा ईश्वरी स्वरी चण्डिका मातु ।
उमा ग्रपर्णा भैरवी चामुंडा विख्यात ।।५०।।
सर्वमंगला ग्रंबिका सर्वाणी दुर्गा
सुमेनकात्मजा ग्रारजा कर्ण मूली कहि तासु ।।५१।।

सप्तमाता नाम:

वैश्नवी ब्राह्मी बाराहीमाहेश्वरिइद्राणि :
चामुंडा कौमारिका मातरि सप्त बखानि ।।५२।।

गणेश नाम:

विन्नायक सु गणाधिप । द्वैमातुर एक दत ।।
लबोदर हेरंब पुनि गनपति गिरिजातत ।।५३।।
मूषक बाहन शिवतनय कहै गजानन ताहि ।
फरग पानि सु गनेश है विघ्न विनाशन ग्राहि ।।५४।।

स्वामि कार्त्तिक नाम

महासेन सरजन्मगुह । तारकजित सु कुमार ।
शिपि वाहन ग्रौ शक्ति धर बाहु लेय सुविचार ।।५५।।
पार्वती नन्दन ग्रग्नि भू: । सेनानी सुविशाप ।
स्कध षडानन मात्रिपट । कौंच दारुण हुभाप ।।५६।।

स्वर्ग नाम:

दिव द्वे ग्रव्यय नाक स्व: । त्रिदशालय सुरलोक ।
स्वर्ग त्रिविष्टप द्यो बहुरि । त्रिदिव: सोई सुर ग्रोक ।।५७।।

इंद्र नाम:

जिश्नु पुरंदर, सची पति, सुरपति, सूत्रामान,
जमभेदी, इबज्री वृषा । वाल राति मरुत्वानि ॥५८॥
वास्नोपति, वृद्धिश्रवा, सुनासीर, सतमन्य ॥
सहश्राक्षि दुश्चिवन पुनि जिह्वाहनपर्यन्य ॥५६॥
कौशिक वासव वृत्रहा आखंडल तिहिजान
शक्र पाकशासन बहुरि मधव बिडौजा मान ॥६०॥
लेपपृंभ संक्रंदनो । हरिहय कुलभित होइ ॥
तुरापाट नमुचिद्विषा दिवसपनी है सोइ ॥६१॥
है सुराट पुरहूत पुनि शतक्रतु जग्यनिधान ॥
पुत्र पाक शासनि प्रथम द्वितीय जयत बखान ॥६२॥

इंद्रणी नाम:

इंद्राणी सू पुलोमजा । सची नाम पुनि तास ॥
वैजयंत प्रासाद है । मरावती बिलास ॥६३॥

ऐरापति नाम:

ऐरावत ऐरावणो अभ्र वल्लभो जानि ।
इंद्र अभ्र मातग है व्योम जान सुविमानि ॥६४॥
हय उच्चैश्रव इंद्र को । मातलि जानहु सूत ॥
पुष्कर रथ नंदन सु वन । सुधर्माधिपति रूप ॥६५॥

वज्रनामे:

वज्र ह्लादिनी कुलिश पवि । भिदुर असनि निर्घात ।
दभोलिः स्वरु संवद । शतकोटि उपपात ॥६६॥

देवता नाम:

देव अमर निर्जर विबुध । सुमनस श्री गीर्वाण ।
त्रिदिवेश त्रिदस दिवौकसः दिविषद स्वर स्वपर्वाण ॥६७॥
अदित नन्द लेपा अवर आदितेय आदित्य ॥
रिभु अस्वप्न अमृतायसः वृंदारक दैवत्य ॥६८॥
अग्निजिह्व र विमानगत । क्रतुभुजन अति ओप ॥
दानवारि वह्निर्मुखा । रहत दिष्टि आलोप ॥६६॥

गण देवता नाम:

आदित्य १२ विश्व १३ वसु ६ तुषित ६६ पुनि ॥
भास्वर अनिला ४६ जानि । महाराजिक २२ साध्या—
१२ रुद्रा ११ गण देवता बखानि ॥७०॥

दस देव जोनि नाम:

विद्याधर १। गंधर्व २ जक्ष ३ अप्सर ४ राक्षस ५ सिद्ध ६ ॥
किंनर ७ गुह्यक ८ भूत ९ पुनि । अरुपिशाच १० दनबिद्ध ॥७१॥

देवसभावासुमेर नाम :

देव सभा सोई सुधर्मा नारद सुर रिप नेम ।
मेर सुमेर सुरायल रत्न सानु गिर हेम ॥७२॥

दैत्य नाम :

इद्रारि : दानव असुर । दनुज : पूर्वदेव ॥
दितिसुत सुरद्विप दैत्य । पुनि सुक्र सिप्य दैतेय ॥७३॥

अमृत वा कल्प वृक्ष नाम :

अमी अमृत पीयूष मद । सुधा मयूस बपान ॥
हरि चन्दन मदार पुनि पार जात सतान ॥७४॥

अप्सरा नाम :

सुर वेश्या उर्वसि मुषा । कहै अप्सरा नाम ॥
बहुरि घृताची मेनिका । रभा उर्बसि भाम ॥७५॥
मजु घोषा हतिलोत्तमा । वहै सुकेसी तोय ॥
सप्त भाति ए जानिए । बसति सुरन कै होय ॥७६॥
अश्विनी दस्त्रौ बहुरि नासत्यौ सुर वैद्य ॥
प्राण देव आश्विनेय पुनि । दोऊ बीर अभेद ॥७७॥

अग्नि नाम :

अग्नि बन्हि वैश्वानर ज्वलन हुताशन जीव ॥
जातवेद जल जोनि हरि । वायुसपा दहनीव ॥७८॥
सोचिस्केस उपर्बुध । आशायास वृहद्भानु ।
पावक अनल धनजय निर्जर शुक्र कृशानु ॥७९॥
चित्र भानु दमुना बर्हिवीत होत्र । शिपावान ।
हिरण्येरेता हुतभुज सप्तार्चिपरवान ॥८०॥
असु सूक्षण सुपमा बहुरि । बिभावसू, रोहितास्व ॥
कृपीट जोनि तनून पात् । वृदन बर्त्मा जासु ॥८१॥
समी गर्भ स्वाहारमण शुचि कहिये तिह नाम ।
वृपा कपि हव्य वाहन सप्त जिक अभिराम ॥८२॥
वरुणा पिता माता अरणि स्वाहा स्त्री हित मग्न ।
दक्षिणाग्नि गारहपत्य आह बनीय त्रय अग्नि ॥८३॥

अग्नि शिपा नाम : ।

अर्च्य हेतु ज्वाला अर्चु कीला सिपा बपानि ॥
बड़वानल बडवा श्रौर्व दव दावानल जानि ॥८४॥

धूवाँ अंगार नाम :

धूम भंग औ सिपध्वज धूवा नाम बषान।
कहे फुलिंग रु अग्नि कण अंगार न परवान ॥८५॥

यमराज नाम :

धर्म्मराज्य औ पितृ पति : समवर्त्ती को नाश
अंतक काल किनाक यम सहपध्वज है तास ॥८६॥
वैवस्वत नर दंडधर श्राधदेव जु कृतांत।
शमनो यमुना भ्रात यो प्रेतराज सुवृतांत ॥८७॥

राक्षस नाम :

राक्षस असृप रात्रि चर क्रव्यातः क्रव्याद।
कर्पा सुत निकषात्मजः। जातुधान दुर्नाद ॥८८॥
जातु रक्षसी पुन्यजन कर्बुर आसुर होइ।
नैरित कौणप असृकप रात्रि चर है सोइ ॥८९॥

वरुण नाम :

वरुण यादः सापति सोई। पाशी जलचर ईश।
बहुरि प्रचेता आप पति नूर कहत कबिईश ॥९०॥

पौन नाम :

वायु स्वसन मारुत मरुत पवन अनिल पवमान।
गंधवाह पुनि गंध वह नभसुत अरु जगप्रान ॥९१॥
वात प्रभजन आसुग पृषदश्व बहुरि समीर।
मातरिश्वा औसुदर्शन कहे सदागति धीर ॥९२॥

पाँच प्राण नाम :

हिरदै प्राण १ अपान २ गुद मंडल नाभि समान ३।
कण्ठदेसउ दानहै ४ सर्व शरीरण व्यान ५ ॥९३॥

शीघ्र नाम :

शीघ्र चपल द्रुत तूर्ण लघु अविलंबित उत्ताल।
जव सत्वर त्वर क्षिप्र अरु आसुफटति अति चाल ॥९४॥

किन्नर नाम :

रहस्यद तुरती तुरीय तुरत चलन के नाम। *
किन्नर किंपुरुष मयु। तुरग वदन अभिराम ॥९५॥

*हस्तलिखित प्रति में भी दोहे का केवल एक ही चरण है। दूसरा चरण नहीं है। किन्तु यथार्थ में ऐसा नहीं है क्योंकि एक चरण 'शीघ्र नाम' के साथ ही रहना चाहिए और 'किन्नर नाम' द्वितीय चरण में प्रारम्भ होते हैं। यह एक शैली दीखती है।

अति नाम:

अतिशय भर अति बेलि भृश । अतिमात्र उद्गाढ ।।
निर्भर तीव्र नितांत दृढ़ एकान्त सोई गाढ ।।६६।।

निरंतर नाम:

अभीक्षण सतत सश्वत् विरत अनिससो नित्य ।
अजस्त्र अस्त्रांत अनारत । अनवरत प्रभु चित्त ।।६७।।

कुबेर नाम:

राज यक्षराधा नर वाहन किन्नरेश ।
धनद मनुष्य धर्मा बहुरि श्रीद· पुन्यजनेश ।।६८।।
यक्ष राट पौलस्त्य पुनि वैश्रवण हजुकहत ।
एक पिंग यक्ष एलविल । धनपति नाम लहत ।।६६।।
धनद उद्यानसु चैत्ररथ नल कूबर सुत जान ।
कैलास थान अलिकापुरी । पुष्पक ताहि विवान* ।।१००।।
इति स्वर्ग वर्ग · समाप्त :

अथ व्लोम वर्ग: । आकास नाम

अभ्र व्योम पुष्कर गगन अंतरीक्ष आकास ।।
अंबर नभ सुर वर्त्मप । नाक अनंत घनवास ।।१०१।।
वियत्, विस्नुपद महाबल । मेघहार जगधाम ।
अन्यय तारा पथ दिव । द्यौ विहाय सो नाम ।।१०२।।
इति व्योम वर्ग: । अथदिग्वर्ग ।

दिशानाम.

दिशा ककुभ काष्टा हरित । गो वन्या आसा सु ।
दिशा मध्य जो आप दिशा । विदक कहै कवि तासु ।।१०३।।

चारि दिशा नाम

पूरब प्राचा अवाची दक्षन जानहु सोइ ।
प्रतीची पश्चिम उहै उत्तर उदीची होइ ।।१०४।।

दश दिशा नाम.

पूरब आग्नेउ दक्षण । नैरित पश्चिम मान ।।
वायव उतर ईशान दिश ब्राह्मो नागों दश जानि ।।१०५।।

आवो दिशापति नाम

इंद्रवह्नि यम नैहत । वरुण सु मारुत आह ।
धनद ईस दिसि आवक पूर्व तें पति चाहि ।।१०६।।

---

*मूल में पाठ "पुप्पव ताहि विवाल है ।"

दिशापति ग्रह नाम :

रवि भृगु मंगल राहु सनि ससि बुध सुरगुरु होइ ॥
यथा ग्राठ दिस ग्राव ग्रह। बरनत है सब कोइ ॥७॥

ग्राठदिगपति नाम :

ऐरावत पुंडरीक पुनि वाघन कुमद स भाग ॥
ग्रजन पुष्फदंत सार्वभू। सुप्रतीक दिगनाग ॥८॥

मेघनाम.

मेघ ग्रभ्र तनयिन्नु घन धारा-धरत डिल्वान ॥
मिहिर मुदिर जीमूत पुनि ग्रौर वलाकहजान ॥९॥
वारि वाह बारिद सोई। धूम जोति पर्यन्य ॥
कभृत जरमूक घनाघन। जह बरषत सो घन्य ॥१०॥
मेघमाल कादिंविनी स्तनित मेघ निर्घोप ॥
गर्ज्जितरसत सु आदि दै। जानि घोर निर्ह्रोप ॥११॥

दामिनी नाम:

सौदामिनी ग्रकाल की। क्षटा चचला देषि।
ऐरावत्य क्षण प्रभा सपा ऋादिनी लेषि ॥१२॥
विद्युत चपला शतहृदा घनरुचि तडित कहत।
रिजु रोहित है इद्रधनु शक्र पानि जु गहत ॥१३॥

वर्षा का ग्रवर्षा नाम:

वृष्टि वर्ष सो वर्षण। तद्‌विघात जो होइ।
ग्रव ग्राह सु ग्रवग्रह कहै ग्रवर्षण सोइ ॥१४॥
ग्रासार धारा पतन सीकर जल कण जानि।
वर्षोपल कारिका सोई ग्रोला कहै वखानि ॥१५॥
मेघ छन्न दुर्दिन उहै। रिरमद घन जोति ॥
वज्र शब्दसो स्फूर्जथु जामें ग्रभ्र उद्योति ॥१६॥

ढकणा का नाम:

ग्राछादन ग्रतर्छि पुनि ग्रपवारण ग्रपिधान।
ग्रतर्द्धा व्यवधा बहुरि तिरोधान सुपिधान ॥१७॥

चन्द्रमा नाम:

चन्द्र चन्द्रमा इदु विधु। ग्लौ मृगाग द्विजराज्य।
कुनद वाधव कलानिधि क्षपाकर सुविराज्य ॥१८॥
सोम ससाक सुधास कहि ग्रौपधीश मृग्रान।
नक्षेत्रश जैवात्रक ग्रब्ज मयष हिमांशु ॥१९॥
है हिमदुति शशधर प्रगट निशापति निशाचार।
जगदर्प्पण शो कलंकी रात्रापति विचार ॥२०॥

माघा का नाम:

मित सकल मागड पुनि अर्द्धोमर्द्ध समास।
बिंब चद्र मडल कला। षोडस भाग हिमास ॥२१॥

चांदिना व कलंक नाम.

जौन्ह चन्द्रिका कौमुदी ज्योतिस्ना सुकलक ॥
भू छाया लाछन लक्ष्य चिन्ह सुलक्षण अक ॥२२॥

सोभा नाम.

आभा कान्ति द्युति, छवि सुषमा परम, प्रकास।
विभ्रम राठा विभूषा श्री छाया अभिल्यास ॥२३॥

पाला का नाम:

प्रालेय तुहिम हिम अवस्याय नीहार
जड सुषीमि मिहका सिसर सीतल सीत तुषार ॥२४॥
है प्रसाद परसन्नता हिमानी सु हिमरासि ॥

घ्रुवा अगस्ति नाम.

ध्रुव औत्तानिपादि सो कुभसमवो अगस्ति।
मैत्रा वरणि नारि तिह लोपा मुद्रा सु अस्ति ॥१२५॥

नक्षत्र वा वृहस्पति नाम

तारा भ तारक उडु ह्क्ष नक्षत्र बखान।
जीव वृहस्पति गुरु धिषण सुराचार्य तिहि जान ॥१२६॥
चित्र सिष डिज आगिरसु वाचस्पति प्रवीन।
ग्रीष्पति जनक हतहै। सुरलस कल वुधि दीन ॥१२७॥

शुक्र वा शनैश्वर नाम

उशना भार्गव काव्य् कवि। दैत्यगुरु भृगु नद।
शौरि असित शनि काण पगु। छाया पुत्र सु मद ॥१२८॥

मगल वा वुध नाम

कुज अगारक लोहिताग वक्री आर सु भौम्य्।
मही पुत्र अव वुध कहो रोहिणेय सो ज्ञम्य ॥१२६॥

राहु वा केतु नाम

राहु विद्धतुद तम प्रगट सैंघकेय सुर्भानु।
केतु सिषी वरुणात्मज राहुदाहु कवि जान ॥१३०॥

पप्त रिषि नाम

भारद्वाज गोतम प्रगट विस्वामित्र वसिष्ठ।
अगिरासु जमदग्नि पुनि जानत इनको स्रिष्ट ॥

अत्रि मरीचि सु आदि दे नाम सप्त रिषि जान ॥
रासिन कौ उदयोलग्न । मेप वृषादय आत ॥१३१॥

सूर्य नामः

सूर्य सूर रवि अर्जमा द्वादशात्म ग्रह पति ॥
भानु हंस इन दिवाकर बिभाकर सु अभिगत्ति ॥१३२॥
भास्वत विवस्वत चंडकर उश्नरस्मि उश्नासु ॥१३३॥
मिहर तिमर हर-प्रभाकर मित्र वृध्न सहस्रांसु ॥१३३॥
अर्क बिरोचन वीर्भावसु मार्तंड अयिअंग
अंबर मणि दिनमणि तरुणि कर्मसाक्षि सु पतंग ॥१३४॥
प्रद्योतन संबिता तपन चित्रभानु हरदश्व ।
द्युमणि विभावसु विकर्तन त्वपांपत्ति सप्ताश्व ॥१३५॥
पूषण अरुण आदित्य पुनि जगत चक्षु पद्योत ।
लोक बंधु हेलि अहस्कर । भास्कर तेज उद्योत ॥१३६॥
मावर पिंगल दंडए रहै निकट निति सूर ।
सूर्य सूत गरुड़ात्मजः काश्यपि अरुण अनूर ॥१३७॥

वाडिपरिवेप नामः

सूर्य मंडल उपसूर्यकः परिधि सोई परवेप ।
द्योत प्रताप सू आतप, तिग्म तीक्ष्णपर लेप ॥१३८॥

छाह नामः

सूर्य प्रिया प्रतिबिम्ब सो कांतिअनातप छांह ।
अनुतुष्मी संतोपिनी । छाया छाजत नाह ॥१३९॥

किरणि नामः

किरणि गभस्ति मयूप कर अस्त्र मरीचि सु अंसु ।
दीधति भासू छबिः दीप्ति द्युतिरोचिसोचि सुप्रसंस ॥१४०॥
रुक् रुचि त्वट् भा घृश्नि घृणि प्रभावहुरि गो धाम ।
मृगतिश्ना सु मरीचिका । हरि किरननि कौ नाम ॥१४१॥

इति दिग्वर्गः

अथ काल वर्गः

काल नाम-

वय अनोहप्रनभिप समय रागाज· वेला वाल ।
कहै अदप्ट एने हस. । जाकी गति चल चाल ॥४२

पडिवा वा दिन नामः

पदाति प्रतिपत् प्रतिपदा तदा दयो तिथि जान ।
अहन घस वासर दिवस अह दिन नाम प्रवान ॥४३॥

प्रभात नाम:

प्रात प्रात प्रत्यूष उष, प्रत्यूषसि ग्रहमुष ॥
और प्रभात विभातयो: अरुणोदय तें सुष ॥४४॥

सध्यात्रय नाम:

पितृ प्रसू सध्या सोई साय और दिनात ।
प्राहुद्रम मध्यान्ह अपराह्न सो, सध्यात्रय अभितात ॥४५॥

रात्रि नाम:

निशा रात्रि रजनी तमी क्षणदा क्षपा त्रियाम ।
सर्वरी और तमस्विनी विभावरी के नाम ॥४६॥
निशीथनी औ महानिशि है निशीथ अधराति ।
यहै तमिस्रा तामसी ज्योतिस्ना अतिक्रान्ति ॥४७॥
रजनी मुपसु प्रदोष है । याम प्रहर को जान ।
पर्व संधि नाम पचदशी पक्षांतो परवान ॥४८॥
पूर्णमासी पूर्णिमा अनुमति कला जु हीन ।
राका पूर्ण चन्द जहा, भाषत सूर प्रवीन ॥४६॥
अमावस्या अरु प्रतिपदा बीचि दहुन को होइ ।
पचदशी द्वै होत है पुनि पक्षात सुलोइ ॥५०॥
अमावास्यादर्शसो । सूर्य चन्द्र मिलि जाय ।
कुहू नष्ट ससि जानियें सिनी वालो दरसाय ॥५१॥
जहा अमावस रैनि में चन्द्र कला जो होइ ।
सिनी वाली सो जानियो कुहू कला बिन सोइ ॥५२॥

ग्रहण नाम:

उपराग ग्रहराहु करि ग्रस्त सूर ससिहोइ ।
उपलव उपरक्त सु दुप, उपाहित अग्नि तें सोइ ॥५३॥
निमिष अठारह जब लगें कहै काष्टा ताहि ।
तेनु शत बीतें कला कलानिश छिण आहि ॥५४॥
द्वादश क्षण सु महूर्त इक । तेत्रिंशत दिनरात ।
गहोरात्रि दश पच गये । पक्ष पूर्व परप्यात ॥५५॥
कुसल कृस्न दुवें पक्ष को एक मास तब होइ ।
माघादिक द्वै मास रितु त्रयगत अयन सुलोइ ॥५६॥
उत्तरायन दक्षणायन बीते वत्सर जान ।
होहि बराबरि राति दिन विपवत विपवन मान ॥५७॥
पून्यो पुष्प जुत मास जिह जानहु पौषी ताहि ।
नाम पौष माघादिते एकदास पुनि आहि ॥५८॥

मार्ग सर वा पोह वा माघ नाम :

मार्ग शीर्ष मार्ग सहा, आग्रहायिणि कहत ।
पौष तैष सहस्य पुनि तपा माघ सलहत ॥१५९॥

फागुण वा चैत वा वैशाष व जेष्ट नाम :

फाल्गुन तपस्य: फाल्गुनिक, मधु चैत्रक औचैत ।
वैशाष राधो माधो, जेष्ठ शुक्रद्वैवेत ॥१६०॥

असाढ वा सावन वा भादों नाम :

शुचि आपाढ सु श्रावणि नभ श्रावणिक्इ सोय ।
भाद्र पद, प्रोष्ट पद, नभस इनाम तिह होइ ॥१६१॥

आसौज वा कातिक नाम :

आश्वनि इष अश्व जु ज उहै है सोई आसोज ।
कार्तिक क. कार्तिक उर्ज बाहुल जानहु सोज ॥१६२॥

षट ऋतु नाम :

षट ऋतु छे छे मास की मगि सिर पौष हेमत ।
माघ फाल्गुन सिसर रितु । जामें सोत अनत ॥१६३॥

वसत ऋतु नाम :

कुसमाकर माधव सुरभि पुष्पसमय रितुराज ।
मधु वसत रितु जानियें चैत्र बैसाख समाज ॥१६४॥
ग्रीषम उष्म उष्न पुनि उष्मा गम तम होइ ।
उश्नो पगम निदाघ सो जेष्ट अषाढ सुदोइ ॥१६५॥
प्रावृट वरषा रितु कहै सावन भादो मास ।
सरद सरित्सुबपानियौ । अश्वनिकार्तिगमास ॥१६६॥
षट रितु मगसिर आदि द्वै । मासन की दै हर्ष ।
सवत्सर वत्सर अब्द । सरत सुहायन वर्ष ॥१६७॥
अहाराति पितृनिकी एक मास को होइ ।
दे वन को एक बरस की यज जानें सब कोइ ॥१६८॥
दैवन के युग सहस छै, ब्रह्मा कल्प बषानि ।
मन्वतर दिव्य वरष जुग, इकहत्तरि परवानि ॥१६९॥
प्रलय कल्प सवर्त्त क्षय । कल्पान्त जग होइ ।
पून्य श्रेयसी सुकृत वृष । धर्म करहु सब कोइ ॥१७०॥

पाप का नाम :

पाप पक किल्बिष कलुष, वृजिन दुरित अघ एन ।
रह दुरित कस्मल कलल कल्मष पाप भजेन ॥१७१॥

आनन्द वाम्रुप नाम :

आनद प्रति प्रमोद मुद संमद प्रमद उछाह ।
आनद पु. प्रहर्ष सोई, शर्म शातनी वृता जाह ॥१७२॥

कल्याण नाम :

स्वः श्रेयस सस्त शिव मद्र भव्य सुम क्षेम ।
मगल भाविक भविक श इष्ट कुशल सब प्रेम ॥१७३॥
मतल्लिका सु मर्चिव्वका मुद्रतल्ल जो आन ।
पैशाड वाच प्रसस्तए अय सुभा सुविधिमान ॥१७४॥

भाग्य नाम :

भाग्य धेय श्री निउत विधि दैव दिष्टि यो कर्म ।
विशेष अवस्था काल की सोई वर्तमर्म ॥१७५॥

कारण नाम :

हेतु निमित्त सु कारण वीज जानि निवध ।
कारण आदि निदान है गुण सत रज तम धव ॥१७६॥

जीव वा प्रकृति वा उतपाति नाम :

क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुष सत्व प्रकृति असुमान् ।
पुनर्भवी चेतन सोई । जन्तु जन्यु सु प्रधान ॥१७७॥
जनु. जन जन्मन जनि उत्पति उद्भव आन ।

प्राणी वा जाति नाम:

प्राणी जन्मी जते जन्यु चेतन तनु मृत सोइ ।
जाति जात सामान्य पुनि व्यक्ति पृथक जो कोई ॥१७६

मन नाम·

चित चेतो हृदय हृद स्वात कहत कविताहि ।
आयस मानस नूर कहि, जुग को कारण आहि ॥१८०॥

इति काल वर्ग अथ धीवर्ग

वुद्धि मनीषा धीषिषणा । प्रज्ञा सोई चित्त ।
ज्ञप्ति चेतना सेमूषी, मति प्रेक्ष सवित्त ॥१८१॥

वुद्धि का गुण ६ नाम

सुश्रूषा नूर श्रवा ग्रहण धारणा सुद्धि ।
तर्क उक्ति जानन अर्थ तत्व ग्यान गुन बुद्धि ॥१८२॥
मेधा धीधार्रणवती, मन को धर्म सब रूप ।
मनस्कार आमोग चित जोमन की सुपजल्प ॥१८३॥

चर्चा वा तर्क

चर्चा कहै बिचारणा सख्या जानुहुताहि ।
अध्या हार सुतर्क है ऊह सकवि जन आहि ।।८४।।
विचिकित्सा साई ससय, द्वापुर पूनि सदेह ।
निर्नय निश्चय जानियो, नूर सिधात सुएह ।।८५।।
नास्तिकता मिथ्या दृष्टि २ ।।

देव्पनाम वा भ्रम नाम

द्रोह चित व्यापाद, मिथ्या मति भ्रम भ्रातिए ।
भ्रम के नाम जगाद ।।१८६।।
सवित आगू प्रतिज्ञा आश्रव सश्रव नेम ।
अगी कार समाधि अभ्युपगम प्रतिश्रव प्रेम ।।१८७।।
मुक्ति विषै मति जासकी नूर ज्ञान है साइ ।
शिल्प शास्त्र मे जो चतुर है विज्ञान सुलोइ ।।१८८।।

पचम गति नाम

लय सु मोक्ष श्रेय अमृत निर्बाण अपवर्ग ।
महा सिद्धि कैवल्य पुनि नि श्रेयसबर स्वग ।।१८९।।

अविद्या वा विषया

कहै अविद्या अहमति सोई है अज्ञान ।
रूप शब्द औ गध रस स्पर्श विषया आन ।।१९०।।

इद्री नाम

गो हृपीक पकरण गुण इद्री जानहु ताहि ।
इद्रियार्थ जो आनिये गोचर कहिये वाहि ।।१९१।।
विषया इद्रीय हृपीक कर्मेन्द्रिय पाद्वादि ।
मन नेत्रादिक धी न्द्रिय। अपने अपने स्वादि ।।१९१।।

षटरस नाम

तुवर सोई कषायल मधुर लवण कटु तिक्त ।
अम्ल सुरा षट रस प्रगट अवरनहीं अतिरिक्त ।।१९२।।

सुगधि नाम

धामोदी आमोद पुनि मुष वासन सो जान ।
घ्राण तर्प्पन नूरमनि निर्हारी सो मान ।।
इष्ट गधि सुरभी कहै, है सुगन्धि जग माहि ।
निरहारी सो नूर कहि पडित भेद महाहि ।।१९४।।

परिमल नाम:

विमल द्रव्य मर्दन किये प्रगटै परमल गोइ ।
जो सुगधि मन को हरं, अति निरहारी होइ ।।१९५।।

दुर्गंधि नाम:

पूति गधि दुरगधि सो ग्राम गधि पुनि ग्राहि ।
विस्रनाम मो नूर कहि कोऊ करत न चाहि ॥१६६॥

उज्जल नाम:

धुलक शुभ्र सुचि विसद सित । गौर स्वेत ग्रवदात ।
ग्रर्जुन, पाडुर, धवल, पुनि ग्रौर विलक्ष, विख्यात ॥१६७॥

काला व पीला नाम:

कृष्ण नील मेचक ग्रसित काल. स्यामल स्याम ।
पीत हरिद्राभ हरित कहि पालाश तिहि नाम ॥१६८॥

ग्ररुण नाम :

रोहित लोहित रक्त भ नि, कोकनद युक्त ।
ग्रव्यक्त राग साई ग्ररुण पाटल स्वेनह रक्त ॥१६६॥
श्यावक पिश सो धूम्र पूनि धूमल कृष्ण रुलाल ।
हरिण पाडुर धूसर ईषत पाडु सुभाल ॥२००॥

पिगल व कर्बुर नाम.

पिंग पिसग सु कद्रू पुनि कपिल कडारहू माप ।
शबल चित्र किर्म्मीर सो कर्बु है कल्माप ॥२०१॥

सरस्वती नाम:

हस वाहनी सरस्वती वाक् भारती जान ।
ब्राह्मी भाषा गिरा,गी वाणी इडा प्रवान ॥२०२॥

बोलण का नाम

उक्ति लपित भाषित वचन वच व्याहार सु वाल ।
ग्रपभ्रश ग्रपशब्द पुनि वाचक श्रुतिमय बोल ॥२०३॥

वेद नाम

वेद निगम ग्राम्नाय श्रुति तद्विधि धर्म विचार ।
ऋकसाम यजुर्थाइ इति वेदत्रयी विचार ॥२०४॥
मिथ्या सो उतपत्ति जो, सो श्रुति ग्रग विचार ।
कवि कोविद सब कहत हैं । नूर बिसार विचार ॥२०५

षडगवा ग्रोकार नाम:

सिक्षा कल्पो व्याकरण छदो ज्योति निरुक्ति ।
ग्रोंकार प्रणवो समो इतिहास पुरा उक्ति ॥२०६॥

शास्त्र वा पढण वा नाम

ग्रागम प्रवचन सूत्र ग्रथ तत्र शास्त्र सिद्धात ।
स्वाध्यायप्रधात पवन, ग्रध्ययन ग्रनिनात ॥ ७

षड दरसन वा शास्त्र नाम

शैव वेदान्त नैयायक, बौद्ध मीमासिक जैन ।
षट दरसन षटशास्त्रतें कह्यो ग्रंथ मत ग्रैन ॥२०८॥

राजनीति विद्या नाम

आन्विक्षिकी विद्या तर्क, दडनी अर्थ प्रवान ।
उपल ध्वार्थं आख्यायक लक्षन पच पुरान ॥२०६
प्रवल्हिका सु प्रहेलिका रचना कथा प्रपच ।
धर्म सहिता सो स्मृति समाहृति सग्रह छद ॥२१०
सर्ग प्रति सर्ग बहुरि बस मन्वतर जान ।
वशानुचरित कहै लक्षन पच प्रवान ॥२११
प्रवल्हिका सु प्रहेलिका रचना कथा प्रबन्ध ।
धर्म सहिता सो स्मृति समाहृति सग्रह छद ।

बात नाम

किंवदति जन श्रुति कहै समासार्थ समस्यासु ।
वार्त्ता प्रवृत्ति वृताल पुनि नाम उदत सुतासु ॥२१२॥

नाम का नाम

सज्ञा आह्वयगोत्र पुनि आख्याह्व अभिधान ।
नाम धेय सोनूर कहि तारन तरन प्रवान ॥

बिवाद नाम वा सपथ नाम

उपन्यास सो वाग्मुप बिवादो अव्यवहार ।
सपन सपथ सौह स्यों कहै उपोद्यात उदाहार ॥२१४॥

चुप्प के नाम

तूष्णी तूष्णीक पुन मौन अभाषणनाम ।
सद्य सपदि सुतक्षण तात्कालिक अभिराम ॥२१५॥

बुलावण का नाम

आह्वान आवारण हूति बुलावति कोइ ।
सहूति बहु बोल दै तिह आवन नहि होइ ॥२१६॥

प्रश्न या उत्तर नाम

अनुयोग प्रछा प्रश्न मारग नूर लहत ।
उत्तर पुन प्रति वाग्य मो प्रश्नोत्तर जु यहत ॥२१७
सब्द होत अनुराग तें कहै प्रणाद सुताहि ।
उदात्त अनुदात्त पुनि स्वरित तीर स्वर माहि ॥२१८॥

झूठी अस्तुति या झूठ वचन नाम

अभिख्यान सो जानियो मिथ्याभिजोग मुहोद ।
अभिशाप सो जानियें मिथ्याभिमसा मोद ॥२१६॥

कीर्ति नामः

वर्ण गुणावनि ख्यान जस माघु बाद अवघान ।
कीति समज्ञा स्तव स्तुति, नुति, स्तोत्र परवान ॥२२०॥
कहियै दोवर तीन बर निह प्राम्रेडित जान ।
सोक भीत जुत है जु पुनि तावहु काकु बखान ॥२२१॥

कचेपुकार नामः

मुंच्वं घुष्टं घोषणा अंबू वृत सनिष्टीव ।
वाचाल वाचाट जो कुत्सित भाषो जीव ॥२२२॥

निंदा नाम·

गरहण कुत्सा जुगुप्सा । आक्षेप निर्वाद ॥
अपवाद बतू अवर्ण सो, उपक्रोश परीवाद ॥२२३॥
पारुष्यं प्रतिवाद सो भर्त्सनंगो अपकार ।
निंदा सहित उलाहणो परिभाषण सुविचार ॥२२४॥
आर्क्षारणाय: सोई मैथुन प्रति आक्रोश ।
आभाषण अलाप है प्रलाप अनर्थ वचोग ॥२२५॥
अनलापो भाषन मुहु. परदेवन सु विलाप ।
विरोधोक्ति विप्रलाप है मिथ भाषण संलाप ॥२२६॥
सुवचन को सुप्रलाप कहि निन्दव है अपलाप ।
शापा क्रोश दुरेषणा श्लाघ चाटुचटु थाप ॥२२७॥

सराप नामः

सदेस वाकू सो वाचक रुपतो है अकल्याणि

सुभ वाणी बोलैः

कल्या वचन सुभात्मिका मधुर सात्व जाणि ॥२२८॥
निष्ठुर परुष कठोर पद अश्लील सो ग्राम्य ।
युगपत् एक ही काल जो सून्यत प्रिय सत्य साम्य् ॥२२६॥

वात कहे थूक आवे ताका नाम:

सनिष्टीव अबूक्त त्वरितो दित निरस्त ।
अनक्षर सु अवाच्य है लुप्त वर्ण पद ग्रस्त ॥२३०॥

झूठो अर्थ जिह वचने में:

आहत कहै मृपार्थक अवद्ध अनर्थक होइ ।
अविस्पष्ट सुश्लिष्ट कहि वितथ अनृत वच सोई ॥२३१॥

सांच वा झूठा नामः

सत्य तथ्य सम्यक ऋत मिथ्या आदि प्रकार ।
उचित अमोघ यथारथ निसदेह निरधार ॥३२॥

जथोरथ बहुरो बिृपामिथा मिथ्या मोघ अलीक ।
विलथ वितत्थ बिथा अनृत मृषा असत्य अठीक ।।३३।।
मनित रातिकुजित सब्द श्रव्य हृद्य मनोहार
विस्पष्ट प्रकटोदित प्रेम्ला मृगा उचार ।।३४।।
इति धी वर्ग

अथ शब्दादिवर्गा

शब्द नाद निश्वन निनद स्वान घोष निर्ह्राद ।
धुनि रव सुन निस्वान सो ध्वान अराव निनाद ।।३५।।
आरस राव विराव पुनि शिंजित भूषण राव ।
स्वनित कहि पणादिक को मर्म्मर बस्न सुभाव ।।३६।।

वीण शब्दनाम

निक्वाणा निक्वण क्वण क्वाण क्वणन बषान ।
बीणा के एते क्वणत, पवणा दयबहु आनें ।।३७।।

बहुत शब्द पछी शब्द नाम.

कोलाहल कल कल रूत, पछी बाशित होइ ।।
प्रति श्रुत प्रति ध्वनि नूरवहि गीत गान है सोइ ।।३८।।

इति शब्दादिवर्गः

अथ नाद्य वर्ग. प्रथम ही सप्त स्वर नाम

निषाघ, रिषभ, गधार पुनि षडग सुमध्यम जानि ।
धैवत पचम सप्त स्वर पडित कहे बषानि ।।२३६।।

सप्त स्वर स्थान

स्वर निपाप गज्ज राज्ज को रिषभ सुवात्रिग सैन ।।
गधार स्वर अजा को पङ्गसुकेका अैन ।।४०।।
मध्यम कुज सु उच्चरैं धैवत दादुर जान ।
पचम कोकिल को वचन ए सप्त स्वर थान ।।२४१।।

मनुष्य के सप्त स्वर स्थानक नाम

हिरदै उठै निषाघ स्वर । सिरहरिषभ स्वर होइ ।
सुर गधार नासिक कहत कठ पग सुर सोइ ।।२४२।।
मध्यम जो उर तै प्रगट धैवत नाभि बषानि ।
पचम स्वर सो ज्यानियो क्पै सप्त सथान ।।४३

तीन ग्रामनाम

सूक्ष्म मनोहर होइ धुनि तिह काकली कहत ।
निपट मधुर मो प्रगट नहि सो कल नाम लहत ।।४४
काकली कन सूक्ष्म सु धुनि मधुरा स्फुट कल होइ ।
मद्र गभीर जु तार गुर अति उच्चं अय सोइ ।।

तन्त्री कठोस्थित स्वर समन्वित लय ताल ।
वल्लकी वीणा विपंची तन्त्री मप्तरसाल ॥४६॥

च्यारि प्रकारे वादित्र नाम:

ततं वाद्य वीणादिकं ग्रानद्ध मुरजादि ।
वशादिर सुषिर, सोई घन कॉस्पतालादि ॥४७॥

वादित्र नाम:

वादित्र ग्रातोद्य पुनि मुरज मृदग सुजाति ।
ग्रक्या लिगग उर्द्धका भेदत्रय विख्यात ॥४८॥
जस पटह ढक्का बहुरि भेरी दुदभि ग्रान ।
ग्राणक पटह मु कोण को वेणु वादिन जान ॥४६॥
सूत्रधार भट्टारक राजा नायक देव
मेना मुर सगीत के जानत सिगरे भेव ॥५०॥

वादित्र भेदा:

डमरू डिंडिमकूर्चरा मर्दल पणवो ग्रन्य
मड्डु वाद्य त्रभेदिए नर्त्तकी लासिकी, मन्य ॥५१॥
विलबित द्रुत मध्य सो तत्व मोघ घन जान ।
तालक्रिया परिमाण है लय साम्य सुवपान ॥५२॥

निर्त्तनाम:

ताडव नटन नर्त्तन नाट्य लास्य नृत्य सोइ ।
नृतगीत वादित्र युत नाट्य तीनि विधि होइ ॥५३

निरत कारी नाम

भ्रकुश भ्रकुस पुनि भ्रूकुश नर रूप ।
त्रियावेष धारी फिरत नर्त करत सु ग्रनूप ॥५४॥

नृत्य भेद नाम ·

ग्रगविक्षेप ग्रगहारकाहे व्यजक ग्रभिनय ग्राहि ।
ग्रग सत्वा निरवर्त्त हैं ग्रांगिक सात्विक चाहि ॥२५५
जो रानी ग्रभिषेक की देवी कहि ये ताम ।
ग्रौर मभट्टनी जानिये नूर सुकवि ग्रभिराम ॥२६६॥

नौ रस नाम :

सिगार वीर करुणा बहुरि, ग्रद्भुत हास्य प्रवान ।
भयवीभत्स वपानीये । रुद्र शात नौ जान ॥२५७॥

श्रगार वा वीर वा दया नाम :

उज्जल शुचि शृंगार है । वीर वृधि उत्साह ।
ग्रनुक्रोश करुना घृणा, कृपा सु ग्रनुकपाह ॥२५८

हास्य वा विभत्स वा अद्भुत नाम :

हँस हास सो हास्य रस, विभत्स बिभत्स जानि ।
अद्भुत विस्मय चित्र सो कहि आश्चर्य प्रधान ।।२५९।।

भयानक रुद्र शान्त रस नाम :

भैरव दारुण भीष्म सो भीम भयानक घोर ।
भीषण प्रतिभय भयकर रौद्र उग्र शम और ।।२६०।।

डर वा विकार नाम :

दर त्रास भीः भीति पुनि साधू सभय को नाय ।
मानस भाव विकार है, अनुभाव बोधक भाव ।।२६१।।

विकार नाम :

अपने जो कछु और ह्वै होत और की ओर ।
तासों कहत विकार कवि, नूर सकल सिर मौर ।।२६२।।

मान वा आदर नाम :

मानशमउ अभिमान मद दर्प गर्व अहंकार ।
गौरव अरु सन्मान पुनि आदर सोई सत्कार ।।२६३।।

अनादर का नाम :

तिरस्कार अवमानना रीढा अवज्ञा हेल ।
असूक्षण परिभाव सो, परभव पुनि अति वेल ।।२६४।।

लज्जा वा ईर्षा वा शान्ति :

मदाक्ष ब्रीडा त्रिपागो अपत्रपा आन ।
अक्षाति ईर्षा बहुरि, शान्ति तितिक्षा मान ।।२६५।।
परधन की इच्छा करै ताहि ताहि अभिध्या लेपि ।
कहै असूया गुणनिमै । दोषारोपण देपि ।।२६६।।

बैर वा शोक का पश्चाताप् नाम :

बैर विरोध विद्वेष सो शोक मन्यु शुक होइ ।
बिप्रती सार अनुताप पुनि पश्चाताप् है सोइ ।।२६७।।

कोप नाम:

कोप छोभ आमर्ष क्रुध रोप मन्यु हट क्रोध
प्रतिष्टा कहियेपेदसो, जातेजगत विरोध ।।२६८।।
शील आचरन सुचि कहै चित्त विभ्रम उन्मान ।
प्रेमा प्रियता हार्द पुनि प्रेम स्नेह जगाद ।।६९।।

अभिलाष नाम:

दोहद कांक्षा मनोरथ स्पृहा तृट् लिप्सा काम ।
अभिलाषा ईहातर्ष वांछा लाल सनाम ।।२७०।।

चिंता का नाम:

ध्यान चिंता स्मृति चिंतन पाप उपाधि ॥
उत्कंठा उक्तलिका साई चिया मानसी आधि ॥२७१
मोस बीर्य प्रतिशक्ति युत अध्यवसाय उत्साह ॥

कपट नाम:

कुहक छद्म उपमव वितव ब्याज्य दम मिष आह ॥७२॥

सठता वा तमाशा नाम:

साठ्‌य कुसृतिनि हृत, अनवधानत प्रमाद ।
कौतूहल कौतुक कुतूहल सजगाद ॥७३॥

स्त्रीणा हा वा:

स्त्री विलास बिब्बोक पुनि विभ्रम ललित बहाव ।
क्रिया भाव शृंगार जा हेला लीला हाव ॥७४

केलि वा वहाना वा पेलण का नाम:

परीहास क्रीडा सु द्रव लीला नर्म वपान ।
ब्याज लक्ष उपदेस पुनि क्रीडा कूर्दन आन ॥७५

पसेव के नाम.

घर्म निदाघ स्वेद सो प्रलय चेतना नष्ट ।
अवहित्या आकार जिह गुप्त होइ सुप्रतिष्ट ॥७६

ईषत हास्य नाम:

सोत्प्रास आछुरितक स्मित ईषत हास ।
एई नाम सुहास के कीने नूर प्रकास ॥७७
मध्यम विहसित जानिए। घटवद्धि हासन आहि ।

रोमाच नाम:

रोमाच रोम हम रोम हर्षण चाहि ॥२७८

अतिहास वा परिहास नाम

हसवं तृप्तिन होइ जिह सो अति हास उचार ।
परिहास उपहास पुनि परजन हसे निहार ॥७६॥

रुदन वा जमाई नाम:

क्रुष्ट रुदित क्रदन रुदन, (जमाई नाम) जृभ: जृभण जान ।

वियोग नाम.

विसवाद विप्रलभ पुनि, (चकच्चननाम) रिंगणस्वलन वपान ॥८१॥

सोवण का नाम·

स्वाप सैन निद्रा स्वप्न गुडा कासु प्रवेश
संभ्रम को सवेग कहि तद्री प्रमीला भेस ॥२८२॥

कुटिल दृष्टि नाम:

कहे आदृष्टि गुतास को जिह असौम्य दृग माहि ।
भ्रुटि भ्रकुटि भृकुटि भ्रू के नाम सुचाहि ॥२८३॥

स्वभाव वा कप नाम:

ससिद्धि प्रकृति सोई वहै स्वरूप सुभाव ।
नाम निसर्ग वषानिये वेपथु कप कहाव ॥२८४॥

उछाह नाम:

उत्सव उद्धव महक्षण उद्धर्ष उत्साह ॥
कहे नाम ए नूर कवि नाट्य वर्ग अवगाह ॥२८५॥

इतिनाट्य वर्ग. समाप्त:

नाट्य वर्ग पूरन भयो वरनत नूर पताल ।
वलिराजा वाचन सहित् रहत तहा सब काल ॥८६

पाताल नाम:

अधोभुवन वडवामुष । वलि सद्म रसातल जान ।
नाग लोक पुनि: (छेद नाम) : छिद्र विल बिबर रघ्र कुहरान ॥
रोक वपा शुचि शुभ्र सुए सुषिर छेद के नाम ।
तम तमिश्र ध्वात तिमर अंधकार सो स्याम ॥२८८
(गाढा अन्धकार नाम)*

गडहा का नाम:

अवट गर्त्त भुवि सुभ्र विल अध तमस तम जोर ।
क्षीणो अवतम सतमः बिष्व स चहु ओर ॥२८९॥

सेश नाम:

सर्प्प राज बासुकि प्रगट सेष अनत बषान
नाग राग* औ सहस मुष । नाग काद्र वेय आन ॥९०

जाति भेद नाम.

तिलत्स गोनस अजगर । शयु बाहस जु कहन ।
अलगर्द्दो जल नाग है राजिल डुडुभ हुत ॥२९१॥

काचुरी युन वा नाम·

मालुधान मातुल अहि । सोकचुक जुत होइ ।
मुक्त कुचुक निर्मुक्त । सपी तजत जो कोइ ॥९२

सर्प्प नाम:

सर्प प्रदाकु भुजग उरग आसीविष अहि व्याल ।
भोगी पन्नग जिह्मगदंदसूक सो काल ॥९३॥

---

* मूल में भी राग ही है, पर सम्भवत. राज होना चाहिये ।

कावेदर चक्षुश्रवा फणी मणो विष धार ।
दोर्घ पृष्टि दर्वी करो पवनाशन हरहार ॥९४॥
लेलिह और विलेशयः गूढ पात हरिहोइ ।
बहुरि सरोसृप कुडली नाम भुजंगम सोइ ॥९५॥
सर्प विर्ष जो सबहै (ताको नाम)
ग्राहेय विष ग्रादि सब फुट फण फग के नाम ।
पर्चुवि वा निर्मोक वहि छूवेद गरल विष जाम ॥

विष को नौ जाति:

काल कूठ काकोल पुनि कहै हलाहल ताहि ।
ब्रह्मपुत्र सौराष्ट्रिक नौकिनेय सो ग्राहि ॥२९७॥
वत्सनाभ दारद बहुरि, और प्रदीपन जान ।
विष के भेद जु नौ कहै पडित करहु प्रमान ॥२९८॥

विष वैद्य नाम:

जागुलिक विष वैद्य जो, करैं जु विष उपचार ।
व्यालग्राही ग्रहि तु डिक सर्पजीव विचार ॥२९९
भोगिवर्ग पाताल को वर्नसुनाया नूर ।
नर्क वर्ग अब कहत है जो दुर्गति को मूर ॥३००॥

इति पाताल भोगिवर्ग्गः संपूर्ण ।

अथ नर्क के नाम:

नर्क नार्क दुर्गति निरय (नर्क भेद नाम) ताप ग्रवीचीपात ।
महारौरव रौरव काल सूत्र भेदात् ॥३०१॥

वैतर्नी नदी नर्क निकट की.

प्रेता वैतरणो सोई सिधुन्हत है ताहि ॥
बहुरि ग्रलक्ष्मी निर्जति ग्राजूविष्टि सुग्राहि ॥३०२

नरक की दरिद्रता को नाम:

नर्क जर्ग्र पूरन नर्यो है आर्म मय भूरि ।
वारिवर्ग सुनि नूर मनि होत सकल श्रम दूरि ॥३०३॥[1]

मर्म पीड़ा नाम.

तोव्र वेदना जातना कहै कारणा ताहि ।
पीडा बाधा व्यथा दुष कष्ट उच्छ् शा ग्राहि ॥३०४॥
ग्राभिल ग्राग्निलानि जो अरुचि नर्क दुष नाम ॥ (प्रमृति पीडा नाम)
ग्रामनस्य परसूति करि बाधा होत प्रकास ॥३०५॥

---

१. यह दोहा मूल में लाल स्याही से कटा हुआ है ।

इति नर्क वर्ग समाप्तः

नर्क वर्ग पूरन भयो है जामें भय भूरि ।
वारि वर्ग सुनि नूर भनि होत सकल श्रम दूरि ।।३०६।।[2]

अथ वारि वर्गः ।। समुद्र नामः

अब्धिं[3] सागर उदधि अर्णव सिंधु सरस्वान् ।
जादसांपतिय अपांपतिः अमृतोद्भवउदन्वान् ।।३०७।।
पारावार सरित्पतिः इहावान् अकूपार ।
रत्नाकर जु अपार पुनि सप्त भेद सुविचार ।। ८
लवण, ईक्षु औ सुराघृत दधिसु दुग्ध जल सात ।
अतलस्पर्श अगाध है कहत कविन के तात ।।३०९।।

पानी वा तरंग नामः

आप वारिकं सलिल पय विष की लाल सुतोय ।
उदक पाय पुष्कर कमल नीर छीर कुश होय ।। १०
अंम् अंबु संवर अमृत अर्णवाः पानीय ।
मेघ पुष्फ जीवन भुवन बनक बंध जानीय ।।११।।
घनर सपाली सर्व मुप सुजल बासी पर्युपिताहि ।
लहरी वेला वीचि भंग, उर्म्मितरंग सुचाहि ।।१२।
उल्लोल कल्लोल सो उर्म्मी उठत महत ।
अति जल भ्रम आवर्त्त है विप्लुप पृषती पृषत ।।१३।।

जल चमनः

पुट भेद भ्रम चक्र पुनि ए जल निर्गम जानि ।
बाहु प्रवाहु बपानियें । वहै बेग जुत आनि ।।३१४।।

किनारा का नामः

कूल अवधि उपकंठ तठ पुलिन निकट अभ्यास ।
तीर प्रतीर बपानीयें सीमनि सीमा आस ।।१५।।

पारावार को नाम, बीच नामः

परसु कहै परतीर को अर्वाची सोवार
दहुतीरन बिच अंतरं पारं ताहि विचार ।१६।।

जल वीचि को भूमिः

द्वीप अंतरीपं सोई जो अंतर तट वारि ।

जल उछले ताका नामः

तोयोस्थित पुलिनः

---

२. ऊपर जो दोहा कटा हुआ है वह यहाँ आ गया है
३. यह शब्द मूल में इस प्रकार लिखा हुआ है 'अब्धि' ।

रेत समेत जल का नाम:

संयुत सिक्ता मय विचारि ॥१७॥

कीच व काई नाम:

पंक गादनर्दम मोई निपद्धर. ज वाल ।

नहर के पाठ का नाम:

जलोच्छ्वास परिवाह कहि

सामग्री नाम:

नाव्यनोतार्य सुचाल ॥
जो पोदत जल कारनै भूमि जल करि कोई ।
कहै विदारक कूपक, नूर नाम ए दोइ ॥१९॥

नाव वा जहाज नाम:

तर तरिनी त्रि तिरडा पादालिल्ली ग्रान ।
बोहित पोत जहाज सो जान पात्र जल जान ॥२०॥

बेडा कहीयें छुद्र नाव नाम:

उडुप प्लव सो कोल पुनि बेडा नाम उदोत ।

सोत नाम'

अबुश्रवत जो आप तैं, अंबुश्रन स्वत सोत ॥२१॥

पेवा वा उतरी नाम:

आतर अरु तरपण्य पुन । पेवा जानहु सोइ ।
द्रोणीकाष्टा वुवाहिनो डोंगी नाम सुहोइ ॥२२॥

डोंगी भाषा में डोंगी कहैं है:

नाव वेचै ताको नाम:

पोत वाणिक सायात्रिक नो व्यापारी नाम ।
कर्णधार नाविक दोऊ एपेवक जल धाम ॥२३॥

पोतवाह नाम वा पेवक नाम वा गुण काष्ट नाम

पोत वाह सुनि पामक जेसव पेवक और ।
गुण वृक्षक कूपक कहै बँधै नाव जिह ठौर ॥२४॥
केनिपातक. अरित्रं क्षेपणी नौका दड ।
जल नापत जिह दड सो नूर नाम तिह मड ॥२५॥

नाऊं काठडी 'वा' काष्ट कुद्दारा नाम'

सेक पात्र सेचन दोऊ अभ्रिकाष्ट कुदाल ।
नो समुद्रि का जानियो नर सामुद्रिक भाल ॥२६॥

निर्मल व मलीन नाम:

प्रसन्नाक्ष निर्मल सोई वीघविमल सलहत ।
आविल कलुप अनभ्रक्ष, पुनि आगाधात जु कहत ।।२७।।

औंडा वा उचाका नाम.

निम्न गमीर गमीरता अति उन्नत उत्तान ।
अतल स्पर्प अगाध है उयल सो उत्तान ।।२८।।
जाल अनायक पविनक सनसूत्र सुजग चाहि ।
केवट धीवर दास कहि कैवर्त्तप कवि आहि ।।२९

कुंभिनी नाम

मत्स्याधानी वडस पुनि कहै कुवेणी ताहि ।
वनसी वेधनमीनकी मत्स्य वेधन आहि ।।३३०।।

मछ नाम

मत्स्य ग्राह वैशारिणी अडज सफरीमीन ।
सक्लीनक विशारझप प्रथरोमापाठीन ।।३३१।।

वदनिका नाम

गडक सकल अर्मक सहस्त्र दप्ट्र पाठीन ।

मत्स्य भेद नाम:

उलूपी शिशुक चिलचिमी ताहिक है नलमीन ।।
प्रोप्टी सफरी नाम द्वै कहै नूर ए जान ।
क्षुद्राड समदाय झप कहै सु पोताधान ।।३३२।।

रोहू नाम

रोहित मद्गुर शाल सोरा जीव सकुल कहतु ।
तिमि तिमगला दय ते, यादासि जल जतु ।।३

मकरादिक मत्स्य भेद नाम

शिशुमा रोद्र शवुक्हु मकरा दय ते आहि ।
कर्कटक सुकुलीर पुनि नक्र ग्राह अवराहि ।।३३४।।

उनसो भिन्न भेद है ।। कछ वा वा सीप नाम

कूर्म कच्छप कमठ पुनि वाहन राह सुव्वित

सीप नाम

मुक्ता स्फोट सुक्ति सो । जयूका जल शुक्ति ।।३४

मोती नाम·

जल सुत दधि सुत सीप सुत मोती गोती चन्द ।
मुक्ता गुलिक सुनूर कहै जगवद ।।*३३६।।

---

* मूल में भी पद भग है ।

कँचवा नाम

त्रिपुकर्ण[1] गडू पद । वहै गिडौला नाम ।
नूर कहा नगुवरनोऐं । जलचज जोव विश्राम ॥३३७॥

जोक वा गोह नाम

कहै जलौका रक्तपा बहुरि जलौक सजान ।
गोधा सोई गोधिका निहाका सुपरवान ॥३३८॥

कोडो नाम

कर्पदिका सुवराटिका । कौडी कहिए ताहि ।
अब्धिक डडीर पुनि फेन भाग सो आहि ॥३६

शंख वा छोटा शंख वा मीडक नामः

शंख कंबुल हुमपते घप नपा जलु भूर ।
दर्दुर भेक मडूक प्लव वर्षा मू सालूर ॥३४०॥

मीडकी नाम

भिली और गडूपदी वर्षा भ्वी मेकी सु ।

काछवो नाम

कमठी दुलि (मगरी नाम) शृगी प्रिया मूहुरम्यएकी सु ॥४१॥

जल थान नाम

दुर्नामा दीर्घ कोपिका । जलाशय जलधार ।
ह्वै अगाध जल जासमैं ह्रद दह ताहि उचार ॥३४२॥

चौवच्चा नाम वा कूप नाम

कहि आहाव निपान सो । जलाशय उप कूप ।
कूप अनु उदपान अही नेमिस्विका अनूप ॥३४३॥

पुहकरनो जोहडो नाम

कूप वधन जो कूप को । तिहि बीनाह बयान ।
पुष्करनो को पात कहि देव सरोवर नाम
अपात देव क्न जान ॥३४४॥

जोहड वा छोटो बावडी नाम

पद्‌मा कर सरसी सु सर ताल तडाग का मार ।
वे शत पल्वल अल्प सर । दीर्घिका जलधार ॥३४५॥

पाई वा थाहुला नाम

पैय परिया धार सो मो जल धारण होइ ।
आल वाल अवाल पुनि आवापो है सोइ ॥४६॥

---

१. सम्भवत मूल में 'क' कटा हुआ है ।

नदी नाम

सरित्लवती निम्नगा सैवलनी तटनीय ।
ह्लादनी धुनी तरगिनी, आपगा द्वीप वतीय ॥४७
स्रोतस्विनी सरस्वरी । कूल कषा बपान ।
निर्ह्यरनी सो नूर कहि । रोधा वका आन ॥३४८॥

गगा नाम

गगा विश्नुपदी प्रगट हैमवती हरिरूप ।
धुनदा मदाकिनी भागीरथी अनूप ॥४६
निगम पदी निर्जरनदी जह्नुसुता तिहि जान ।
त्रिश्रोता सुरदीर्घिका सुरनदी कहत बपान ॥३५०॥

कालिंद्री वा सरस्वती नाम:

जम अनुजा कृश्न यमी। शमन स्वसा है सोइ ।
सरस्वती कूल कषा रोधो वका होइ ॥३५१॥

रेवा नदी नाम:

रेवा सोई नर्मदा, सोमोद्भवा बपानि ।
एक्ल कन्यका कहत है पडित लेहु पिछानि ॥५२

करतोया नाम

सँत वाहिनी बाहुदा करतोया सदानीर ।

रसजू नदी नाम:

शितुद्रु शतद्रु (विपाशा नदी नाम) विपाशा जानि विपाट सुधीर ।

वारज नाम

कुल्पा अल्पा कृत्रिमा करी नदी जो कोइ ।
वेत्रवती सु सरावती चन्द्रभाग पुनि सोइ ॥५४॥
कावेरी औसरस्वती सरिता मिलै जु जाइ ।
सिंधु सगम सो कहै सभेद कविराय ॥५५

देविका नदी वा सरजू नदी

सोण सोण नद को कहै हिरण्य बाह पुनि सोइ ।
"दाविक" (आविक)[1] सोई देविका सारय सजू होइ ॥५६॥

कवल की जाति नाम लाल कवल नाम

रान शब्द क हल्लक सौगधिक कल्हार ।
दरोश्वर गोतो कहै . (रक्त मधि ष नाग) उत्पल कुवलय नार ॥३५७॥

---

१. मूल में 'आविक' ही दिया हुआ है । पर मारजिन पर "दाविक (शुद्ध पाठ)" लिखा हुआ है । पर न तो लिपिकार की स्याही में है और न उसके सेत में ।

सेत कुमद नामः

सित: कैरव कुमद द्वै :: कवल कद नाम : सालूक: तिनकद ।
जल नीली :: शैवाल नाम :: शैवाल सो शैवल जल पर वद ।।

पुरयनि नामः

पुरयिनि जानहु कुभिका वारिपर्णा तिहि नाम ।
नूर कहे निहचै सुनो जाको है जल धाम ।।५६।।

कवलनी नामः

कुमुद्वती पुनि कुमुदिनी नलिनी बिशनी मानि ।
कुमद प्रिया पद्मिनी सुपा नूर लेहु पहिचानि ।।६०।।

कवल नामः

कवल नलिन अवुज पद्म । सहसपत्र शतपत्र ।
अभोरुह सरसीरुह पकेरुह कहि अत्र ।।३६१।।
उत्पल कज महोत्पल तामरस, राजीव ।
कुवलय पुष्कर कोकनद अब्ज सु मकरदीव ।।३६२
सारस जलज सरोज पुनि पकज अरु अरविंद ।
विश प्रसून रु कुशेशय सहित सकत ए इद ।।३६३।।
पुडरीक कैरव कुमुद है इन को रँग सेत ।
इदीवर नीलोत्पल नाहिन रवि स्यौ हेत ।।३६४।।

लाल कोकनद वा कवल नाम.

नाला नाल मृनाल विश ततुडड तिह जान ।
सिफाकद करहाट सो केसर किंजल्कान ।३६५।।
नव दलं सर्वात्तिका कहि जेकवलन कं चाहि ।
बीज कोश बराटक मध्य कर्णिका आहि ।।३६६।।

चौदह रतन नाम लिप्यते

लक्ष्मी, कौस्तुभ, विधु, सुधा, सुरा, धन्वतरि धेनु ।
हय, गय, सुरतरु, धनुष विष सष रभ रत्नेन ।।३६७।।

चौदह विद्या नाम

ब्रह्मज्ञान, रसायन, सुरधुनि ज्योतिष वेद । कोक व्याकरण
कोक, व्याकरण, जलतरण, लेपन, वैद्यक भेद ।।३६८।।
नटनृति, हयवाहन, बहुरि धनुर्द्धर परवान ।
सबोधन, चातुर्यता, चौदह विद्या जान ।।३६९।।
नूर नाम की दाम मं, प्रथम कहे दस वर्ग ।
स्वर्ग आदि तें उदधिलौं साग सपूरन सर्ग ।।३७०।।

इति : वारिवर्ग. । इति श्री मत्सकल अभिधान रत्नभूषन भूषिताय
मियां नूर कृत भाषाया नाम प्रकाश नाम मालाया प्रथम काड: सपूर्ण ।

दाहा :　स्वर्ग व्योम दिक कालधी सब्द नाट्य पाताल ।
निरय बारि ये नूर मनि प्रथम पड ना माल ॥१॥
पृथ्वी पुर गिर बन तरू मृग्गादिक नर वर्ग ।
ब्रह्म क्षत्र विस शूद्र कहि नूरदूसरे सर्ग ॥२॥

छिति नाम:

भू भूमि अचला रसा। स्थिरा अनता क्षौनि ।
विश्वभरा बसुधरा धाराधरनी श्रौनि ॥३॥
मही मेदनी कुभिनी इला बिला गो ज्याहि ।
कु प्रथवी प्रथ्वी क्षमा, वसुधा सर्व सहाहि ॥४॥
गोत्रा उर्वी काश्यपी भूतधात्री विपुलासु ।
बहुरि लोर्नरा बसुमती रत्नगर्भा तिहभासु ॥४॥

सात दीप नाम

जबू, सात्मलि, क्रौच पुनि पुष्करसार जान ।
साकु प्लक्ष वषानियँ सातौं दीप प्रवान ॥५॥

नौपंड नाम

भर्त्तहरि वर्ष किंपुर इलावृत रम्यकाक्ष ।
हिरन्मय कुरुपड हरिनमैं केतुमालपडभाष ॥६॥

प्रशस्त नाम

माटी मृत सो मृत्तिका और प्रसस्ता अहि ।
मृत्सा वहुरौ मृत्स्ना जो प्रसस्न कहि ताहि ॥७॥

उत्तम पेत नाम:

सस्या ढ्या सो उर्वरा, ऊप मृत्युका क्षार ।
उपवान उपर कहे, स्थली स्थल वुचार ॥८॥

स्थूल को निचार नाम

जो अकनृमा भूमि ह्वै। ताकी स्थली कहत ।
स्थल कृत्रिमा सु जानिए नूर नाम सलहत ॥९॥

मारवाड भूमि नाम

निर्जल मरु मन्वान सो, पिल अप्रहत जु सुन्य ।
लोर भुवन विष्टय जगत पुनि जगती कहि गुन्य ॥१०॥
भारतवर्ष सुलोक यह अवधि शरावति जानि ।
देश प्राक दक्षण बहुरि पश्चिम उत्तर मानि ॥११॥

पुरासान

म्लेछ देस प्रत्यत गो मध्यम देस ।
मार्यावर्त्त पुन्य भू विन्ध्यहिमाल मध्येग ॥१२॥

नृपति वर्स नीवृत सोई जनपद जन जुर हाह ।
विषय देस विस्तार पुनि उपवर्तन जु कहाह ॥१३॥

जड देस नामः

नड्वात नड्वल नु है, नड् प्राय जो देस ।
कुमद्वान जहाँ कुमद के वेत स्वान बहु वेस ॥१४॥

विस्तार देस नामः

नीवृत जनपद राष्ट्र सो उप वर्तन तिहु जान ।
विषय मडल सो देस है और विदेस बपान ॥१५॥

कच्छ देस नाम भेदः

शाद्वल. शाद. हरित पंकिल सो राजवाल
जल प्राय सु अनूप है नदी कच्छ विधि भाल ॥१६॥

अश्म प्रायमृत का प्राय देस नामः

शार्करिल. सो शार्करः शर्करावति देस ।
सिकता बहुरो सिक्लो सिक्तावती बिसेस ॥१७॥
नदी अबु वृष्ट्यबु करि पालित आहि जु नित्य ।
नदी मातृ को देस इक देस मातृ कवित्त ॥१८॥
सुष्ट राज्य जिंह देस मैं राज न्वान् कहत ।
तातैं ज्यों विपरीति ह्वै राज्यवान सलहत ॥१९॥

गोसाला नामः

भूतपूर्वक गोष्ट ज्यो ।

जल बाधियै सो बध नामः

सेतुआली सो बध ॥ गाव सीम नामः
पर्यन्त भूसुपरि सर. नगर समीप जु कध ॥२०॥

वंबई नामः

वामलूर बल्मी क पुनि नाकु कहत है ताहि ।
वाम्वी कूठ बपानिए, बहुरि शक्रशिर आहि ॥२१॥

मार्ग नाम·

अयन वर्त्म मार्ग अध्व पदवी सृति पयान ।
सरणि पद्धति वरमनी, पद्या एक पदी आन ॥२२।

सुपथ नामः

अति पथा सो सुपथा सत्पथ अर्चित अध्य ।

कुपथ नामः

विपथ कदध्वा कापथ व्यध्व सोई दुरध्व ॥२३

चौवटा वा कुमार्ग उजाडि मार्ग वा दुर्गम मार्ग नामः

श्रंगाटक सो चतुष्पथ । अपथ कुपंथ उचार ।
दूर सून्य मग प्रान्तर बहुरौ कहि कांतार ॥३२४॥
नल्व: हस्तच तुशत गव्यूति युग क्रोश ।

गज घंटा जिह मार्ग में वाजैं सो घंटा पथः

घंटा पथ संसरण पुन ।

नगर तै सैना निकसि करि विश्राम करै ताको नामः

उपनिष्कर होश ॥३२५॥

स्वर्ग भूमि नाम:

द्याठा भूमी रोदसी दिवःप्रथव्यौ होइ ।
द्यावा प्रथव्यौरो दस्याः नूर कहत कवि लोइ ॥३२६॥
लवण भूमिः लवना कर प्रगटै जहां गंजा रुमा वषानि ।
भूमि वर्ग पूरन भयो नूर पुरो पुर जानि ॥३२७॥

इति भूमि वर्गः । अथ गुरस्थानीय नगरी नाम व पुरी नामः

पत्तन पुट भेदन निगम । पुरी पू: नगरीय ।
सापा नगर सुनि-कटपुरी (पुरी पुरातन नाम): मूल नगर तँबीय ॥

पौली वा हट्नामः

बिसिपा रथ्या प्रतोली विपणि वीथिका पण्य ।
निषद्या सु आपन बहुरि, (गढका नाम): होत दुर्ग गढ अन्य ॥

कोट वा भीति नामः

साल वरुण प्राकार चय बप्र वृत्ति प्राचीर ।
प्रातत कोट सुभित्ति कहि ।

(हाड हकी भीत होइ ताकौ नाम मेंडूक नाम)

कुड्य मेडूक सुधीर ॥३०॥

पट्साल वा घर नाम:

सदन सद्म मंदिर भुवन वेस्म निशांत अगार ।
है निकाय्य आलय निचय आस्पद वस्त्यबिचार ॥३१॥
सरनायत प्रासाद कुट सौध हर्म्य संकेत ।
वासु उदबिसत ग्रेह ग्रह सभा सालासुप देत ॥
ज्यन पद अरु आस्थान को बहुरि अगार कहंत ॥३३२

आंगण नाम :

अंगण चत्वर अजिर पुन । भाग्यवंत गुलहंत ॥३३३॥

मुनि ग्रह नामः

पर्णशाल मुनि जनन की, उटज कहत है ताहि ।
चैत्य श्रायतन जग्य भू: (घुड़साल नाम): मदुरा हय सालाहि ।।३४।।

चौवारा वा पणहृडा नामः

चन्द्रसाल सोई सिरो ग्रह: सज्यवनं चतुः साल ।

सूत्रधार साला नाम मिल्त कारिको नाम है:

ताहि सिल्प साला कहै श्रावें सन सुवि शाल ।।३५।।
वारि सालिरा कहि प्रपा, मठ सिप्यादिक धाम ।
सूतिका ग्रह सु श्ररिष्ट है गजा मदिरा ग्राम ।।३६।।

गर्भ गृह नामः

गर्भागार सु वास ग्रह । जो घर में घर होइ ।
नूर कहत यहु ग्रहन को निपट मध्य है सोइ ।।३७।।

राज स्त्री ग्रह वा झरोपा नाम: श्रंत: पुर नामः

श्रवरोधन वरोध सो सुद्धात: पुर आहि ।
वातायन गवाक्ष सो जाल झझोपा चाहि ।३८।।

मैडा वा छानि नामः

श्रदृछोम कहिये श्रटा (छजा का नाम) बलौ पटल छज्जा सु ।
पटल प्रात कहि निध्रु कहि छज्जा श्रत प्रकासु ।३९।।

कपोत गृह वा द्वार नाम·

प्रती हार द्वारस्थ रथ्य क दर्शक सोई परदार ।
दारुक हैरिक परसरः गूढपुरुष चस्वार ।।४०।।

जासूस नाम:

कहै विटक कपोत ग्रह द्वार द्वार प्रतीहार
बहिर्द्वार तोरण वहुरि गोपुर सोपुर द्वार ।।४१।।

किचाडवान सीणी व पैडी नाम·

श्ररर कपाट बखानिए विष्कुभेगंल जान ।
नि श्रेणी अधिरोहणी आरोहन सोपान ।।४२

कीला व देहली नाम

प्रघण प्रवाण श्रलिंद कहि । बहिर्द्वार जो होइ ।
ग्रहाव ग्रहणी देहली ग्रधदारुण सिल सोइ ।।३४२।।

किवाडहकी श्रटेकापथर वा काष्टविचगाडि है ताको नाम:

दहु कपाट को श्रटक को गड्डोग्रो काठपापान ।
कूटहस्त, नप कहत है नूर सुबुद्धि निधान ।।३४३।।

गाढ को ग्राम नाम वा भोहरा नाम

संवसथ जानियो, ह्वै जु गाढ को ग्राम ।
वस्तु वेस्म भू नूर कहि । भूमि ग्रेह के नाम ॥४४

ग्रामांत नाम:

उपसल्प सीमा बहुरि सीम कहत कविराज ।
घोप ग्राम ग्राभीर को, पल्ली गोप सुसाज ॥४५

बुहारी वा कूडा नामः

समार्जनी सोई सोधनी, संकर ग्रवकर सोइ ।
निष्क्रपण निःसरण मुप । संनिवेस पुनि होइ ॥४६

घर द्वार बाहर कों निकसै ताको नामः

सबरालय सपक्वन जे कि रात के धाम ।
नूर कहो पुरवर्ग ग्रव सुनहु सैल के नाम ॥४७॥

इति पुर वार्गे समाप्तः महीध्र वा पाषाण नामः

सैल, शिलोच्चय ग्रचल नग ग्रद्रि, गोत्र, गिरि, ग्राव ।
धर, पर्वत, ग्रग, दरीभृत, शिपी, शिषरी हरि नाव ॥४८
सान मान, निलोचय, त्रिकुट, क्ष्माभृत बहुरि ग्रहार्य ।
ग्राव ग्रस्म प्रस्थर उपल, दृपस सिलाज पहार्य ॥४६॥
लोका लोक चक्रवाल है त्रिकूट, त्रिककुद, जान ।
ग्रस्तचरम गिर को कहै । उदय पूर्व निरमान ॥३५०

ग्रष्ट पर्वत नाम:

मेरु, हिमालय, बिंध, पुनि मलयाचल, कैपासु
उदयाद्रि, रोहण, ग्रष्ट, लोका लोक नगासु ॥५१

पर्वत सिषर वा तट वा मध्य नामः

कूट सिषर ग्ररु शृंग कहि । भृगु प्रपात तट होइ ।
कटक, नितंब, सु मध्यगिर सानु प्रस्थ स्नु सोइ ॥५२

जलपरवा हुवा कंदर बषानि नामः

उत्सः प्रसवणु, भर, निभरः बारि प्रवाह बहंत ।
दरी कंदरा जानियौ :: (पानि नाम) :: खजुनि ग्राकर कहंत ॥५३
देव पात जानहु, बिला गुहा गह्वरा होइ ।
सिला गिरै गिर तैं पृथुल गडसिला है सोइ ॥५४॥
धातु मन सिला ग्रादि दै, गैरिक धातु विशेप ।
कुजनि कुंज लतादिकन उदरावृत ग्रतिलेप ॥५५

इति शैल वर्ग: ।। अरण्य वा बाग नाम:

अटवी, वन, कानन, गहन, वस, बिपन कातार ।
निष्कुट ग्रह, आराम, पुनि उपवन, बाग, बिचार ।।५६
मध्नी गनिका प्रहु, तपवन, वृक्ष वाटिका जानि ।

राजा, राजा क्रीडा वन नाम:

साधारण जुवन उद्यान आक्रीडानि ।।५७।।

पंक्ति वा अकुर नाम

वीथी, आलि, आवली, श्रेणी, लेषा, राजि ।।
अकुर, अभिनव उद्भिद , वन्या । अतिवन आजि ।।५८

वृक्ष नाम:

साषी, बिटपी, पलासी, द्रुतर फली नगसाल ।
पादप, अनोकुह, महीरुह, कुंठ आगम द्रुम माल ।।५६।।

पेड वा शाषा वा ठूडे वृक्ष नाम:

स्थाणु, सकु, ध्रुव, पेढ कहि सिफ क्षुप, लघु साष ।

बिना गाडि वृक्ष नाम

स्तब गुल्म अप्रकाड सो एक सरल सुप भाष ।।६०।।

वल्ली नाम

गुल्म, निप्रतति, बितानिनी, बिसनी, विसति, लताहि ।
बल्ली, उपल, बषानियै बेलि कहत है जाहि ।।६१।।

पर्वकादिक ऊचा'षा नाम

वृक्षा दिक की उचता, सो आरोह बषान ।।

ऊचा का नाम.

उच्छ्राय, उत्सेध, पुनि उच्छ्रय, कहत प्रमान ।।६२।।

डाला नाम

स्कध, प्रकाड सुडालये । बडे पेड सामान ।
शाखा, डाला, साष, ते, शिफा, जटा, वो जान ।।६३।।

मूल तें निकरि बेल वृक्ष ऊपरि चढ़ै ताको नाम

शाषा सिफाबरोह सो लता अग्रगत मूल ।

वृक्ष शिषा नाम

शिखर, शिरोग्र, बषानिये, यामैं कछून मूल ।।६४।।

जड वा मीगी वा नाम:

मूल, बुघ्न अहि सुजड मज्जा मींगी सार ।
वल्क, वल्कल, त्वच, सुत्वक, काठ काष्ट अरु दारु ।।६५

ईंधन नाम वा वृक्ष छेदन नाम वा मौर नाम:

इध्म, एध, इधन, समित्, मेघ, कहत सब ठौर ।
निकुह, कोटर, छेदतरु, वल्लरि, मंजरी, मौर ॥६६॥

पान नाम:

पत्र, पर्ण, दल, छदन, छद, वहि, पलास, बखानि ।
पल्लव, कोमल, पत्र, जे, किसलय, कहत प्रवानि ॥६७।

वृक्ष विस्तार नाम:

कहै विटप, विस्तार तरु, वृक्षादिक फल सस्य ॥

वध्य वृक्ष नाम:

वृत प्रसव बंधन सुनो । स्तवक, गुक्ष, पुहपस्प ॥६८॥
मूल, जाति, कहि बिदारी, व्रीह फलादि बषान ।
पुष्पादिक है पाटला नूर नाम परवान ॥६६॥

फल ऊपर जालो व जालिका घैंता को नाम:

क्षारक, जालक, जालो का कलिका कोरक जानि ॥

बन्धी कली का नाम:

ईषत विकशित जो कली, कुमल मुकुल सुजानि ॥७०॥

फूलण का वा कुमिलाण का नाम:

फूलण का वा कुमिलाण का नाम :

व्याकोशः, विकच, स्फुटः, विकसित, फुलित, सोइ ।
उत्फुल, प्रफुल, सफुल, पुनि, परिफुल्लित, जो कोइ ॥७१॥
दलित, प्रबुद्ध, विनिद्रित, बिहसित, प्रफुलित फूल ।
सकुचित, मूद्रित, निद्रत, मिलितं, मुचित, मूल ॥७२॥

फूल का नाम :

पुष्फ, प्रसून, प्रसव, सुमन, कुसम, सुमन सुलतात ।
है मकरद, जु, फूल रस, रज, पराग, अनिताव ॥७३॥
सर्वत्तिका सु नौदलं केसर, किंजल्प ।
कूंपलि, कौप, वषानिये, जो, व्रक्षोपरि झलक ॥३७४॥

काचा फल नाम :

आद्र होइ जो वृक्ष फल । सोई आम सलाट ।
सके तान सुनूर कहि, बोज्य कोस सु बराट ॥३७५॥
उन्मूलित, उद्धृत, लुंजित, धुत, पंखित, उत्पात ।
प्र खोलितः, तरलित, बहुरि, निमूंलन, विप्यात ॥३७६
आरया पित, आरोपित, स्थितो करण, विप्यात ॥७७

आव नाम :

केवलनभ, सहकार, सो यमाग, मधूदूत ।
माकद., पिकवल्लभ:, पुनि रसाल, श्री नूत ॥७८॥

नारील वा केला नाम :

बानर मुप, पुनि लागली, मायत, सो लागूर
रंभा, मोचा, गज बसा, भानु फला, जा, नू ऊर ॥७६॥

सुपारी वृक्ष नाम :

घोटा मामक गुवाक पूग सुपारी काम ।
ता को फल उद्वेग है । नूर कहे गुन धाम ॥८०॥

अनार नाम :

रक्त बीज हालाक र तिक । मुक प्रिय दाडिम नूर ।

बिल्व नाम .

सालूप, सैलूप, पुनि, बिल्व, श्रीफल मालूर ॥३८१॥

विद्रुम वा जाय नाम .

सुपिर, नटी, नघो, धमनि, कपातादि परवाल ।
जनकेसी, पुनि, मालती, जाती, सुमना माल ॥३८२॥

रायवेंलि दुपहरीया नाम :

अवष्टा, प्रिय वादिनी, राजपत्रिका, जूक ।
जपा कुसम पुनि रक्तक बघु जीव वधूक ॥३८३॥

तिल पुष्फ नाम :

वज्रपुष्फ, पुमि जपा कहि, ऐंद्र पुष्फ है सोइ ।
नूर नाम एतें कहै प्रगट पुष्फतिल होइ ॥

केतकी वा चिरमठी नाम:

केतुकी, कहिये, त्रिणद्रुमा, ताप, पजूरी मोइ ।
काक चिचुका, कृस्नला, गुजा, मघी सुहाइ ।८५॥

पीपल वा वड नाम

अस्वथ, बाघ, द्रुम, चलदल, कुंज रामन वाहि ।
निग्रोधो, वहुपाद, वट , जटी, रक्तफल आहि ।८६॥

सूत वा वड वेर नाम:

तूल, नूद, पूप, क्रमुक, ब्रह्मदारु, ब्रह्मण्य ।
कर्कंधू, बदरो, सोई, कालि, कहत है अन्य ॥३८७॥

चपा का नाम:

चापय, सो, चपक हेमपुष्फक जानि ।
गध फली तावो कली पढित करहु प्रवान ॥३८८

तांबूल वल्ली नाम:

तांबूल, वल्ली जानियो । वल्ली नाग बपानि ।
तांबूली, सोई द्विजा, प्रगट, पान, श्रापानि ॥३८६॥

बडी इलाइची नाम:

एला, बहुला, निष्कुटी, उहै, चद्रसाला जु ।

छोटी इलाइची नाम: छोटो एलचा त्रिपुटा, त्रुटि, उपकु चिका, तुच्छा सूक्ष्मा श्राजु ॥९०

माधवी वा कुंद नाम:

वासती, सो, माधवी पुन्द्रक लता कहत ।
श्रति मुक्तः, पुनि, कुद, को माध्यनाम, सलहत ॥९१॥

धतूरा नाम:

धूर्त, कनक, मातुल, मदन, उन्मत, कितव, धतूर ।
मातुलपुत्रक जानिये या को फल परि पूर ॥९२॥

घास नाम:

वस, तृणधुजा, वेणु, सो त्वचि सार त्वक्सार ।
तेज नमस्कर जव फलो शतपर्वा, किम्भर्र ॥९३॥

ऊष वा पोडा वा कतारा नाम:

इक्षु, रसाल, सु जानियो पोडा, पु ण्ड्रक होइ ।
ताकार, जु, कतार, सो, नूर नाम कहि सोइ ॥९४॥

सब्दायमान वा सना वा गाठि वा किनारा नाम:

सब्द करत जे पौन तें वेणव की जक जान ।
गाठि, ग्रंथि, परुषी, पर्व, गु ड्र जनक सरकान ॥९५॥

घास वा तृण वा डाभ वा ताड वृक्ष नाम:

सष्प वाल श्रृण यवस पुनि श्रर्जुन धास समाज ।
कुश कुथ दर्भ पवित्र, सो ताड ताल तृणराज ॥९६॥

पेठा नाम:

कूष माड, कर्कार सो पेठा नाम बपान ।

ककंडी वा तूंबी नाम:

श्रौर वारकर्कटिक है तुवि श्रला बू जान ॥९७॥
तृण द्रुम ताडो केतकी पज्जूंरी पजूर
नामक हे वन वर्ग में उतम उतम नूर ॥३९८॥

गाडर वा षस नाम:

वीरतर, सौवीरण ताको मूल, उसीर ।
श्रभय, नलद, श्रमृनाल, लघु, जलाशय, गु उसीर ॥३९९

बदरी, कोली, कुवल, सौ कोवल, बदर सौवीर ।
फुनि फेनिल कर्कंधु सो, घोटा सुनहु सुधीर ॥४००
कहे ग्रोषधी वर्ग मैं नाम प्रकट जे नूर।
सिंघ वर्ग ग्रब बरनऊ सुनत होत बुधि पूर ॥४०१॥

इति ग्ररण्य वर्ग संपूर्ण : : ग्रथ मृगराज नाम:

पुंडरीक, कठीरव, केसरि, हरि, पचासि ।
हर्यक्ष: मृगदृष्टि, सो मृगासन:, पुनि भासि ॥२॥

व्याघ्र वा चीता नाम

सार्दूल द्वीपिन् सोई कहे व्याघ्र ग्रभिधान ।
तरक्षु मृगादन चित्रक चीता नाम प्रवान ॥३॥

सूकर नाम:

सूर घृष्टि पोत्री किटि: दंष्ट्रि घोणि किरि कोल ।
स्तभ रोम भू दारु सो, क्रोड वराह ग्रडोल ॥४॥

वानर नाम:

वनचर मर्कट, वलीय मूल साषा मृग हरि कीस ।
प्लवग वनौक प्लवग कपि कहिनागूल कवीस ॥५॥

रीछ नाम:

ग्रछ, भल्ल भालूक पुनि, भल्लुक ऋच्छ वषानि ।
षाड्गि, षड्ग सुगडक गैडा नाम प्रवानि ॥६॥

भैसा वा भैस नाम:

वाह दिपत्, कासार, सो सैरभ महिष लुलाय ।
महिषी स्त्री वा ची स बद याही भाति कहाय ॥७॥

बिलाव वा बिलाई नाम

ह्योतु बिडाल सु ग्रापु, भुक्, वृष दसक मार्जार ।
मार्जारी ताकी त्रिया स्त्री बाची सु बिचार ॥८॥

गीदड़ नाम:

जंबुक, मृग, धूर्तक, दिवा बचक क्रोष्ट सिगाल ।
भूमिमायु, गोमायु, पुनि फेरु, फेर व भाल ॥६॥

मृग नाम:

हरि कुरंग गरग हरिण ग्रजिन जानि वातायु ।

मृग जाति नाम:

कृस्न सार, रुरुन्यंकु, सो रंकु एन कहायु ॥४१०॥
संवर रोहिष गोकरन कदली कदली चीन ।
चमरू प्रियक सुरोहित चमरी मृग परवीन ॥११

रोक नाम:

राम सरभ गधर्व शश :: (परहा नाम) :: गवय सृमर विख्यात ।
मृगेंद्रादि इत्याद योग यादमप सुजात ।।१२।।

छछुंदरी वा चूहा नामः

गध मुषी, सु, दिवाधिका, दीरघ तुंडा जानि ।
उंदुरु मूषक आखु पुनि गिरिका मूषिका मानि ।।१३।।

गिरगट वा छपकली नामः

मरट बहुरि कृकलास ए दोइ गिरगिट के नाम ।
पल्ली मुसिली गोधिका रहै छपकली धाम ।।१४।।

मकडी वा ममोला नामः

तनुवायु, लूता, सोईउर्न नाभ सूत्रा सु ।
पजरीट पजन बहुरि कहै ममोला तासु ।।१५।।

कान पजूरा वा कीडा वा बीछू नामः

कर्णजलौका, शतपदी, नीलागु:, कर्मि, जानि ।
शूक कीट वृश्चिक अलि, द्रोण वृश्चिक सो आनि ।।१६

सिचाना नामः

पत्री श्येन ससादन कहै सिचाना नाम ।
चाप किकी दिव नूर कहि नील पप अभिराम ।।१६

घूघू नामः

वायस, अरिपेचक, उलू, घूक, उलूक हि आहि ।
कौसिक और निशाटन दिवाभीत नहिचाहि ।।१७

सूवा नाम:

स्वर्ण चातक किकी दिवि चाको चाप बखानि ।
अनुवादी शुक कोर सो रक्त बिंब पहिचानि ।।१८।।

पपीहा वासारस नामः

कालकंठ दाल्यूह हरि, सारस सोई सारंग ।
स्तोकक चातक पपीहा जपत रहत पी अंग ।।१९।।

कोइल वा कबूतर नामः

कोकिल वन प्रिय रक्त दृग पिक परभृत एनाम ।
कलरव परावत बहुरि कहि कपोत अभिराम ।।४२०।।

चकोर नाम-

विषसूचक विष भीरुक जाव जीव चकोर ।
ससि प्रिय अल अगार भुकू वहि, गुद्दाल चहोर ।।४२१।।

काक नाम:

वलि पुष्ट मकृत्प्रजा: । ध्वांक्ष पोष परभृत ।
वरिट मरिष्ट सु वायस ध्वांक्ष बलि भुजो नित ।।४२२

द्रोण काक नाम

द्रोण काक काकोल कहि काल कठ दात्यूह ।

चील्ह नाम

आतायिन् सो चिल्ल है, दक्षाय्य गृध्र समूह ।।४२३।।

मुरगा नाम ताम्र चूड चरणायुध कुर्क सो कृकवाकु ।

चिडा नाम: चटक पुनि कलविंक तिहिवनिता चटिका ताकु ।।४२४।।

कुंज नाम

क्रु ञ्चौंच "(बगलो नाम)" बक कक कहि, (सारस नाम) पुष्कर सारस जानि।
कादबकल हंस सा "(हंसनाम)" राज हंस पहिचानि ।।४२५।।
स्वेतगरत शतछिद बहुरि मान सौक चक्राग ।
हंस मराल बखानिए चु च चरन अति स्याम ।।(धार्त्त राष्ट्र मलि वाग ।)

चकवा चकई नाम:

कोक चाक चक्र चक चाक रथांग ताको नाम ।
राम श्रापि, जामिनि विधुर, सूरसपा अभिराम ।।२७

सारो वा हंस स्त्री वा सारस स्त्री वा डॉस नाम.

वलाका सु विदाकठिका वरटा जोषित हंस ।
सारस वनिता लक्ष्मणा बन मक्षिका सुदंस ।

मधु मक्षिका नाम

सरघा है मधु मक्षिका, (टीडा नाम) सलमा साइ पतग ।
पतगिका सा पुत्तिका दीप निरषि दैं अग ।२९।।

ततैया वा अलप दस वा भमरी नाम

गधोली वरटा बहुरि भमोरी हृवयानि ।
मृगारी साची रुका चीरी जिलिका मानि ।।३०।।

जोगिनी नाम

अगियो ज्योति मालिनी कीटमणि, इन्द्र गोप सो चाहि ।
ज्याति रेंगण, पद्योत है भापा झींगन आहि ।।३१।।

भ्रमरनाम

मधुकर मधुलिट मधुप अलि मधुव्रत है मधु वीर ।
लिन भृग षटपद भनी कीना नय मोई भौर ।।३२

चिचरी:

चिचरीव चेलय पुनि रोनव सारग ।
द्विरेफ पुष्पनिट्ट मिलीमुष द्दोमद चल् भ्रग ।।३३।।

मयूर नाम:

नील कठ वरहिण वर्हीं शिषी शिषा वलि सोइ ।
केकि कलापी शिपडी लाशी ग्रहि भुक होइ ।।४३४।।

मोर पूछ में चंदोवा ताका नाम

चद्रक मेचक चद्रिका (मोर वचन नाम) केकावाणी मोर ।

सिर ऊपर मोर केह चूडा ताको नाम

चूडा शिपा शिपड पुनि । (पूछ नाम) । पिक्ष वर्हपुछोर ।।

पक्षी नाम

छिज पतत्रि पत्री पतत् ग्रडज विहग विहग
पक्षिन गौक विहायस सकुनि सकुत पतग ।।३६।।
वाजि विकर वि विक्वर नीडोद्भव पित्तत ।
पतत्रय पुनिपत्ररथ नभ सग मगरुत्मत ।।४३७

पाप वा चूच वा उडण का नाम

पत्र पतत्र तनूरुह गरुत पछ छदलीन ।
पक्ष मूल सपक्षति प्रडीन उड्डीन सडीन ।।४३८।।
चचु स्त्रोटि सृपाटिका पेशी कोशी ग्रड ।
नीडकुलाय सुनाम द्वै जापक्षी ग्रह मड ।।३९।।

बालक का वा दोय का नाम

पोत पाक ग्रभंक पृथुक डिभ सिसुक सिसुवाल ।
मिथुन दवद द्वे उभय विव वोय जमल युग भाल ।।४५०

समूह नाम

निबह व्यूह सदोह व्रज स्तोम ओघ सघात ।
चय सचय समुदाय गण निचय वृद सोव्रात ।।४१
जुग युथ कदल जाल कुल कुरव कि लाल समाज ।
वर्ण परिग्रह ग्राम पुनि क्हिग्र नेक कविराज ।।४२
निकरब समुदय त्रिक्र निकर वार समुवाय ।
त्रिक्र कदव ग्रनतए सघ समूह कहाय ।।४३।।
वृद भेदममवर्गजे ।।
(येक ठौर होंहि सो सघ सार्थकहिए ।)
सघ सार्थ बहु जीव ।।
(यूथ वा कुलपक्षी समूह) सजातीय सो कुल कहे यूथ पशुन जीव ।४४

पशु समूहलो, समज, वहि औरन को सु समाज ।
सह धर्मी मुनि काय है भेदरहत कवि राज ।।४५

रासि या ग्रह पक्षी नाम

पुंज निकाय सु उत्कर कूट कूट से होइ ।
पक्षी मृग जो परन में छेक ग्रह यक मोइ ।।४६।।

वर्ग नाम

देखिये वस्तु अनेक जहा है पुनि सबै समान ।
नूर कहत है समझिकै तासों वर्ग बखान ।।४७।।
सिंघ वर्ग को नूर कहि सुनत सबद वल होइ ।
सुनहु मनुष के वर्ग को नूर बखानत सोइ ।।४८
इति सिंघादि वर्ग संपूर्ण ।।

अथ मनुष्य वर्ग ।

मनुष्य नाम

नर मानव पूरष पुरुष मानष मर्त्य पुमान ।
मनुज पंच जा मनुष्य सो शरीरभृत परवान ।।४६।।

स्त्री नाम

स्त्री योषित अबला वधू । बाला वनिता भाम ।
प्रमदा काता कामिनी महिला रमणी राम ।।५०।।

कोपवती स्त्री नाम

वाम लोचना सुंदरी सीमंतिनी नारी सु ।
ललना जोषी कोपना नितंबिनी प्यारी सु ।।५१

कृताभिषेका नाम

भामिनी भीरु भागिनी पतीप दर्शिनी आहि ।
महिषी पटरानी उहै और भोगिनी चाहि ।।५२
पत्नी, पाणिग्रही, कहै सहधर्म्मिणी सु और ।
दार भार्या, जाया सो ग्रेहिणी ग्रही बहोर ।।५३।

साधु स्त्री नाम

स्वयंवरा, सु, पतिंवरा, वर्याआर्जा जाणि ।।
सती साधवी सु पतिव्रता सुचरित्रा सुवखाणि ।।५४

उत्तम स्त्री नाम

उत्तमा सु, वर वर्निनी वरारोहासलहत ।
भामिनो कहिये कोपना वाम लोचना कहत ।।५५

कुटंब स्त्री नाम

पौरध्री, सु, कुटंविनी । कुलपालिक कुलतीय ।

कन्या वा गौरी नामः

मन्या कुमारी कौक है सात बरस लौ होइ ॥५६॥

अदि व्यस्त्री नामः

दमयती, सीता, दिनौउ सची, आदि दै दिव्य ।
तारा मंदोदरी सती कहि मानुषी अदिव्य ।५७॥

तरुण स्त्री नामः

दृष्टर जासो मध्यमा गौरीकहिये सोइ ।
तरुणी युवा सु नाम ऐ [वहू नाम] विध्रू जनी स्नुषा होइ ॥५८

कामुकी स्त्री नामः

इछावती सुकामुका, वृष, स्यती, सलहत ॥
. पतिहित नत सकेत को, अभिसारिका कहत ॥५६॥

भगतना नामः

कुलटा असती वधुकी मुक्तापला सजार
पुश्चली र्षापिणी ईश्वरी श्वैरणी पाशुला नारि ।६०

जा स्त्री कै सौकि होउ ताकौ नाम·

पति पत्नी सु सर्भत्रिका, विश्वस्था विधवा सु ।

(त) सुत पति को हतै ताको नाम

अवीरा सु निष्पति सुता सौति सपत्नि प्रकासु ॥६१

सपी वादूती नाम

सध्रीची आली हितू वयसा सहचरी होइ
दूती कहि सचारिणी कुट्टिनी सभलो सोइ ॥६२॥

वेश्या नामः

रूपाजीवा कामुकी सर्व्व वल्लभा नाम ।
वार वधू, रु, बिलाशिनी लक्षिका गणिका भाम ॥६३॥

रजस्वला नाम

मलिनी पुष्फवती अवी, स्त्री धर्मिणी बपानि ।

बीज वा गर्भवती नामः

उदक्या सु पुनि रति मती आत्रेयी पहिचानि ॥६४

आर्त्तव रज, सो पुष्फ है, दोहद वती अवालु ।
निष्कला सु विगतार्त्तवा बहुरि गर्भिणी भालु ॥६५
आपन्न सत्वा गुर्विणी अतर्वली जानि ।
[illegible] स्त्री पहिचानि ॥६६

पशु समूहको, समज, कहि औरन को सु समाज ।
सह धर्मी सुनि काय है भेदकहत कवि राज ।।४५

रासि या ग्रह पक्षी नाम

पुज निकाय सु उत्कर कूट कूट से होइ ।
पक्षी मृग जो परन में छेक ग्रहयक सोइ ।।४६।।

वर्ग नाम

देखिये वस्तु अनेक जहा है पुनि सबै समान ।
नूर कहत है समभिकै तासौ वर्ग वखान ।।४७।।
सिंघ वर्ग को नूर कहि सुनत सबद बल होइ ।
सुनहु मनुष के वर्ग को नूर बखानत लोइ ।।४८
इति सिंघादि वर्ग सपूर्ण ।।

अथ मनुष्य वर्ग ।

मनुष्य नाम

नर मानव पूरुष पुरुष मानष मर्त्य पुमान ।
मनुज पच जा मनुष्य सो शरीरभृत परवान ।।४६।।

स्त्री नाम

स्त्री योषित् अबला बधू । बाला वनिता भाम ।
प्रमुदा काता कामिनी महिला रमणी राम ।।५०।।

कोपवती स्त्री नाम

वाम लोचना सुदरी सीमतिनी नारी सु ।
ललना जोषी कोपना नितबिनी प्यारी सु ।।५१

कृताभिषेका नाम

भामिनी भीरु भागिनी पतीप दर्शिनी आहि ।
महिषी पटरानी उहै और भोगिनी चाहि ।।५२
पत्नी, पाणिग्रही, कहै सहधर्मिणी सु और ।
दार भार्या जाया सो ग्रेहिणी ग्रही कहोर ।।५३।

साधू स्त्री नाम

स्वयवरा, सु, पतिवरा, वर्याआर्जा जाणि ।।
सती साधवी सु पतिव्रता सुचरित्रा सुवपाणि ।।५४

उत्तम स्त्री नाम

उत्तमा सु, वर वर्निनी वरारोहासलहत ।
भामिनी कहिये कोपना वाम लोचना कहत ।।५५

कुटव स्त्री नाम

पौरध्री. स कटविनी । कलपालिक कुलतीय ।

कन्या वा गौरी नामः

कन्या कुमारी कौक है सात वरस लौ होइ ॥५६॥

अदि व्यस्त्री नाम.

दमयती, सीता, दिनोउ सची, आदि दै दिव्य ।
तारा मदोदरी सती कहि मानुषी अदिव्य ।५७॥

तरुण स्त्री नामः

दृष्टर जासो मध्यमा गोरीकहिये सोइ ।
तरुणी युवा सु नाम ऐ [वहू नाम] विघ्रू जनी स्नुषा होइ ॥५८

कामुकी स्त्री नाम

इछावती सुकामुका, वृष, स्यती, सलहत ॥
पतिहित नत सकेत को, अभिसारिका कहत ॥५६॥

भगतना नामः

कुलटा असती वधुकी मुक्तापला सजार
पुश्चली धर्षिणी ईश्वरी स्वैरणी पांशुला नारि ।६०

जा स्त्री कै सौकि होउ ताको नाम

पति पत्नी सु सर्भत्रिका, विश्वस्या बिधवा सु ।

(त) सुत पति को हतै ताको नाम

अवीरा सु निप्यति सुता सौति सपत्नि प्रवासु ॥६१

सपी वादूती नाम

सध्रीची आली हितू वयसा सहचरी होद
दूती कहि सचारिणी कुट्टिनी सभली सोइ ॥६२॥

वेश्या नामः

रूपाजीवा कामुकी सर्व्व वल्लभा नाम ।
वार वधू, रु, विलाशिनी लञ्जिका गणिका नाम ॥६३॥

रजस्वला नाम

मलिनी पुष्फवती अवी, स्त्री धर्मिणी बखानि ।

बीज या गर्भवती नाम

उदक्या सु पुनि रति मती आत्रेयी पहिचानि ॥६४

आर्त्तव रज, सो पुष्फ है, दोहद वती अपानु ।
निष्फला सु विगतार्त्तवा बहुरि गर्भिणी मानु ॥६५
आपन्न सत्वा गुर्विणी मतर्वत्नी जानि ।
बहुरि कौटवी नग्निका नग्न स्त्री पहिचानि ॥६६

वृद्धा स्त्री वा पंडिता स्त्री नाम :

ताहि पलिक्नी कहत है, जो वृद्धातीय होइ ।
प्राज्ञी प्रज्ञा पाज्ञा बुद्धिवत तिय सोइ ॥४६७॥
कन्याते उपजै पुरुष तिह कानीन कहत ।
सुभगा सुत को सुक विजन सो भागिनेय सलहत ॥६८॥
भागनेय भगनी सुत सुभ्रेय विप्यात ।
पितृ पिता सा पितृमह प्रपितामह तिह तात ॥६९॥
माता मह, जननी पिता नानानाम विषात ।
मातुभ्राता, मातुल, दुहितापति जामात ॥७०॥

पुत्र नाम :

पुत्र सूनु सुत तनय सो आत्मज कहि अभिधान ।

बेटी नाम :

सुता आत्मजा पुत्रिका तनया नूर सुनाम ।
सतति तोक: अपत्य पुनि दुहिता जानहु सोइ ॥७१॥
नून नाम दहोइ बहिन के भग्नी सुसा सुहोइ
दंपति जपति स्त्री पुरुष भार्या पती जु होइ ॥७२

भौजाई नाम :

भौजाई सु प्रजावती, जोभाई की नारी ।
मातुलानी, सो, मातुली भाभी जानि विचारि ॥७३॥

उपपति नाम :

उपपति कहियै जार सो जारज कुइ वपानि ।
भर्तृ रिमृते सुगोल कहि, नूर नाम ए वपानि ॥७४॥
सूति मास बैजनन पुनि गर्भ भ्रूण कहैं दोइ ।
निनीया प्रक्षति, क्लीव पड पढन पुसक होइ ॥७५॥

बाल अवस्था वा तरुण अवस्था वा वृद्धि अवस्था नाम

बाल्य शशव शिशुत्व बालस मय अभिराम ।
तारुण्य पुनि यौवन स्थाविर वृद्धत्व नाम.
केसादिक उज्जल भए ताको पलित वपानि ।
अति शरीर जोरन सोई जरा विश्रसा आनि ॥७६॥
जति पत्नी को प्रसूता स्वश्रू जानो ताहि ।
दद्दु की पिता सुदहुन को सुसर नाम सो आहि ॥७७

बालक नाम :

उत्तान शार्याडिभ सो स्तनधयो स्तनपासु
[illegible] सो बालकै तरुण, वयस्य युवासु ॥७८॥

दसमी अवस्था नाम

वृद्ध जीन जीर्ण जरन् प्रवय स्थविर कहत ।
अग्रज अग्रेय वहुर पूर्वज जेष्टह कहत ॥७६॥

छोटा का नाम

अनुज जघन्यज अवरज कनिष्ट जवीयोजान ।

दुबल वा बलवान नाम

दुर्बल छात अभास सो असल मासज मान ॥८०॥

तुदिल वा नीची नाम

वृहत्कुछि सुपिचडिल तुदी तुदिक होइ ।

चपटी नाक नाम

अवटीटो अवनाट, अवभ्रट, नतु नासिक सोइ ॥८१॥

छोटी नाक नाम

पव ह्रस्व सुबावन ।

बुग सी नाकता का नाम

परणस पुनि वरसा स ।

नकटी नाम

विग्र, स्तुगतनासिक कहै नूर सु प्रकास ॥८२॥

वहिरा वा कूबडा वा अल्प तनु वा जुरढो वा टुड नाम

एड बधिर गड्डुरा कुब्ज पृश्निमल्प तनु सोइ ।

उदर उपरि पली पडै ताको नाम

वलिन् वलभ कुकर कुणि यकुचि ताग जिह होइ ॥८३॥
श्रोण पगु को कहत है मुडन चूडा कर्म ।
वलिर केकर व्यजन पोरे पज सु मर्म ॥८४॥
रुक्प्रति क्रिया सुचिकित्सा, अनामय आरोग्य ।
भैषज्य भेषज अगद जायु औषधी योग्य ॥८५॥

रोग नाम

आतक उतपात गद आमय रुक रुज ओप ।
रोग व्याधिमो कहत है ताही जानो दाप ॥८६॥
क्षय शाप, यक्ष्मा बहुरि पीनस है प्रतिस्याय ।
दाव क्षुत क्षुत् जानियै वास क्षवथु कहाय ॥८७॥
सोफ साथ सोई, स्वपथु सिध्म किनास हि आहि ।
पादस्ताट बिपादिका कहै बिवाई ताहि ॥८८॥

पाम या बिवाई नाम

पामा पाम विचर्चिका मछवा ताहि वषानि ।

कंडू नाम :

कडू ;या कडू बहुरि पजू पाजहि जानि ॥८९॥

फोड़ा नाम :

फोटक बिस्फोट पिटक व्रण नाडी व्रण ग्रान ।
कोठ वृष्ट मडल सोइ, चित्र गलित परवान ॥९०॥

बवेसो नाम:

ग्रर्श कहै दुर्नामिका ग्राना हस्तु तिवन्ध
प्रछर्दिका वमथु वमि, छर्दि बाति वृति ग्रघ ॥९१॥

वैद्य नाम

वैद, रोगहारी भिषक चिकित्सिक ग्रगदकार ।
वार्त्त विरामय वल्य पुनि, उल्लाघ गद पार ॥९२॥

रोगी नाम

ग्रातुर, ग्रभ्यातः बिकृत व्याधित ग्रभ्यमित होइ ॥
ग्रपटु ग्रामजा, वो, बहुरि रोगी कहिये सोइ ॥९३॥

वीज नाम:

ग्रघ ग्रदृक मूर्छाल सो मूर्त्त मूर्छित ग्राहि ॥
सुक्र तेज इद्री बीर्य बीज रेतसा चाहि ॥९४॥

मास नाम:

मायु, पित्त, कफ, श्लेष्मा, त्वक ग्रस्टग्धरा ग्राहि ।
पिसत तरल, पलल, सुपल, क्रव्य ग्रामिप ह वपानि ।
शुष्क मास उत्तप्त है तिह वलूर सुजानि ॥९५॥

रुधिर नाम:

रक्त क्षतज शोणित ग्रसृग् लोहि तास सहलत ।

मेद वा मल वा गूद वा ग्रात नाम

वपा बसा सो मद है, मल को विदृ वपानि ।
हिरदे मल सो योद पुनि [ग्रात नाम] ग्रत पुरीत सुजानि ॥९६

नाडी नाम

नाडो धमनी धामनी धरानशा हिंग्राहि ।
जोवत न्याता ततुको स्नायु शिरा सो चाहि ॥९७॥

वस वा लाल नाम:

स्नायु वस्न साय कृता काल पड बसु होइ ।
लाली सृणिका स्यदिनी दूपिका दृग मल सोइ ॥९८॥

गूथ वा मूत्र नाम:

विप्ठा, विसास, मल, शकृत, गूथ, पुरीष उचार ।
वर्च, वर्चस्‌ ग्रवस्करः, मूत्र प्रस्ताव विचार ॥९९॥

संपूर्ण शरीर हाड नाम:

हाड अस्थि कीकस कुल्य कर्प्पर सोई कपाल ।
पृष्ठास्थिसक सेरुका सरीरास्थि कंकाल ।।५००

अंग वा मूर्ति नाम:

अंग प्रतीक: अवयव, अपघन अंग सरीर ।
काय देह मूर्ति तनु धाम पतंग सुधीर ।।५०१।।
विग्रह उपघन संहनन वर्ष्म पुंगल मात्र ।
वपु संहन सरीर सो कहै कलेवर मात्र ।।५०२।।

पाउ को अग्र नाम:

फाग्र, प्रपदं बहुरि चरण अंगि पद पाद ।
गुल्फ घुटि कटकना तलइ, पार्ष्णिएडी जगाद ।।३।

गोडा वा जांघ नाम:

जानु उपर्व अष्टीवत् प्रसृता जंघा होइ ।

जंघ संधि नाम:

उरू पर्वतिह संधि को बंक्षण कहै सु लोइ ।।४।।

लिंग नाम:

मेढ्रो मेहन सेफसो सिश्नु लिंग तिह जान ।

आंड नाम:

अंड मुष्क, शोको वृषण [गुदा नाम] गुदा पायु सु अपान ।।५

जोनि नाम:

भग, वरांग, मदिरमदन, जोनि, कूपिका, उपस्थ ।
स्त्रीचिन्ह, पुनि, कुगतिपथ, सुपनिधि, उतपति अस्थ ।।६

पेडू नाम:

वस्ति नाभि तल को कहत [चूतड नाम] श्रोणि फलक कट होइ ।

कटि वा नितंब नाम:

कटि पीछे सु नितंब है: [जघन वा नाम] जघन पुरस्सर सोइ ।।७।।

कट नाम:　कूपक होइ नितंब में ताहि ककुंदर जानि ।

कटि श्रोणि सु कुकुद्मती अवलग्न मध्यमानि ।।८।।

लिंग जोनि डिग अंत ताको नाम:

कटि प्रोथ, स्फिच, खोइ, जोनि उपर जो होइ ।
पीठि वंश को त्रिक कहै पृष्ट चरम तन सोइ ।।९

पेट नाम:

तुंद पिचंड जठर उदर कुक्षी पेट प्रधान ।
वक्ष वत्स उर को कहै भाषा छाती जान ।।१०।

कुच नाम:

उरज, पयोधर, कुच, स्तन, सहन, पुन बछोज ।
चूचक कहै कुचाग्र को [मोद नाम], क्रोढ भुजांतर सोज ॥११

काधा नाम:

स्कंध भुज सिरो मस जो जत्रुणी सत सधान ।
बाहु मूल छेक कहे पार्श्व तिह्त लजात ॥१२॥

भुजा या कुहणी नाम

दोष, प्रकोष्ट, सुबाहु, भुज, सुतज, अव्यज कहत ।

कुहनी उपर प्रगड नाम

कु फोणी सु कुर्प्पर, उपर तिह प्रगड सलहत ॥१३

गोद के नाम

गोद उछग करोल अक, अब माल उतमग ।

सीस भूषन नाम:

सीरप मनि सीरप पुहप चूडा मनि मनि श्रिग ॥१४॥

पहुचा नाम.

पहुचा सोमणि वध कहि, भापत नूर सुजान ।

नाडा नाम:

नीवीग्रथ बधन प्रलबन, अबर निवस परिधान ॥१५॥

हाथ अंगुली विचार नाम

करस कनिष्टा लगु कहै जो कर काहिर होइ ॥
अगुष्ट पुनि अगुली कर साषा है सोइ ॥१६॥
तर्जनी उहै प्रदेशिनी, मध्यमध्यमा जानि ।
अनामिका सु कनिष्टका क्रम तै लेहु पिछानि ।१७।
नषर, नष, कररुह, करज, कामाकुस महाराज ।
पुनर्भव, करसूक सो भुजा कट सुबिराज ॥१८॥
प्रादेश ताल गोकर्ण कहि तर्ज्जनि तै बिस्तार ।
अगुष्टेसकनिष्ट सो ताहि बितस्त उचार ।
पाणि निकुब्ज प्रमृति बिवजुत अजुलि होइ ।
पौरष, भुज बिस्तार दोउ, नर प्रमाण है सोइ ।।२०

कुकाटिका ग्रीवा नाम

गल कठ ग्रीवा सिरोधि, कधरा मलन लजानि ।
कबु ग्रीवरेपत्रय, (काधा नाम) ककुदिबंटु घाटानि ॥२१।

मुष नाम

आसि बेदन आनन लपन बक्र तुड मुष नाम

नासिका नाम

घ्राण नासिका गंध वह घाणी नासा भाम ।२२

होंठ व ठोडी नाम

ओष्ट अधर रद छद वाणित दसन वाससी होइ ।
चिबुक कहै ठोडी जुइव गंड कपोल सुदोइ ।।४२३।।

दांत नाम

दंत रदन रद द्विवज दशन (तालू नाम) तालू काकुद जान ।

जिह्वा नाम

जिव्हा रसज्ञा रसना नूर सुवचन प्रवान ।।२७।।
ओष्ट प्रांत सो सृक्वनी गोधि अलिक ललाट ।
भाल कहत है माथ सो अर्द्ध चन्द्र भनि प्राट ।।२८।।

भ्रू नाम

दृग उपरि दोउ भ्रूक है । कूर्च भ्रूवन मध्य होइ ।
सुदेस ललाट सुतप है भापत नूर सु लोइ ।।२९।।

द्रिग तारिका नाम

दृग तारिका कानीनिका "(बरुणी नाम)" परुनी पक्ष कहत
पलस्यौं पलक लगें जबै पल निमेष सलहत ।।३०

आंखि नाम

दृष्टि नेत्र लोचन नयन । दृग इक्षण चक्षु अक्षि ।।
अबुज रूप अधीन सो जानैं नूर प्रतिक्ष ।।३१।।

देषण नाम

चितवनि चाहनि जवनि पुनि दरस विलोक निदृष्टि ।
अवलोकनि निरषनि लपनि दृग चारनि लषिस्टष्टि ।।३२।।

आंसू नाम

वाष्प अश्रु नेत्राबु अस्त्र रोदन मसस्त आक्ष ।
नेत्रांत सु अपाग है तिह देषन जु कटाक्ष ।।३३।।

कान नाम

कण शब्द ग्रह श्रोत्र श्रुति श्रवण श्रव सोई कान ।

शिर नाम

मौलि मुंड मस्तक शीर्ष उतमाग मूर्द्धान ।।३४

केस नाम

मूर्द्धज कुतल बाल कच चिकुर सिरोरुह सोइ ।
केस वृंद को नाम कहि नूरसु कौसिक होइ ।।३५।।

अलक नाम

अलका चूर्ण कुतल

बाल वक्र सिर पर नाम[1]

भाल भ्रमर सिर सोइ। कोई परे जु पौर मैं।
नूर कहावै जोइ ॥३६॥

गुंथी चोटी नाम

बेम पासी चूडा सिया सटा जटा की जानि।
प्रवणि वेणी माग कह सीमत सुवपानि ॥३७॥
बेस' बेम कवरी य जूडा, सो धमिल्ल कहि जाइ इत्य पिपाठ।

रोम नाम

रोम लोम तनुरुह निचय स्मश्रु पुरुष मुष होइ।

वेष नाम

आकल्प वेषन पथ्य प्रतिकर्म प्रसाधन सोइ ॥५३८॥

अलकार करै तारे दोइ नाम

अलंकार नाम.

परिकृत अलकृत सु विभूषित मडत जानि।
अलकरिष्नु प्रसाधित अलकर्त्ताहि वषानि ॥५३९॥

भूषण जोति नाम

राचिष्नु भ्राजिष्नु पुनि विभ्राजू रुचिवत।
अलक्रिया भूषा सोइ [भूषण नाम] आभूषण सलहत ॥४०॥

हार बाँध मणि ताके नाम

अलकार, परिकार, पुनि, भूषन, मडन जान।

सिर मैं मनिहर मध्य मनि ताके नाम

चूडा मणि शिरौ रत्न

मुकुट नाम

मुकट किरीट बपान ॥४१॥

फूलह की लता सिर रचना करी ताके नाम

कही पारितथ्या प्रथम बाल पाश्या माल।
पत्र पाश्या ललाटिका रची पुहुप सिर माल ॥

कर्ण भूषन नाम

तान पत्र मो कर्णिका कुडल वेटन कर्ण।
हार मध्यगतरल मनि ग्रैवेय कठा भर्ण ॥४३॥

मोती की माला नाम

हार कहे मुक्तावली देव छद शतयष्टि।
सप्त बिंद मोती न की नक्षत्र माला सृष्टि ॥४४॥

---

१. यह कड़ी नीचे लिखी हुई है—मूल, पृ० ५१

प्रकोष्ट आभरण व मोती माला.

उर सूनिका सुमुक्तिका प्रालबिका सुवर्ण ।
लवन बहुरिललतिका और भाति की कर्ण ॥४५॥

प्रकोष्ट आभरण नाम.

पारिआर्य आवापक. [ककड नाम] कटक वलय [सबद[२]] केयूर ।
कविजन कहै अगद बाजूबद ॥

मुदडी वाछाप नाम:

आगुलीय कर्ऊमिका अभिय्यान मुद्रासु ।
अगुलि मुद्रा साक्षर नूर नाम सु प्रकासु ॥४७॥

छुद्रघटा नाम:

किंकिनि रसना मेपला काची सोई कटिजाल ।
हेम सूत्रिका सप्त की सारसन छुद्राल ॥४८॥

विछिया नाम:

तुला कोटि नूपुर बहुरि पादागद मजीर
पाद कटक सोई हसक बिछिया वरनत धीर ।४६॥
आभूपण जो पुरुप कटि शृपल ताहि कहत ।
त्वकफल कृमिरोमादिए । वस्त्र जोनि सलहत ॥५०॥
क्षौमादिक सो बाल्क कौशेय कृमिजास
राकव वहि मृग रोमज फाल बादर कर्प्पास ।।५१॥

रेस्मीन वा वस्त्र नाम:

नि: प्रवाणि आनाहत—

तत्रक वसनन वीन जा पुराणी ताको नाम.तत्र क वस्त्र नवीन ।
उद्गमनीय होइ सो, धौत वस्त्र युग कीन ।।५२॥

रेस्मी वस्त्र धोवा नाम:

धौत वरै कौशेय जे तिहपत्नोर्ण कहत ।
अवगुठित निचोल सो नि पीडन सलहत ।।५३

बहुमूल्य नाम

महु मूल्य सु महा धन । [पट वस्त्र नाम) क्षौम दुकूल वपानि ।

कट लवित कपडा नाम:

प्रावृत सु सोई निवीत (दसी नाम) दसादसी पहिचानि ॥५४॥

लबाई वा चौडाई नाम:

आनाह आयाम पुनि देर्घ्य कहत है नाहि ।
परिणा हो सुविसालता जोर्ण पट चिर माहि ।।५५

---

२. मूल में यह शब्द कटा हुआ प्रतीत होता है पृष्ठ ५२। किन्तु दोहे के सतुलन की दृष्टि से यह रहना चाहिए और केयूर आगे की पक्ति में जाना चाहिए।

कपड़ा नाम:

आछादन अमुक वसन चैल निचोल सुवास ।
चार वस्त्र ए सुचेलक पापट होइ प्रकास ॥५६॥

मोटी साड़ी नाम:

स्थूल साटक वराशि पैसई चौसई सोइ ।

राल नाम

प्रछद पट सु निचोल है [बिछावन की वस्त्र नाम]
रल्लक कबल सो होइ ॥५७॥

साड़ी नाम.

अर्द्धो एक चडातक वर अमुक वसह ताहि ।
ओढ़ै सिर तैं पाय लौं, मात्र पदीन सु आहि ॥५८॥

चढनी स्त्री की नाम'

उन सव्यान सु अतरीय अधो असु कपरिधान ।
प्रवार वृहतिका उत्तरीय उतरा सग सव्यान ॥५६॥

आढनी स्त्री की नाम.

कूर्पासिक सोई कचुकी । कालो चोल कहत ।
सीत निवारण प्रावरण नीसार सलहत ॥६०॥

चदोवा नाम.

अर्द्धो एक चडालक, वरवनिताकौ चीर ।
कहै उल्लोच पुनि दुप्पाद्य वितान मत धीर ॥

पेरदा नाम

प्रतिसीरा सो जवनिका जानि तिरष्करणीय
अतरपट सो नूर कहि जो अतरपट दीय ॥६१॥

अग ससकार नाम

परिकम्म प्रतिकर्म पुनि अग सस्कार सुहोइ ।

मर्दनी नाम'

मृजा मार्जनी मार्ष्टि पुनि मर्दन कहिए सोइ ॥६२॥

उबटण नाम

उद्वर्त्तन उत्सादन स्नान आप्लव आप्लाव
चर्चा चार्चिका स्थासक चर्चित करँवनाव ॥६३॥

गोद नाम पत्र लपा नाम

पत्र लेप पत्रागुलि, प्रबोधन अनुबोध पुनि

टीका नाम

चित्रक तिलक विशेपक तमाल पत्र विशेष ॥६४॥

केसर नामः

कास्मीर जन्मा अग्निशिप वाल्हीक पीतन होइ ।

लाल चन्दन नामः

रक्त पिशुन संकोचनः लोहित चन्दन सोइ ॥६५॥

लाष नामः

राक्षा लाक्षा द्रुमा मय यावो अलक्त बपानि ।
वृक्षालय जतु रक्तए कहै नूर सुजानि ॥६६॥

लवंग नामः

देव कुसम श्री संज्ञ सोई ए लवग अभिधान ।

जावक नामः

जावक कालीयक वहुरि कालानु सार्यं सु आन ॥६७॥

अगुरु नामः

सामर्थक वसिक अगुरु राजाहिः सोई लोह ।

मालती समान गंध होइ ऽयाम सोई नामः

मल्य गंधिकृमिजः वगुरु, काला गुरु जगु सोह ॥६८॥

राल नामः

यक्ष धूप पुनि सर्यरस, सर्वरस. वहुरूप ।
राल सक्र तृम धूपक ताहि कहै वृक धूप ॥६९॥

चीढ नामः

सरल[1] द्रव पायस वहुरि श्री वेष्ट श्रीवास ।

कस्तूरी नामः

मृगनाभि मृगमद सोई कस्तूरी सु प्रकास ॥७०॥

कर्पूर नामः

चंद्र सज्ञ हिम वालुकः सिता श्रो घन सार ।

चन्दन नामः

भद्र श्री श्रीषंड हरि मलयज सो गध सार ॥७१॥

गोरोचन रक्त चन्दनः

गो शीर्षक हरिचन्दन, तैल पर्णिक होइ ।

पतंग नामः

तिल पर्णा, पत्रागु, पुनि रजनकु, चंदन सोइ ॥७२॥

कंकोल नामः

कोलक, ककोलक, वहुरि कहै कोक फलताहि ।

जायफल नामः

जातीकोष, सुजानयो जो जातीफल आहि ॥७३॥

---

१. 'वृक धूप नाम' पृष्ठ ५४ ।

कर्पूर, गुरु, कस्तूरी घसि ककोल मिलाय ।
होत यक्षकर्दम तहां नूर रचैं सब नाय ॥७४॥

वाती नाम:

समालब, अगराग, वर्त्ति लेप रसाधन सोइ ।
वर्नक और विलेपन गाथा नु लेपनि होइ ॥७५॥

अबीर नाम·

वास जाग सो चूर्ण कहि, भावित वासित जानि ।

अधिवासना नाम

गनमाल्य सस्कार सो वस्तु सुगन्ध जु होइ ।
अधि वासन सो नूर कहि वासित सुमनस सोइ ॥७६॥

माला के नाम:

माल्य दाम स्रव स्रज् सुगुण, ए माला के नाम :
गॉस केस मध्य होइ तिह गर्भक कहि अभिराम ॥७७॥

वदी नाम

शिपालवि सु प्रभ्रष्टक (बेंदा नाम) ललामकं पूर निस्त ।
प्रालब मृजुलब पुनि कबहू होइ न विस्त ॥७८॥
वैश्किक यग्य सूत ज्यो माला पहरै कोइ ।
निपा वोचि शेपर कहै पुनि आपीड सु होइ ॥७९

रचना नाम·

परिस्पद प्रतिस्पद पुनि रचना कही बपान ।

पूर्ण नाम

आभोग परिपूर्णता पूरन नूर विधान ॥८०॥

तकिया नाम.

कडुक कदु उच्छीर पुनि उपवर्हण उपधान ।
कहै उसीसा, गॅंडुक जिह सज्जा परयान ॥८१॥

सेज नाम·

पर्यंक पल्यक पुनि मच शयन शयनीय
पट्वा अप्ट सल्पा सोई सज्जा जानहु हीय ॥८२॥
दीप सिपा तरु ग्रह मणि सोत रम्य स्नेहास
कज्जल धुज दीपा तिलक कौमुदी वृक्ष प्रकास ॥८३॥
दशाकर्प सु प्रदीप पुनि कज्जल मोचन आहि ।
कटा ज्वाल कविनूर कहि धाम जोति सो चाहि ॥८४॥

कज्जल नाम:

अजन, कहिये दीप सुत, गज पाटल, तिह जान ।
नाम मयो कज्जल उहै, रजन चक्षु बपान ॥८५॥

स्नेह तेल बाती दसा दीपति ज्योति सुलोइ ।
शिषा कान्तपछि कहत है चारे स्यो जो होइ ॥८६॥
सपुटक: सुसमुद्र क:

आसन नाम: आसन पीठ बषानि

परिग्रह नाम:

पतत्ग्राह सु पतत्ग्रह परिगहो ताहि पिछानि ॥८७॥

कगही नाम:

कंकतिका सु प्रसाधिनी पिष्ट बात कष्यात ।
ताल वृत क व्यजन बाल विजन विष्यात ॥८८

दर्प्पण नाम:

दर्प्पण मुकर सु आदर्श प्रतिबिंबी कहि ताहि
प्रति छाया प्रति कृति सोई नूर आरसी चाहि ॥८९॥

इति नृ वर्ग: समाप्त:

नूर रच्यो नर वर्ग इह अपनी मति अनुसार
व्रह्म वर्ग वरनो कहा सब्द व्रह्म नहि पार

अथ ब्रह्म वर्ग: वंश नाम:

गोत्र जनन कुल अभिजन अन्ववाय सतान ।
संतति अन्वय वर्ण पुनि ब्राह्मन आदि बषान

च्यारि वर्ण नाम:

ब्राह्मन क्षत्रीय वैश्य पुनि सूद्र वरन ए च्यारि
और पौनि वत्तीस है, पडित लेहु विचारि

राज वशी नाम:

कुल सभव सो वीज्य है राज बीजी राज वस्य ।

साधु नाम:

सभ्य साधु सज्जन आर्य नाम रहस्य कुलीन

आश्रम नाम:

ब्रह्मचारी आश्रम प्रथम द्वितीय गृहस्थ सु होइ ।
वानप्रस्थ है तीसरो त्याग सन्यासी सोइ ।

ब्राह्मण नाम:

अग्रजन्म भूदेव पुनि वाडव विप्र द्विजाति
ब्राह्मण सो षट कर्म जुत जागादिव दिन राति
ब्राह्मन ही सो जीविका जिह ब्राह्मन सो होइ
ब्राह्मनपू तासो कहै नूर गुनि जन लोइ

पंडित नामः

ज्ञः प्राज्ञः कोविद बुधः कृती विमति विद्वान ।
दोषज्ञः संबुधो कवि धीर सु संख्यावान ॥६७
सूरि विचक्षण मनीषी दूरदर्शी बुधिवंत ।
लंब वर्ण सो बिपश्चित दीर्घदर्शी कृषि हुत ॥६८॥
श्रोत्रिय वैदिक, छादस जो नर पाठी वेद ।
उपाध्याय अध्यापक पाठक विद्या भेद ॥६६

गुरु नामः

निषेकादि कर्त्ता गुरु, आचार्य मंत्र बखान ।

व्रती नामः यग्य व्रती यष्टा सोई

जजमान नामः आदेष्टा जजमान ॥७००

जज्वा नामः

बिधिनेष्टा यज्वाजु को, याजयूक नर होइ ।
इज्या शील सुगीष्यति, कहु यज्वा पुन सोइ ॥७०१॥
साग वचन गुरु पै पढै अनूचान सो आहि ।
लब्धानुज्ञ समावृत्त सुत्वा क्रतु कर्त्ताहि ॥७०२॥

शिष्य नामः

अंतेवासी, छात्र पुनि मौढ्य शिष्य जो कोइ ।
एक ब्रह्म ब्रत परस्पर ब्रह्मचारिणः सोइ ॥७०३
ज्ञात्वारभ उपक्रम उपज्ञा आदौ ग्यान ।
नाम सुनौ उपदेस को पारपर्य प्रमान ॥४

पंच महा यज्ञ नामः

पाठ होम पूजा अतिथ तर्प्पण बलिये पाच ।
महा यग्य ब्रह्म यज्ञ ए नाम कहत कवि साच ॥५
पाठ ब्रह्म यज्ञ जानियो ह् ोम दैवजग्य आन ।
तर्प्पण पितुजग्य भूत बलि नृजग्य अतिथ पूजान ॥७०६
लब्धायत्न् समावृत्त स्नुत्वा तीन्यौं नाम ।
जो कर निवर्‌यो जाग को कहै नूर अभिराम ॥७

सभा नामः

सभा समज्या परिषत, आस्थानी आस्थान ।
गोष्टी सद ससद समिति, राज समाज प्रमान ॥८

सभापति नामः

सामाजिकः सु सभासद सभ्यः सभास्तार ।
सभापति नूर कहैं, सभापहित उचार ॥६

जजुर्वेद नाम

अध्वर्य उद्गात्र पुनि होता त्रयी जु सोइ ।
यजु साम ऋग्वेद को क्रम तें ग्याता होइ ॥१०
घन निवारि धारि अगनि ऋत्वजया जग आहि ।

वेदि [बिना सोधी भूमि नाम]

भूमि परि सतका

सोधी भूमि नाम

स्थंडिल चत्वर चाहि ॥११

त्रयो अग्नि नाम

दक्षिणाग्नि गार्हपत्या हनी । त्रय अग्नि
प्रणीत सोई सस्कृत [ज्वलिताग्नि नाम] ज्वलित होत जोजग्नि ॥१२॥

अग्नि प्रयोगी वा अग्नि त्रयी नाम

अग्नि प्रयोगी समूह्य परिचारी उपचारि ।
आग्नायी स्वाहा बहुरि हुत भुक्प्रिया विचारि ॥१३॥
यूप अग्र को तर्म कहि हव्यापक चरु आहि ।
साश्रृत श्नेया क्षीर-मैं, दधि जुत आमिक्षाहि ॥१४॥
पृषता दीव सो जानियो दही मिलत जो आज्य ।

पीर नाम.

परिमान पायस बहु हव्य कव्य सब साज ॥१५॥
वाम अग कों सव्य कहि, दक्षिण सो अपसव्य ।
देवन कैं हित हव्य है, पैत्र निहित सो कव्य ॥१६॥

होमण का नाम.

जुहू ध्रुव श्रुव श्रुच उपभृत पात्र ध्रुवादिक नाम ।
उपाकृत पशु जो कियो अभिमन्त्र्य हत नाम ॥१७॥

मारणार्थक नाम जग्य मे मारण के अर्थ न्योतै ताको नाम

प्रोक्षण कहै वधार्थ परपरा म दामन पुनि

मार्‌या का नाम

प्रमीत उपसपन पुनि, प्रोक्षित हताजग्यार्थ
मनाय्य कहिये हविष, हुत वषट हुत अग्नि
दोक्षान्तो अवभृथ ग्यात ॥

जग्यना धर्म नाम

विस्तार गुज्रति, गुरु धर्मार हदशिय पूर्त धर्मता सादि ।
यज्ञ शेष अमृत विघस भोजन शेष गुणादि ॥१६

दान त्याग नाम:

त्याग विहाय त विसर्जन, उपसर्जन सुवितर्ण
प्रतिपादन प्रादेसन निश्राणन सुपवर्ण: ॥२०
वर्जन निर्वपन पुनि, ग्रहति स्पर्शन दान ।

त्यान नाम. अवगम बोध मुक्त जगत त्यान भान जग जान ॥२१

मृतकार्थ मृतक द्योम जो देइ ताको नाम

मृत वहित तादिन जु दे ताहि श्रौर्द्ध दहव जान ।
श्राद्धकर्म जु शास्त्रत निवाप: पितृदान ॥२२॥
दिन को अष्टम भाग जो कल कुतप बषान ।
घटिका घटि द्वै पहर मैं घटिका बढिमत आन ॥२३॥

ढूंढणा काना *

अन्वेषणा, गवेषणा, पर्येषणा परिष्टि
मनि. अध्येषणा अर्थना सृष्टि अभिपस्ति ॥७२४॥
आपूर्णक प्राहुणक सो आवैं सिन आगत
बहुरि अतिथि सो जानियो प्रगट पाहुनो सत ॥२५॥'
आतिथेय आतिथ्य पुनि आवेशिक जु बपानि ।
आगतु ग्रह अतिथ कौ पूजा करैं सुजानि ॥२६॥

पूजा नाम.

अर्चा, अपचति सपर्जा, नमस्या, अर्हण आह ।
परिचर्या सु उपासन वरबस्या सुश्रूषा ह ॥२७॥

चलण व पडा रहणका नाम

व्रह्म, अटाज्या पर्जटन वीथिनि फिरति जु कोइ ।
चर्या इया पथ स्थिति मग मैं ठाढी होइ ॥२८॥
उपस्पर्श सो आचमन, मौन अभाषण भाव ।
तू स्नो तू श्रोक जु बालत चुप कै राप ॥२९॥
आवृत अतिक्रम पर्यय उपात्यय अतिपात ।
आनुपूर्वी पुनि अनुक्त सो पर्याय बिष्यात ॥३०

परम्परा नाम

अनुपूर्वी सो अनुक्रम परपाटी पर्याय ।
आनुपूर्व्य आवृत सोई परपरा जु कहाय ॥२९॥

अधिकाई नाम

उपात्यय अतिपात पुनि पर्यय नाम प्रवास ।
नीयम व्रत सो जानियो उपवस्त उपवास ॥३०॥

---

* यहा 'म' और होना चाहिए। मूल में भी 'म' नहीं है।
नोट—ये नाम अतिथियों के हैं।

प्रथगात्मता विविवेक हि विधि क्रम कल्प सुयोग ।
विधि सप्रेष्यनि योग कहि फल अपर्ण्ण विनियोग ॥३१॥

थूक पडे नाम.

ब्रह्म विदव· विप्लप वेद पढत जु पतत
ध्यान योग आसन विर्ष ब्रम्हासन सलहत ॥३२॥

संयुक्त होइ ताको नाम:

श्रुति सस्कार ग्रहे प्रथम उपाकरण सो आहि ।

पाइ प्रणाम नाम:

पाद ग्रहण अभिवादन, नूर कहत बुध ताहि ॥३३॥

सन्यासी वा तपस्वी नाम:

कर्मदी पारासरी भिक्षु मस्करि परिव्राट ।

पारि रक्षक: जान सौ नाम:

तापस तपसी जानियो पारकाक्षी प्राट ॥
वाचयम जो मुनि कहै मौनव्रती मन शात ।
ब्रह्मचारी वर्णी सोई तपेक्लेश सहोदात ॥३५॥
रिषि सत्यभाषी व्रती स्नातक आप्लुत जान ।
जीते इद्रीय ग्राम ये जतिनो जतय आन ॥३६॥
वल्मीक कुशिनो कवि वाल्मीकि बाल्मीक ।
मैना वरुणनाम तिह प्रावे तस मति नीक ॥३७॥

व्यास नाम

वेदव्यास, द्वयपायन, बादरायन कानीन ।
सत्यवती सुत माठर पारासर्य प्रवीन ॥३८

जोजन गंधा नाम:

गध कालिका वासवी सत्यवती दासेय ।
सालकायन जाहे सोई जोजन गधा भेव ॥३९॥
जामदग्नि, भार्गव, बहुरि रेणुका सुत अरु राम ।
नारद कलिकारक पिशुन देव ब्रह्मसत्य धामन ॥४०
अक्षमाला सु अरुधती । विधि तै भए वसिष्ट ।
त्रिशक जायी कौशिक गाधेय तपनिष्ट ॥७४१
सतानन्द गौतम कहौ, कहौ कुशारणि दुर्वास ।
ब्रह्म रात्रि योगेश पुनि, जाज्ञ वल्क स्व प्रवास ॥४२
प्रयत· पूत पवित्र कहि सर्व लिगी पापड ।
व्रतीनि को आसन अपी, अजिन चर्म इन्द्रिड ॥४३॥
कुडी कहै कमडलु, भिक्षा मदव रुभेद ।
जप्प जाप्प जाप जप स्वाध्याय सोई अक्ष ॥४४॥

सत्य सवन अभिषव सोई, नूर कहत है ताहि ।
सर्व पाप ध्वंसी जु जप, अघ मर्षण सा आहि ॥४५॥
तन साधना अपेक्ष धरि निति जु कर्म यम जानि ॥
नित्य कर्म आगतु को साधन नियम बखानि ॥४६॥

नमस्कार नाम.

नमस्क्रिया नति वदन नमस्कार सु प्रणाम ।
यग्य सूत्र उपवीत सो, दक्षण करधृत वाम ॥४७॥
ब्रह्मभूय ब्रह्मत्व पुनि ब्रह्म साजुज्य जु होइ ॥
देव भूयादिक तैसे ही देव भाव है सोइ ॥४८॥
कृछ्र सातपनादिक, करै कष्ट व्रत कोइ ।
अनसन प्राय पुमान जो सन्यास वती होइ ॥४६॥
नष्टाग्नि सो वीरहा, पुनि कुहना तिह जानि ।
मिथ्येर्या पथ कल्पना करै लोभ तै आनि ॥५०॥
व्रात्य हनि सस्कार जो निराकृति अस्वाध्याय ।
अवकीर्णी सुक्षत व्रत, धर्मध्वजी लिंग वृत्ति ॥५१॥

विवाह नाम

उपयाम उपयम विहत परिणय सा उद्वाह ।
कर पीडन, सुनि वेसन, ताही कहत विवाह ॥५२

सभोग नाम.

निधवन, रत, सो मैथुन ग्राम्य धर्म सु विवाय ।
रति सभोग बखानिए वनिता सग सुभाय ॥५३
धर्म कर्म अर्थ त्रिवर्ग चतुर वर्ग सो मुक्ति ।
चारो बल तासों कहे चतुर्भद्र सो युक्ति ॥५४॥

इति ब्रह्म वर्ग नाम समाप्त अथ क्षत्री वर्ग

क्षत्री व राजा नाम·

मूर्द्धाभिषक्त, बाहुज राजन्य सु विराट ।.
नृप पार्थिव औ क्ष्माभृत् भूप मही[१] पति राट ॥५५॥

सामंत नाम

जा राजा को राज वड, ताहि कहै सामत ॥
नमैं सीस सामत जिहि सोई धीश्वर सत ॥५६॥
उहै चक्रवर्त्ती सुनौ सार्वभौम सो जान ।
मडल मडल को धनी तिह मडलेश बखान ॥५७॥
सामजौनि सामज सोई, सैत समाज सु आह ।
नूर कहै मातग तिह पुनि मतग सो चाह ॥५८॥

---

१ क्षित

गज वय बर्नंनं:

पांच बरस को वालगज दस को पोत प्रमान ।
बीस बरस को विप्क सो कलभ तीस को जान ।।५६।।

राजा की असवारी को हाथी वा सग्राम को हाथी तको नाम:

राजवाह्य, उपवाह्य, गज, नृप चढ़ने को होइ ।
समरोचित, सात्राह्य सो समर लरत गज सोइ ।।६०
राजा अरु सामंत जिह, नमैं अधीश्वर साय ।
सार्व भूमि चक्रवर्ति सो, नृप मंडलेश्वर आय ।।६१।
जिहे मंडलेश्वर के रुदा, राज सूय करि इप्ट ।
राज्ञा जिहिं आज्ञा रहै स सम्राड् सुसृप्ट ।।६२।।

रामचन्द्र नाम:

रामचन्द्र सीतापति: दासरथि: रघुनाथ ।
रावनरिपु, काकुत्स्थ पुनि, भरताग्रज कपि साथ ।।६३।।

सीता नाम:

सीता जानुकी मैथुली, वैदेही सति सोइ ।
भूतनया जनकात्मजा, सीय रघुवरतीय होइ ।।६४

लक्ष्मण नाम:

लक्ष्मन बाल जती लक्षन: सौमित्रेय सु होइ ।
सेपवतार क्षुधात्रिपा, निद्रा जेता सोइ ।।६५।।

बलि नाम:

बाली बालि सु इंद्रसुत अगद ताको पूत ।

सुग्रीव नाम:

रविसुत, सुग्रीव श्री जुगराज अभूत ।।६६।।

हनुमान नाम:

मरुत पुत्र अंजनी सुत, केसरी सुत हरिजान ।
अमर वज्र कटि पार्थध्वज, रामदूत हनुमान ।।६७।।

रावण नाम:

दससिर, दसग्रीव, वक्रदस, पौलस्त्य: भुजबीस ।
लंकापति मंदोदरी, वसी अक्षय असुरीश ।।६८।।

जुधिष्ठिर नाम:

धर्मतात, सु, अजातरिपु, कालदहन को तेय ।
समर प्रिय कुरराव सो, सत्यबादी जानेय ।।६९।।

अर्जुन नाम:

अर्जुन, फाल्गुन, जिश्नु, पार्थ, धनजय, श्वेताश्व ।
कीटी कपिध्वज इंद्रसुत गांडीव धनु तास ।।७०।।

गुडाकेश, दैत्यारि, नर, सव्यसाची तिह जान ।
प्रहनट, बिजय, मर्म्मभित्, कृदन सपा परमान ॥७१॥

भीम नाम:

भीम वृकोदर वायुसुत बहु भोजी ग्ररि भज ।
बलौ गदाधर धनमगम, कीचकारि, वकगज ॥७२॥

द्रोपदी नाम·

नित्ययौवना, वेदिजा, पाचाली, कृश्नासु
याग्य सेनि, सौरध्रि सो भर्ता पच प्रकास ॥७३

कर्न नाम·

ग्रगराट, चपाधिप, सूर्यपुत्र, पुनि कर्ण ।
राधासुत, धनुतास या, नाल, पृष्ट तिह वर्ण ॥७४

सप्त ग्राग राज्य नाम

स्वामी, मत्री, मित्र, जन, कोश, देस, गढ सैन
यह सप्ताग सुराज्य है कह्यौ ग्रथ मत ग्रैन ॥७५॥
पुरजन, श्रेणी, प्रकृति, कहि तत्र देस चितासु ।
ग्ररि चितन ग्रावाप है, कहत नूर परकाम ॥७६॥

परिवार नाम

परिस्पद परिवर, परिग्रह, परिबर्ह, परिवार ।
परिछद सो जानियै तत्रोपकरण उदार ॥७७

सिंघासन नाम

नृपग्रासन, भद्रासन, सिंघासन, तिजानि ।
ग्रातप, वारण, छत्र, है सज्या महा बखानि ॥७८॥

मत्री नाम

सचिव, ग्रमात्य, सुधी, सरव, समवाइक, मत्रीस ।
निश्शेषो तिह जानियो, कर्म सचिव बहुहीस ॥७६॥

प्रधान नाम

महा मात्रा सु प्रधान कहि [पुरोहित नाम] पुरोधा प्रोहित होइ ।

द्वारपाल नाम

सौचस्ति, क, द्वारस्थ, पुनि द्वारपालक सोइ ॥८०
क्षता, बत्रधारक दडी है प्रतीहार ।
रक्षि वर्ग ग्रनोकस्य है [वक्सीनाम] ग्रधिक्ष ग्रधि कर्त्तार ॥८१
मौरि, कार्याधिप जा, नैष्ठिक रूपाधिक्ष ।
स्थानाधिप, सुर्यानिक, गौल्मिक परत्यक्ष ॥८२॥

सेवक नाम:

सेवक, श्रर्थी, अनुचर, अनुजीवा सो भृति ।
विधिकर किंकर अनुग पुनि कहु पदाति सु पत्ति ।।८३
शुक्ल घटादि जु दीजिये जानहु ताहि जगाति ।
धर्माधिप सुधर्म्यक धर्माधिकृर, णीप्याति ।।८४।।
सेनानी, दडनायक, जो चतुरंग वलपत्ति
स्यायुक अधिकृत ग्राम मैं गोपो ग्राम वहूत ।।८५।।
अवरोधय अतर्वंशिक अतपुराध्यक्ष वोध ।
शुद्धात. अत पुर:, अवरोधन, अवरोध ।।८६।।

पोजा नाम:

पढ, वर्ष वर सौविदा, कंचुकिन स्थापत्य ।
सौ विदला पोंजा कही जामिनी भावा सत्य ।।८७।।

प्रछन्न नाम·

विजन, विविक्त उपासु वह निशालोक पुनिछन ।
एकातर मै होइ तिह, वहै रहस्य प्रछन्न ।।८८।।

दुसमन नाम:

वैरी, रिपु, रुसपल, अरि शत्रु अमित्र अराति ।
दुर्जन द्विट द्वेषण दुहृद दस्यु शात्रु अभिघाति ।।८६।।
अत्यर्थी, परिपथी, अहित, द्विविपक्षि, परजानि ।
प्रत्यनीक, प्रत्यपक्ष सो, प्रत्यवस्था ता मानि ।।६०।

मित्र नाम·

वयस्य सवया सुहृत्, स्निग्ध सहज रो मित्र ।
सपा, दयित, वल्लभ, वहुरि, प्रीतम, पुन्य चरित्र ।।६१

प्रीति नाम:

मैत्री, सख्य सौहृद, सौहार्द पुनि सोइ ।
अनुवर्त्तन, अवरोधन, साप्तपदीन, होइ ।।६२

जासूस नाम:

गूढ पुरुष, वार्त्तायन, प्रणिधि हेरकचार ।
अनुरोध, अवसर्प, स्पश आततिक उपचार ।।६३।।

ज्योतिषी नाम:

ज्योतिषिक:, मौहूर्त्तिक·, गणक, दैवज्ञ, ज्ञानि ।
सावत्सर, मौहूर्त्त, पुनि नार्त्तातिक, तिहि मानि ।।६४।।
ज्ञात सिद्धात सुनात्रिव, सम्रो गृहपति आहि ।

लेपक नाम:

लेपक लिपिकर अक्षर चन, अक्षर चुचु, सु, चाहि ।।७६५

दूत नाम·

सदेसह रो दूत है दूत्य धर्म मर्म सोइ ।
अध्वनील* पाय पथिक, अध्वग अध्वन्य सु होइ ॥६६॥

पट गुण नाम·

सधि, विग्रहे, द्वैध, पुनि, आसन आश्रय जान ।
षड्गुण, ए कविजन कहै अमरकोस परवान ॥६७॥
प्रभाव तें उत्साह तें और मत्र तें सिद्धि ।
शक्ति तीनि त्रय वर्ग पुनि क्षय स्थान अरु बृद्धि ॥६८॥
तेज होत जो कोस तें ताको कहत प्रताप
दड तेज तें उप्पजें, है, प्रभाव सो आप ॥६६॥
साम दाम दड भेद ए च्यारि उपाय बपानि ।
साम सात, दम, दड पुनि उपधाए भेदहि जानि ॥८००॥

यथोचित नाम:

भ्रेष·, भ्रश, यथोचित: उचितार्थ अभ्रेष ।
न्याय कल्प समजस देस रूप तिह लेष ॥८०१
भजमान:, अभिनीत, वत् नाय्य युक्त लभ्य
न्यायार्जित जो लाभ है, औपयिक कहि भव्य ॥८०२॥
आगमतु अपराध सो बधन है उद्दानि ।
सस्था मर्जादा बहुरि स्थिति धारणा बपानि ॥३

अग्या नाम:

शासन, शिष्टि, नियोग, वय आदेश निद्र्देश ।
आयस वच अबबाद पुनि आग्या कहै निदेस ॥४

जगाति दान नाम:

भागधेय, करवलि बहुरि, शुल्क घटादिक दान ।
प्रदेसन, प्राभृत बहुरि, नूर कहत मति मान ॥५
भेट, उपायन, कहत कवि उपग्राह्य उपहार
उपद नाम ए जानिये धरत जु देव दुवार ॥६॥
सद्यफल सादृष्टिक फल उत्तर सु उदर्क· ।
वन्हि तोय भय अदृष्ट दृष्ट सैन्य सपर्क ॥७॥
तदात्व तत्काल है, आयति उत्तर काल
प्रक्रिया सु अधिकार है, चमर प्रकीर्नक माल ॥८॥
नृप आसन भद्रासन सिंघासन सु विचार ।

,झारी नाम:

औ आतपत्र, धनकालध भृगार ॥६॥

*यह 'न' भी हो सकता है। मूल में 'ल' है पर उसके ऊपर एक छोटा सा 'न' लिखा हुआ है।

हाथी घोरा रथ पदिक, सेना अग सुच्यारि ।
शिवर, निवेश, सु, वोणकः, वराती चमू विचारि ॥१०

हस्ती नामः

दंतो दंता चल द्विरद, द्विप करटी, गज, व्याल :
कुजर, वारुण, करो, इभ स्तंवेरम सुंडालः ॥११
पद्मो नाग अनेकपः सिंधुर हरि जु गयद ।
कुंभी वानर पोल सो पचेरम पति इंद ॥१२॥

मस्त हाथी नामः

मदोत्कट, मदकल[1] सोई गर्जित मत्त प्रभिन ।
उद्धांतः निर्मद करी कलभः सावक अन्य ॥१३॥
करणो वशा सुवेनुका, कट गडस्यल जान ।
करशी कर वमथुः, वहुरि, मद, कूदान, वपान ॥१४॥

हाथी के कुंभ स्थल नामः

कुभ, पिंड, कुभस्यल, विहु बिंदो विच तासु ।
अवग्रहः सु ललाट तिह,

नेत्र आस पास नाम हाथी का :

अक्षि कूट, क ईपिका सु ॥१५
अपाग देश निर्जान है चूडिलि का सु मूलि ।
श्रुति अधः कुभ वाहित्थ पुनि, प्रतिमानं तिह कूलि ॥१६
पुष्कर कर गज सुडि कहि । पद्मक बिंदो जाल ।

गज बंधन नाम :

गज बंधन आलान पुनि, तोत्र वेणुक भाल ॥१७॥

वेडी आकुस नाम :

निगड अदुक श्रृंखला अंकुश शृणि वपानि ।

काप हथी का नाम :

चूपा, वध्या, वरत्रा (ताजा हाथी नाम) वल्पना सु मज्जनानि ॥

झूल नाम :

परिस्तोम कुथ आस्तरण वर्ण प्रवेणी पाहि ।
गत यौवन हस्ती तुरग बीत गहत कवि ताहि ॥१६

घोटक नाम :

अश्व तुरगम, बाजि हय, सैंधव, माप्त सितयान ।
वाह, अर्व, गंधर्व तुरि तरत धूर्य हरि जान ॥२०

---

१. नोट—पीला रग तो प्रसार मिटाने का है पर्ने "म" लिखा है पर चाहिए था "क" । पुराने ग्रन्थो की यह परिपाटी है ।

वीति, तुरग, तुषार पुनि आजानेय कुलीन
अश्वमेध, को अश्व ययु जवनज वाधि क्लीन ॥२१॥
मितकर्रे कातिल दरै (पाँति वाह नाम)पुष्प स्यौरी होइ ।
रथ वाह्य सो रथ्य है वान किसोर सु जाइ ॥२२॥

घोडी नाम

पारसीक, काबोज, हय, वानायुज वाल्हीक ।
वामी अश्वी वाडवा, गणमे, वाडव ठीक ॥२३॥
कच्छ अश्व की मध्य है वान देस सुनि गाल ।
हेषा ह्रेषा सब्द है (नाक नाम) घोणा प्रोथनि भाल ॥२४॥

कवि का वागु वा लगाम वा पूछ नाम

कविका, कहै खलीन सा, पूछ, लूम, लागूल ।
सफ्फुर इत्यादि ताडना, कशानग वह मूल ॥२५
आस्कदित धोरित्क पुनि रेचित वल्गित प्लुत ।
सादी अश्वारूढ सो, पच धार गति पुप्त ॥२६॥
वानहस्त सा वालधी केसवाली कहि ताहि ।
परावृत्त उपावृत्त लुढितमु, भूमि परत पुनि चाहि ।२७

रथ नाम

रथ सताग स्पदन सोई युद्धार्थक जो होइ ।
चक्रजान जो पुष्फरथ समर रहित है सोइ ॥२८॥
कर्णारथ प्रवहण डयन, बेगिवाह रथ जान ।

गाडी नाम

सक्ट, अन , शिविका, सोई जाप्प जान तिह मान ॥२९॥

जूडा वा रथ अग नाम

धू , जानमुष, रथाग, कहै उपस्कर ताहि ।
चक्र, रथाग, सु अत, तिह नेमि प्रधि जु आहि ॥३०
रक्षानाभि सुपिंडका

जूडो वाधीयै जिसमें ताको नाम कुवर युगधर जान ।
आशाग्र कीप्लिका है, अरणि वरुथ रथ गुप्तान ॥३१

वाहन नाम

युग्य वाहन यान पुनि धोरण पत्र बपान ।
परपरा वाहन जाई वैनीपक सा जान ॥३२

हस्ती आरोह नाम

आधोरण, हस्तिपक पुनि कहै निषाद निवार ।
सूरवीर विक्रात जो, भट, जोध, जोधार ॥३३॥

सारथी नाम:

प्राजिता जता नियता, क्षत्ता सारथि सोइ ।
दक्षस्थ सबेष्टृ सो रथ कुटविन होइ ।।३४

बपतर नाम:

कवच अंग भृत् ककट: जगर तनुत्र सनाह ।
तनुत्राण टसान वर्म बार वाण कचुकाह ।।३५।।

तनु तें उतारे ताका बपतर को नाम:

आमुक्त: प्रतिमुक्त, पुनि पिनद्ध अपिनद्ध देष ।।

सनद्ध नाम:

वर्मित दशित सज पुनि उठकटक लेष ।।३६।।

सेना का नाम:

पादाजय, सुपदाति, पत्ति, पग पदातिक जान ।
पदिक समूह जुरै तहा पादात सु बषान ।।३७।।
सस्त्राजोव: युधिक: काडस्पृष्टा सत्त
कृतहस्त सु प्रयोग पुनि विसिकृत पुख वत्त ।।३८।।

धनुर्द्धर नाम:

धनुष्मान् धन्वी बहुरि निषगी सुधानुष्क ।
काडवान, काडीर पुनि बान हस्त नहिमुष्क ।।३९।।
अग्रेसर, पुरस्सर पुरोगम सु पुरोग ।
प्रष्टामदगामी बहुरि मयर वहै सु लाग ।।४०।।
वेगी प्रजवी जवन जन त्वरित तरस्वी व्याघु ।।

जीत वाला का नाम

जेता, जिस्नु, सु जित्वर सो जुगीनरण साधु ।।४१।।

सेना नाम -

सेना ध्वजनी वाहिनी पृतना चमू अनीक
मनोविनी रु, वरुथिनी चक्र सैन्य बल ठीक ।।४२।।
बल विन्या सु सुव्यूह महि व्यूहारचना जानि ।
साम दान दंड भेद ए चारौं जुधे में आनि ।।४३।।
एक हस्ती रथ दोइ है तीनि सु पंच पदाति ।
पत्यगं त्रिगुणा सर्व क्रम तें अधिक विख्याति ।।४४
सेना मुख सो वाहिनी पृतना चमू अगार ।
अनीकिनी दशानीकिनी, अक्षौहिनी अपार ।।४५।।

अन्यमते :

अपूत, नाग, रथ त्रिगुन, सप्त: नागु सदस दस मान ।
पदनिगत मग पै गजद अक्षौहिणी प्रमान ।।४६।।

श्री लक्ष्मी मपति आपत् विपद विपत्ति ।

सस्त्र नाम :

. अस्त्र सस्त्र प्रहरण सोई मपदि आयुध नाम सुमत्ति ॥४७

धनुष वाजिह नाम :

धन्व चापु धनु शरासन इष्वास: कोदंड ।
कामुक मौर्वीसिंजनी ज्या प्रत्यचि गुण मड ॥४८

तीर नाम :

वाण, प्रपक्त कलब, शर, पग, मार्गण, इषु कर्ण ।
वात्री वाड छुरप्रिय आसग तोमर हर्ण ॥४९॥
पत्री रोप अजह्मग, विशिष सिन्तीमुप आहि ।
प्रक्ष्वेडन नाराच मो कहे लाहसर ताहि ॥५०॥
शराभ्यास उपासन पक्ष वाज पुपक्त ।

प्रहृत वाण सो निरस्त :

(विष वाण नाम) लिप्तक, दिग्ध, विषाक्त ॥५१

तरकस नाम :

उपासग तूणीर पुनि तूणी तुण वपाण ।
कहै निपग सुई पधि भाषा तरकस जाण ॥५२॥

षड्ग नाम :

रिष्ट कुपेण, कृपाण असि, मडलाग्र करवाल ।
नि:स्त्रिश. कौक्षेयक: चद्रहास तरवाल ॥५३
षड्गादिक की मुष्टिकौ, सरु कहत सब कोइ ।
ताहि निबधन मेंपला [ढाल नाम] फलक चर्म फल सोई ॥

मोगरा नाम.

मुग्दर घन द्रुघन [गोफीयो नाम] भिंड पाल सृग अन्य ।

छोटी तरवार नाम:

ईली, है, करवालिका परिघ परिघातन ॥५४॥

फरस नाम:

परस्वध' सुधिति परसु कहै कुठार सु ताहि ।

छुरिका नाम:

शस्त्री असिपुत्री, वटुरि असि घेनुका सु चाहि ॥५५॥

वरछी नाम:

प्रास कुत शल्य सकु पुनि सर्वला तोमर हुव ।
काटि अश्रिपाली वटुरि कोण नाम सलहुव ॥५६॥

नृप सांवत नौमी महा पूजैं अश्व हथ्यार ।
नीराजन विधि बिबिधि करि कहै सु लोहा म्यहार ।।५७।

प्रस्थान नाम:

जात्रा, व्रज्या, गमन, गम अभिनिर्जान सु आहि ।
आसार, प्रसरणं, प्रचक्रं चलितार्थक पुनि चाहि ।।५८।।
अरिसेना अभिगमन जो सो अभिषेकन होइ ।
भीत रहित रन मैं धसैं कहै अभिक्रम सोइ ।।५९।।
बोधकरा वैतालिका मधुका मागध जानि ।
बंदिन:स्तुति पाठका: सूरन करत बखानि ।।६०।।

धूलि नाम:

रेणु धूलि रज सर्करा पेह पाशु जो रेतु ।

धुजा नाम:

वैजयतु केतन ध्वजा बहुरि पताका केतु ।।६१।।
समुत्पिज पिंजल बहुरि भृश आकुल कहु जानि ।
वीरा संसन युद्ध भू: जो अति भय की दानि ।।६२

रिणोही नाम:

अहपूर्व अहंपूर्बिका आहो पुरियको सोई
अहम हसिका जु परसपर अहकार जो होइ ।।६३

नाम:

सौर्यं सुष्म वल द्रविण तर: सहस्थाम सो प्राण ।
विक्रम कहि अति शक्तिता: संकित पराक्रम प्राण ।।६४।।

ाम नाम:

संगर समर अनीक, रण विग्रह कलि समुदाय ।
समित युद्ध सयत समित् अभ्यय कलह कहाय ।।६५
आस्कंदन प्रविदारण सापराय सम्प्रहार ।
आजोधन मृध आहव, अभ्या मर्दनु चार ।।६६।।
प्रविदारण सयुग प्रधन जन्य: आजिक दन्य
सस्फोट, समापात, पुनि सह्य अनीक सु अन्य ।।६७।।
अभिसंपात अभ्यागम बाहु युद्ध सुनि जुद्ध ।
रण संकुल तुमलं सयद छ्वेड सिंघस बृद्ध ।।६८।।
करीनाद घटना घटा बृंहत गर्जित जान ।
क्रंदन रव जो पानि को विस्फारो धनु स्वान ।।६९

ठ या पीड़ा छल नाम :

बलात्कार प्रसभ प्रसह्य हठ स्वलितं छल आहि ।
उत्पात उपसर्ग पुनि और अजन्य गुणाहि ।।७०

पीडन पुनि अवमर्दनहि । मूर्छा कस्मल मोह ।
अम्या सादन जानियो, अम्यव स्कदन कोह ॥७१
पटह अडवर को कहै और विजय जय जान ।
वैर सु, दिवप्रतीकार है वैर निर्जातन आन ॥७२॥

हारा का नाम

प्रद्राव: उद्राव पुनि सद्राव: सदाव:
उपशमो उपजान है द्रव विद्रव के नाव ॥७३
रणे भग सुपराजय, पराजित: पराभूत ।
नष्टति दोहित कहत है जात रहत जो पूत ॥७४

मारण का नाम :

सज्ञपन: निर्गंथन: निस्तर हणन गृथत्न:
उज्जासन आलिज पुनि उन्माथन प्रमथन्न: ॥७५॥
निर्वापन: निहनन क्षणन परिवर्जन वध होइ ।
विशासन प्रतिघातन त्रिसर पिंठ अपासन सोइ ॥७६॥
प्रमापण: सुनि कारण बहुरि विस्तारण आहि ।
परासन जु निहसन उन्दासन नहि चाहि ॥७७॥
निवारान जु प्रवासन ए मारण के नाम ।
काल पाय त्यागैं जु तनु सोई मरण अभिराम ॥७८॥

मरण नाम

काल धर्म पुनि पचता निधन अत व्यय नास ।
दिष्टात प्रलय त्यय मृत्यु पचत्व परास ॥७९॥
प्रेत प्राप्त पचत्व मृत प्रमीत सस्थित जान ।
परेत बहुरी कुणप शव मृत्युक नाम बखान ॥८०॥
क्रिया युक्त बिनु शीसतनु कहै कबध सुवाहि ।
पितृवण श्मसान है चिति चिता चित्याहि ॥८१॥
बदि उपग्रह प्रग्रह कारावदी पान ।
असु प्राण पुनि जीव कहि असु धारण जु प्रवान ॥८२
जीवित काल सु आयु कहि जीवनौषध जीवास ।
यथा शक्ति कब नूर भनि छत्रीय वर्ग प्रकास ॥८३॥

इति क्षत्रिय वर्ग समाप्त.

वैश्य नाम.

भूमि स्पृक विश वैस्य सा उरज उरव्य बखान ।
ताही सों पुनि आर्य कहि नूर सुघट अभिधान ॥८४॥

वृत्ति नाम

वार्त्ता वृत्ति सु जीविका जीवन बर्त्तन होइ ।
आजीवा आजीव पुनि नूर कहत जग सोइ ॥८५॥

वैश्य की वृत्ति नाम:

पासुपाल्य वाणिज्य कृषि सेवा च्यारों वृत ।
कृषि कृत शिल उछ अनृत ॥८६॥

पेती नाम :

जाचित और अजाचित मृतक अमृत सुचपान
वनिक भाव सति अनृत पुनि भाषे नूर सुजान ॥८७॥

उधार नाम:　　मागें पाईये ताको नाम:

उद्धाह् ऋण कहत हैं पर्युदंचन सोइ ।
मागें सो जो पाई ये जाचि तक सो होइ ॥८८

व्याज नाम:

वृद्धि जीविका नाम तिह कहै कुसाद सु व्याज ।
उतमर्ण जो देत है ले अघमर्ण निलाज ॥८९॥

व्याज पाइ ताको नाम:

वार्द्धुपिक वार्द्धुपि वहुरि वृद्धोजीव सुजान ।
कुसीदक तासों कहै व्याज पातु जु वषान ॥९०

पेती सेती जोवै ताको नाम:

पेती सेती जीविका सोई करै सदीव ।
कृपीवलः कृर्षक सोई कृषिकः क्षेत्राजीव ॥९१॥

बीज गेरी होइ जिह् पेत मैं ताको नाम:

उप्नकृष्ट बीजा कृत, बीज परयो जिह् पेत ।

हल चल्या जिह् पेत में ताको नाम:

सीत्यकृष्ट निहल्य सो फाडक अनहेत ॥

पेत नाम:

पेत, वप्र, केदार, सो कैदार्य केदारि ।
हार, क्षेत्र, सौ कहत नूर नाम सु विचारि ॥९२॥

ढेला का नाम: .

लोष्ट, निलोष्ट सु नाम ए ढेलाके जानि ।
[मंज ढेला फोरे सो ताके नाम] ॥९३॥
कोटिस, भेदन लोष्ट को कहै नूर अभिराम ।

कुदारी वह् पुरपा नाम:

जातो पर्ण खनित्र सो, प्रवदारन पुनि सोइ ।
दात पात्र जु नवित्र यहि, नूर नाम तिह दोइ ॥९४

पनिहार नाम:

दल पति माली पनक पुन पल पानर परनान ।
हलनिरीष पुन कुटकगो, तीन करै पनिपान ॥९५॥

हल नाम:

गोरफाल गोदारन, लागल कृषिक कहत ।

जूआ कील नाम:

जुवाकील, जुगकीलव, समी नाम सलहत ।।

हल कीलीक नाम:

ईप: हलके दंड की लीक सु सीता होइ ।।६६।।

मेढि नाम:

मेंधि पुनि पल दारु है, पलु पसुवधन सोइ ।।

हरिधान नाम जवस नाम लालधान नाम ।। तीन वहका नाम:

हरित धान सो तोयम कहि जवस कहै सित सूक ।।
पाटल अनुव्रीहि कहि लाल धान सो लूक ।।६७।।

कोदव नाम:

कोरदूष अरु कोदव भाषा कोदू होइ ।

मोठ नाम:

मागल्यक्य सु मोठ है नूर वषानै लोइ ।।६८।।

मसूर नाम:

मकुष्टक सुमजुष्टक नाम मसूर प्रवान ।

सरसौं नाम

सर्षप कहै कदवक तुम वन मूग वपान ।।६६
सिद्धार्थ: सरसौ धवल: १

गोहू नाम :

सुमन कहत गोधूम:, कुल्माप यावक वहुर
सु कुलत्थ नव्वाटहि सूम ।।६६।।

चना नाम:

चनक कहो हरि मथ मो [तिल नाम] तिल पिंज तिल पेज ।

अलसी नाम:

उमा क्षमा अतसी सुनो नूर मुराई तेज ।।

राई नाम:

क्षुताभिजननि सु आसुरी छवराजिका कहत ।
कहै कृष्णका नाम तिह भाषा राई हुत ।।६६

कगुनी नाम:

कगु प्रियगु सु कागुनी [भग नाम] मातुलानी भग चारु ।।

धान नोक के नाम:

द्वे सस्य शूक किसारू ।।६००

सस्यमंजरी नाम गुछ नाम पयार नाम:

सस्य मंजरी· मंजरी स्वंब गुच्छ सो होइ ॥
नाम पलाल पयारि सो नूर कहत सब लोइ ॥१

धान्य नाम धान्य भेद नाम:

स्तंब करि जो धान्य है ताकौ व्रीहि विचार
नाडी नाल सु कांड कहि धान गांठि उचार ॥२

धान्य त्वचा नाम भूसी नामानि कन धान नाम:

धान तुचास्तु सभिपो भुस कौ वुस अभिधान ।
जो बिनु फल को धान्य ह्वै ताहिक डंगर जान ॥३

पैंना का नाम: अति पैंना का नाम:

प्रदन तोत्र तोदन कहे ए पैंने के नाम ।
है अति तीक्षन नोक ही सूक कही गुन ग्राम ॥४॥

स्याम धान नाम:

सो स तीनक: पंडक सोहरेण सु कलाप।

रिद्ध वा पूत नाम:

धान लून्यो परहान मैं ताकौं कहियें रिद्ध ।
जौ दै कै उत्तकीयो सोई पूत प्रसिद्ध ॥५॥

रसोई का नाम:

पक्वस्थान महानस: कहै रसवती ताहि ॥

रसोई को अधिकारी नाम:

ताहि कहत अध्यक्ष पुनि पौरोगव सो आहि ॥६

रसोईया नाम:

सूपकार आरीलिक: सूपिक अदनिक जान ।
सूद, आधसिक वल्लव, कादंबिक सु बपान ॥७॥

चूल्हा नाम:

चूल्हि, अतिका, जानियो अधिश्रयनी अस्मंत ।
उद्धान तिह नाम ए नूर कहत मवसंत ॥८॥

अंगीठी नाम:

हसनी, अंगारधानिका, अंगरस कटी सोइ ।
हसंती सुता सौ कहै अंगेठी पुनि होइ ॥६॥

भाड नाम:

भ्राष्ट्र कंदुसो दवेंदिनी अंबरीप सो जातु ॥
लघु घट को जो कीजिये मणिक अलिजा मान ॥१०॥

करवा नाम:

गलंतिका सो कर्करी मान कहिए ताहि ।

हाडी नाम:

कुडी, स्थाली, पिठर, गो उखा, सु, हाडी चाहि ॥६॥

ऊतग नाम:

घट, कुट, नि प्, एकतस, हिरहै नूर सुच्यारो नाम :

दिया नाम:

वर्द्धमान, सु, मरावा जो दीया ग्रह धाम ॥

कुप्पी नाम:

कुतू कुतप मो जानियो अल्पस्नेह रो पात्र ।
पीवन को जो पात्र है करक्है गुण गात्र ॥११

बासण नाम.

भाजन आवापन सोई भाँडा पात्र अमत्र ।

कनाई नाम:

कछवी[1] सो विपभाज्य कहि दार्वी नाम सुमन ॥१२

चाट्ट नाम:

काष्ट हस्त तड्डू उह दारु हस्तक सोइ ।

माक वा नालो नाम: हरितक, कहिये साक को शिग्र नालिका होइ ॥१३

सामग्री नाम:

कटब क्लब उपस्कर वेसवार को नाम ।
कवि सामग्री सो कहै हरिद्रादि गुनग्राम ॥१४

पटाई नाम मिरच नाम.

तितरी कत्राक्षा म्लसो चूक पटाई आहि ।
वेल्लजउ पण मरिच पुनि कोल कृस्न सो चाहि ॥१५॥
ताहि धर्म पत्तन कहै (जीरा नाम) जीरक जारन जानि ।
नूर अजाजी कहत है जीरा नाम प्रवान ॥१६॥

काला जीरा सूठि आदा नाम

कणा कृस्न जीरक सोई आद्रक है शृंग बेर ।
नागर सू ठि महौषधो विश्वा जानहु फेर ॥१७॥

मेथी नाम:

सुपवी, पृथुवा, कारवो, उपकुचिका सुग्राहि ॥
कहै नूर उपकालि पुनि मेथी जानो वाहि ॥१८

धनीया नाम

वितुन्नक: धान्यक सोई कस्तुवर तिह भाप ।
छत्रा पाचों नामए भापा धनिया आप ॥१६॥

---

[1] मूल में यह भी है और छ के ऊपर 'ड' और लिखा हुआ है ।

काँजी नाम:

आरनाल सौ वीर सो कुलज सोई कलमाप ।
धान्या, म्लकातिक सुनो, अवति सोम गुण लाप ॥२०

हींगु नाम:

हींगु जतुक, वाल्हीक पुन रामठ कहिए ताहि ।
सहस्रवेधी नूर कहि हिंगु पत्री और चाहि ॥२१।

हींगु के पत्र नाम:

पत्री पृथ्वी कारवी कारवी पृथु सो होइ ।
वाष्पिका तिह जानियो, हिंगु दृक्षी है सोइ ॥२२॥

हलद नाम:

निसा हरिद्रा काचनी बर बर्नंनी बपानि ।
पिंडा सोधा ता सोई पीता नूर सुजान ॥२३

सोधालून नाम:

मानिमथ सिव सीत सो द्वे सैंधव के नाम :
रोमक, पारी लोन सो (बिडलून नाम) वस्तक बिट बिड काम।

सौंचल नाम:

सौवर्चल मेचक तिलक अक्षरुचक जु कहत ।

मिश्री वा पाड नाम:

सिता शर्करा मिश्री सो पड नाम सलहुत ॥२५

पाड नाम:

फाणित मत्स्यण्डी सोई कहे पद अभिधान ।
सवल पड गुण आदि दै ईक्षु बिकार सु जान ॥२६॥

संस्कार युक्त वस्तु नाम:

प्रणीत उपसपन्न सो यहो सस्कृत ताहि ।

सोधी वस्तु नाम:

ससृष्ट सोधित सोई सोधी वस्तु सु चाहि ।।२७

चिक्नी वस्तु नाम:

चिक्कण, मसृण, स्निग्ध सोइ (वासी नाम) भावित वासित होइ ॥

पूरी नाम:

पौलि पमरूणा पुरी पची मपक्वह मोइ ॥

धानरी पोल नाम:

लाजा, भरात सो कहै (बहुरी नाम) बहुरी सा धानाजु ।

चिटया नाम

पृथुक सोई चिपिपिट पुनि चिटया को इह साजु ॥२६॥

रोटी नाम:

पिष्टक यूप अपूप पुन, तीन्यो रोटी नाम:

दधि सीचो वस्तु नाम:

जो दधि सीच्यो होइ क्छु, करभ कह्यो अभिराम ॥३०॥

भात नाम:

भक्त सदी दिव अंन्न सो, भिस्सा ग्रोदम अंघ।

वासन में जो लगि रहै भात ताको नाम:

कह्यो दग्धिका भिस्सया, वासन लपट्यो वंध ॥३१

मांड नाम:

सर्वंर साप्र, सुमड अव मणि मासरा होइ।

रावड़ी नाम वायूरा नाम:

मापा, जूस, सुउश्निका, कहै विलेपी ताहि।
तरला, श्राणा जवागू: मापा रवरी ग्राहि ॥३२

गव्य नाम:

दूध दही घृत ग्रादि दै, गोतें उपजें सोइ।
गव्य नाम तासों कहैं नूर पुराने लोइ ॥३३॥

गोवर वा करस नाम:

गोविट गोमय कहत है द्वै गोवर के नाम।
सूके को अरु करस को है करीप गुन ग्राम ॥३४

दूध नाम:

क्षीर दुग्ध पय सो कहे (घीव नाम) घृत हवि सर्प्पि सु ग्राज्य।
नूणी सो नवनीत कहि सो नवउ घृत साज ॥३५

गाढ़ी दही पतलो दही नाम:

ग्राज्य कहै दध्यादि सव पुनि पायस्य वपान।
हो इन गाढो जो दही, द्प्स कहै मति मान ॥३६

दूध में जो घीव नाम:

गाइ दुहत जो दूध में प्रगट होत है घीव।[1]
हयगवीन, सुनाम तिह भाषत बुध जन जीव ॥३७

मथी दह नाम:

कालसेय, सु, अरिष्ट पुनि गोरस कहिए ताहि।
मथौ मथानी में दही घीव न काढ्यौ ग्राहि ॥३८॥
चौथाई जल सहित दधि तक्र कहावै सोइ
ग्राधौ जल दधि में मिले उहै उदस्वित होइ ॥३९॥

---

१. मूल में 'घ' है पर होना 'य' चाहिये।

निर्जल दधि सो नूर भनि मथि त कहै कविराज ।
जानहु दूध नवीन जो नाम पीयूष सुसाज ॥४०

तुल्यपान नाम:

पीवे साथि सपीति सो सग्धि सु भोजन साथि ।
भूप बुभुक्षा क्षुत उहै, ग्रास कवल मुप हाथि ॥४१
फेला जूठ बपानिये (प्यास नाम) प्यास नाम है तर्ष ।
तृषा पिपासा उदन्या, तृट तृस्ना अनहर्ष ॥४२

भोजन नाम:

जेमन, जग्धि सु भोजन लेहु बिघस आहारु
नूर जगत को देपिये है तातैं आधारु ॥४३॥

तृप्ति नाम:

सौहित्य, तर्पण, तृप्तिः, (कहौ यथेप्सित नाम) काम प्रकाम निकाम ।
काम प्रकाम निकाम सो पर्याप्त. अभिराम ॥४४॥

गोप नाम:

गो संख्य गोधुक उहै वल्लव गोप गोपाल
नूर कहै आभीर घर पेले क्रस्न कपाल ॥४५॥

गाय समूह नामः

गो समूह गोधन कहै बहुरो गोकुल होइ ।
धेनुक धेन समूह सुनि वत्सक बत्स सु लोइ ॥४६॥

बैल नाम:

गो उक्षा वृषभ वृष बली वर्द अनुड्वान ।
सौरभेय सो भद्र पुनि रिषभ बैल अभिधान ॥४७॥

वृद्ध बैल नाम:

महोक्षः वृद्धक्ष पुनि कहै जरह व ताहि ॥

वछा को नामः

जातोक्ष शकृत्करिः तर्नक लैरू आहि
ध्यधिया सो आर्षभ्य कहि ॥४८

(कंधवह बैल नाम)

यह गोपति सुद्द ठूर भार निवाहै कध ॥
सो ताके नाम सुनूर गल कबल सो (मा) स्ना ॥४९॥

नाथे बैल को नाम:

नासित नस्योत प्रष्टयान युग पार्श्वक ।
नाथो बैल जु होत ॥५०॥

जुवा वालो वैल नाम:

साटक सो प्रासंग्य युग्य जुवानि चाहे कंध ।
सौरिक हालिक नाम तिह वहे वृषभ, हलवध ॥५१

सब बोझ लै चलै वैल ताको नाम:

धूर्य धुरीन धूर्वहः धौरेयः तिह जान ।
सर्व धुरंधर वैल को शृंग विषाण प्रवान ॥५२॥

गाइ नाम:

उस्रना माता शृगिनी सोरभेयी माहेय ।

उत्तम गाइ नाम:

नूर अर्जुनी रोहिनी अघ्न नाम है त्रेय ॥५३॥

विंध्या गाइ तुई गाइ नाम:

बंध्या गाइ कहे वसा, अव तावा तुई जानि ।

सधिनी नाम:

लग्यो वृषभ सो सधिनी सुधी सुकरा मानि ॥५४॥

बहुत वरसा जिह गाइ कै होइ ताको नाम:

वरस घने जिह गाइ कै सो पेष्टुका होइ ।
जो व्याई बहु दिन की है वष्कयनी सोइ ॥५५

धनु नाम सुव्रता नाम:

थोरे दिन व्याये भये धेनु कहावे पूर ।
जो दुहतं सुप देत है उहै सुवृत्ता नूर ॥५६॥

वरस २ मे व्याइ ताको नाम:

समासमीना होइ जो गाइ ब्याइ प्रति वर्ष ।

थन नाम:

ओधस्य आपीन पुनि थन के नाम सुकर्ष ॥५७॥

पूंटा नाम:

पूटो, सिवकः, कीलक, पसुकी रज्जु सुदाम
संदान सो दावनी पसुको रसरो नाम :५८॥

रैई वाभेरणा का नाम:

कुटर दड विष्कम सो मथ मथान वैशाप ।
कहै गर्गरी मथनो नूर सु मटकी भाप ॥५६॥

ऊंट नाम:

उष्ट्र क्रमेल यम वहै संवग्रीव महाग ।
करभ सु वाल ऊट को देपि लैहु तिह स्वांग ॥६०

बकरी वा बकरा नाम:

बकरी, छागी सो अजान । छाग अक्ष अज होइ ।
स्तंब गलक सो जानियो भाषा बोक सु लोइ ॥६१॥

मेढा नाम:

मेष मेढ् एडक व्रषय उरण सो उर्णायु ।

गदहा नाम:

पर रासभ बालेय सो चक्री वंत कहायु ॥६२॥

वाणिया का नाम:

परापजीव: वनविक: क्रय-विक्रयक होइ ।
सार्थवाह वैदेहक, नैगम वाणिज, सोइ ॥६३॥
विक्रेता विक्रयक सो क्रायक क्रयक सु आहि ।
आपनिक वनिया उहै, भाषा नूर सुचाहि ॥६४॥

मोल की वस्तु को नाम:

मूल्य अनामक नामए वस्तु बेचनी होइ ।
नाम मूलधन को इहै नीवी परिपण सोइ ॥६५॥

नफा का नाम:

नाम नफा के नूर कहि भाल अधिक फल जान ।

गाहक को आदर करै ताको नाम:

सत्याकृति सत्यापण: सत्यंकार बपान ॥६६

थोणी नाम:

न्यास नियम नैमेय सो, उपनिधि है परिदान ।
प्रतिदातु परवर्त्त पुनि नाम धरोहरि जान ॥६७॥

वेचण वा साषी का नाम:

बिक्रय विपण सु वेचिवौ [वेची वस्तु को नाम]
क्रेय पराप पण तव्य :

साषी प्रति भूलग्नक: [जमान नाम] :: अनुबधक सो मध्य ॥६८॥

मासा का नाम:

गुंजा पांच प्रमान को माष कहै कविराज ।
सोरह मासा को गोई कर्ष अक्ष सो माज ॥६९॥

पल नाम:

चारि कर्ष को एक पल सो पल को तुल जान ।
बीस तुला को भार इक गनहो नूर सुजान ॥७०॥

विस्त नाम कुड विस्त नाम:

सोरा कर्ष प्रमान को कहि सुवर्न पुनि विस्त ।
पर सोनागो बरन ? नूर होइ कुड विस्त ॥७१॥

प्रस्थादिक मान नाम:

चारि कुडव को प्रस्थ कहि आढक प्रस्थ जु चारि।
चतुराढक सो द्रोण है सोरह द्रोण सुपारि ७२॥

हस्तादिक मान नाम:

चौबिस अंगुलि मान को हस्तक कहै सोइ।
च्यारिहस्त को दंड इन कहत नूर सब कोइ ॥६७३॥
दोइह जासु दंड को मान करै द्वै कोस।
दोइ कोस गोरुत सोई कहै गव्यूत कहोस ॥६७४॥
गव्या पुनि गव्यूति दोऊ च्यारि कोस को नाम:
ताही सों जोजन कहै जे पंडित अभिराम ॥७५॥

चौथाई को नाम बाटे को नाम

चौथाई सो पाद कहि वटक अंस अरु भाग
नूर कहै नवखंड लौं है परमाण सु लाग ॥७६॥

द्रव्य नाम:

द्रवण वित्त वसु अर्थ धन स्वाप तेय सु हिरण्य।
रैद्रव्य सो नूर भनि है जिन पै ते धन्य ॥७७॥

पना नाम·

अस्म गर्भ गारुत्मत मरकत कहियें सोइ॥

लाल मणि नाम:

पद्मराग सोणित रतन लोहितक पुनि होइ ॥७८॥

मूंगा नाम

मूगा सो विद्रुम कहै उहै प्रवाल सु आहि।

रत्न नाम:

मणि रत्न ए नाम दोइ मुक्तादिक सब चाहि ॥७६॥

सोना नाम

कावन कचन कर्बुर कार्तस्वर सो स्वर्ण।
हाटक हेम हिरण्य सु कर्बुर रुक्म स्ववर्ण ॥८०॥
जातरूप चामीकर गागेय तपनीय॥
सात कुंभ अष्टापद जाबू नद जानीय ॥८१॥

सोना का आभूषन नाम:

श्रृंगी भूषन, कनको, कनक कहत पुनि नूर।

रूपा का नाम:

रजत रूप्य दुर्वर्ण सो स्वेत बहुरि पज्जूर ॥८२॥

पीतरि नाम·

आरकूट अरु रीति सो पीतर नाम प्रवान।

तांम्र के नाम:

ताम्र नाम पंडित सुनो नाम प्रकास प्रवान ।।
व्यष्ट वरिष्ट म्लेछ मुप, सुल्व उदंबर जान ।।८३।।

लोह नाम:

शस्त्रक, पिंड सुतीक्षण पुनि, अस्म सार कहि नूर ।
कालायस ग्रयम मयल सो सिहान मंडूर ।।८४।।

कांच नाम पारा नाम:

काच क्षार दोइ नाम है पारद मोर सराज
सूत चपल रस जानियो, शिव वीरज सुपि साज ।।८५

गंधक नाम :

गंधक सो गंधिक सुनौ सौगंधिक पुनि होइ ।
सो गेरू गैरेय पुनि अर्ध्य नाम तिह सोइ ।।८६।।

अभ्रक नाम :

गलव सुमाहिपश्रृंग कहि, गिरिज अमल तिह जान ।।
अभ्रक नाम सु जानियो, कहत नूर मति मान ।।८६।।

रसौति नाम :

तार्क्ष, शैलरस गर्भ सो सिपि ग्रीव सौ वीर ।
क्वाथोद्भव: बितुन्नक: कपोताजन वीर ।।८७।।
रसाजन: श्रोतोजन: तुछाजन सो श्राहि ।
मयूरक: सो कर्परी नूर दाविका चाहि ।।८८।।

हरिपाल नाम :

रीति पुष्प पुष्पक सोई पीतन पिंजर ताल ।
पौष्पक कुसमाजन उहै, ताल वही हरिताल ।।८६।।

सिलाजतु नाम :

असमसार सो सिलाजतु गिरिज कहत है ताहि ।

सिंदूर नाम :

सिंदीर सिंदूर सो नाग संभव चाहि ।।९०।।

सीसा नाम राग नाम :

सीसा सो जो सेट वहि सीसक वप्र सुनाग ।
वंग रंग गुरुत्रपु, पिच्चट पिंगल बड भाग ।।९१।।

कुसुंभा नाम । मधु नाम :

वन्हि सिख: कुसुंभरजा नाम कसूमा जानि ।
मधु सो छौद्र दसानहूं माक्षिक भूर बखानि ।।९२।

मैणनाम :

मधूच्छिष्ट सिक्थक सोई दोइ मोम के नाम ।

मैनसिल नाम :

नागजिह्वका मनसिला नैंदम गुप्ता अभिराम ॥६३॥

त्रिकुटा नाम । त्रिफला नाम :

त्रिक्टु, त्र्यूपण व्योप सो, त्रिकुटा कहिये ताहि ।
त्रिफला बहुरि फलत्रिव वैश्य वर्ग में चाहि ॥६४

दोहा :

वैश्य वर्ग पूरन कियो नूर अमर अनुसार ।
सूद्र वर्ग अब वर्न हूं पढ़ित लेहु सुभार ॥

इति वैश्य वर्गः सपूर्णः
अथ सूद्र वर्ग वर्नन ॥

सूद नाम:

सूद्र जघन्यज वृषल पुनि, अवर वर्ण सो जान ।
भाषा नाम प्रकास में भाषत नूर प्रवान ॥६६॥

संकीर्ण नाम :

आदि करण अवष्ट है चाडाल पर्जंत
इन्है सूद्र तुम जानियो ॥६७॥ सकीरन सो सत

करण नाम :

सूद्री, त्रिय अरु वैश्य पिय इन्ह तैं पुत्र जु होइ ।
करण कहावैं नाम तिह नूर सुनौ नर कोइ ॥६८॥

अवष्ट नाम :

वैश्य जाति है तीय की है पिय ब्राह्मन ताहि ।
जो दहुवन में उप्पजैं, कहि अवष्ट सुताहि ॥६६॥

उग्र नाम :

सूद्र जाति है तीय की पति है छत्रीय कोइ ।
उग्र नाम तासों कहैं जो दहुवन के होइ ॥१०००॥

मागध नाम :

क्षत्राणी कों वैश्य पिय तिन कों पुत्र वपानि ।
मागध तासो कहत है नूर सुकवि जगि जानि ॥१॥

माहिप्य नाम :

वैस्यात्रीय क्षत्रीं सुपिय, जो दोऊ कों पूत ।
तिह माहिप्य सु जानियो जो छल रूप सजूत ॥२॥

क्षता नाम :

पुरुप सूद्र वैश्या त्रिया क्षता तिन को जात ।
क्षत्रीय पिय तिय ब्राह्मनी सूत नाम अवदात ॥३॥

वैदेहिक नाम :

वैश्य और ब्राह्मनीय को, वैदेहिक उपजत ।

रथकार नाम :

करिनी पति माण्यहि जो रथकार सलहुंत ॥४॥

चंडाल नाम :

पुरुष सूद्र बमनी प्रिया, उपजै दहुतै सोइ ।
तिह चंडाल वपानियै नूर कहत सुन लोइ ॥५

कारीगर नाम :

सिल्पी कारु सुनाम द्वे, कारीगर के जान ।

सिल्पी समूह नाम :

शिल्पी गण सौ नूर कहि श्रेणी करत वपान ॥६॥

जुलाहा नाम :

तंतुवायु सुकविद है, दोइ जुलाहा के नाम

बुणावण हारा का नाम :

तुंत्रवाय सो शौचिक पटहि बुनावत काम ॥७

चित्राम कै वासतै जो भीति कौ लीपै ताकौ नाम :

है पल गंड सु लेपक लिपै भित्त संभाल ।

कुम्हार नाम :

दडभृत चक्री नूर कहि कुंभकार सु कुलाल ॥८॥

चितेरा नाम :

चित्रकार रंगा जीव(चमार नाम)पादुका कृत चर्मकार ।

सिकलीगर नाम :

भ्रमासक्त सस्त्र मार्ज असि धावक-शाणा जीव विचार ॥६॥

सुनार नाम :

स्वर्णकार नाडिंधम कहै कलाद सुताहि ।
रुक्मकार पुनि मुष्टि सो, नाम सुनार सुभाहि[१] ॥१०

लुहार नाम :

है दोइ नाम लुहार के लोहकार व्योकार ।

ठठेरा नाम :

ताम्रकूटक: नूर कहि शंखिक बहुरि उचार ॥११॥

खाती नाम :

बर्द्धकि त्वष्टा तक्ष सो काष्टतट रथकार ।

धोबी नाम :

रजक निर्नजक धुज सोई, धोबी नाम उचार ॥१२

माली व कलाल नाम :

दाम नाम जुत मालिक है सो मालाकार
मंडहारक: सौंडको जांनो ताहि कलार ॥१३

---

१ बाजू के हाशियें पर "पश्यतोहर:" नाम निर्दिष्ट है ।

नाई नाम : ग्रता वगाई नापित, दिवाकीर्ति क्षुरि मुंडि ।
पटीक नाम : ग्रजाजीव जावाल सो है जावै घरि कुंडि ॥१४॥
प्रपच नाम : माया कौ परपंच कहि नूर सवरी जान ।
परपची नाम : पर पचा पायक कूटै मायाकार सुजान ॥१५॥
नाचन वाला का नाम :
शैलाली शैलूष सों, भरत नु जाया जीव ।
कृशानी नाचन फिरत, वनिता लैं सग पीव ॥१६॥
नट नाम : नट कु नीलवः चरण सो तीनि नाम है तास ।
पपावजी नाम : मौरजिकः मार्दंगिकः पपाजो सु प्रकास ॥१७॥
तालधारी नाम·पाणिवाद प्राणिघ कहै, ताल धार है सोइ
वीनकार नाम : वीनकार सु वैनिकः
वेणु मवारी तह कौ नाम : वेनुध्म वैणविक हाइ ॥१८॥
चिडी मार नाम :
शाकुनिकः जीवातिक चिरीमार कहि ताहि ।
वागुरिया नाम:वागुरिक सा जालिकः जा वागुरिया ग्राहि ॥१६॥
चित्र लेपनी नाम :
चित्रलेपनी तूलिका वहुरि कूचिका होइ ।
उनका सेवक का नाम :
वैतानिक मृति भृत भृतकः कर्मकार है सोइ ॥२०॥
कावडि लै चलै ताके नाम :
वार्ता वह वैवधिक सो जो लै कावरि कध ।
सिकार मारि करि पाइ तिसका नाम .
वैतसिक कौटिक सोई मारि पात करि वध ॥२१॥
नीच नाम
ग्रपसद जाल्म निहीन सो इतर प्रवग्जन सोइ ।
प्राकृत पामर विवर्ण नीच नाम तिह होइ ॥२२॥
दास नाम :
परचारक परिजात सो, भृत्य दास दासेय ।
किंकर प्रेष्य भुजष्य पुनि, चेटक नाम लहेय ॥२३॥
परस्कद सु पराचित है नियोज्य, दासेर ।
गोप्यक वहुरि परंधिन नाम गुलाम सुफेर ॥२४॥
ग्रालवसी के नाम :
मद तुद सीतक ग्रलस है ग्रतुल्य ग्रालस्य ॥
परमृज नूर वपान हो जो है ग्रालस वस्य ॥२५॥

चतुर नाम :

चतुर उप्त पटु पेशलः सू स्थानी जो दक्ष :
नूर नाम पट चतुर के है जाकी बुधि दक्ष : २६

सूद्र भेद नाम:

प्लव मातग जनंगम दिवाकीर्त्ति चंडाल ।
बुक्कस सु पच निपाद सुनि सवर सु प्रवर कलाल ॥२७॥
अंतेवासि किरात पुनि बहुरि पुलिंद बषान ।
नीच जाति कौ भेद यह कहत नूर जग जान ॥२८॥

व्याध का नाम:

वधिक व्याघ लुब्धक मृगयु कही मृग बधा जीव ।

कुत्ता का नाम:

सारमेय, कौलेय, सो, मृदगसक स्वा होइ ॥
सुनपकः भपक कुर्कुर उहै सारदूल पुर सोइ ॥२६॥

रोगी कुत्ता वा सिकारी वा कुत्ती नाम:

रोगी कूकर काट नो, ताहि अलर्क बषान ।
विस्व कहुजु सिकार कौ सरमा सुनी सुश्रान ॥३०॥

तरुण पसु नाम : सूकर नाम:

बर्व्वर जो पसु तरुण है सूकर विटचर ग्राम

सिकार नाम:

आछोदन मृगया मृगव्य आपेटक के नाम . ३१

चोर नाम:

तस्कर दस्यु सुमोपक एकागरिक स्तेन ।
परास्कंदि प्रतिरोधि सो मलिलुचः चौरेन ॥३२॥

चोरी का वा चोरी का धन का नाम:

चौर्य चौरिका स्तैन्य पुनि जो धन चोरयो होइ ।
लो प्रस्तेय नूर कहि जानत है नर कोइ ॥३३

मृग या पक्षी जासे बांधिये ताको वीतंसक है नाम:

मृग पक्षी जा सों बंधै उपकारण वीतंस ।

रसड़ी नाम:

वटी वराट क रज्जु गुण ताही कहे गुवस ॥३४॥

रहट नाम:

घटी यंत्र उद्घाटन है सोई जन जंत्र ।
गमिलोद्घाटन नूर भनि भाषा रहट सुमंत्र ॥३५॥

राच्छ वासूत नाम:

बाय दंड वेमा सोई वस्त्र बुनन को दंड ।
सूत्र तंतु सो नाम द्वै नूर जगत को मंड ॥३६॥

बुणिकरि लपेटिये तुरि तह को नाम:

बुणि करि वस्त्र लपेटिये, याणि ब्यूति तिह जानि ।

नालिको नाम:

पाचालिका सु पुत्रिका भाषा नालि बखानि ॥३७॥

मंजूसा नाम:

मंजूषा पेटा पिटक पेटक नूर कहत ।
सद्रूप सो जानियो भाषा नाम लहत ॥३८॥

बहगी नाम:

बहगिका बहगी सोइ, भार यष्टिका सोइ ।

छीका नाम:

छीका के द्वै नाम है सिक्य काच सो होइ ॥३९॥

वरत चर्म की पनही नाम:

नध्री वध्री वरत्रापादू पादुका आहि ।
पदायित्ता पुनि अनुपदी कहै उपानत ताहि ॥४०॥

चाबुक वा साण नाम:

कसा ताडनी चाबुकी शाण निकष कष होइ ।
परशु पात्र प्रश्चन रुई [रुई नाम] रूपिका तूलिका सोइ ॥४१॥

मूंसि नाम:

कहै तेजसा वर्तिनी मूषा जानहु ताहि ।

भाथड़ी नाम:

भाथी भस्त्रा सो कहै चर्म प्रवेसी काहि ॥

करोत नाम:

क्रकच सोई कर पत्र है फाट करत जो दोइ ।

वरमा नाम:

वेधनीका आस्फाटनी वेधत वरमा सोइ ॥४३

रांपी आरी नाम:

कहै कृपानी कर्त्तरी नाम कतरनी दोइ ।
आरी सो दारा बहुरि चर्म वेधिनी होइ ॥४४॥

कुहाडा वा वसोला नाम:

वृक्षभेदी वृक्षादन : जासो काटत वृक्ष: ।
जो पाषाण जुदारक टक कहत प्रत्यक्ष ॥४५॥

उपमा नाम:

प्रतिमान उपमान सो प्रति निधि प्रतिमा आहि ।
प्रतिबिंब प्रति जातना प्रतिछा यासो चाहि ॥४६॥
नीकास संकास निभ साधारण सम तुल्य ।
सदृक् निकृति प्रतिकार सो नूर होत जो मुल्य ॥४७॥

सेवा नाम:

पण निर्वेस भिधारा वह भरण मूल्य मरराय ।
कर्मण्यां भृत्या भृतय: भर्म वेतन कहाय ॥४८

मदिरा नाम:

सुरा इरा वरणात्मा परिस्नुता मधु जानि ।
हलप्रिया हाला सोई गंधोतमा वपानि ॥४९
प्रसंना सु कादंबरी ऐरा ताह वहंत ।
नूर हार हूरा, - उहै आसव नाम सहंत ॥५०॥

गजक नाम:

मद्य पिवत ही पात जो ताहि कहत अवदंश ।

जा घर में मदिरा पीवै ताकौ नाम:

जहां बैठि मदिरा पीवै सुंडा नाम प्रसंस ॥५१॥

महुवा को मद नाम:

मधु क्रम मधुबारा उहै महुवा को मधु होइ ।
माधवक: मद्यासव: मधुमाद्दी कसु लोइ ॥५२॥

सैंधी मधु नाम:

सेंधी मदिरा मोदक सीधु जगल मैरेय ।
मतिवारे बातैं कहै आपा न जानेय ॥५३

उन्मद नाम:

किन नग्नहू अभिषव: सुरा मंड संधान ।
कारोत्तम सो नूर भनि साथि अग्न मद जान ॥५४॥

प्याला नाम:

पान पात्र कौ चषक काहि [तृप्ते वस्तु नाम] अनुतर्पन जु अघ।

जुवारी नाम:

अक्ष वेदी अक्ष धूर्त सो कितव द्यूत करि पान ॥५५॥

जूवा के नाम:

कैतव पण सो द्यूत है कैंवती कहि ताहि ।

पासा का नाम:

अक्ष पत्र पासक ग्लह: नूर देवना आहि ॥५६

गारि नाम पूजी सारि नाम:

अष्टापद पुनि सारि पकी सारि
सो नूर कहि सो परिणाय विचारि ॥५७॥

इति सूद्र वर्गः दोहाः

सूद्र वर्ग पूरन भयौ कहे सूद्र के कर्म।
नाम विशेष सु नूर भनि कांड तीसरै मर्म ॥५८॥

इति श्री मत्सकल अभिधान रत्न भूषन भूषित मियाँ नूर कृत भाषा नाम प्रकास नाम माला द्वितीय कांड संपूर्णः २

दोहाः

कांड तीसरे को अबहि बर्नत नूर उदार।
सब्दविशेष समुद्र को जाते लहिए पार ॥१॥
न्यारे न्यारे सब्द सब काहू मिलत न कोइ।
अर्थ मिलें मिलि जात ज्यौं धर्मवान् नर होइ ॥२॥

धर्मातमा नाम:

पुन्यवान धन्य सुकृती धर्मात्मा के नाम।

वडी इक्षा होइ जाकी ताकौ नामः

महासय सु महेछ पुनि वड़ इक्षा को धाम ॥३॥
सदा दया जाकें हिर्दे सो सहृदय हृदयालु।
वड उद्यमी महोद्यम: महोत्साह सु विसालु ॥४॥

प्रवीण नाम:

कृतु मुप निपन अभिज्ञ सो कृती कुसल निष्नात।
वैज्ञानिक सिछित सोई विज्ञ प्रवीण विष्यात ॥५॥

पूजा योग्य नाम:

पूज्य प्रतीक्ष्य सुनाम द्वै पूजा जोग्य जु होइ ॥

वडा दाता कौ नाम:

दान सौंड सुब दान्य ज्यो स्यूल लक्ष है सोइ ॥६

वड़ी आर्वल जाकी ताकौ नाम:

आयुष्मान् जैवानिकः जाकौ पूरन आयु।

शास्त्र कहै ताके नाम·

अंतर्वाणि सु शास्त्रवित कहै शास्त्र समक्ष्मायु ॥७

वरदाता व उत्कंठित नाम:

वरद सोई समर्द्धक जो वर को दातार।
उन्मन उत्कंठित सोई उक्त सु नूर उचार ॥८॥

खुसी नाम:

हृष्टमान् विकुर्वाण सो हर्षमान नर कोइ।

दुर्मन को नाम:

अंतर्मन दुर्मन विमन जो दुष्पित मन होइ ॥६॥
चतुर नाम कवि नूर कहै दक्षन सरल उदार ।
है नर दाता भोक्ता मुक्त कहो उच्चार ॥१०

तत्पर का नाम:

सो उत्सुक उद्यक्त पुनि विष्टार्थक कहि ताहि ।
प्रस आसक्त सु नूर कहि तत्पर नर को चाहि ॥११॥

प्रतीत का नाम:

प्राप्यात विश्रत पृथित वित्ता सोई विज्ञात ।
है प्रतीत नर को जगत सो प्रतीत जनख्यात ॥१२

गुन की प्रतीति ताको नाम:

जाके गुन को जगत में है सब के परतीत ।
वृत लक्षन सो नूर कहि आहि तलनसो मीत ॥१३॥

प्रभु नाम:

स्वामी ईश्वर ईषिता ईश आढ्य पति सोइ ।
प्रभु अधिप क अधि भू धनी नेतापारवृढ होइ ॥१४॥

कुटंब को पाले ताको नाम:

अभ्यागारि कहै सोई ताहि उपाधि कहत ।
जो पालै परवार कों नूर नाम सलहत ॥१५
श्रेष्ट रूप सयुक्त जो सो सहनन बपान ।

संपंन नर नाम ॥ सत्वकरि सपत्ति करि सपन्न होइ ताका नाम.

ताहि कार्य कर्त्ता कहै है निवार्य अभिधान ॥१६

पिता बराबर नर होइ ताको नाम:

मनोज बस सो जानियो पिता बराबर होइ ।

कूकुद नाम:

अलकार जुत कन्यका देत सु कूकुद सोइ ॥७

लक्ष्मीवत नर को नाम:

श्रीमान श्रील लक्ष्मण लक्ष्मीवान
लक्ष्मी जाकै है बहुत है ताकै विश्राम ॥८

दयावत के नाम:

सूनृत वत्सल कारुणिक स्निग्ध कृपाल दयाल ।

स्वच्छंद नाम:

स्वच्छद. निरवग्रह स्वैरी स्वतत्र निभाल ॥९॥

पराधीन नाम:

पराधीन परतत्र सो नाथवान परवान ।
निघ्न अधीन सुगृह्यक आयत नाम सुजान ॥१०

मूर्ष नाम:

पलपू वद्दू घर नूर यहि दीर्घ मूत्र अदव छद ।
असमीक्ष मारी जाल्म: जो है मूरष मद ।।११।।

कुंड नाम:

करै थाम मैं वाहली कुट वहत है ताहि ।

नाम विषै तत्पर रहै ताको नाम:

ताहि अलकर्माण यहि वमंक्ष सो आहि ।

अपने काम कौं तत्पर ताको नाम:

कर्मसोला वर्मठ सोई वर्मसूर संवर्म :
वर्मन्य भुक् कर्मकर वर्मकार तिह धर्म ।।१३।।

मास भोजी का नाम:

आमिष्याशी शौयुल: सदा मास जो षात ।

भूषा के नाम:

क्षुधित विक्षुत जिघित्सु रसनायत विष्यात ।

अपनौ ई पेट भरै ताको नाम:

पर पिंडा दघस्मर अद्मर कहिये ताहि ।।
है परत्न भक्षक सोई कुक्षभरि सो आहि ।।१५।।
आद्यून: औदरिक सो आत्म भरि पुनि सोइ ।
सोदर पूरक नूर कहि जाकै अधिक न होइ ।।१६।।

गीधा नर को नाम माता का नाम.

गर्वण गृध्र सु नाम द्वे जो गीघो नर हुत ।
जीव शौंड उत्कट दोऊ सञ्ज्ञमत्त कहत ।।१७।।

लोभी का नाम:

लोलुप लोलुभ लुब्ध पुनि अभिलाषक के नाम ।

मतवाला का नाम:

सो उन्माद उन्मदिष्नु जो मतिवारो ग्राम ।।१८।।

विनय सयुक्त ताको नाम: विनय रहित ताको नाम

विनय ग्राही विनेय: जुहै विनय सयुक्त ।
समुद्धत: अविनीत पुन विनय रहित सो उक्त ।।१९।।

कामना सहित को नाम:

कामयिता, कामन, कमन कामित अभिक सु भीक ।
कमितानुक पनि कभ्र सो नूर नाम ए ठीक ।।२०।।

पराये वश्य-हूओ रहै ताके नाम । अपना वचन को पालै ताको नाम.

निभृत प्रणेय विनीत वश्य प्रस्नित बहुरि अवश्य ।
जो पालै निज बोल को आश्रव नाम सुवश्य ।।२१।।

ढेठे के नाम चतुर नाम:

धृष्ट: धृष्नु विपात पुनि जो ढेठो नर होइ ।
प्रतिभान्वित: प्रगल्भ सो नूर चतुर है सोइ ॥२२

अढीठ नाम:

सो अधृष्ट सालीन सो जो ढीठो नर नाहि ।
बस्मिय सहित बिलक्ष है नूर कहत जगमाहि ॥२३॥

कायर नाम:

भीरुक भीलुक भीरु पुनि कातर त्रस्त प्रसंस ।
बात कह्यो चाहे जुसो आससित आसंसु ॥२४

मारन हारा का नाम: स्तुति करन हारा का नाम:

मारनहारो घातक हिंस्र: उहै सरारु ।
स्तुति कर्त्ता सो नूर कहि, अभिवादक बदारु ॥२५॥
भूमि परयो चाहै जु नर सो पातक पतयालु ।
उत्पतिता उपपतिस्नु उठयो चहै समालु ॥२६॥

तिसीक्षन का नाम:

भविता भूश्नु भविश्नु वर्तन है वत्तिश्नु ।

निरादर करयो चाहे ताको नाम:

चाहै कर्यो अनादरहि छिष्नु सु निराकरिश्नु ॥२७॥

ज्ञाता का नाम: चिकणा का नाम:

विदुर विंदु ज्ञाता स्निग्ध: साद्रि सु मेदुर होइ ।

विगस्या का नाम:

विकस्वर जानो बिकासी नूर नाम है सोइ ॥२८॥

पसरया का नाम.

विस्मर विसत्वर विसारि, उहै प्नसारि सु आहि ।

क्रोधी नाम:

कोपी क्रोधन अमर्षण चड कोप वहुताहि ।

सहनसील नाम:

सहन, सहिष्नु तितिक्ष पुनि क्षता क्षमी वपान ।
क्षमिता तासौ नूर कहि जो सहि रहै निदान ॥३०
जागरूक जागर्तिता जागन हारो कोइ ।
प्रवलामित जो नीदवसि मूनिक कहियै सोइ ॥३१॥

सोवनहारा का नाम:

स्वप्न कशायित शयालु सो निद्राण निद्रा...

पीठि फेरे ताको नाम:

मुप फेरे सुपरान्मुप पराचीन सो भालु ।।३२।।

नीचो मुप करि रहै ताको नाम:

अधोमुप सु आवामुपः जिहि नीचो मुप होइ ।
नूर कहै सु जरूर विनु ताहि न देषी कोइ ।।३३

अति वक्ता का नाम :

वावदूक वद वदावद वाग्मी वक्ता आहि ।
पटु सो वाचो युक्ति जो वाग्पति अति वक्ताहि ।।३४।।

कुत्सित वोलै ताको नाम:

वाचाट, वाचाल, सो गह्यक जाल्मक होइ ।

दुर्मुष का नाम:

अबद्ध मुप वहुरो मुप जो मुप दुर्मुष होइ ।।३

मीठी वात नाम प्रगट न वोलै ताको नाम:

प्रियवद सुम्लक्षणः जाकी मीठी वात ।
लोहल अस्फुट वाक्सो नैक न समझो जात ।।३६

कडुवो वोलै ताको नाम.

कटु वक्ता सु कटुवद गर्ह्यवादी है सोइ ।

कुवचन वाला को नाम: अज्ञान नाम:

कुचर कुवादी कुवचनी जड अज्ञ, ग्यान न होइ ।।

जाको स्वर नीको नाही ताको नाम:

अस्वर और असौम्य स्वर जिहि स्वरनी नाहि ।

नादकरण वाअका नाम:

नादी कर शब्द नखण नादी वादी आहि ।।३८।।

वात कहै न सुणै न जाणै ताको नाम:

कहनी वात न आवई सुनी न आवै वात
नेड मूक सो जानियो नूर कहत विष्यात ।। ३९ ।।

चुप्प रहै ताको नाम:

तूस्नी शील: तूश्नीक चुप को रहै जु कोइ ।

नांगा कर नाम:

नग्न अवास दिगवर नूर मुनीस्वर सोइ ।। ४०

काढि दीजिये ताको नाम:

निः क्वसित: अपध्वस्त पुनि अपकृष्ट सो जानि ।
धिक्तत जो धिक्कारि कै काढि दियो सु वपानि ।। ४१

गुमांनी को नाम.

आर्त्त गर्व्व अभिभूत सो गर्व गहे जा होइ ।

साथी नाम:

सांथित दांपत नाम तिहि साथि, रहै जो कोइ ॥ ४२

भाग्या दीवा मनें कीवो तिस को नाम:

निरस्त प्रत्यादिष्ट सो भाग्या दीनो ताहि।
प्रत्याख्यात निराकृत मने कर्यो जो चाहि॥ ४३ ॥

जो ठगाइ ग्रायो होइ ताको नाम:

विप्रलंभ सो वंचित: बहुरि विप्रकतत जान।

मार्यो होइ तिसको नाम:

हत प्रतिहत प्रतिवद्ध पुनि मनोहत सु वषान। ४४

बांध्या का नाम:

प्रतिक्षिप्त अधिक्षिप्त पुनि कीलित संयत बद्ध।

विपती जी को नाम:

आपन्न आपत्प्राप्त सो विपत्ती जीव निपद्ध ॥ ४५ ॥

भय सेती भाग्यो होइ ताको नाम·

कादशी क सु भयद्रुत: भय तैं भागै कोइ।

जो स्थिर नाहीं ताको नाम:

जो स्थिरनाही नूर कहि सक शुक जानहु सोइ ॥ ४६

दु.ष्यित का नाम:

घ्यसनार्त्त उपरक्त सो दुषित नर के नाम.

व्याकुल वा विहूल नाम.

व्याकुल कहै बिहस्त सो बिहूल विल्कव काम। ४७

दुष्ट बुद्धि वाला को नाम:

विवश अरिष्ट सु दुष्टधी दुष्ट बुद्धि जिह वुद्ध।

संनद्ध नाम.

पहरी होइ सनाह जिन आततायी सनद्ध ॥ ४८ ॥

द्वेषी नाम:

द्वेषी जानहु अक्षिगत जो नर मारन जोग्य।
शीर्ष छेद्य सो जानीयो बद्ध कहत सव लोग ॥ ४९

चपल नाम सठ नाम दुष्ट नाम धूर्त नाम:

चपल चिकुर जानियो अनृज सठ हि वषानि।
दुष्ट सु खलु अरु पिसुन है, धूर्त्त सु वंचक जानि ॥५०

घातक नाम:

क्रूर नृसस सु घातक जानहु ताको पाप ॥

मूर्ख नाम:

यथा जात वैधेय सो बालिस अन अघाय ॥५१।

कृपण नाम

किंपच मनमित मितिपच कृपण मिति पच कृपण कदर्य सु क्षुद्र

दरिद्री नाम

दुगत दीन दरिद्र निस्व दुविध भापत रङ्क ॥५२

पर दोष देष ताको नाम

पर दोषहि लग रहै पुरागामी[1] सो सोइ।
दोष कहत है नूर सु कविजन होइ ॥५३

चुगल नाम सस्त्र सो छाय रह्यो हाइ ताको नाम

कर्णे जप सूचक चुगल क्षारित जानहु ताहि।
आसारि सा नूर कहि सस्त्रे रहै वहु छाहि ॥५४

भिषारी नाम

जाचक मागण जाचनक वनीयक सो आहि।
भिक्षुक सो अर्थी कहै नूर सुकविजन चाहि ॥५५

स्वदत उपज अडो तै उपजै अकुर त उपजै तीन वहके नाम

स्वेदज, कृमि, दसादि, द, अडज, पग सर्प्पादि।
उदिभत उदिभट अद्भुत जानहु तरु गुल्मादि ॥५६॥
नूर जरायुज जगत मैं है नर और गवादि।
दिव्य रूप उत्पन्न ह्वै जानहु सो देवादि ॥५७॥

इति विशष्य निघ्न वर्ग

सुदर नाम

मजुल सुषम सु मजु सो रुच्य मनोहर चारु।
सोभन साधु मनोज्ञ सुनि कात रुचिर सु विचारु ॥५८॥

आसेचक नाम

आ सेवक जिह देषि कै दृष्टि अप्तिनहि होइ।

मनोवाछित नाम

प्रिय वल्लभ रु अभीष्ट सो इप्सित वाछित सोइ ॥५६॥

निद्यका नाम

रेफ जाप्य कुत्सित अवम अधम कुपूय निकृष्ट
अह्य अनुक सा पट है सा अवद्य प्रति कृपि ॥६०

म्लान नाम मल दूषित नाम

मलिन मलीमस कहत है द्वै मलीन के नाम।
मल दूषित कचर सोइ नूर कहत गुन ग्राम ॥६१

१ गा के ऊपर भूल में मा' लिखा हुआ है। और 'भी' के ऊपर 'गी' लिखा हुआ है। इस प्रकार पुरामागी हुआ।

पवित्र नाम: पूतं पवित्र सु मेध्य कहि [सोधित नाम]
अनवस्कर सो मृष्ट ।
निः सोधित सोधि सोई है निर्नित सुमृष्ट ।।६२

सून्य का नाम:
तुछ फल्गु रिक्त कशिवक, सून्यक सोई असार ।

प्रधान पुरुष नाम:
प्रमुक प्रवंक प्रधान सो 'वर्य वरेण्य उचार' ।।६३
अग्र प्राग्र हर मुख्य सो उत्तम अग्रीय सोइ ।
अननुत्तम सो नूर कहि जो प्रधान नर होइ ।।६४।।

श्रेष्ट नाम : शोभन नाम:
पुष्कल अरु श्रेयान कहि द्वे श्रेष्ट के नाम ।
अति सोभन सो सत्तम नूर कहत गुन ग्राम ।।६५।।

प्रसस्त वाचक नाम:
व्याघ्र सिंघ पुगंव रिषभ शार्दूलगज नाम ।
उत्तर पद दये होत है श्रेष्ट अर्थ बड़ भाग ।।६६

अप्रधान नाम: दीर्घ नाम:
उपसर्जन जु अप्राग्य् ए अप्रधान के नाम ।
आयत जानहु दीर्घ सो नूर कहत गुन ग्राम ।६७।।

स्थूल नाम:
महत वृहत पीवर पृथुल पीन विसंकट होइ ।
पीवरपीघ्नीन, उर विपुल स्थूल विसालंसु लेइ ।।६८।।

अल्प नाम:
सूक्ष्म तनु कृश क्षुल्ल सो स्तोक दभ्र जो अल्प
ताहि श्लक्ष्ण कहत नूर सकल गुण कल्प ।।६९

मात्रा का नाम:
अक्षर एक कहैं सुने जितनो बीतत काल ।
मात्रा त्रुटिता सो कहै नूर सभाल समाल ।।७०।।

अति सूक्ष्म नाम:
अणु कण तुनि लव लेश सोहे सूक्ष्म अनु सिष्ट:
कणीय सो अल्पीय सो अणीय सो अल्पिष्ट ।।७१।।

बहुत नाम:
प्रचुर प्राज्य बहु बहुल पुरु भूरि भू य भूयिष्ट ।
पुरुहुस्मिहर: मदभ्र प्रभूत सो सुनि इष्ट ।।७२।।

संख्या सौ जो अधिक होइ ताको नाम। गणि वे योग्य होइ ताको नाम:

जो सख्या शत सौ परे ताहि पर शत नाम ।
सो गणनीय गणेय जो गणन जोग्य अभिराम ॥७३॥

गण्यो होइ ताको नाम : सघन नाम:

नाम गणित सख्यात सो नाम गणायो जाहि ।
सघन निरतर साद्र सो नूर वहृत सब कोई ॥७४॥

सम्पूर्ण नाम:

स्वकल समस्त समग्र सो विश्व निखिल नि.शेष: ।
कृत्स्न सपूण सर्व नूर अखड अशेष ॥७५॥

निकट नाम:

सविध सदेस सवेस सो निकट सनीड समीप ।
सन्नि-कृष्ट आसन्न जो नूर वहृत गुन दीप ॥७६॥
समर्जाद उपकठ है अतिक अभिक अभ्यर्ण ॥
अभ्यासा सोई सुनो मिलित होत तिह वर्ण ॥७७

सौच्या का नाम:

अव्यवहित अपदातर ससिवत हो होइ ।

अति निकट नाम·

अतिक्तम, नेदिष्ट सो अति. समीप रहै सोइ ॥७८॥

दूर नाम

दूरि दवीय दविष्ट सो नेदिष्ट जु कहृत ।
विप्रकृष्ट सो जानियो जोनिति दूर रहृत ॥७६॥

बाटला का नाम:

वर्तुल निस्तल वृत्त है बटलो जानहु ताहि ।

ऊचा का नाम:

तुंग उतग उदग्र सो उच्छ्रित प्राशु बखान ।
उन्नत ऊचे सौं कहै जानहु नूर सुजान ॥८०॥

नीचा बावन का नाम:

नीच, न्यग्र, हृस्व खर्व सो अवनत वावन आहि ।
अवानत: सो जानियो वावन अगूर चाहि ॥८१॥

वक्र नाम·

भुग्न वक्र वेंलित कुटिल वृजन जिह्म नत जान ।
आकुचित आविद्ध सो मूर्ति अराल बखान ॥८१॥

ऊँचो होइ अरु न रहै ताको नाम:

उत्तान, त, बंधुर: उचो नै रहै कोइ ।

सूधा का नाम:

सूधो प्रगुण अजिह्म जु सरल नाम तिह होइ ।।८३

टेढा का नाम:

टेढो आकुल अप्रगुण टेढा के द्वै नाम

नित्य नाम:

नित्य सनातन सदातन सास्वत ध्रुव को धाम ।।८४।।

ठहराय रहै ताको नाम:

स्थिर तर स्नुस्थे यान सो जोनी कै ठहराय ।

एक रूप सो सदा ठहराइ ताको नाम:

काल व्यापी कूटस्थ सो, एक रूप न पराइ ।।८५

स्थावर नाम जंगम नाम:

कहै जंगमेतर सोई जाको स्थावर नाम ।

जगम त्रसचर चराचर इगिचरिष्नु सु ग्राम ।।८६।

चंचल नाम:

चंचल चलन चलाचल कंपन कप सु ताल ।

तरल परिप्लव नूर कहि पारिप्लव सुनि भाल ।।८७।।

अधिक नाम : दृढ नाम:

अतिरिक्त समधिक सोइ अधिक नाम है दोइ ।

दृढ सधि हि सहत कहैं, जानि लेहु सब कोइ ।।८८।।

कर्कस नाम:

कर्कश क्रूर कठोर दृढ, निष्ठुर कठिन सु जान ।

मूर्ति नाम:

मूर्त्ति मूर्त्ति मत मूर्त्ति के द्वैही नाम बपान ।

पुरान का नाम:

प्रतन प्रत्न जु पुरातन चिरतनः सु पुरान ।

नवीन नाम:

अभिनव नूतन नूत नव प्रत्यग्र सु बपान ।।९०

कोमल का नाम:

कोमल मृदु सुकुमार सो । मृदुल कहत पुनि ताहि

पीछै लाग्यो फिरै ताको नाम:

अनुपद अनुग अन्वक्ष सो अन्वग जानहु ताहि ।

प्रत्यक्ष वा परोक्ष्यक्ष नाम:

इंद्रियन सो नूर पहिं आनि लेहु प्रत्यक्ष ।
है जु अतींद्रिय जो कछू, सो जानहु अप्रत्यक्ष ॥९२॥

एकाग्र नाम:

एकस एकाग्र सो है अनन्य वृत्ति सोइ ।
एकतान एकायन एकायन गत होइ ॥९३

आदि वा अंत नाम:

'प्रथम' पूर्व पौरस्त्य सो आदि नाम सलहत ।
पश्चिम चरम जघन्य मो अत्य अन्त कहत ॥९४

निष्फल नाम सामान्य नाम:

मोघनिरर्थक निःष्फल साधारण सामान्य ।

प्रगट नाम:

स्फुट उल्वण प्रव्यक्त सो नूर स्पष्ट सु जान्य ॥९५

विपरीत नाम:

सो प्रसेव्य प्रतिकूल सो:

दछन अग का नाम:

दोइ नाम विपरीति ।
अपसव्यहु सु अपष्टु पुनि दछिन अग की रीति ॥९६॥
वाम अग सो सव्य है हैदक्षण अपसव्य ।

संकट नाम:

सबाधक: सकट सोई भापत नूर सुकव्य ॥९७॥

संकडाई को नाम:

सकीर्णः सकुल सोई आकीर्ण तिह आहि ।

मु डित नाम:

मुडित परिवापित उहै:

बहुत कठिन समझो न जाइ ताको नाम:

कलिल गहन सो चाहि ॥९८॥

गांठि नाम विस्तार नाम:

गाठि ग्रथि ग्रथित सोई, विस्तृत तत विस्तार ।
विसृत व्यास सु विग्रह विस्तार नूर उचार ॥९९॥

प्राप्त नाम:

प्राप्ति तातो कहत है प्रणिहित कहिये सोइ ।

विस्मित नाम नूल्यो

विस्मित नाम नूल्यो:

विस्मित सो अतर्गतः अतर्वर्ती होइ ॥१००॥

कंपित नाम:

कंपित प्रेंपित वेल्लित: चलित धूत आधूत ।

युक्त को नाम:

संजोजित सु उपाहित युक्त वस्तु जो पूत ।।१।

जो पायो होइ ताको नाम:

समासाद्य सूतनीन सो स्पंनगम्य जो प्राप्य ।

आप मैं परस्पर जोड़ कर्यो ताको नाम:

संगूढ:—सकलित सो कर्यो जोड मिल आप्य ।

निंद्य नाम:

निंद्य: स्यात्त च गीत सो गरहण जानहु ताहि ।

बहु विधि जाणै ताको नाम:

नाम रूप पृथग्विध बिवध सु बहु विध आहि ।।३

चूर्ण कियो ताको नाम:

अवध्वस्त अवचूर्णित अवगीर्ण अधिकृत ।

अनायास कियो ताको नाम:

अनायास कृत फाट सो नूर कहत गुन वृत्त ।

मूंद्या का नाम बाध्या का नाम:

मुद्रित सदित मूर्णसित मूदे के अभिधान ।

सदानित बाध्यो सोई नूर कहत सु विधान ।।

पाक होइ घृत दूध मैं नूर कहत सृत ताहि ।

गुणित वस्तु नाम:

गुणित कहै वस्तु जो सोई आहित आहि ।।

नैक भेद उच्चावच सुद्दच नीच अभिधान ।

अकेला को नाम:

एकाकी एकक एका एक ही नाम प्रधान ।।

अवलंबित नाम जो हुई न जाइ ताको नाम:

अवलंबित उचंड है जो अविलंबित होइ ।

अस्पृक असह्य अरुतुद:, छुयो जात नहि सोइ ।।८

भिन अर्थ नाम:

एक एक तर सो सुनो पुनि अन्येतर जानि ।

भिन्नार्थक सो नूर कहि भिन अर्थ सु बषानि ।।

अप्रयोजक नाम:

जो पद्र कामिन भावई कहिय प्रयोजक ताहि ।

गो मयाम गुनिरर्थक कहा साम जग याहि ।।

मोटा का नाम : छिप्पा* का नाम:

उपचित मोटे स्थौर है, छपत गुठित जो गुप्त ।

द्रव नाम:

अवदरन, द्रुत नूर यहि जागत कृपन सुगुप्त ॥११

जूवा सिपायो ताको नाम:

द्यूत सिपायो होइ जिहि सो वृत कारित जानि ।

सूंघ्या का नाम:

घ्रात घ्राण सूघ्यो सु जो (लीप्या कानाम):

दिग्ध लिप्त सु बखानि ॥१२॥

रूंध्या का नाम:

आवृत वलयित, रुद्ध सो है वेष्टित संवीत ।

तेज कर्‌यो ताको नाम:

तेजित निशिती क्ष्णुत सो नेज करत जो जीत ॥१३

ह्रीण ह्रात लज्जित सोई [पाक नाम] पाक:पक्व बखानि ।

युक्त सेती कर्‌यो ताको नाम:

उपाहित सजोजित युक्त कर्‌यो जो काम ॥१४

प्रभा रहित नाम:

रोक विगत नि:प्रभ सुनो प्रभा रहित जो नाम:

विलीन नाम:

द्रुत विद्रुत सो जानियो ह्वै विलीन रण माहि ॥

छेद्या का नाम:

दारित भेदित भिन सो कहै विदार्‌यो ताहि ॥१५॥

सिद्ध वस्तु नाम:

नि:पन्न: निर्वृत्त सो सिद्ध वस्तु जो कोइ ।

उपासित नाम:

वरवस्सित उपचरित सोई करै उपासना सोइ ॥१६॥

राख्या का नाम:

त्राण त्रात गोपित गुप्त अवित्र किये जो गोप ।

तज्यो होइ ताको नाम:

त्यक्त हीन धुत विधुत उत्सृष्ट करि कोप ॥१७॥

उक्त नाम:

आख्यान अभिहित उदित जल्पित लपित सु उक्त ॥

भाषत जानहु नूर कहि जे है ज्ञान सयुक्त ॥१८॥

---

*मूल में छिप्पा के ऊपर 'गूढ' और लिखा हुआ है ।

जान्यो होइ ताको नाम:

बुद्ध बुधित प्रति पन्न सो मनित विदित कहि नूर ।
अवगत अव वासित सोई, जान्यो ह्वै जिन नूर ॥१६।

काटे के नाम:

छिन्न छित्त कृत कृत सो लूत दात दिति सोइ ।
काटे को यह नाम है नूर समझि लै कोइ ॥१६॥

अंगीकार नाम:

प्रतिज्ञात उररीकृत आश्रित उरी कृत जान ।
अंकीकार करयो जु को ताके नाम वपान ।।२०।।

सुणे ताको नाम.

सश्रुत उपश्रुत उपगत, विदित समाहित आहि ।
सुनी बात सकोर्ण सो, नूर कहत सब ताहि ।।२१।।

स्तुति करी होइ जाकी तको नाम:

वनित पनित पणायित ईडित शस्त वपानि ।
अपगीर्ण सु अभिष्ट सो तेडित नूर बपानि ।।२२

सुनो होय स्तुति याग्य ता के नाम: अनादर वारे को नाम:

अवज्ञात अवमानित अवगणित पुनि सोइ ।
परिभूत अवमत बहुर अनादर जुत होइ ।।२३।।

पीस्या का नाम:

प्रेष्ट क्षोदिष्ट बहुरि जोपिष्टः तिहि नाम :

बड़े के नाम:

कहे वरिष्ट वहिष्ट सो जो वरिष्ट गुण ग्राम । २४

भक्षित नाम:

भक्षित चर्वित लिप्त सो ग्रस्त ग्लस्त जो भुक्त ।
भक्षित प्सात प्सात सो जग्ध पादित युक्त ।२५
प्रम्पव द्रुत प्रत्यवसित जो पायो तिहि सोइ ।
नूर नाममाला विर्षे जानि लेहु सब कोइ ।।२६

छिप्रादि नाम:

छिप्र क्षुद्र पृथ पीवर भौप्सित सो सुनि लेहु ।
नूर अर्थ पावन विर्षे छिप्र अरथ कहि देहु ।।२७।।

साधिष्टादि नाम:

बाढ स्थापत बामन जु वृंदारक साधिष्ट ।
बहु गुरु पुनि बदिष्ट मुनि है गरिष्ट द्राधिष्ट ।।२८।।
क्षेप्ट हृसिष्ट हि कहत है ए ग्यारह नाम :
भाषत अतिशय अर्थ को समझि नूर मति धाम ।।२९।।

जो संपूर्णताको पहुंचै ताको नाम:

जो पहुच्यो सपूर्ण करि सा पारागण होइ ।
सम वचन सारल्य सो सुपरायन है सोइ ॥३०॥

सून्य नाम:

है यदृछया स्वैरिता स्वेछाचारी जान ।
यास्या बहुरि विलक्षण शून्या सून्य प्रवान ॥३१
नाम जु उत्तम कर्म को कर्म वृत्त अवदात ।
करै जु उतम कर्म को, नूर सु उत्तम गात ॥३२॥

टोना का नाम:

सबनन, टोना सोई वसकृया सो होइ ।
मूल कर्म कामन बहुरि नूर कहत सब कोइ ॥३३

कामना निमित्त दान दे ताको नाम:

काम्य दान सो जानियो कहै प्रचारन ताहि

घुननाका नाम:

घुननो सोई विधूनन विधूवन सो आहि ।

वर्‌यो नाम:

वरवृत वरिवस्तु जा शुवल कहै पण चाहि ॥३४॥

तर्प्पण नाम:

तर्पण प्रानन अव न सो [सीवन नाम] सेचन सीवन स्यूति ।

मागिवे को नाम:

भिक्षा जक्ष्वा अर्दना उहै अर्थना हूति ॥३५॥

रक्षा करिवे को नाम

परित्राण पर्ज्जाप्ति है ताके है द्वै नाम ।
भित्त भ्दिर स्फुटन पुनि [विदना नाम] सवेद जुत आम ॥३६

कोसिवे को नाम

आक्रोशन अभिष्वग सो [गहिवे को नाम] ग्रहै सु कहि ग्रह ग्राह ॥

मूर्छा नाम:

अभिव्याह्य सो मूर्छना नूर सुवृद्धि प्रवाह ॥३७॥

भाजन नाम:

अप्रछन सभाजन आरभन है सोइ ।
कहै होम की वस्तु सो हय हूत, जो होइ ॥३८

प्रात नाम

प्लोप ऊप द्वै जानियो प्रात सर्म को नाम ।

गुरु परंपरा नाम:

सप्रदाय आम्नाय सो गुरु परपरा धाम ॥३९॥

न्याय नाम: सिद्धि नाम:

न्याय, नय , ख्याति, प्रथा (पीठि नाम) पृष्टि पृष्ट सो पीठ
यथार्थ ज्ञान नाम: प्रमिति प्रभा सुयथार्थ है नूर कहत मति ईठ ।।४०
प्रसूत नाम पेदनाम

प्रसव प्रसूति सुजानियो, बत्रम थुक्लम सुपेद
श्लेष संधि सौ कहत है जान नूर ए भेद ।।४२
चेष्टा नाम:

चेष्टा इगि, सु इगित नूर कहत आकार ।
वधन को प्रश्रत सुनो नाम प्रवास उचार ।।४२
उद्वेग के नाम:

उड्म कहि उद्वेग सो मुष्ट वध संग्राह ।
है विरोध सो निग्रह (डिंभ नाम) डमर सुविप्लव आह ।।४३।।
जासूस नाम:

उपत प्रास्प्रष्ट सोहै स्पर्श पुनि चारु ।
कहिवे के द्वै नाम है निगद निगाद विचारु ।।४४
अनुग्रह नाम:

अभ्यपत्ति सो अनुग्रह (पाका का नाम) है परिनाम विकार ।
तिरस्कार के नाम: द्वै बि प्रकार सुनिकार ।।४५।।

छीजिवे को नाम*

छीजन के अभिधान ये अपवय अरु अपकार ।
लेणका नाम: लेवे कू यौ कहत है अभिग्रहण अभिहार ।।४६
समाहार सु समुच्चय सचय नोयो जु होइ ।।
अनुवार अनुहार सो जो उनहारं होइ* ।।४७
लीवै को नाम:

अपादान जो लीजिए बहुरी प्रत्याहार ।
काहू वस्तु निमित्त नियम करे ताको नाम

अभिग्रह अभियोग जो करें नियम वृत धार ।।४८
विहार नाम

यहै विहार परिग्रम (बाह्य सका नाम) अभ्यवकर्षण होइ
सो निहार तुम जानियो बाह्य सका होइ ।।४६
प्रवास नाम:

घर तें बाहर गमन कै नाम प्रवास उचार ।
प्रवाह नाम

उहै प्रवाह प्रवृत्ति मा नूर गु जगत विचार ।।५०

*मूल में इसके स्थान पर 'गाई' लिखा हुआ है ।

सजम सो नजाम यम नूर कहत है नाम ।
व्यायाम जो जाम है विजम सोई विजाम ॥५१

जीव वध कौ नाम:

जीववद्ध हिंसा वर्म बहुरि वही अभिचार ।

विघ्न नाम:

अंतराय प्रत्यूह पुनि विघ्न नाम उच्चार ॥५२

नजीक घर होइ ताको नाम.

प्रतिवाश्रय उपघ्न जा घर होइ नजीक ।

उपभोग नाम:

उपभोग मु निर्वेश सो, भोग नाम है ठीक ॥५३

सर्व कार्ज की नाम:

परिक्रिया (या) परिसर्प सो सकल काज की नाम ।

संक्षेप नाम:

संक्षेपन, समसन सुनो जो संक्षेप प्रनाम ॥५४

हीया की बान की नाम:

अभिप्राय आशय विधुर प्रविम्लोप कहि ताहि ।
जो हिरदै की बात है नूर कहत है ताहि ॥५५
परीसार परिसर्प सो जो पैठे पर ठौर ।

स्थिति नाम:

जानहु आस्पा आसना, भापत थिति सिर मौर ॥५६
नाम शब्द विस्तार को विस्तर भापत नूर ।
मर्दन को संवहन कह जें पूरन मति पूर ॥५७
कहै विनाश अदर्शन द्वे विनास अभिधान ।

पहिचांनि नाम·

पहिचानहि परचय कहै सोई संस्तव जान ॥५८
नाम पसरिवेके सुनो प्रसर विसर्जन दोइ ।

बहुत बकै ताके नाम:

सुनि प्रयाम नीवाक पुनि बहुत बकै है सोइ ॥५९

निकट नाम:

सनिद्ध मनिकर्पण निकट नाम ए दोइ ।

अवसर नाम:

प्रसर प्रणय प्रस्ताव सो अवसर जानहु सोइ ॥६०

उद्यम नाम.

प्रक्रम बहुरि उपक्रम उद्यम जानहु ताहि ।

और करै ले ताको नाम:

उद्घातं लै और पह अभ्यादानं सु आहि ॥६१

आरंभ नाम : उराहनो नाम:

आरंभ संभ्रम त्वरा पुनि उराहनो आहि ।
उपालंभ अनुभव सोई जो उराहनो चाहि ॥६२

गढ़ै सैं संचरै ताको नाम:

संक्रम संचर नाम द्वै करै दुर्ग संचार ।

प्रयोगार्थ नाम:

प्रयोगार्थ प्रत्युत्कर्म प्रयोगार्थ उचार ॥६३

वियोग नाम:

विप्रलभ सु वियोग कहि बिछुरि जात जो कोइ ।

निकासिवे को नाम:

निःक्रम सोई निकासिबौ थी शक्तिः पुनि होइ ॥६४

बहुत कारन को नाम:

अतिसर्जन सु विलंब है बहुत करत जो वार ।

विस्वास नाम:

प्रतिख्याति विश्राव पुनि जो विश्वास आगार ॥६५

अटक का नाम:

प्रतिष्टंभ प्रतिबंध सो जो नर अटिक्यो होइ ।

किसी कै अर्थ जागै ताको नाम:

प्रति जागर पुनि अवक्षा परहित जागै सोइ ॥६६

फिरि जुवाब दे ताको नाम:

समालंभ सु बिलंब सुनि फिरि जुवाब जो देत ॥

पंडित पढै ताको नाम:

पाठ निपाठनि पठ बहुरि जो पंडित पढि लेत ॥६७

क्लेश नाम:

आदीन वा श्रम बहुरि द्वै कलेस के नाम ।

मिलाप का नाम:

संगम यहै मिलाप सो नूर जुहै जुग धाम ॥६८

मांगिवे को नाम:

मार्गण मृगण सुमांगिवो अन्वीक्षण मृग माहि ।
विचयन नूर बर्यानहीं निज बुधि बल अवगाहि ॥६९

आलिंगन नाम:

परिष्वंग परिरंभ सो उपगूहन संश्लेष ॥
एक एव सो जो मिलै नूर मिलन सो देख ॥७०

देखिबे को नाम:

दरसन आलोकन उहै, इक्षण पुनि आख्यान ।
निर्वर्णन सो नूर कहि जो देषत करि ग्यान ।।७१

अनादर का नाम:

प्रत्यादेश निराकृति निरसन प्रत्याख्यान ।

शयन नाम:

उपशाय सु विशाय पुन सूते नरहिं बषान ।।७२

बदला का नाम:

अन विपर्यय: अतिक्रम उपात्यय: पर्जाय ।
विपर्जा सु अतिपात पुनि ध्यत्ता पलटत काम ।।७३

सिक्षा का नाम:

सिक्षा परिसासन सोई (प्रेषण नाम) दैं जु पठायो कोइ ।
प्रेषण ताको कहत है नूर सु कवि जन लोइ ।।७४

अंन्न पिछोरन को नाम:

करैं अन्न को उछिपन उत्कार: सुनिकार ।

पूर्व पक्ष नाम:

पक्षाव: उद्गार सो उद्गाह जु निगार ।।७५

वात करत चुपको होइ रहै ताको नाम:

विरति विरत्यय गरण पुनि आरत्य उपराम ।
वात कहत चुप ह्वै रहै नूर कहत तिह नाम ।।७६

लार वा थूक नाम:

निष्ठ्यूति: निष्टीवन: निष्ठीव सो जान ।

अत नाम:

तीनि नाम है अत के साति वहुरि अवसान ।।७७

दोहा:

और नाम सुनि अमर मैं है आदेस विशेष ।
भयौ सपूरन नूर कृत जो कछु लिष्यो सुलेप ।।७८
वहुत न कहिये जगत मैं गहिये मन विश्राम ।
नूर कथन तितनो भलो जितनो जासो काम ।।७९
जैसो जान्यो बुद्धि बल नूर बषान्या सोइ ।
पडित ह्वै सुसवारियो पडित दोस न कोइ ।।८०
चुनि चुनि मुक्ता नाम सब रचो जु दाम सुढार ।
नूर धर्म वहु अर्थ को करै सु कठ उदार ।।८१
तीनि काड है अमर के या के तीन प्रकासु ।
कोस उहै मालाय है नूर प्रगट कर जास ।।८२

उत्तम उत्तम नाम ले मिले सुमन उल्हास।
नूर कहै जग मैं रहै ज्यों परमारथ बास ।।८३

इति श्री श्रीमत्सकल अभिधान रत्न भूषन भूषित अमर भाषा मियाँ नूर कृत नाम प्रकास नाममाला तृतीयःप्रकासः सपूर्णः ।। ३ ।।

दोहाः

अमर कोप के भाय सों कीने नाम प्रकास ।
अनेकार्थ के अर्थ लै कहों अनेक उलास ।।१
शुद्ध वरन बहु अर्थजुत मुकता सबद सुढार।।
कंठ करहु गुनवंत नर नूर अपूरब हार ।।२

अथ हरि शब्दः

इंद्र विष्नु सूरज मरुत, सिंघ भेक हय जानि।
कायर कपि जम चद्रमा शुक किरिनि अहिमानि ।।३
सुवरन रग हरि जानि यें मन सुमति लेहु अवधारि ।।४

अथ गो शब्दः ।।

वचन भूमि दिग दृष्टि सर किरनि स्वर्ग जल सोइ।
गाइ वज्र सुप सत्य गो मातरि अग्नि सो होइ ।।५

शिव शब्दः

रुद्र शुभ्र, पशु काल पुनि शिव कल्यान बपानि।
गौरी स्यारी शिवा भनि शिवा सुहरडै जानि ।।६

मधुशब्दः

सहत सुरा अरु पुहपरस चैत मास रितुराज।
नूर कहत मधु दैत्य इक, ताहि वध्यो ब्रजराज ।।७

क्षुद्र शब्द,

वारवधू, मधु मक्षिका कंटकारिका जानि।
क्षुद्रा नटी सु नूर कहि क्षुद्र तुछ पहिचानि ।।८

'वाहु' शब्द

वाहु प्रवाह बषानिये घन अरु जुग्म प्रमान।
वाह सो मान विशेष है नूर सुजानहु जान ।।९

हार शब्दः

ईट को सचय, रजत, पुनि मान विसेष न पेत।
मुकता माला नूर भनि हार शब्द कहि देत ।।१०

भाव शब्दः

आत्मा सत्ता शंभु मन भाव पदारथ जानि।
भाव के पूजा लोक में हाव भाव पहिचानि ।।११

कुषशब्द (प्रात[1])

कुष स्नायी विप्रकुष[1] दर्भ कीट कहि सोइ।
कुष सो कवल हस्ति पर कुषा सा कथा होइ ॥१२

कुतपा शब्दः

दर्भ काल तिल छाग पुनि कवल सलिल प्रकास।
पङ्ग पात्र दुहिता तनय कुतपा नाम प्रकास ॥१३

भग शब्दः

ग्रवु स्त्री चप वाक भू माता ग्ररु दिग्भाग।
थ्रो महिमा यश भाति पुनि नूर जससि सौभाग ॥१४
भग पुनि कहिये जोनि सो प्रकट जगत में जानि
पद्रह ठौर लगै ग्ररथ भग यह शब्द वखानि ॥१५

हस शब्दः

तपसीराजा जीव पुनि धर्म तुरगम जानि।
सुक्लपछ, ग्रौ विशेष पुनि, नूर सुहस वखानि ॥१६

रस शब्दः

पारद विष जल हर्ष पुनि रस सिंगार की जाति।
नूर कहत षट रस प्रगट जिह्वा जानति भाति ॥१७

कीलाल शब्दः

छीर पुहप रस तोय मद रुधिर माड घृत होइ ॥
नूर कहत कीलाल पुनि सात ग्रर्थ मैं सोइ ॥१८

देव शब्द.

राजा वादर देवता भर्त्ता ग्रौ व्यवहार ॥
मूरष वालक कुपिनर देव शब्द ग्रवधार ॥१९

पुष्कर शब्द

वाजन मुष तर वारि पुनि काल कमल को जानि।
कुजर सु डि को ग्रग्र थल स्वर्ग द्वीप मन मानि ॥२०
पुष्कर तीरथ नाम सा पुष्कर सवद सुजानि।
ग्राठनाम ए कोष मत नूर सो कहे वखानि ॥२१

पललशब्द.

तिलपीठी मल मास पुनि कोमल पाथर सोइ।
मृतक सवार ग्रनित्य वल पडित पलल सु होइ ॥२२

ललामशब्दः

ध्वजा पुछ हय जानिये ग्ररु ग्रवास को फूल।
चूरी ग्रौ गुनवतनर ग्रौ परवत को मूल ॥२३

---

१. यह शब्द हाशिये में लिखा है।

बिप अरु धाम सु नूर कहि इतने होहि ललाम ।
अनेकार्थ ध्वनिमजरी छपनक वहै ए नाम २४।

वसु शब्द

सूरज देव धरा अगिनि रतन द्रव्य पहिचानि ।
आठौं वसु वसु जानिए, नूर सो कहत बपानि ॥२५

वर्ण शब्द

गाइ बजावत साथ एव, तासो वर्ण बषानि ।
अछर वर्ण स्वेतादि पुनि चारि वर्ण पहिचान ॥२६

अर्जुन शब्द

सुकल व्रन अरजुन कहत अरजुन पडव जानि ।
अरजुन है त्रिन जाति पुनि कुनिक कुभ द्रुम मानि ॥२७

वलि शब्द

बलि त्रिवली का जानिए अरु बूढे के गात ।
वलि पूजा उपहार है बलि दान बधिपात ॥२८

पट्ट शब्द

पट्ट सिघासन सो कहत हैं पट्ट कपाट बपानि ।
पट्ट सिघासन सो कहत भूप अक को जानि ॥२९
घाउ बाधिबे को बसन पट्ट कहावत सोइ ।
नूर कहत सुनि कोप मत छमियहु पडित लोइ ॥३०

अतर शब्द

रध्र वस्त्र व्यवधान पुनि अतरातमा सोइ ।
वहिर्योग अवकाश पुनि व्यसन सु अतर होइ ॥३१

अरिष्ट शब्द.

कहत अरिष्ट सो ग्रेह सो पुनि अपभासुर नाम ।
कौआ जीव अरिष्ट है छेम अरिष्ट प्रमान ॥३२

मडल शब्द.

भूमि भाग मडल वहै सूरज मडल भाषि ।
मडल है उनचासदिन अरु समूह अभिलाषि ॥३३
मडल गोल सुजानिए नूर कहत मतिमान ।
मडल गोल सुजानिए नूर कहत मतिमान ।
मडल गोल सुजानिए नूर कहत मतिमान ।
पच मर्य मडल प्रगट जानो कोस प्रमान ॥३४

कवल शब्द

कवल कवल जानिए कवल इद्री होइ ।
गोचारल सो कहत है कवल सो थल जोइ ॥३५

कुतल शब्द

कुतल केश सो देस इक और महाउत जानि ।
[illegible] बढई सोव है नूर कान मनि मानि ॥३६

मणि शब्द:

मणि महियति है कूप मुप हीरादिक मणि होइ ।
लिंग का अग्रिम भाग मणि राजा मणि कहि सोइ ॥३७
सर्पन के सिर होति है ताहू का मनि जानि ।
मणि के अर्थ भए प्रगट नूर सा कहे वपानि ॥३८

तंत्र शब्द:

तंत्र कहत है शास्त्र सो अरु कुल तंत्र कहाय ।
सिद्ध मंत्र औषध क्रिया नृप बल तंत्र जनाय ॥३९
पवन को साधन तंत्र है नूर कहत उर धारि ।
कीनो सुमति विचारि कै लीजौ सुमति विचारि ॥४०

नेत्र शब्द:

नेत्र कहत है नयन सा । अरु पुनि वस्त्र विसेष ।
परिवर्तक गुण नेत्र है कस्तूरिया मृग लेप ॥४१

धातु शब्द.

वात आदि दै प्रकृति है ता कह धातु कहत ।
धातु क्रिया वपानिए देह मार सुलहत ॥४२
धातु राग तासौं कहे उपजत पर्वत माहि ।
गेरू आदिक जानिए नूर कहत है ताहि ॥४३

सुधा शब्द:

सुधा अमृत पंडित सुधा सुधा सुभोजन एक ।
आमलकी रु हरीतकी पुत्र वधू सु विवेक ॥४४
देवराज की क्रिया तें पायो घन जो होइ ।
सुधा कहत है ताहि सो नूर कोस मत साइ ॥४५

काड शब्द

काड बान सो कहत हैं तुला दंड को जानि ।
काड समूह सुवाल वल तरुजरि काड वपानि ॥४६

वेला शब्द

वेला कहत कछार सो वेला काल विसेषि ।
नौकातर जल धुनि उठै । अगुलि रेपा लेपि ॥४७

काल शब्द:

उत्सव समय प्रकाष्ट पुनि । कियो महूरत जौन ।
काल सबद ए चारि है नूर कहत सुनि तौन ॥४८

भ्रून शब्द:

भ्रूण विप्र अरु गर्भ पुनि अंडज भ्रून वपानि ।
बालक भ्रूण औ विकल नर भ्रूण डेरानो जानि ॥४९

अहि शब्दः

राहु भुजंगम सूर अहि औ पँडोई जान ।
अहि नामा इक दैत्य है जानतु नूर सुजान ॥५०

व्याल शब्दः

व्याल जानिए सर्प कों रोझादिक है व्याल ।
कुटिककरी, सो, व्याल कहि और व्याल है वाल ॥५१
और प्रमादी नरन सों व्याल कहत गुन धाम ।
नूर कहे ए कोपमत पाच व्याल के नाम ॥५२

इंद्र नाम:

इंन्द्र इन्द्र को जानिए श्रेष्ठ इन्द्र पुनि होइ ।
पंच इंद्री कौ इंद्री कहे नूर कहत बुध लोइ ॥५३

धेनु शब्दः

गाइ दुधारी धेनु कहि, औगज गामिनि नारि ।
छोटी असि सो धेनु कहि धेनु सुवृत्ति विचारि ॥५३

वृप शब्दः

वृप जो कहिए धर्म सो बहुरि श्रेष्ठ वृप सोइ ।
वृप पुनि जानो वृपभ को मूपक काम सो होइ ॥५४
अंड और वल जानि ए सात भाति वृप मानि ।
नूर कहे एकोप मत लीजो वुध जन जानि ॥५५

योग शब्दः

जुगुति विशेष सो योग भनि जोग सजोग वपानि ।
जोग आगामिक लाभ है जोग सूंयोनि सुजानि ॥५६

शलि शब्दः

शलि मूपक शलि गर्भ पुनि भृग, गदा शलि होइ ।
सर्प विषैको शलि कहै शलि कलि जुग पुनि सोइ ॥५७

सीता शब्दः

सीता लक्ष्मी उमा सीता सीता है अधिदेव ।
सीता तनया जनक की पुनि मंदाकिनी भेव ॥५८

नाभि शब्दः

वड़ो होइ परिवार में ताको नाभि वपानि ।
पहिआ वीच की कुंडली नाभि सो नाभी जानि ॥५९
छत्री आदि सो नाभि भनि चारि भाति यह होइ ।
सुन्यों जो छपनक[1] वधि कह्यो नूर कहत अब सोइ ॥६०

गोत्र शब्दः

गोत्र कहत है गोन सो गोइ जानु पहार ।
गोत्रप्रवर सो जानिए, गोत्रा भूमि अपार ॥६१

---

१. इसका मूल रूप क्षपणक है । इस शब्द से किसी जैन कोश की ओर संकेत किया जान पड़ता है ।

घन शब्द.

घन लोहे को मोगरा और मेघ घन होइ ।
सिंघ नित्य विस्तन सहित राम ताल घन सोइ ॥

शुक्र शब्द:

शुक्र अग्नि को जानिए शुक्र सो तारक होइ ।
शुक्र सो तेजविसेप है नूर कहत मुनि सोइ ॥६३
जेठ मास को शुक्र मनि देह बीज सोइ जानि ।
शुक्र नेत्र को रोग है दैत्य पुरोहित मानि ॥६४

राम शब्द:

दशरथ नदन राम है परसराम पुनि राम ।
पशु विशेप इक राम है और राम बलराम ॥६!
राम सो सेत असेत है, रामा जानो वाम ।
अनेकार्थ मैं देपि कै नूर कहे ए नाम ॥६६

द्रोण शब्द

द्रोण अचल इक विदित है द्रोण काक को नाम ।
कौरव को गुरु द्रोण है द्रोण तोल कछु जान ॥६६

जिन शब्द

वीतराग जिन जानिए नारायन जिन होइ ।
जिन कदर्प वपानिए अरु सामान्य वल सोइ ॥६७

जयती शब्द चौपाई

नगरी एक जयती होइ । गवरईया के वच्चा सोइ ।
औपधि भेद जयती जानि । इद्र को पूत जयत वपानि ॥६६

रोहित शब्द:

इद्र धनुप लोहित वहुरि लोहित मृग की जाति ।
लोहित रोहू मत्स पुनि रग मगोहो भाति ॥७०

धात्री शब्द.

धात्री कहत वसुधरा धात्री हरै होइ ।
धात्री जानो आवल धाय धात्री सोइ ॥७१

प्रवाल शब्द

वीना दड प्रवाल है नव पल्लव जिम जानि ।
पुनि प्रवाल विद्रुम कहे हस्ती मत्त वपानि ॥७२

कोण शब्द

कोण रुधिर को जानिए भैंसा कोण कहत ।
गनती कोटि सों कोंण कहि घर को कोंण लहत ॥७३

वीनादिक जे साज हैं तेऊ कोण उदोत ।
नूर कहै ए कोप मत सुनत श्रवण सुप होत ।।७४

ताल शब्द:

ताल मूल है गान को ताल वृछ जग जानि ।
तात तलाव[1] पताल धुनि करतल तारा वपानि ।।७५

काष्टा शब्द:

पृथ्वी निशा दिशा काष्टा काष्टा काल विसेषि ।
ए सब काष्टा नूर कहि काष्टा काठ को लेषि ।।७६

पलाश शब्द.

ढाक पलास वपानिए पुनि राकस को जानि ।
हरित वरण पालास है फासी को पहिचानि । ७७

सत्र शब्द

घन गृह और पवित्रता सत्र आयुध को नाम ।
निद्रा जुत सो सत्र कहि सत्र तेज को धाम ।।७८
वन कहियत है सत्र सों दान सत्र पुनि होइ ।
सत्र शब्द ए नूर भनि समुझि लेहु सब कोइ ।।७९

कल्प शब्द:

कला कुसल सो कल्प कहि काया कल्प वपानि ।
मदिरा कल्प कहावइ केश कल्प पहिचानि ।।८०
वहुत वरप वीतै जबै तासो कल्प कहाय ।
अनेकार्थ मत जानियो कहै सो नूर सुनाय ।।८१

विष्टर शब्द:

विष्टर त्रिण पूला कह्यो विष्टर आसन जानि
विष्टर कोऊ वृछ है विष्टर यज्ञ वपानि ।।८२

समिति शब्द:

सभा समिति सगर समिति समय समिति पुनि होइ ।
नारिन में आगे चलै समिति कहावै सोइ ।।८३

शित शब्द:

वृद्ध होइ शित रजत शित रजत सेत रंग जानि ।
शित कहिए पुनि वान सो दैत्य गुरू शित मानि ।।८४

चित्रक शब्द:

चित्रक सर्प की जाति इक चित्रक तिलक कहंत ।
चीता चित्रक जानिये औषधी नाम लहंत ।।८५
चित्रक मूरप राज को कहत सयाने लोइ ।
नूर कहै ए प्रगट करि और न चित्रक होइ ।।८६

---

1. मूल में 'व' कटा हुआ है ।

वल शब्द:

युवति सुना श्रौषधी सतरत्न वल जानि।
वल कहिए वलभद्र सो वल सो दैत्य वपानि ॥८७॥
वला जानि वसुधरा, वला सु लक्ष्मी होइ।
वोध शब्द मत समुझि कै नूर कह्यो यह माइ ॥८८॥

परिग्रह शब्द

द्विज अगी कृत होइ जा, ताहि परिग्रह जानि।
सेना पीठि मे जानिए, अरु वधर को मानि ॥८९॥
गिरत पकरिए अध विचा उही परिग्रह होइ।
इस्त्री आदि व्यवहार ग्रह नूर परिग्रह सोइ ॥९०॥

कदव शब्द

कहत कदव कुधातु सो ग्रौर निर्गुन नर होइ।
सरि सो जानु कदव को कदम वृक्ष पुनि सोइ ॥९१॥

प्रियक शब्द·

देह वीज सो प्रियक कहि, हाथी प्रियक वपानि।
प्रीतम सो पुनि प्रियक कहि प्रियक सो चीता जानि ॥९२॥
जाके इछा मुकुति की सोऊ प्रियक कहाय।
प्रियक शब्द के नाम ए, कहै सु नूर वनाय ॥९३॥

अक्ष शब्द

अक्ष वहेरा सो कहैं ग्रौर अक्ष है आपि।
अक्ष कहत रुद्राक्ष सो पासा अक्ष सुभापि।
अक्ष सो रावण पुत्र है अक्ष सो गहिरो जानि।
अक्ष शब्द के भेद ए कहे सो नूर वपानि ॥९५॥

चक्र शब्द

चक्रवाक सो चक्र कहि पहिया चक्र वपानि
देस चक्र सो जानिए चाक चक्र को मानि ॥९६॥
चक्र हथ्यार सो कृष्न को जानत है सव कोइ।
जो कछु वस्तु फिरै जगत चक्र नूर पुनि सोइ ॥९७॥

खर शब्द:

सत्यवत खर जानिए व्यवहार पटु सोइ।
खर कहियत है पुरुप सो पर रासभ पुनि होइ ॥९९॥

कृपि शब्द:

कृपि कोउ इक गोत है, कृपि षेती का जानि।
सोइ काल ग्राढक सोइ, सोइ अग्नि मणि जानि[1] ॥१००

१ मूल में "जानु" है।

भूत शब्दः

भूत कहत संतान सो पंच भूत पुनि होइ।
समय वितीत सो भूत कहि प्रेत भूत है सोइ ।।१०१
भूत सो प्राणी मात्र है औ जमराज बषान
भूत शब्द कीने प्रगट नूर सुजानहु जान ।।१०२

अष्टापद शब्दः

अष्टापद टीडी कही अष्टापद है सोन
अष्टापद फल भेद है, कीट भेद पुनि तोन ।।१०३

बालक शब्दः

बालक है आकास चर बालक बालक जानि।
बालक बाघ सुगध पुनि जटा जूट पहिचानि ।।१०४

जाति शब्दः

जाति जाति सब जगत में और चवेली जानि।
गोत्रादि जन्म सोइ जाति है लता जाति पहिचानि ।।१०५

फणा शब्दः

१ फणा बैल की सीग है अहि फण फणा बषानि
२ फणा जटा सो कहत है तृष्ना फणा सुजानि।
फणा मथानी कुडली जानहि पडित लोइ।
नूर कहे ए प्रगट करि पढत सुनत सुष होइ ।।१०७

तिलक शब्द :

वृछभेद को तिलक कहै माथे तिलक जो होइ।
सब तें होइ प्रधान जो तिलक कहावै सोइ ।।१०८

चित्रक शब्द :

लिषै चितेरा जो सबी चित्रक कहिए सोइ
चित्रक चित्र विचित्र है छीट आदि है सोइ ।।१०९

गन्धर्व शब्द :

गधर्व गवैया देव के और तुरगम जानि।
राग और मृग पुरुष पुनि ए गधर्व बषानि ।।११०

शृंग शब्द :

सब तें होइ प्रधान जो शृग शब्द तह होन।
पर्वत मस्तक शृग है, पशु मस्तक उद्दोत ।।१११

सारंग शब्द :

कुजर चातक हरिण मणि दीपक भ्रमर पहार।
धनग केस पावक कवल हस विष्नु मयषार ।।११२

वृषभ वायु गोरह सबद ए सारंग कहंत
नूर कहे ए कोष मत सो बुधिवंत लहंत ॥११३

कातार शब्द :

कातार बग जानिए बहुरि इद्र उर धारि ।
कातार कतारा जानिए सोई कातल विचारि ॥११४

करण शब्द :

कारण करण बखानिए इद्री करण सुजानि ।
जाति भेद पुनि करन है, छेत्र करन मन मानि ॥११५
वव आदिक जे करन है तिथि पत्रा में सोइ ।
करन कहत हैं ताहि सों तीसव रस में होइ ॥११६
करन कथा भारथ सुन्यो सोऊ करनहि जानि ।
और करन ए कान है नूर सो कहे बखानि ॥११७

श्यामा शब्द :

श्यामा कहिए राति सों श्यामा होइ निसोत ।
श्यामा सावा जानिए बहुरि विधारा होत ॥११८
श्यामा नारि कहावइ नव जोवना जो होइ ।
श्यामा श्याम घन जानिए नूर कहे ए सोइ ॥११९

सुभा शब्द :

सुभा, सुधा, सुभा, सोभा सुभा, सु हरडै होइ ।
सुभा जो कहिए घाइ सों शुभ कल्यान पुनि होइ ॥१२०

गुरु शब्द :

गुरुः पिता गुरु श्रेष्ट पुनि बहुत गुरु गुरु होइ ।
गुरु सुर गुरु सो कहते है सिष्य करै गुरु सोइ ॥१२१

माधव शब्द :

माधव भवर बखानिए माधव है बैसाख ।
माधव मदिरा जानिए माधव माधव माष ॥१२२

वाल्हिक शब्द :

हिंगु होइ वाल्हीक पुनि श्रारु घोरे की जाति ।
देस कोऊ वाल्हीक है पुष्प जानु इहि भाति ॥१२३

पुंडरीक शब्द :

व्याघ्र, सरोरुह स्वेत रग पुडरीक ए जानि ।
बहुरि कमडल सों कहैं नूर कोष मत मानि ॥१२४

राजिव शब्द :

सलिल सरोरुह मीन ससि, मुक्ता राजिव होइ ।
पच ठौर राजिव प्रगट, नूर कहे ए सोइ ॥१२५

इति मीया नूर विरचिते नाम प्रकासे अनेकार्थ प्रकारे दलोकाधिकारो वर्ग:

तल्प शब्द :

सेज तल्प दारा तल्प और अटारी जानि ।
तल्प शब्द ए जानिए नूर सु कहै बपानि ॥१२५

वप्र शब्द :

पिता वप्र तट वप्र पुनि । आगन वप्र सुजान ।
वप्र शब्द के अर्थ भनि नूर सो कोष प्रमान ॥१२७

मोचा शब्द :

मोचा सेवर वृछ है कदली मोचा होइ ।
मोचा शब्द बपानि कै नूर कहे हैं सोइ ॥१२८

कक्षा शब्द :

घर के आगन सो कहैं, कक्षा शब्द बपानि ।
गज बंधन की रज्जु सो कक्षा किंकिनि जानि ॥१२६
कक्षा कहत कछार सो, काछ सो कछा होइ ।
कछा देस कछा कहैं कहे नूर सुनि सोइ ॥१३०

पुलाक शब्द :

है पुलाक संछेप सो भात सीथ सो होइ ।
तुछ धान्य पुलाक है नूर कोष मत सोइ ॥१३१

पक्ष शब्द :

एक मास को पक्ष है । अरु पछी के पक्ष ।
पक्ष मास अरु गरुड पुनि और पठघा पक्ष ॥१३२

शुचि शब्द :

सुचि असाढ को मास है निर्मल और पवित्र ।
सुचि कहिए पुनि अग्नि सो नूर कहत सुनि मित्र ॥१३३

घनाघन शब्द :

इन्द्र घनाघन जानिए मेघ जे बरषन हार ।
मत्त नाग पुनि नूर भनि जानहु एहि व्यवहार ॥१३

अभिख्य शब्द :

कीर्ति कांति अरु नाम सो, शब्द अभिख्य बपानि ।
नूर कहे ए कोष मत सुमति लेहु जिय जानि ॥१३

करीर शब्द :

कहत करीर करील सों, बास के अंकुर जानि ।
पुनि अंकुर वट वृछ के नूर कहत बपानि ॥१

रंभा शब्द :

रंभा होइ देवंगना अरु केला को वृछ ।
गुप्त कोष में धरे हैं मीने नूर समाछ ॥१

क्षेत्र शब्द :

क्षेत्र कहत है षेत सो और काठ सो जानि ।
क्षेत्र वृद्धि कर देह पुनि क्षेत्र प्रयाग बपानि ।।१३८

निर्व्यूह शब्द :

गयो होय दुख जाहि को सो निर्व्यूह लहत ।
द्वार अग्र की भूमि अरु सो निर्व्यूह कहंत ।।१३९

सवर शब्द :

मृग पर्वत सवर सुनो अरु गढ संवर होइ ।
सवर जानो सूम सो नूर कहे सुनि सोइ ।।१४०

कल्प वाक शब्द :

न्याय बरावरि विधि विषें चित्त दंड पुनि सोइ ।
नूर कहे ए शब्द जे कल्प वाक सब होइ ।।१४१

आत्मा शब्द :

ब्रह्म आत्मा यत्न पुनि देह वाक मन होइ ।
बहुरि आत्मा धृति विषें नूर कहे सुनि सोइ ।।१४२

कुशल शब्द :

सकल कला सीख्यो जो नर पुन्य औ छेम बपानि ।
इन सब्दन को कुसल मनि नूर कहे मन मानि ।।१४३

प्रत्यय शब्द :

सपथ छिद्र विस्वास में प्रत्यय शब्द प्रमान ।
सत्य हेतु व्याकर्न में, प्रत्यय जानहु जान ।।१४४

अत्यय-शब्द :

दोपा धनुप आगम बहुरि, दड शब्द ए चारि ।
अत्यय कहिए ए सकल नूर सो लेहु विचारि ।।१४५

धाम शब्द :

वाम प्रताप बपानियें धाम तेज को नाम ।
नूर कहे ए कोप मत घर सो कहिए धाम ।।१४६

स्व शब्द

स्व आपनि सो जानिए स्व पुनि आत्मा होइ ।
स्व कहिए धन सो बहुरि नूर सयाने लोइ ।।१४७

चूडा शब्द

चूडा बाधे केस, हैं करके चूडा जानि ।
धन माया उत्कट बहुरि चूडा कर्म बपानि ।१४८

मात्र शब्द परिछेद प्रमान में मात्र शब्द जो होइ ।

इडा शब्दः भूमि वाक नाडी वरप इडा कहावै सोइ ।१४९।।

सत् शब्द

साधु विषैं सत्ता विषैं श्रेष्ट विषैं पुनि जानि ।
स्तुत करिवे के जोग्य जो सत् यह शब्द वपानि ॥१५०

ककुत शब्द

सवतें होइ प्रधान जो राज चिन्ह अनुमान ।
ककुत शब्द ए जानिए नूर सो कहे वपान ॥१५१

निष्क शब्द

निष्क कहत हैं मोहर सो निष्क रजत पुनि सोइ ।
निष्क कहावै मास पुनि भूपन कहिए होइ ॥१५२

अक शब्द

युद्ध बसैं जाके हिए । अक कहावै गोद ।
अक चिन्ह पुनि आव सो नूर लपेतैं मोद ॥१५३

कबंध शब्द

बिनु मस्तक की देह को औ जलफेंन कहत ।
दून सो कहैं कवध रव बुध जन भेद लहत ॥१५४

वर शब्द

वर कहियतु है मेरु सो वृक्ष भेद वर होइ ।
वर जानहु पुनि श्रेष्ठ सो अग्नि घनुप पुनि सोइ ॥१५५

वर्त्म शब्द वर्त्म वरौनी सोक है मारग वर्त्म वपानि ।
वर्ष्म शब्द वर्ष्म आयु प्रमाण है वर्ष्म देह को जानि ॥१५६
दायाद शब्द भाई सो दायाद भनि सोई पुत्र प्रमान
विग्रह शब्द युद्ध भेद विग्रह कहै विग्रह देह सुजान ॥१५७

प्रकोष्ट शब्द

कहुनी पहुचा बीच अग तासो कहैं प्रकोष्ट ।
नूर प्रकोष्ट सो जानिए जासो कहैं वरोठ ॥१५८

वितान शब्द

शून्य वितान कहावइ शमिआना सु वितान ।
नूर कह्यो सुनि कोप मत जानि लेहु नर जान ॥१५९

वधू शब्द

वधू कहावैं नारि सव इस्त्री वधू विचारि ।
पुत्र वधू सा वधू है कहत नूर अवधारि ॥१६०

कशिपु शब्द कशिपु राक्षस होइ पुनि कशिपु पामरी जानि ।
आडवर शब्द आडवर हस्ती वचन को मृदग धुनि मानि ॥१६१
कपर्दक शब्द कौडी जानु कपर्दकौं शिव को जटा कपर्द ॥
तूवर शब्द तूवर मुडिलो [illegible] को [illegible] डाढी को मर्द ॥१६२

नृशंसा शब्दः होइ नृशसा वाजनी प्रति सप पापी सोइ ।
शारदा शब्दः सरस्राल सारद समुझि ग्रौर विचछन कोइ ॥१६३
उपह्वर शब्दः उपह्वर सकेत थल ग्रौ परोस को धाम ।
निदाघ शब्द. रितु ग्रीषम प्रस्वेद पुनि द्वै निदाघ के नाम ॥१६४
कश्मलवा केतु शब्दः
कश्मल कहत पिशाच सो कश्मल तेज बषानि ।
केतु एक ग्रह जानिए केतु ध्वजा पहिचानि ॥१६५
रीढा वा वर्द्धन शब्दः
रीढा गति को जानिए ग्रौर ग्रवज्ञा सोइ ।
वर्द्धन बढिवे सो कहत वर्द्धन कारन होइ ।१६६
नाग वाकी नाश शब्द.
नाग वृक्ष को भेद ए सर्प सु कुजर नाग ।
कीनाश, यम क्रोध पुनि दोऊ जानहु वडभाग ॥१६७
कुलवा पूग शब्दः
कुल सघात ग्रौ गोत्र पुनि कुल करीर द्रुम होइ ।
पूगीफल सो पूग भनि पूग कदवक सोइ ॥१६८
सुमन शब्द.
सुमनस देव वषानिए सुमनस फूल सुजान ।
सुमनस सज्जन जानिए, नूर कोष परवान ॥१६९
कुसुम शब्दः कुसुम पुष्प जानहु प्रगट स्त्री रज कुसुम कहत ।
धव शब्द धव पति धव द्रुम मर्त्य पुनि धव सज्ञा स लहत ॥१७०
त्र्यंबक शब्द' त्र्यबक तमचुर जानिए। ग्रवक जानु महेस ।
पुन्य शब्दः सुकृत कर्म सो पुन्य है पुन्य पवित्र सुवेस ॥१७१
शिफा शब्द
शिफा वक्षकी जटा भनि शापा शिफा वषानि ।
शिफा सो कद विशेष है शिफा विजय जिय जानि ॥१७२
कसेरुक शब्द
कसेरुक कसेरू कहे। सोई पीठी की रीर ।
नूर कह्यो जो कछु सुनो शब्द समुद्र गभीर ॥१७३
पल शब्द.
पल कहियत है नीच सो पल पलिहान वषानि।
पल कहिए पुनि चुगल सो पल कूटक को जानि ॥१७४
शाला शब्द
इछा, शाला, जानिए, शाला शिला सुहोइ ।
शाला सापा जानिए ग्रह शाला महि सोइ ।१७५

माल्य शब्द:

माल्य माला जानिए सो पुनि मस्तक होइ ।
नूर कहे ए प्रगट करि माल्य माल कहि सोइ ॥१७६

राढा तथा आली शब्द:

राढा देस विशेष है राढा कहिए कांति ।
आली जानों सहचरी आली होइ सो पांति ॥१७७

पल शब्द:

पल जमास पल तौल है पल मूरप को जानि ।
पल सो पलक गति जानिए सोई तराजू मानि ।१७८

दल शब्द:

दल आधे को नाव है वृक्ष पत्र दल जानि ।
दल सेना को भेद है नूर सुहै विचारि ॥१७६

आजि शब्द: आजि नाम संग्राम को अग्नि भूमि सम होइ ।
संगर शब्द: संगर है संग्राम पुनि और प्रतिज्ञा सोइ ॥१८०
पुरुहूत शब्द: पुरुहूत सब्द उलूक है सोई इंद्र सुजान ।
मृत्यु शब्द: यम अजगरे बरछी मरण, मृत्यु शब्द पहिचानि ॥१८१
शंपा शब्द: बिजुली वज्र सु शंप धुनि शपा शप्क प्रमान ।
मन्यु शब्द: यज्ञ क्रोध अरु दीनता मन्यु शब्द अनुमान ॥१८२

अभ्रशब्द:

ऊपर अभ्र कहावइ अभ्र मेघ पुनि सोइ ।
अभ्रक अभ्र बपानिए अभ्र सु चूरन. होइ ॥१८३

प्राध्व शब्द:

प्राध्व शब्द बंधन विपय। प्राध्व विनीतता होइ ।
नूर कहत पंडित विपे प्राध्व भास्यो सोइ ॥१८४

हरिण शब्द: हरिण पांडुर रंग है। हरिण सो सारंग होइ ।
करट शब्द: कातर सों कहिए करट करट प्रतिध्वानि होइ ॥१८५
कर्करेदु शब्द: कर्करेदु कहि ग्रीष्म सो पुनि क्रोधी नर सोइ ।
तुपार शब्द: लघु पापान तुपार है सीत तुपार सो होइ ।१८६
अमृत शब्द: अमृत सलिल पुनि सुधामृत जो देवन मथि लीन ।
कुंत्या शब्द: कुंत्या भूमि बपानिए कुंत्य बरछा चीन ॥१८७

दुरोदर शब्द

पासा चतुर जो होइ नर चोर धूर्त्त कों जानि ।
ज्वारी सों कहिए बहरि दुरोदर जिय मानि ।१८८

ज्योति शब्द

ज्योति दीप्ति अरु दृष्टि पुनि, नपत ज्योति पहचानि ।
जाको जोति प्रकास जग नूर सो कहत बखानि ॥१८६

मद शब्द

रोगी श्रौ घटि भाग्य जो मद बिलवित जानु ।
मद सनीचर सों कहै मद कुद पहिचानु ॥१९०

प्रमाण शब्द

शास्त्र प्रमाण बखानिए हेतु प्रमा सो होइ ।
स्थिति का कहत प्रमान सो, अरु काविद पुनि साइ ॥१९१

विष शब्द — जल सों विष कहिए प्रगट विष जो सार्प मुख होइ ।
वाज शब्द — वाज अन्त्र अरु गरुड पुनि वाज अमृत कहि मोइ ॥१९२

व्रज शब्दः

व्रज मारग वृज गोप पुनि वृज कहिए पुनि वृद ।
मथुरा मंडल प्रगट वृज जहाँ बसे व्रजचंद ॥१९३

वीर्य शब्द

वीरज, बल, सो कहत हैं वीरज देह को सार ।
वीर्य फलादिक बीज है नूर प्रगट ससार ॥१९४

मघा शब्द — मघा नाम नक्षत्र इक कुद कली पुनि सोइ ।
शय्या शब्दः — शय्या पुस्तक सचयन सोवत सय्या सोइ ॥१९५
तरस शब्द : — तरस मासु को जानिए बलको तरस कहत ।
वारुनी शब्दः — पश्चिम दिग है वारुणी वारुणी सुरा लहत ॥१९६
मदुरा शब्द — मदुरा कहि धोर सार सो अरु मदरा अवास ।
सूनृत शब्दः — सूनृत सोद्धित सो कहे साचु बालै सु प्रकास ॥१९७

कीकश शब्द

कीकस वानर होइ पुनि कीकस भिक्षुक जानि ।
बहुरि अस्थि सों कहत हैं कीकस नूर बखानि ॥१९८

रोमथ शब्द — रोमथ पशु मार्ग है कीडो कील सो होइ ।
रजनी शब्दः — रजनी राति कहावइ रजनी हरदी सोइ ॥१९९

परिध शब्द·

परिघह ध्यार को भेद है परिध जोग एक आहि ।
परिध जोह कोदड है नूर कहत अब ताहि ॥२००

धरा शब्दः

धरा जानि वसुधरा धारा धरा बखानि ।
धरा कहिए धृति बहुरि अरु पर्वत सो जानि ॥२०१

कंद शब्द.

भूमि विषें फल कंद है कंद शर्करा आहि ।

कर शब्द कर है किरिणि सु हस्त कर कर जगति को चाहि ॥२०२

दुन्दुभि शब्द:

दोइ सो दुदुंभि जानिए, दुंदुंभि राकस होइ ।

वसुदेव दुदुभि है प्रगट दुदुभि बाजत सोइ ॥२०३॥

उद्यान शब्द:

वन उद्यान कहावइ गमन कहै उद्यान ।

वर्द्धनी शब्द: वर्द्धनी चरपी प्रगट सोई बुहारी जान ॥२०४

रुधिर शब्द:

रुधिर सु कुकुम सो कहत, लोहू रुधिर सो होइ ।

नन्दन शब्द नदन सु जन सु पुत्र पुनि, स्वर्ग वाटिका सोइ ।

मानस शब्द मानस कहिए चित्त सो मानसरोवर सोइ ।

धावन शब्द. धावन सो धन जानिए धावत तुरत सु होइ ।२०५

स्यन्दन शब्द स्यदन दुम बच्चा सोइ स्यदन रथ पुनि होइ ।

तुरायण शब्द.

तुरायण कहै असग सो कृपा हीन पुनि सोइ ।२०६

पारायण शब्द. पारायण रिपु थान है औ तत्पर को जानि ।

बिना अर्थ पढियें कछू सो पारायण मानि ॥२०७

वश शब्द

हस्त पीठि सो वश भनि औ कुलवश बपानि ।

नूर कहे ए प्रगट करि वास वश पहिचानि ॥२०८

शिपड शब्द:

मोर शिपडी जानिए जटा जूट पुनि सोइ ।

पिप्पल शब्द: पिप्पल पीपल जानिए अरु जल पिप्पल होइ ।२०९

पात्र शब्द.

दान पात्र द्विज आदि दे वासन पात्र कहत ।

पात्र वहन पुनि देह सो पातुर प्रगट लहत ॥२१०

पत्र शब्द

पप पत्र ओर पात पुनि कागद पत्र प्रमान ।

पत्र उपानह सो कहें जानहु चतुर सुजान ॥२११

कोश शब्द:

कोश षजाना जानिए औ परिवार बपानि ।

उदर कोश सो कोश भनि शब्द कोश पहिचानि ॥२१२

द्विज राज शब्द

हंस होइ द्विजराज पुनि सोइ अग्नि जिय जानि ।
होइ गरुड द्विजराज पुनि सोई चन्द्र वषानि ॥२१३॥

करवीर शब्द

करवीर कहत हैं चवर सा और अगूठा जानि ।
करवीर शब्द कनइल प्रगट नूर कहत जिय आनि ॥२१४

वारि शब्द

कुजर बांधे जेहि ठौर सोयल वारि वषानि ।
जल सो वारि सबै कहै नूर सा जानहु जानि ॥२१५

भूरि शब्द

भूरि कहत है वहुत सो भूरि काचन होइ ।

सूद शब्द

सूद रसाई ज करैं सूद कुटुको सोइ ॥२१६

भपक शब्द

दुर्जन भपक वषानि भपक जराक्स जानि ।

सूर शब्द

सूर सु सूरज है प्रगट, सूर सारथी मानि ।२१७

भग शब्द

भग भागिवे सा कह लहरी भग सा होइ ।
धान्य भेद सो भग है, और टूटिवौ सोइ ॥२१८॥

तीक्ष्ण शब्द

पैने सो तीक्ष्ण कहै तीक्ष्ण तीव्र सु होइ ।

मारगण शब्द

मार्गण जाचक का कहैं और शिलीमुष सोइ ॥२१९

शिलीमुष शब्द

भवर शिलीमुख जानिए, वान शिलीमुष मानि

भूकुडी शब्द

भूकुडी कहत किसान सो भूकुडी सुवर जानि ॥२२०

रुक्म शब्द

रुक्म जो कहिए हेम सा रूपा रुक्म विचारि ।

उत्पल शब्द

उत्पल कुलथी जानिए, उत्पल कवल सुधारि ॥२२१

वासुरा शब्द

दीवक औ चलनी दोऊ होहि वा सुरा स्थान ।

कलधौत शब्द:

सोना रूपा दुहूं को करि, कलधौत वषान ।२२२

प्रधान शब्द:

प्रकृति प्रधान कहावइ उत्तम कहै प्रधान ।

अरविंद शब्द:

चक्रवाक अरविंद है सोई कमल वषान ।।२२३

शृगाल शब्द:

स्यार शृगाल बपानियें अरु कातर जो कहाय ।
दानव होइ शृगाल पुनि नूर सु कहै बनाय ।।२२४

मरुत शब्द:

मरुत देवता सो कहे, मरुत सु वायु प्रकार ।

कुंडल शब्द:

कुंडल मंडल जानिए कुडल कर्ण शृगार ।।२२५

प्रतिबंध शब्द:

प्रतिबंध कहें कुल रीति सो सेना की ततवीर ।
प्रतिबंध जानहु प्रगट नूर कहे मति धीर ।।२२६

वर्त्ति शब्द:

वर्त्ति शब्द वाती प्रगट, चितवनि वर्त्ति वपानि ।

कलिंग शब्द:

देस एक कलिंग है और घुआरा जानि ।।२२७

गमुंद शब्द:

गमुंद शैल सु जानिए गमुंद सूरज होइ ।
गमुंद है त्रिण जाति इक जानहु बुधि जन लोइ ।।२२८

वाल्मीक शब्द:

वाल्मीक रिषि जानिए वचन चतुर पुनि सोइ ।

सामज शब्द:

सामज कहिए समय सो, सामज कुंजर सोइ ।।२२९

याजिका शब्द:

पक्षि भद है याजिका नीली मापी सोइ ।

लक्ष्मण शब्द:

राम बंधु लक्ष्मन प्रगट लक्ष्मण सारस होइ ।।२३०

लक्ष्म शब्द:

लक्ष्म चिन्ह सों कहत, लक्ष्म कंद की जाति ।

पय शब्द:

छीर सलिल सो पय सबद, कहै नूर दुवं भाति ।।२३१

कंज शब्दः

कंज केश अरु कंज निधि कंज अमृत को जानि ।
कंज कमल जग विदित है कहै सो नूर बखानि ॥२३२

इति मिया नूर विरचिते नाम प्रकारो अनेकार्थ प्रकरणे अर्द्ध श्लोकाधिकार वर्गः

राजा शब्दः

राजा राजा जानिए राजा है द्विज राज ।

मित्र शब्दः

मित्र-सा सूरज जानिए मित्र सो मित्र समाज ॥२३३

दर वा श्रीकंठ शब्द.

दर कहिए पुनि छिद्र सो, दर पुनि भय को जानि ।
स्थावर, ह श्रीकंठ पुनि शिव श्रीकंठ बखानि ॥२३४

गोविन्द वा तेज शब्दः

हरि गोविन्द बखानिये गाइ गोविन्द सो होइ ।
तेज तज सो कहत हैं तेज वीठ पुनि सोइ ॥२३५

सिन्धु शब्द तथा शाला शब्दः

सिन्धु नदी को नाम है सिन्धु सो सागर होइ ।
शाला अरु पटशाल, पुनि शाल सो शालय सोइ ॥२३६

तृष्णा वा शष्प शब्द.

तृष्ना कहिए प्यास स तृष्ना लोभ सुजानि ।
शष्प शब्द दोउ जानिए तृण अरु केश बखानि ॥२३७

वाडव वा निस्त्रिंश शब्द

वाडव कहिए विप्र सो, वाडव अगिन सा होइ ।
निस्त्रिश होइ तरवार पुनि निस्त्रिंश पापी लोइ ॥२३८

वग वा इला शब्द

उचे सो रू प्रवाह सा वेग शब्द अवधारि ॥
मतगाइ अरु भूमि को इला सुलेहु विचारि ॥२३९

वन वा पीलू शब्द

वन कानन पुनि सलिल पुनि नूर कहत मति मान ।
वृछ जाति कुजर प्रगट, पीलू शब्द प्रमान ॥२४०

सज्ञा शब्दः

सज्ञा कहिए चित्त सो सज्ञा नाम कहेत ।

भानु शब्द.

भानु पहार बखानिए दिनकर भानु लहत ॥२४१

करभ शब्द

सूकर करभ रु उष्ट्र पुनि करभ देह को अग ।

हाव शब्दः

हाव रुदन सो कहत है हाव सो विभ्रम संग ॥२४२

जीमूत वा चिकुर शब्दः

बादर ग्रो पर्वत विषे कहि जीमूत सो दोई ।
चिकुर केस सो कहत हैं ग्रह वचन पुनि सोइ ॥२४३

वृत्त वा उदार शब्दः

वृत्त नाम इक दैत्य है वृत्त सो वैरि विचारि ।
उदार बडे सो कहत हैं और दंत . उरधारि ॥२४४

पंगु वा अंवर शब्दः

पंगु पंज सो कहत है पगु अरुण पुनि होइ ।
अवर कहत अकास सो, अवर वपरा सोइ ॥२४५

ध्वांक्ष शब्दः

कौवा बगला प्रतिध्वनि ध्वाक्ष शब्द जिय जानि ।

निग्रोध शब्दः

निग्रोध धनुष वट वृक्ष पुनि नूर सु कहे वपानि ॥२४६

नग शब्दः

नग पर्वत नग होइ द्रुम नूर कहे द्वय भांति ।

छिति शब्दः

छिति पृथिवी छिति छय कहत, शब्द कोस की कांति ॥२४७

कंठ शब्दः

कठ गरेको कहत हैं जल सो कठ बपानें ।

प्रहि शब्दः

प्रहि जानि ए कूप को, प्रहि पुनि वान सु जानि ॥२४८

कोल शब्दः

कोल जो जाति विसेष है, कोल सो सूकर होइ ।

श्रम शब्दः

श्रम कहिए प्रस्वेदसों श्रम जो परिश्रम सोइ ॥२४९

कलि शब्दः

कलि जानो पुनि कलह सो कलि जानो पुनि काल ।
नूर कह्यो जो प्रगट करि जानो यह कलि काल ॥२५०

क्षय शब्दः

क्षय कहियतु है ग्रेहसो क्षय सो ह्रास वपानि ।
नूर कह्यो यह कोष मत क्षय सो विपर्यय जानि ॥२५१

दामा वा कोटि शब्दः

दामा सुवर्ण सु जानिए, दामा पद्म पुनि होइ ।
कोटि साह को वर्ण है, गदर कोटि कहि सोइ ॥२५२

वर्हि शब्द

वर्हि दर्भ पुनि वर्हि जल ए दोऊ वर्हि बषानि ।

हेतु शब्द.

हेतु निमित्त कहावइ हेतु हृदय सो जानि ।२५३

वज्र शब्द

हीरा वज्र बषानिए वज्र ईश को नाम ।
वज्र इंद्र ग्रायुध प्रगट, नूर कहे ए नाम ।।२५४।।

वीर शब्दः

वीर बाधव जानिए वीर सु विक्रम वीर ।
वीर जानि रस भेद है, सूर वीर रण धीर ।।२५५

कौशिक शब्द

कौशिक भाई सों कहें कौशिक उलू होइ ।
परसराम कौशिक, सुनो जग प्रसिद्ध है सोइ ।।२५६

शिषिनि शब्दः

शिषिण मयूर कहावइ शिषिनि ग्रग्नि को जानि ।।

धीर शब्दः धीर सात्विक जानिए धीर होइ मति मानि ।।२५७

क्रोड शब्द· क्रोड ग्रकमरि लेन को क्रोड वराह जो होइ ।

द्रुम शब्द द्रुम कहियत है वृक्ष सो द्रुम पर्वत कहि सोइ ।।२५८

ध्रुव शब्द. ध्रुव कहिए नक्षत्र सो ध्रुव निश्चल पुनि सोइ
कहै रसाल सु ऊप रस ग्राव रसाल सु होइ ।

पूर शब्दः पूर कहत सघात सो पूरण पूर सुजानि ।।२५९

सूर शब्दः राजा सूर बषानिए सूर सो सूरज मानि ।।

सुकर शब्दः कोमल मुकर कहावइ सुकर सुकाव्य प्रमान ।।२६०

पतग शब्दः कहि पतग टीडी प्रगट सूर्य पतग सुजान ।

ग्रर्क शब्दः ग्रर्क स्फटिक बषानिए, ग्रर्क सूर्य मन ग्रानि ।।
ग्रर्क ग्राक को कहत हैं नूर सुमति मति मानि ।।२६१

मधुर शब्द मधुर मिठाई जानिए मधुर प्रिय को मानि ।

शभु शब्दः शभू ब्रह्मा जानिए, शभू शिव उर ग्रानि ।।२६२

हायन शब्दः हायन कहिये तेज सो, हायन वर्ष सुजान ।।

पयोधर शब्दः कहत पयोधर कुचन सो मेघ पयोधर जान ।।२६३

वन्हि शब्द वन्हि जानिए सूर्य सा, वन्हि ग्रग्नि पुनि होइ ।

ग्रध्यक्ष शब्द. ग्रध्यक्ष समर्थ बषानिए ग्रधिकारी पुनि सोइ ।।२६४

प्लवग शब्द प्लवग कहत हैं भेंक सो प्लवग सों बादर जानि ।

भीरु शब्दः मूषक ग्रौर वराह सो, भीरु सो कहत बषानि ।।२६५

दृष्टि शब्दः दृष्टि आंखि कों कहत हैं दृष्टि बुद्धि पहिचानि ।
चीवर शब्दः चीवर वस्त्र विशेष है चीवर वल्कल जानि ।।२६६।।
कर्ण शब्दः
पारथ अरि सों कर्ण कहि और कान सो कर्ण्य ।
सुनु शब्दः
सूनु सुकहिए पुत्र सो सूनु बंधु सो वर्ण्य ।।२६७।।
कुस्थान शब्दः
कुस्थान समर कों कहत हैं कुस्थान मत्स पुनि होइ ।
अवट शब्दः
अवट कूप को जानिए गर्त अवट पुनि सोइ ।।२६८।।
स्थूना वा विप्र शब्दः
स्थूना जानि महेस कों स्थूना ब्रह्मा होइ ।
गुनाहगार[१] जहा मारिए स्थूना ठौर है सोइ ।
देवदत्त को विप्र कहि विप्र ब्राह्मण सोइ ।२६९।।
व्यलीक शब्दः
अप्रिय और असत्य को जानु व्यलीक प्रमान ।
वच शब्दः
वच कहिए जो वचन सो वच वानी अनुमान ।।२७०।।
अनेकार्थ सुनि यथा मति कह्यौ गु नूर विचारि ।
चूक होइ सो माफ करि लीजो सुमति सुधारि ।।२७१।।
इति मियां नूर विरचिते नाम प्रकासे अनेकार्थ प्रकरणे
चतुर्थ वरणाधिकारे चतुर्थः प्रकासः समाप्तः ।।

अथ एकाक्षर शब्दाः कथ्यंते ।।

शब्द समुद्र अगाध अति अर्थ रत्न भरि पूर
तामें ढूढत हाथ में आयो जो कछु नूर ।।१,
सोइ माला प्रति वर्ण की, रची सुमति अनुसार ।
कंठ करें गुनवतनर सोभा वढै अपार ।२
प्रथमहि कृष्न अकार है पुनि ब्रह्मा आकार
जानहु धाम इकार को दीरघ श्री ईकार ।।३
उ ईश्वर पहिचानिए ऊ रक्षक अनुमानि ।
ऋ गुरमातु वखानिए ॠ दानव की जानि ।।४
लृ देवकन्या प्रगट और वराही होइ ।
विष्नु अर्थ ए वार है ऐ शिव गहिए सोइ ।५
ओ वेधा गु अनत औ पर ब्रह्म अं जानि ।
अः संकर को मानिए नूर सो कहै वखानि ।।६

१. यह पंक्ति हाशिये पर अन्याक्षरों से लिखी है।

क कार:

मस्तक चित्त जल काम मुख। ब्रह्मा मारुत काम।
कचन जिम सिखि अग्नि भनि ए ककार के नाम।।७

कू.शब्द:

कू कहियत है भूमि सो, कू निन्दा को जानि।
कूवितर्क प्रक्षेप पुनि कूपुनि प्रश्न बखानि।।८

ख कार.

स्वर्ग व्योम नृप शून्य रवि समीचीन सुख होइ।
एते अर्थ खकार के नूर कहे मुनि सोइ।।९

गकार

गायन गीत गधर्व में होइ गकार प्रमान।
गौ बिनायक सो कहे जानहु जान सुजान।।१०

गोशब्द:

वचन भूमि दिगदृष्टि शर किरिणि स्वर्ग जल सोइ।
गाइ वज्र सुख सत्य पुनि मातरि अग्नि सु होइ।।११

घ कार चौपाई:

गरकी घाटी होइ घ कार। सोइ किंकिनी लेहु विचार।
बघन औ घुनि ताहि बखान। नूर कहत है कोष प्रमान।।१२

ङ कार

भैरव होइ ङकार रव विषय ङ कार बखानि।
पुनि इच्छा सोई प्रगट कहत ङ कार प्रमानि।१३

च कार

चन्द्र चकार चकार पुनि चौर चकार सु होइ।
नूर कहे सुनि कोष मत, जानो बुध कवि लोइ।।१४

छकार

सूरज औ निर्मल सबद दोऊ होहिं छकार।
छेदक सोई जानिए, कहे सो तीनि प्रकार।।१५

ज कार

जीतन वाले सो कहें, बुधजन शब्द जकार।

जू शब्द

वचन गगन जू शब्द पुनि जमन पिशाच जू कार।।१६

झ कार

नष्ट होइ जो वस्तु कछु और चारु जो होइ।
वायु गाइ वो घोर पुनि, कहि झकार पुनि सोइ।१७

ट कारः

होइ टकार पृथिवी विषैं, बहुरि ग्रस्थि को जानि ।
ताही सों पुनि धुनि कहैं, नूर लेहु जिय द्यानि ॥१

ठ कारः

होइ ठकार महेश पुनि बहुरि शून्य अरु चन्द ।
सोइ मडल नूर भनि, सुनत बढ़त ग्रानन्द ॥१

ड कारः

कहि डकार शिव शब्द सो पुनि धुनि ताहि बखानि ।
पुनि सोइ जय जानियें नूर समझि मन ग्रानि ॥२

ढ कारः

निर्गुण में अरु शब्द में अरु बाजन की भेरि ।
इन शब्दन के अर्थ में नूर ढकारहि हेरि ॥२

णकार.

गाही कहिबे में प्रगट, और ज्ञान में होइ ।
नूर विचछन जानियो प्रगट णकार सो दोइ ॥२

तकारः

तस्कर अर्थ तकार को अरु सूकर पुनि सोइ ।
बहुरि तुछ तकार को कहत सयाने लोइ ॥२

ताशब्दः

ता कहियतु है पुन सो ता पुनि लक्ष्मी जानि ।
सुनि गुनि कोष विलोकि कै नूर सुकहैं बखान ॥२

थकारः

भय में जो रक्षा करै औ पर्वत है सोइ ॥
नूर कहे है. प्रगट करि ए थकार पुनि दोइ ॥२५

द कारः

दाता दान दकार है बधन छेदन सोइ ।
नूर कहें ए प्रगट करि जानहु बुध जन लोइ ॥२६

धा शब्दः

गुह्य केश सो धा कहैं अरु धाता पुनि होइ ॥

धी शब्दः

धी कहिए पुनि बुद्धि सों, नूर कोप मत सोइ ॥२७

धू शब्दः

भार कप चिता विषें धू कहिए मति मान ।
नूर कहे लखि कोष, मत समुझो, चतुर सुजान ॥२८

न कारः है न वार निर्वंध पुनि प्रगट बुद्धि अवतार ।

नि तथा नु तथा नौ तथा नृ शब्दाः

नि सिघर सो कहत हैं नु अस्तुति उरधार ॥२६
नौ नौका कहिए प्रगट नृ नर होइ प्रमान ।
नूर कह्यो सुनि कोप मत जानो चतुर सुजान ॥३०

पकारः

प, पीवे को अर्थ है प रक्षक पुनि होइ ।
प कहिये पुनि पवन सो नूर कहे सुनि लोइ ॥३१

फ कार तथा फू शब्द·

फ भा वायु फकार भनि फूत्कार फू होइ ।
अरु फू फन सों कहत है अरु भाषण पुनि सोइ ॥३२

वकार तथा वि शब्द

चित्र ववार सु जानिए औ कलस पुनि होइ ।
अडज अरु आकास पुनि जानु विकार सु दोइ ॥३३

भ भा भी भू शब्द

उडगन अरु अलि शुक्र पुनि ए भकार व्यवहार ।
भा सोभा भू भूमि है सोई थालो परकार ॥३४
भय का कहिए भी पुनि समुझो सुमति सुजानि ।
सुनि पढि कोप विचारि कै नूर सु कहे बखानि ॥३५

म मा मू शब्द

शिव विरचि ससि शिर शवद, एचारो सु मकार ।
मा लक्ष्मी मा मान पुनि मा माता व्यवहार ॥३६
मा वारण अव्यय बहुरि मू पुनि बधन होइ ।
नूर कहे ए कोप मत समुझो सज्जन लोइ ॥३७

य या शब्द.

जननी होइ यकार पुनि अरु पसु जानहु सोइ ।
जावे में सोइ अरथ जानहु सज्जन लोइ ॥३८
या कहिए पुनि यान सा या लक्ष्मी सा जानि ।
तीछन अग्नि सु काम पुनि या धुनि कहत बखानि ॥३६

रा री रू शब्द

रा सुवरन रा जलद पुनि रा धन कहत बखानि ।
री भ्रम रु भय सूर्य पुनि निक है नूर मन मानि ॥४०

लली लू शब्द

चलिवे में अरु इद्र में कहत लकार सुनाय ।
ली, कहिए अश्लेष सो लू पुनि लाव बनाय ॥४१

वकार:

मारुत वरण महेश पुनि अव्यय होइ वकार।
गूढ शब्द ए प्रगट करि नूर कहे व्यवहार ।।४२

श० शी० शू० शब्द:

कहि शकार शुभ सो बहुरि कहै शास्ता सोइ।
शी कहिये पुनि शयन सो निशा नाथ शू होइ ।।४३

पपु शब्दौ :

प कहियत है श्रेष्ट सो गर्भ पात, पू जानि।
शब्द विचक्षण सो सुनें नूर सु किए बपानि ।।४४।

स सा शब्दौ:

शत्रु को जीतन हार नर सो सकार को जानि।
सा लक्ष्मी को जानिए नूर सु कहत बपानि ।।४५

ह कार:

कहत हकार सु हाथ को दारुण में कहि सोइ।

हे शब्द:

हे सबोधन अर्थ में नूर कहत बुध लोइ ।।४६

क्ष कार:

क्षेत्र क्षकार बपानिये, और राक्षस होइ।
नूर सो अक्षर मालिका कही कोप मत सोइ ।।४७
इद्रादिक जे देवता तिनहू लह्यौ न पार।
सो नर कहा बरनइ सब्द समुद्र अपार ।।४८
देव गिरा सुनि समुझि कहु उपजो मन हुलास।
कह्यौ जयामति नूर नें भाषा नाम प्रकास ।।४६।

इति सकल अभिधान रत्न भूषण भूषित एकाक्षर प्रकरणे मिया नूर कृत नाम प्रकासे पचम: प्रकासे: समाप्त. ५ सपा २२०१

ग्रन्थ सख्या २२२७